प्रकाशक
राज सुनेजा
एस० आर० सुनेजा पब्लिकेशन्ज
नई दिल्ली

अनुवादक
डा० सत्यकाम वर्मा

मूल्य . ४ रुपये

मुद्रक :
नील कमल प्रिंटर्स
(प्रा०) लिमिटेड, दिल्ली ६

विषय-सूची

१ : सीमान्त

सेंट लुई शहर मे पिछली वसन्त में बहुत हल-चल रही। सन् १८४६ ई० के इन दिनो में अपना देश छोड़कर नये इलाकों की खोज में ओरेगन और कैलिफोर्निया की ओर जाने वाले प्रवासी तो देश के कोने-कोने से वहाँ इकट्ठे हो रहे थे, सान्ता फे की ओर जाने वाले व्यापारी भी अपनी गाडियाँ और दूसरी साज-सज्जा तैयार करने के लिए भारी संख्या में वहाँ जमा हो गये थे। सब होटल खचाखच भरे हुए थे। बन्दूकें और घोडो की काठियाँ बनाने वाले लुहार लगातार काम करके यात्रियो के भिन्न-भिन्न दलों को हथियार और साज-सामान देने पर लगे हुए थे। भाफ से चलने वाली नावें घाटो से रवाना हो कर मिसूरी नदी में चलती हुई यात्रियो से पूरी तरह लदी हुई थी और सीमान्त की ओर बढ़ती जा रही थी।

इनमें से ही एक नाव थी 'रैड्नौर'। वह अब टकराकर नष्ट हो चुकी है। परन्तु पिछली २८ अप्रैल को इसी नाव पर मैं अपने मित्र और सम्बन्धी क्विन्सी एडम्स शॉ के साथ राकी पर्वतमाला की यात्रा पर रवाना हुआ। हम यह यात्रा कुतूहल और मनोरजन के विचार से कर रहे थे। किश्ती इतनी भर चुकी थी कि वह डोलने लगी और उसके दोनो ओर के खतरे के निशान बारी-बारी से डूबने लगे। उसके सबसे ऊपर के फर्श पर सान्ता फे के व्यापारियों की अनेक प्रकार की और अनेक सामानो से लदी गाड़ियाँ भरी हुई थी। उसकी माल रखने की जगह पर भी अनेक प्रकार का सामान उसी जगह व्यापार के लिए भरा गया था। वही ओरेगन की ओर जाने वाले लोगों का सामान और उनकी प्रतिदिन की जरूरी चीजें भरी हुई थी। इन चीजों मे खच्चर, घोड़े, काठियाँ, जीनें और दूसरी अनेक प्रकार की चीजें भरी हुई थी। मैदानो में इन चीजो की बहुत अधिक जरूरत रहती थी। इन सब चीज़ों के बीचो-बीच छिपी हुई थी एक फ्रांसीसी गाडी, जिसे देखते ही लगता था कि यह खच्चरो की मौत लाने वाली है। यहां से भी कुछ दूर परे किनारे पर एक तम्बू था। वही बहुत-सी पेटियाँ और ढोल आदि जमा थे। सारा सामान देखकर यह

नहीं लगता था, कि यह किसी खास भाव से जमा किया गया है। फिर भी यह सामान एक लम्बी और कठिन यात्रा के लिए इकट्ठा किया गया था। यहाँ से इस कठिन यात्रा पर धीरज वाले पाठक भी हमारे साथ ही बढ़ेंगे।

रैड्नोर के यात्री भी उस पर लदे सामान की ही भाँति अनेक प्रकार के थे। बड़े कमरे मे सान्ता फे के व्यापारी, जुआरी, सटोरिये और अनेक प्रकार के साहसी लोग विद्यमान थे। नीचे के खुले आँगन में ओरेगन की ओर प्रवास करने वाले, पहाड़ी आदमी, नीग्रो, सेंट लुई की यात्रा से लौटने वाले कन्सास के आदिवासी भरे हुए थे।

इस प्रकार सामान और मनुष्यो से लदी हुई यह नाव सात-आठ दिन मिसूरी नदी की तेज धार मे ऊपर की ओर बढती ही गई। अनेक स्थानो पर इसे तले या बीच के टापुओ से बढे हुए ठूँठो से सघर्ष करना पडा। कुछ स्थानो पर यह दो-तीन घण्टे के लिए रेतीली जगहो मे भी फँस जाती थी। जब हमने मिसूरी मे प्रवेश किया था, तब तेज वर्षा हो रही थी। पर बाद मे मौसम बिल्कुल साफ हो गया। अब नदी की चौड़ी और मचलती धारा, इसमे पडने वाली भँवरे, रेत के जमाव, उजाड और बनावटी टापू और जंगलो से लदे किनारे साफ दिखाई दे रहे थे। मिसूरी के बहने का मार्ग निरन्तर बदलता रहता है। एक ओर के किनारो को छोड कर यह दूसरी ओर नये किनारे काटती हुई बढती है। इसकी धारा भी अपनी जगह बदलती रहती है। बीच के पुराने टापू मिट जाते है और उनकी जगह नये टापू बन जाते है। एक किनारे के जगल मिटते दीखते है किन्तु दूसरी ओर नये जगल नई मिट्टी पर बनने आरम्भ हो जाते है। इन सब परिवर्तनो के कारण इसके पानी में कीचड और रेत इतने अधिक मिल जाते हैं कि बसन्त जैसी मौसम मे भी इसका पानी एकदम गँदला होता है। उसे गिलास में भर कर रखने पर कुछ ही क्षण मे एक इच तक मिट्टी तल पर जम जाती है। इस मौसम मे नदी काफी भर कर चल रही थी, किन्तु जब हम सर्दियो मे लौटे तब इस में पानी काफी उतर गया था। पानी उतरने पर इसके तले पर प्रकट होने वाले सभी खतरे साफ दीखने लगे थे। उस समय इसमे टूट कर गिरे हुए पेड़ो को देख कर बड़ा डर लगता था। कुछ जगह तो ये इतने अधिक जमा थे, जैसे सेना ने अपनी रक्षा के लिये किसी मोर्चे पर इन्हें जमा किया हो। यह रेत में

गहरे गडे थे। सब का रुख बहाव की ओर था। परिणाम यह कि ऊपर की ओर आने वाले जहाजो के लिए ये मौत की तरह मुँह वाये खड़े हुए थे। कोई भी अभागी नाव या स्टीमर ज्वार के समय इनके ऊपर से गुजरे तो ये उसे नदी के पेट में समा लेने को तैयार रहते थे।

पाच-छ दिन में ही हमें पश्चिम की ओर बढ़ने वाले काफिलो के समूह नजर आने लगे। इण्डिपेण्डेंस नामक स्थान की ओर, जहाँ सबने इकट्ठे होना था। बढ़ते हुए प्रवासियो के अनेक जत्थे इधर-उधर नदी के किनारे खुले स्थानो पर पडाव डाले पड़े थे। जब हम इस इलाके के घाट पर पहुंचे, तब वर्षा हो रही थी। साँझ का समय था। यह मिलन-स्थान नदी से कुछ मील दूर था। यह स्थान मिसूरी प्रदेश के परले सिरे पर स्थित था। यहाँ का दृश्य बहुत ही आकर्षक था। यहाँ वे सभी बाते इकट्ठी देखने को मिल जाती थी, जो इस उन्नतिशील जगली इलाके की विशेषताएँ थी। नदी के दलदली तट पर अपने बडे-बडे टोप पहने दास-से दीखने वाले तीस-चालीस स्पेनी लोग खडे हुए हमारी ओर उजड्डो की तरह देख रहे थे। वे सान्ता फे की ओर जाने वाले दलो मे से एक से सम्बद्ध थे। उन दलों की गाड़ियाँ नदी के किनारे कुछ ऊपर की ओर जमा थी। इनके बीच जलती आग के के चारो ओर एड़ियों के बल बैठे हुए आदिवासियो का एक समूह था। ये आदिवासी मैक्सिको के आदिवासियों के दूर के सम्बन्धी थे। पहाडा की चोटी पर से ही लम्बे बालो और हरिण की खाल की पोशाको वाले इक्के-दुक्के फ्रांसीसी शिकारी हमारी नाव को देख रहे थे। पास के ही एक तने पर तीन शिकारी बैठे थे। उनकी बन्दूकें उनके घुटनो पर टिकी हुई थी। इनमें से सबसे अगला आदमी बहुत लम्बा-तगडा था। उसकी आँखें नीली और बड़ी थी। चेहरे से उसकी बुद्धि-मत्ता टपकती थी। निश्चय ही उन लोगो का प्रतिनिधि रहा होगा, जिन्होंने साहस और उद्यम के द्वारा लगातार बढकर पहले-पहल एलेघनी से पश्चिमी मैदानो तक जाने की राह दिखाई थी। इनकी बन्दूके और कुल्हाड़ियाँ साथ-साथ काम मे जुटी रहती थीं। वह भी ओरेगन की ओर जा रहा था। वह प्रदेश उसे इधर के सभी मैदानो से अधिक अनुकूल लगता था।

अगले दिन सुबह ही हम कन्सास पहुँचे। यह जगह मिसूरी नदी के मुहाने से लगभग पांच सौ मील ऊपर थी। हम यहीं पर उतरे। हमने अपना

सामान कर्नल चिक के पास ही छोड़ दिया। लट्ठो से बना उसका घर सराय जैसा ही था। वहा से हम वैस्टपोर्ट की ओर गये। आगे की यात्रा के लिए हमें वहाँ से खच्चर और घोडे मिलने की आशा थी।

मई मास की यह सुबह बहुत ही सुन्दर और ताजगी देने वाली थी। हमारी औघड़ राह जिन जंगलो में से होकर गुजरी थी, उनमें धूप खुलकर आ रही थी और अनेको प्रकार के पक्षी चहचहा रहे थे। रास्ते में हम अपने पूरी तरह सजे-धजे पुराने साथी यात्री आदिवासी 'कन्सास' लोगो से मिले। ये अपने घरो की ओर लौट रहे थे। नाव पर ये कैसे भी लगते रहे हो यहाँ, जंगलो में वे बहुत ही आकर्षक और सुन्दर लग रहे थे।

वैस्टपोर्ट में आदिवासी भरे हुए थे। इनके घरो और बाड़ो के साथ इनके दर्जनो छोटे-छोटे खच्चर बधे हुए थे। यहाँ सभी जातियो के आदिवासी घूम-फिर रहे थे। इनमे सैक और फौक्स लोग थे, जिनके सिर मुँडे हुए और चेहरे रगों मे पुते हुए थे। इनमें ही शवानू और देलवारे लोग थे, जिन्होने सूती कमीजें और पगडियाँ पहनी हुई थीं। व्यान्दोत लोगो की पोशाक गोरे लोगो जैसी ही थी। कुछ कन्सास लोग भी थे, जिन्होंने फटे-पुराने कम्बल ओढे हुए थे। ये सब सडको पर घूम रहे थे अथवा घरों और दूकानो मे आ-जा रहे थे।

मै सराय के दरवाजे पर खडा हुआ था। उसी समय मुझे दूर से एक आकर्षक आदमी अपनी ओर सडक पर आता दिखाई दिया। उसका चेहरा एकदम लाल था। उसकी दाढी-मूँछ भी चमकीली लाल रग की थी। उसके सिर पर एक ओर ऊपर गाँठ लगी एक गोल टोपी थी। ऐसी टोपी प्राय. स्कॉटलैंड के मजदूर पहना करते है। उनका कोट भी अजीब था। यह स्कॉट-लैंड की बनी स्लेटी रंग की शाल मे बना हुआ था और इसके चारो ओर उसके सूने धागे लटक रहे थे। उसके पाजामे खड्डी-बुने कपडे से बने हुए थे। उसके जूते के तीन कीले ठुकी हुई थी। इन सबके साथ ही था उसके मुँह के एक कोने मे जमा हुआ छोटा-सा काला पाइप। वेशभूषा के इस तरह अजीब होने पर भी मैंने पहचान लिया कि ये ब्रिटिश सेना के कप्तान श्री क—है। इनके साथ थे इनके भाई जैक और श्री र—। वे भी अग्रेज ही थे। ये लोग शिकार के लिए इस महाद्वीप के आर-पार यात्रा करने निकले थे। साथियो

समेत इन्हे मैने सेण्ट लुई में देखा था। इस समय वे कई दिन से वेस्टपोर्ट में ठहरे हुए थे। यहां रह कर एक ओर वे जाने की तैयारियाँ पूरी कर रहे थे, दूसरी ओर वे कुछ और साथियो के आ मिलने की प्रतीक्षा कर रहे थे। इस यात्रा के लिए उनके साथियो की सख्या काफी कम थी। इस तरह का अकेला प्रयत्न खतरे से खाली न था। ओरेगन और कैलीफोर्निया की ओर जाने वाले प्रवासियो के दलो मे से भी किसी एक के साथ वे मिल सकते थे। पर, वे केन्टुकी के लोगों से किसी प्रकार का सम्बन्ध रखने को तैयार न थे।

कप्तान ने हम पर ज़ोर दिया कि हमें भी उनके साथ मिल कर एक दल के रूप में पहाडो की ओर बढना चाहिए। प्रवासियो के साथ हमारी सहानुभूति भी अधिक न थी। अत हमें इनके साथ जाना अधिक उचित लगा और हमने उसके लिये अपनी मजूरी दे दी। हमारे ये होने वाले साथी लकड़ी के एक घर में टिके हुए थे। हमने देखा कि उस घर में चारो ओर काठिया, जीनें बन्दूकें, पिस्तौलें, दूरबीनें, चाकू आदि मैदानो के लायक सारा सामान ही—भरा पडा था। र—को प्रकृति-विज्ञान का शौक था। इस समय वे एक कठफोड़े की खाल भर रहे थे। कप्तान के भाई आयरलैंड के निवासी थे। इस समय वे फर्श पर बिखरे खोजी रस्से के टुकडो को जोड़ रहे थे। यह रस्सी राह में काम आनी थी। कप्तान ने बहुत प्रसन्नता के साथ हमें यात्रा की प्रत्येक चीज दिखाई। वह बोला, "आप जानते है कि हम पुराने घुमक्कड़ है। मुझे पूरा विश्वास है कि आज तक इन मैदानो की ओर कोई भी दल इससे अधिक तैयारी के साथ नही गया।" जिस खोजी शिकारी को उन्होने नियुक्त किया था, उसका नाम सोरेल था। वह कनाडा का रहने वाला और गुस्सैल-सा लगता था। उनका गाडीवान सेण्ट लुई का रहने वाला एक अक्खड़ अमरीकी था। ये दोनो ही इस समय घर के बाहर ही टिके हुए थे। पास ही लकड़ी की एक घुड़साल बनी हुई थी, जिसमे कप्तान द्वारा बहुत ही सूझ-बूझ के साथ चुने हुए घोडे और खच्चर बधे थे।

वे अपने इन्तजाम पूरे करने लगे और हम भी पूरी सुविधा और तेजी के साथ अपने प्रबन्ध पूरे करने में जुट गए। प्रवासी यहां से कुल आठ या दस मील की दूरी पर ही हज़ार या कुछ अधिक सख्या में मैदानो में डेरा डाले पड़े थे। उनके नये दल इसी इण्डिपैन्डेन्स शहर मे से होकर, उनसे मिलने के लिए,

एक के बाद एक गुज़र रहे थे। उनके लिए हमारे मित्र बहुत ही घृणा प्रगट करते थे। वे लोग बहुत घबराए हुये थे। उनकी सभाएँ होती, प्रस्ताव पास होते और नए-नए नियम बनाए जाते। किन्तु, वे मैदानो के पार की इस लम्बी यात्रा के लिए अपने नेता के चुनाव में एकमत न हो सकते। एक दिन कुछ फुर्सत पाकर मैं शहर की ओर निकल गया। शहर में भीड बहुत अधिक थी। प्रवासियो और सान्ता फे के व्यापारियो के लिए यात्रा की आवश्यक वस्तुएँ जुटाने के लिए यहा एक साथ ही बहुत-सी नई दुकानें खुल गई थी। दूसरी ओर दर्जनो लुहारो की झोपडियो से लगातार हथोडो की चोटें और गूजें सुनाई दे रही थी। वे लोग गाड़ियो की मरम्मत करने और घोड़ो और बैलो की नाले ठोकने मे लगे हुए थे। गलियो और सडको पर आदमी, घोडो और खच्चरो की खूब भीड उमड रही थी। अभी मैं शहर मे ही था, जब इलिनोइस के प्रवासियो की गाडियो का एक जत्था नगर मे से गुज़रा सौर मुख्य सडक पर ही रुक गया। ये लोग मैदानी जत्थो से मिलने के लिए बढ रहे थे। गाडियो पर ढके पर्दो मे से झाकते हुए अनेक बच्चो के चेहरे बाहर दीख रहे थे। थोड़ी-थोडी दूरी पर कोई भारी-भरकम औरतें घोडे पर सवार होकर बढ रही थी। इनमें से किसी ने अपने धूप से तपे चेहरे को बचाने के लिए कोई पुराना छाता ताना हुआ था, तो किसी ने कोई पुरानी छोटी-सी छतरी तानी हुई थी। पुरुष गाव के रहने वाले और सभ्य लगते थे। वे अपने बैलो के पास खडे थे। जब मैं उनके पास से गुजरा तो मैंने तीन बूढो को आपस मे बहुत उत्साह के साथ बार-बार जन्म लेने के सिद्धान्त पर बात-चीत करते सुना। उनके हाथो मे लम्बे चाबुक थे। परन्तु, सभी प्रवासी इस तरह के नही थे। उनमें से कुछ तो अपने इलाको मे जाति से बाहर निकाले हुए थे। वे असभ्य थे। मैं बहुत बार अपना देश छोड़कर नया देश खोजने वालो की भावना की ओर उनके अनेक प्रकार के उद्देश्यो को समझने की कोशिश करता रहा हूँ। मैं किसी निर्णय पर तो नहीं पहुँचा, पर इतनी बात निश्चित है कि चाहे ये लोग एक अच्छी जिन्दगी की आशा मे बढ रहे हो, समाज के कानूनो के बन्धन को तोडने की इच्छा लेकर चल रहे हो, या फिर इसलिए अपना देश छोड रहे हो कि वे शात जीवन पसन्द नही करते—इनमें से सभी लोग यात्रा की कठिनाइयों को पाकर बहुत अधिक पछताते है। पर, यह भी सच है कि जब ये लोग अपनी उम्मीदो

की मजिल पर पहुँच जाते है, तब ये इन कठिनाइयो से छुटकारा पाकर बहुत प्रसन्न भी होते है।

अगले सात या आठ दिनो मे हमारी तैयारियाँ पूरी हो गई। इसी बीच हमारे साथियो ने भी तैयारियाँ पूरी कर लीं। वैस्टपोर्ट से वे उक्ता गए थे। इसलिए उन्होने आगे चल पड़ने का अपना इरादा हमें बताया। उन्होंने बताया कि वे हमारी कसास नदी के घाट पर प्रतीक्षा करेंगे। इस निश्चय के अनुसार र—और गाड़ीवान गाड़ी और तम्बू आदि लेकर आगे चले गए। उनके कुछ ही पीछे घोड़ो आदि को साथ लिए हुए कप्तान और उसका भाई भी, सोरेल और साथ आ मिलने वाले बोईसफेर्ड नाम के पशु फसाने वाले के साथ चल पड़े। इस यात्रा का आरम्भ ही बुरा हुआ। अपने दल के आगे-आगे घोडे पर चढ़े हुए कप्तान वैस्टपोर्ट से अभी मील भर भी बाहर न गए होगे कि अचानक ही एक भयकर तूफान ने उन्हें आ घेरा। वे उसमें बुरी तरह भीग गए। कप्तान के पीछे-पीछे रस्सी से बधा हुआ भैंसे के शिकार में काम आने वाला घोडा भी चल रहा था। तूफान मे ही उन्होने जल्दी-जल्दी चलना शुरू किया, ताकि सात मील दूर र—द्वारा तैयार किए हुए डेरे तक जल्दी पहुँच सकें। परन्तु यह र—भी अजीब ही था। इसने जब तूफान को आते देखा, तो जंगल में ही एक सुरक्षित जगह देखकर अपने तम्बू गाड दिए। उधर वर्षा में कप्तान उसे मीलो आगे ढूढ रहे थे और इधर यह आराम से बैठे कॉफी पी रहा था। बहुत देर बाद आँधी शान्त हुई। तब पशु फंसाने वाले व्यक्ति ने अपनी तेज़ निगाहो से तम्बू ढूंढ निकाला। जब वे पहुँचे तब तक र—कॉफी पी चुका था और भैंसे की खाल से बने गलीचे पर बैठा पाइप पी रहा था। कप्तान बहुत ही सरल स्वभाव का था। उसने अपने दुर्भाग्य को बहुत धीरज के साथ सह लिया और अपने भाई के साथ मिलकर कॉफी के कुछ घूंट पी कर, अपने गीले कपड़ो मे ही, सोने के लिए लेट गया।

हमारे साथ भी कम बुरी न बीती। हम कन्सास की ओर टट्टुओ का एक जोडा लिए बढ़ रहे थे। उसी समय तूफान टूट पड़ा। ऐसी भयकर और लगातार चमकने वाली बिजली तथा इतनी बहरा कर देने वाली गरज मैंने जीवन मे कभी न देखी थी। बहुत तेज़ गरज के साथ सीधी पड़ने वाली मूसलाधार बारिश के गिरने से कुछ भाफ-सी धरती से उठी और चारो ओर इतना

धुन्ध छा गया कि जगल छिप-सा गया। छोटी-छोटी धाराएँ इतनी भर कर चलने लगी कि उन्हे पार करना कठिन हो गया। बहुत देर बाद कुछ दूरी पर उस वर्षा मे से ही हमे कर्नल चिक का लट्ठो से बना मकान दिखाई दिया। उसने हमें सदा की भाँति स्वागत के साथ अपने यहाँ ठहराया। उसकी पत्नी यद्यपि लोगो की सभाओ आदि के कारण उकताई रहती थी, और कुछ कठोर स्वभाव की बन गई थी, पर इस समय उसने भी अपनी सहानुभूति कम न दिखाई। उसने हमे अपने भीगे हुए और बिगडे हुए कपडां और सामान को ठीक करने के लिए हर प्रकार की सहूलियत दी। सूरज छिपने के साथ ही तूफान शान्त हुआ। इस समय कर्नल के घर की ड्योढी से नजारा बहुत ही अच्छा दिखाई दे रहा था। कर्नल का यह मकान एक ऊँची पहाडी पर था। फटते हुये बादलो मे से सूरज की किरणे धाराओ के रूप में तेज बहने वाली मिसूरी नदी और फैले हुए बडे जगलो पर पूरी तरह बिछ गईं।

अगले दिन वैस्टपोर्ट लौटने पर हमें कप्तान का एक सन्देश मिला। इसे देने वह स्वय आया था। पर यह जानकर कि हम कसास गए हुए है, वह फौजेल नाम के अपने एक परिचित दुकानदार को यह सन्देश हम तक पहुँचाने के लिए दे गया। इस आदमी की शराब और जरूरी खुदरा सामान की दूकान थी। इस नगर में शराब कुछ अधिक मात्रा मे ही पी जाती है। हरेक आदमी भरी हुई पिस्तौल भी साथ लिए रहता है। ऐसी हालत मे परिणाम बुरे ही होते है। हम ज्यो ही उसकी दूकान के पास से गुजरे हमें फौजेल का चौडा जर्मन चेहरा दरवाजे से बाहर झाँकता नजर आया। उसने बताया कि हमारे लिए कोई सन्देश है। साथ ही उसने शराब का घूँट भरने के लिए भी हमे निमन्त्रित किया। हमारे लिए उसकी शराब और उसका सन्देश दोनों ही आनन्द देने वाले न रहे। कप्तान हमे यह सूचना देने के लिए लौटा था कि र—ने पहले से निश्चित राह को छोडकर दूसरी राह चुनने का फैसला किया है। उसी ने हमारे दल के आगे-आगे चलने की जिम्मेवारी ली हुई थी। अब उसने व्यापारियो की राह छोडकर फोर्टलीवनवर्थ के उत्तर से होते हुए एक नई राह पर बढने का निश्चय किया था। इसी राह पर पिछली गर्मियो मे घुड़सवार सेनाएँ बढी थी। हालाकि हमसे बिना पूछे राह बदल देने की बात हमे बहुत अखरी, पर तो भी हम अपनी नाराजगी को छिपा कर फोर्टलीवन-

वर्थ में उनसे मिलने को तैयार हो गए। उन्होने यही हमारी प्रतीक्षा करनी थी।

अपनी तैयारियाँ पूरी होने के बाद एक सुहावनी सुवह हमने अपनी यात्रा शुरू करने की कोशिश की। हमारा पहला ही कदम दुर्भाग्य से भरा था। अभी घोड़ों पर काठिया आदि कसी ही थी कि गाड़ी में जुता एक टट्टू विदक कर उछलने-कूदने लगा। उसने रस्सिया और चमड़े की पेटिया तोड डाली। गाडी नदी में गिरते-गिरते बची। जब हमने देखा कि वह कावू मे नही रहेगा तो हमने बूने द्वारा दिये गए एक दूसरे टट्टू को उसकी जगह जोत दिया। यह बूने महोदय वैस्टपोर्ट के ही थे और प्रसिद्ध नेता डेनियल बूने के पोते थे। मैदानी-यात्रा का यह पहला अनुभव अभी भूला भी न था कि एक नई मुसीवत आ पडी। अभी हम वैस्टपोर्ट से वहुत दूर न गए थे कि हमारी गाड़ी एक दलदली धार में फँस गई। हमे एक-दो घण्टे यही लग गए। वाद मे तो ऐसी मुसीबतें रोज की ही बात बन गई।

—:०:—

२ : आरम्भ

वैस्टपोर्ट के मिट्टी के घरो से निकल कर हम कुछ समय तक धूप-छाँह से भरी सँकरी राह से होकर जगल में से गुजरे। बहुत देर बाद हम खुली रोशनी में आये। यहाँ वह जंगल पीछे छूट गया था। कभी यह जगल पश्चिमी किनारे से अन्धमहासागर तक—पूरे के पूरे महाद्वीप पर—फैला हुआ होता था। सामने पडने वाली कुछ झाड़ियो को छोडकर जहाँ तक भी हमारी नजर जाती थी, हरियाली के एक महासागर के रूप मे, मैदान ही फैला हुआ था, जैसे यह आकाश तक मिलने उठ गया हो।

वसन्त का यह दिन बहुत सी सुहावना था। ऐसे दिन काम करने की बजाय मस्ती और मौज मनाने की इच्छा करती है। सारी कोमल भावनाए ऐसे दिन उमड पडती है। झाडियो मे गुजरते हुए मै अपने दल के आगे होकर चलने लगा। एक जगह हरी घास का टुकडा बिछा देखकर मै अपना लोभ न रोक सका और घोडे से उतर कर वही लेट गया। सभी पेड-पौधे फूलो से लदे पडे थे। कुछ नयी पत्तिया फूट रही थी। जगली सेवो और सेवती आदि के रग विरगे फूलो के गुच्छे लदे पडे थे। इन मैदानो और पहाडो के नजारे यद्यपि बहुत निखरे और सुन्दर न थे, फिर भी मुझे शहरी सजे-धजे बगीचो को पीछे छोड आने का अधिक दु ख न हुआ।

इसी समय हमारा दल भी झाडियो से बाहर आता दिखाई दिया। सबसे आगे हमारा शिकारी पथ-प्रदर्शक हेनरी शातिलों चल रहा था। वह एक अच्छा पहलवान दीखता था और एक मजबूत व्यान्दोत टट्टू पर सवार था। उसने सफेद कम्बल का बना कोट, ऊन का एक चौड़ा टोप, मोकास्सिन की खाल के रोएंदार जूते और हिरण की खाल का बना पाजामा आदि पहने हुए थे। पाजामे के पहुचे झालरदार थे। उसने अपनी शिकारी छुरी कमर की पेटी में अटकाई हुई थी। उसने गोलियो और बारूद की थैलिया बगल में लटकाई हुई थी और उसकी राइफल उसके सामने ऊँची काठी पर टिकी हुई थी। उसके सारे सामान की भाँति यह काठी भी उसके बहुत काम आई थी और इसीलिये

काफी घिस चुकी थी। उसके ठीक पीछे शॉं एक लाल भूरे ठिगने घोड़े पर सवार था। वह एक और बडे घोडे की रास थामे बढ रहा था। उसकी साज-सजावट मुझ से मिलती जुलती थी। यह भेस, साज-सजावट के लिये न होकर काम-काजी ढंग से बनाया गया था। काठी स्पेनी ढग की अत्ययन्त सादी और काले रग की थी। उस में भारी पिस्तौलें लटकाने की जेबे भी बनी थी। पीछे की ओर एक कम्बल लिपटा रखा था। लपेटी हुई एक लम्बी खोजी रस्सी घोड़े की गर्दन से बाँधकर उसी के एक ओर लटका दी गई थी। सात सेर से अधिक भारी राइफल मेरे पास थी, किन्तु शॉं के पास दुनाली बन्दूक थी। इस समय की हमारी वेश-भूषा यद्यपि बहुत अच्छी न थी, फिर भी सभ्य ढग की अवश्य थी। किन्तु जब हम यात्रा से लौटकर आये तब की हमारी वेश-भूषा इस के मुकाबिले बहुत ही बिगड़ी हुई थी। फलालैन की एक लाल कमीज़ ही हमने पहन रखी थी, जो कमर पर कसी पेटी के कारण फ्रॉक जैसी लग रही थी। बूटो की जगह हमने भी मोकास्सिन की ही खाल पहन ली थी। हमारी बाकी पोशाक किसी आदिवासी स्त्री द्वारा हिरण के सुखाये और तपाये चमड़े से बनी हुई थी। हमारी खच्चरो और गाडी को चलाने वाला देस्लारियर पीछे-पीछे अपनी गाडी को हलके कीचड में से होता हुआ बढाता आ रहा था। वह कभी अपना पाइप पीता था और कभी मैदानी भाषा में एक वाक्य दुहराता था, "भगवान् के पवित्र बेटे !" ये शब्द वह तब कहता था, जब कोई टट्टू किसी गहरे नाले या खाई में उतरने से कतराता था। यह गाड़ी सफेद कपड़ें से चारो ओर से ढकी हुई थी। इस प्रकार अन्दर की चीज़े सुरक्षित कर ली गई थी। ऐसी गाड़ियां क्वीबेक के इलाके के बाज़ारो में दर्जनों की संख्या में इधर-उधर बंधी हुई मिल जाती थी। इनमें हमारे खाने-पीने का सामान, तम्बू, गोली-बारूद, कम्बल और आदिवासियो के लिए भेंटें आदि पड़ी थी।

आदमी हम चार थे, पर पशु आठ ! मैंने और शॉं ने तो एक-एक घोड़ा फालतू ले ही रखा था, पर गाड़ी के साथ भी हम एक फालतू टट्टू लेकर चल रहे थे। मुसीबत या दुर्घटना के समय इसकी आवश्यकता पड़ सकती थी।

पूरे दल के इस वर्णन के बाद यह भी उचित ही होगा, यदि अपने साथ चलने वाले दोनों साथियो के चरित्र का भी कुछ परिचय दे दूँ।

देस्लारियर कनाडा का रहने वाला था। उसमे जीन बैप्तिस्त की सभी

विशेषतायें मौजूद थी। वह सदा आनन्द, प्रसन्न और अपने स्वामियो के प्रति नम्र रहता था। थकान, ठण्ड या कठिन मेहनत आदि कोई भी बात उसकी इस आदत में फर्क न डाल सकती थी। रात आने पर आग के पास बैठ कर वह पाइप सुलगा लेता और पूरे सन्तोप से भर कर कहानिया सुनाने लगता। इन मैदानो में तो जैसे उसकी जान बसती थी। हेनरी शातिलो इससे भिन्न स्वभाव का था। जब हम अभी सेंट लुई में ही थे, हमें फर कम्पनी के बहुत से आदमियो ने बडी सहानुभूति के साथ हमारे लायक एक पथ-प्रदर्शक और शिकारी ढूँढ देने का वायदा किया। एक दिन दोपहर बाद कम्पनी के दफ्तर मे पहुँचने पर हमने एक लम्बा-चौडा और सजा-धजा आदमी बैठा देखा। उसका चेहरा बहुत अच्छा और सरल था। उसे देखते ही हम उसकी ओर खिच गये। हमारे आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब हमे बताया गया कि यही व्यक्ति हमारी पहाडी यात्रा मे हमें राह दिखाने का काम करेगा। यह सेंट लुई के पास के ही एक छोटे से नगर मे उत्पन्न हुआ था और पन्द्रह वर्ष की आयु से ही रॉकी पर्वतमाला के आस-पास घूमता रहा था। प्राय. अधिकाश समय इस कम्पनी ने ही उसे वहा के आने अनेको किलो में भैसो का मास-मुहैया करने के काम पर लगाये रखा था। शिकार के मामले में उसके मुकाबिले का एक ही आदमी था—सिमोनू। उसके साथ इसकी गहरी मित्रता थी। यह अभी एक दिन पहले ही पहाडो में चार साल बिताकर लौटा था। अगली यात्रा पर निकल पडने से पहले वह एक दिन की छुट्टी लेकर अपनी माँ से मिलने जाना चाहता था। उसकी आयु इस समय लगभग तीस वर्ष की थी। वह छ फुट लम्बा था। उसका शरीर बहुत ही सुन्दर और गठा हुआ था। इन्ही मदानो में उसने सब कुछ सीखा था। लिखने-पढने मे वह बिल्कुल कोरा था, किन्तु उसकी सहज बुद्धि और सस्कार स्त्रियो से भी अधिक तेज थे। उसके मर्दाने चेहरे से उसकी सचाई, सादगी और नरम-दिली साफ-साफ झलकती थी। उसे दूसरो का चरित्र बारीकी मे पहिचानने की आदत थी। उसमे कुछ ऐसी विशेपता थी कि वह किसी भी समाज में कोई गलती करने से अपने को बचा लेता था। वह अंग्रेज—अमरीकनो जैसे अशान्त स्वभाव का न था। वह आँखो के सामने के ससार को ही एक सचाई मान कर संतुष्ट रहता था। उसका सबसे बड़ा दोप ही यह था कि वह अत्यन्त सीधा-सादा और उदार था। इसी

कारण जीवन मे अधिक बढ़ने और पनपने में उसकी रुचि न थी। इस पर भी उसके विषय में यह प्रसिद्ध था कि वह अपनी चीजो को चाहे कैसे ही बरते, दूसरो का सामान उसके हाथो में सदा सुरक्षित रहता था। इन पहाडो पर उसकी वीरता और निशानेबाजी दोनों ही गजब की रहती थी। फिर भी यह आश्चर्य की ही बात है कि बात-बात पर बन्दूक का सहारा लेने वाले लोगो के बीच रह कर भी वह कभी किसी के साथ लड़ाई में न उलझा था। एकाध बार उसके भोले स्वभाव को गलत समझ कर उसका उलटा अर्थ लिया गया, किन्तु इस नासमझी का परिणाम इतना बुरा रहा कि फिर कभी किसी ने उसे गलत समझने की कोशिश न की ! उसके वीरतापूर्ण स्वभाव का परिचय इस बात से ही मिल जाता है कि उसके विषय मे यह प्रसिद्ध है कि उसने तीस से अधिक सलेटी रंग के भालू मारे है। वह इस बात का जीता-जागता सबूत है कि बिना किसी मदद के भी कोई कैसे बढ़ सकता है। शहर में या जंगल में मैं अपने सच्चे मित्र हेनरी से बढ़कर और किसी अधिक अच्छे मनुष्य से न मिल पाया।

हम शीघ्र ही इन जगलो और झाड़ियो को पार कर खुले मैदान मे निकल आए। यहाँ कोई न कोई शावानू आदिवासी अपने छोटे से टट्टू पर चढा हुआ गुजरता दीखता। उसने सूती कमीज और चमकीला कमरबन्द पहने होते तथा एक रगीन रूमाल अपने लम्बे बालो पर पीछे की ओर लटकता हुआ बाँधा होता। दोपहर के समय हम मेढको और कछुओ से भरी एक छोटी सी धारा के पास ही आराम के लिए रुक गये। यहां पर कभी आदिवासियों ने डेरा डाला था, जिसके निशान अब भी मौजूद थे। इससे हमे धूप से बचने के लिए जगह आसानी से मिल गई। इसके लिए हमे केवल एक-आध चादर या कम्बल ही पुराने खण्डहरो पर तानना पडा। छाया करने के बाद हम अपनी काठिया बिछाकर बैठ गये। शॉ ने पहली बार अपनी मन पसन्द आदिवासियो की चिलम जलाई। देस्लारियर बिछे हुये कोयलो पर ही बैठ गया। उसने अपनी आखो को एक हाथ से ढका हुआ था और दूसरे हाथ मे एक छोटी छडी पकडी हुई थी। इस छड़ी से ही सामने के बर्तन मे तली जाती हुई चीजों को वह हिलाता जा रहा था। घोडो को पास की ही चरागाह में, बिखरी हुई झाड़ियो के बीच मे, चरने के लिए छोड़ दिया गया था। हवा कुछ भारी

और मस्ती भरी थी, जैसे वसन्त छाई हो। पास की धारा और चरागाह में से अचानक ही हजारो मेंढक और जन्तु टर-टराने लगे।

अभी हम ठीक से बैठे भी न थे कि एक अतिथि आ पहुँचा। यह कोई बूढा, कन्सास प्रदेश का आदिवासी था। उसकी पोशाक देखने से वह किसी खास हस्ती का आदमी मालूम होता था। उसका सिर मुंडा हुआ और लाल रंग से रंगा हुआ था। सिर के बीचोबीच बचे हुए बालो के गुच्छे से चीलों के कुछ पंख और फनियर सापों की दो या तीन पूंछें लटक रही थी। उसकी गालो पर सिन्दूर मला हुआ था। उसके कानो में हरे शीशे के झुमके लटक रहे थे। सलेटी रंग के भालू के पजो से बनी एक माला उसने गले में पहनी हुई थी और शख और सीपी से बने अनेक हार उसकी छाती से लटक रहे थे। प्रणाम करने के लिए तेजी से हाथ मिलाकर उसने कन्धो से लटकता अपना लाल कम्बल नीचे गिरा दिया और स्वयं चौकड़ी मार कर धरती पर बैठ गया। हमने उसे शर्बत का एक गिलास दिया। उसने इसकी प्रशंसा की। तब वह हमे अपने बड़प्पन की बातें बताने लगा। वह यह भी बता रहा था कि उसने कितने पौनी आदिवासी मारे। तभी अचानक धारा पार करके किनारे से चढता हुआ रग-बिरगे आदिवासियो का एक समूह हमारी ही ओर आता दिखाई दिया। वे सब जल्दी-जल्दी एक-दूसरे के पीछे बढते गए। पहले आदमी थे फिर औरतें और फिर बच्चे! उनमें से कुछ घोड़ो पर सवार थे और कुछ पैदल चल रहे थे। पर सभी मैले-कुचैले और भद्दी हालत में थे। कुछ बूढी औरतें छोटे-छोटे खच्चरो पर बैठी हुई थी। उनमें से कुछ के पीछे साँप की सी आंखो वाले एक या दो बच्चे भी फटे हुए कम्बलो को पकड़े बैठे थे। कुछ लम्बे और पतले नौजवान हाथो मे धनुष-बाण लिए पैदल चल रहे थे। कुछ लडकिया भी साथ थी, जिन्होंने कांच के मोती और लाल कपड़े पहने हुए थे, पर फिर भी जिनकी बदसूरती छिप न सकी थी। इन्ही में कही-कही कोई ऐसा भी आदमी चल रहा था, जो हमारे ही अतिथि की भाँति अपने समुदाय के किसी खास पद का अधिकारी लगता था। ये लोग कंसास आदिवासियो में सबसे छोटी जाति के थे। अपने स्वामियो के भैंसो के शिकार के लिए चले जाने पर ये लोग वैस्टपोर्ट की ओर भीख माँगने जा रहे थे।

जब यह दरिद्र भीड गुजर गई तब हमने अपने घोड़ो पर जीने और

काठिया कसी और अगली यात्रा पर चल पडे। धारा को पार करने के बाद हमे अपने बाईं ओर के जगलो और नालो के परे कुछ नीची छतो वाले मकान दिखाई दिए। जंगली गुलाबो और बसंती फूलो के बीच से आगे बढने पर हमें शावानू लोगो के मेथोडिस्ट मिशन के लकडी से बने गिरजे और स्कूल दिखाई दिए। यहाँ कुछ आदिवासी किसी धार्मिक मेले के लिए इकट्ठे हो रहे थे। कुछ अच्छी पोशाक पहने पचास-साठ लम्बे-चौड़े पुरुष वहां लकडियो की बैंचो पर पडो के नीचे बैठे थे। उनके घोडे आस-पास के जगले और कोठरियों के पास बधे हुए थे। उनका मुखिया पार्कस था, जो देखने मे पहलवान लगता था। वह वैस्टपोर्ट में स्थित अपनी व्यापार की जगह से अभी-अभी ही आया था। व्यापार की इस जगह को छोडकर उसके पास एक लम्बा-चौडा खेत और काफी सारे दास भी थे। वास्तव मे शावानू लोगो ने मिसूरी के सीमान्त पर रहने वाले किसी भी दूसरे आदिवासी कबीले की अपेक्षा अधिक तरक्की की है। ये लोग हमारे पुराने परिचित कसास आदिवासियो से, शक्ल और चरित्र मे एकदम भिन्न थे।

कुछ ही घण्टे की सवारी के बाद हम कसास नदी के किनारे पहुँच गए। इसके किनारे के जगल में बढते हुए और रेत को पार करते हुए हमने वहा डेरा डाला, जहाँ लोअर देलावारे को रास्ता फटता है। हमारा तम्बू पहली बार जिस जगह गाड़ा गया, वह जगह जगल के पास की चरागाह में थी। सब चीजे ठीक-ठिकाने रखने के बाद हमे खाने की चिन्ता लग गई। पास के ही एक लट्ठों के बने मकान की ड्योढी में देलावारे जाति की एक भारी भरकम बुढिया बैठी थी। पास ही पानी बह रहा था। एक बहुत सुन्दर दोगली लडकी उसी की देख-रेख मे दरवाजे के आस-पास उछलते-कूदते तीतरों के झुण्ड को दाना दे रही थी। हमने रुपया और तम्बाकू आदि के बदले तीतर लेने चाहे, पर वह किसी कीमत पर भी देने को तैयार न हुई। इसलिए मैंने अपनी राइफल सम्भाली और जगल अथवा नदी में कोई शिकार फसाने के लिए निकल पडा। चरागाह में अनेक चिडियाँ शोर करती फुदक रही थी। परन्तु, निशाना साधने लायक उनमें से कोई भी न थी। केवल तीन गीध दिखाई दिए, जो साइकामोर के सूखे तने पर बैठे हुए थे। यह सूखा तना घनी हरी घास से अलग नदी पर बढ गया था। उन गीधो के सिर कंधो के

बीच छिपे हुए थे। लगता था कि वे पश्चिम से आने वाली हल्की-हल्की धूप को मस्ती से सेक रहे थे। उनमें कोई खास खिचाव मुझे न लगा। इसलिए मैने भी इनके आनन्द मे बाधा न डाली। बल्कि, मै छिपते सूर्य के प्रकाश में प्रकृति की उस शोभा को देखने में डूब गया। जंगल की गुलाबी छाया में तेजी से बढती हुई नदी का दृश्य जगली, पर बहुत ही शान्ति देने वाला, लग रहा था।

जब मै डेरे पर वापिस आया तो शॉ और एक बूढा आदिवासी जमीन पर बैठे कुछ बातें कर रहे थे और बारी-बारी हुक्का पी रहे थे। बूढा आदमी बता रहा था कि वह गोरो से प्यार करता है और उसे तम्बाकू भी बहुत अच्छा लगता है। उधर देसलारियर धरती पर ही टीन के थालो और तश्तरियो को फैला रहा था। क्योकि कोई और चीज़ मिल नही सकी थी, इसलिए उसने नाश्ते के लिए हमारे सामने बिस्कुट और मांस सजा दिया। साथ ही काफी का बडा बर्तन भी रख दिया। अपने चाकू निकाल कर हम खाने में जुट गये। अधिक हिस्सा समाप्त करने के बाद, बाकी बचा-खुचा हमने उस आदिवासी को दे दिया। इसी समय हमारा ध्यान घोडो की ओर गया। उनकी अगली टागें बधी हुई थी और वे पेडो के बीच खडे थे। वे इस समय बहुत निराश और उकताए हुए थे। इसीलिए उनकी लगडी चाल ने हमारा ध्यान खीच लिया। लगता था जैसे उन्होने जगल की इस यात्रा के पहले अनुभव को अच्छा नही समझा। विशेषकर, मेरे घोडे तो इस मैदानी जिन्दगी से डर ही गये लगते थे। उनमें से एक का नाम हेन्ड्रिक था। यह बहुत ही बलवान और परिश्रमी था चाबुक को छोडकर वह किसी भी चीज के आगे नही झुकता था। इस समय यह भी हमारी ओर बहुत तिरस्कार-भरी नजर से देख रहा था, मानो वह अपनी दुलत्तियो से बदला लेने की सोच रहा हो। दूसरे घोडे का नाम पोन्टिक था। यह था तो सादी ही किस्म का पर अपने काम में काफी अच्छा था। इस समय यह भी अपना सिर लटकाए खडा था और इसकी सटाएँ दोनो ओर लटक रही थी। मानो यह भी स्कूल भेजे जाने वाले किसी भारी-भरकम लडके के समान उदास और दुखी हो। उसकी होन-हार की पहचान बिलकुल सही होती थी। मैने जब अन्तिम बार उसके विषय में कुछ सुना तो वह ओजिल्लाला वश के एक बहादुर आदिवासी के आधीन

था और काक-जाति के आदिवासियो के विरुद्ध युद्ध में सम्मिलित हुआ था।

अधेरा बढ़ने पर, जब चिडियो की आवाजो का स्थान झींगुरो की आवाज ने ले लिया, तब हमने भी तम्बू में आकर ज़मीन पर ही अपने कम्बल बिछाये और अपनी काठियो को सिरहाने रख कर लेट गये। इस मौसम मे हमने पहली बार शहर से बाहर डेरा डाला था। हर आदमी ने तम्बू में अपना वही स्थान चुन लिया, जो उसे सारी यात्रा भर अपनाना था। देस्लारियर को गाडी मिली। वह उसमें बरसात मे छिपकर भी सो सकता था और इस प्रकार अपने मालिको से भी अधिक अच्छे बचाव में था।

यहाँ पर कसास नदी शावानू और देलावारे नामक आदिवासियों के प्रदेशो की सीमा बनाती है। अगले दिन हमने यह नदी पार की। बहुत कठिनता से अपने घोडो और सामान को हम पार पहुँचा सके। अपनी गाडी भी हमें खाली करनी पडी ताकि दूसरे किनारे की सीधी चढाई पर उसे चढ़ाया जा सके। इतवार का दिन था। दिन कुछ गर्म, उजला और शान्त था। चारों ओर देलावारे लोगो के छोटे-छोटे घरो और उजाड खेतो पर शान्ति छाई हुई थी। कही-कही छोटे जन्तुओ या कीडो की आवाज सुनाई देती थी। जब तब कोई आदिवासी घोडे पर चढ़कर उधर से सभा-घर की ओर जाते हुए गुजरता या कोई बुढ़िया किसी टूटे-फूटे, लट्ठो से बने मकान के टूटे से दरवाजे पर बैठी सुस्ताने का मजा लेती हुई दिखाई दे जाती थी। देलावारो के इस गाव मे कोई घण्टी न थी, क्योंकि उनके यहा इसका रिवाज़ ही नही था। इस पर भी इस एकान्त और बेतरतीब बस्ती में भी हफ्ते के सातवे दिन की-सी वैसी ही शान्ति छाई हुई थी, जैसी न्यू हैम्पशायर के पर्वतो में बसे न्यू इंगलैड के किसी गांव में अथवा वेर्मौण्ट के जगलो में पाई जाती है।

यहा से फोर्ट लीवनवर्थ की ओर एक सैनिक-सडक गई है। कुछ मील दूर तक इस सड़क के दोनो ओर देलावारे लोगो के मकान थोड़ी-थोडी दूरी पर बने हुए है। इस इलाके में जगली राह के किनारे लठ्ठो के बने ये छोटे-छोटे झोंपडे राह को आकर्षक बना रहे थे। यहा प्रकृति के नजारे भी कम सुन्दर न थे। उन्हे सजाने के लिये बाहरी सहायता की ज़रूरत न थी। बडे-बड़े मैदानो और झाडयो का मिला-जुला रूप या अनेक छोटी-मोटी धाराओ के किनारे खुलने वाले उनके हिस्से, सदियो से इन्सान द्वारा सजाये गये, धरती

के टुकडो से कम लुभावने नही थे। उस अधखुले मौसम मे भी यहाँ की ताजगी पूरे उभार पर थी। जगल मे अजीरो जैसे लाल फूलो के गुच्छे और दूसरे बहुत से, पूरब में अनजाने, फूल भी भरपूर लदे हुए थे। इनके साथ ही मैदान की हरियाली खिले हुए फूलो के रंगो से मिलकर रग-बिरगी हो उठी थी।

यह रात हमने एक पहाड़ी के पास के सोते के किनारे पर बिताई। अगले दिन सुबह हम फिर चल पडे और दोपहर से पहले ही फोर्ट लीवनवर्थ पहुँच गये। यहा सडक एक ऐसी धार के पार गई थी, जिसके दोनो ओर घने पेड लगे हुए थे। यह धार एक जगली खड्ड के गहरे में बह रही थी। हम इसमे उतरने ही लगे थे कि हमे एक उलझनभरा-सा जत्था नीचे पानी पार करके अपनी ओर ऊपर आता दिखाई दिया। हमने रुक कर उन्हे गुजर जाने दिया। ये लोग देलावारे जाति के ही के थे, जो अभी-अभी लम्बे शिकार से लौट रहे थे। मर्द और औरते—सभी घोडो पर सवार थे। उनके साथ ही बहुत से, सामान ढोने वाले, टट्टू भी थे। उन पर रोएदार खाले, भैंसो की खाले तथा पतीली आदि घर के जरूरी सामान तथा कपडे और हथियार लदे हुए थे। ये सभी चीजे बहुत ही मैली-कुचैली थी, मानो ये बहुत अधिक काम मे आई हो। इस सारे समूह के पीछे एक बूढा घुडसवार आ रहा था। हमसे बात करने के लिए वह रुक गया। वह एक काले से गठे हुए टट्टू पर चढ़ा हुआ था। उस टट्टू की सटा और पूछ के बाल किन्ही विशेप फलियो मे बाधे हुए थे। उसके मुह मे लोहे की जग खाई हुई स्पेनी लगाम पडी थी, जिसके दोनो ओर रास की जगह भैंसे की खाल की पेटिया बधी हुई थी। उसकी काठी नगी थी। यह शायद किसी मैक्सिको निवासी से छीनी गई थी और स्पेनी तरीके की यह सूखी काठ की ही थी। इस पर सलेटी रग के भालू की खाल मढी हुई थी और दोनो ओर लकडी की बनी दो रकावे लटक रही थी। पेटियो के न होने के कारण एक खाल ही इस पर से होती उसके पेट के चारो ओर बधी हुई थी। इस सवार का घना रग और साप की सी तेज आँखे साफ बता रही थी कि वह आदिवासी है। उसने हरिण की खाल की कमीज पहनी हुई थी। यह उसके झालरदार पाजामो की ही भाति चर्बी की रगड और घिसने आदि के कारण काली पड चुकी थी। उसके सिर पर एक रूमाल

बधा हुआ था। उसके सामने ही राइफल टिकी हुई थी। इस हथियार के चलाने में देलावारे लोग बहुत सधे हुए माने गये है, जबकि इसके बोझिल होने के कारण दूसरे आदिवासी इसे साथ ले जाने मे कतराते है।

उसने तुरन्त ही पूछा, "तुम्हारा सरदार कौन है ?"

हेनरी ने हमारी ओर इशारा किया। उस वृद्ध ने अपनी आँखे एक क्षण के लिए हम पर गड़ा दी और एकदम ही अपना निर्णय-सा देते हुए कहा, "बहुत बुरा ! अभी बहुत जवान है।" इस टिप्पणी द्वारा हमारे प्रति अपमान दिखाकर वह हमें छोड़कर अपने लोगो के पीछे ही चला गया।

ये देलावारे लोग विजेता इरोक्वा के सहायक रहे थे। कभी ये विलियम पैन के भी शान्तिपूर्ण मित्र रहे थे। परन्तु, अब ये ही इन मैदानों के सबसे भयकर योद्धा थे। अब ये बहुत दूर-दूर के उन कबीलो पर भी हमला करते है, जिनका नाम इनके पुरखो ने भी कभी न सुना होगा। इनकी लडाई में अब भी आदिवासियों का सा ही जोश और तरीका था। ये अपने योद्धाओं के दल रॉकी पर्वतमाला और मैक्सिको तक हमले के लिए भेजते है। इनके पडौसी और पुराने साथी शावानू लोग अब खेती पर गुजर करते है और अच्छी बढती पर है। पर, देलावारे लोग हर साल घटते चले जाते है, क्योकि इन युद्धो मे हर साल आदमी मारे जाते है।

इस दल को छोडकर आगे बढते ही हमने मिसूरी नदी के साथ-साथ बढने वाले दाई ओर फैले विशाल जंगलो को देखा। मिसूरी नदी यहाँ इन्ही घने जगलो के बीच से होकर वह रही है। नदी के मोड़ पर, सामने ही कुछ दूर हमे पेडो मे से झाँकते हुए फोर्ट लीवनवर्थ के कुछ ऊँचे निशान दिखाई दिये। हमारे और मिसूरी नदी के बीच एक हरी चरागाह वाला मैदान फैला हुआ था। इसी मैदान मे एक झरने के किनारे के वृक्षो के पास ही कप्तान और उनके साथियो का तम्बू गडा हुआ था। उसके आस-पास ही उनके घोडे चर रहे थे। पर कप्तान आदि स्वय नही दीख रहे थे। उनकी खच्चरों को संभालने वाला, राइट वही गाडी के जुए पर बैठा गद्दी आदि की मरम्मत कर रहा था। बोइस्फेर्ड तम्बू के दरवाजे के पास ही अपनी राइफल साफ कर रहा था। सोरेल भी वही पर सुस्ता रहा था। बहुत ध्यान से देखने पर हमने कप्तान के भाई जैक को भी पहचान लिया। वह तम्बू में बैठा रस्सियां जोड़ने

के अपने पुराने काम में जुटा हुआ था। पहुँचने पर उसने अपने आयरिश लहजे में हमारा स्वागत किया और बताया कि कप्तान मछलियो के शिकार की ओर और र—सेना की ओर गये है। वे दोनो भी सूरज छिपने से पहले ही लौट आये। इसी बीच हमने भी उनके समीप ही अपना तम्बू गाड लिया था। भोजन के बाद एक सभा हुई और यह निश्चय हुआ कि यहा एक दिन और ठहर कर फिर सीमान्त की ओर कूच कर दिया जाय। यहा की भाषा में ऐसे कूच को "कूद जाना" भी कहते है। हमारी यह विचार-सभा एक हलके से प्रकाश मे हुई। यह प्रकाश बहुत दूर पर मैदान में जलने वाली पिछली गर्मियो की सूखी घास की लपटो के कारण हो रहा था।

— ० —
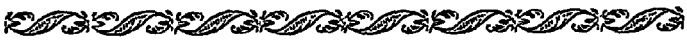
३ : फोर्ट लीवनवर्थ

अगली सुवह हम फोर्ट लीवनवर्थ की ओर चले। कर्नल कीर्नी अभी पहुँचे ही थे। इनसे मैं पहले सेण्ट लुई में भी परिचित हो चुका था। अव ये जनरल वन चुके है। इन्होने अपने स्वभाव के अनुसार आगे वढकर हमारा आदर-सत्कार किया। यह स्थान कोई किला नही है। इसके चारो ओर सुरक्षा की दीवारें भी बनी हुई नही है। केवल दो वडे मकान बने हुए है। यहाँ शान्ति विद्यमान है। इधर युद्ध की कोई अफवाह नही पहुँची है। घास का एक चौकोर मैदान है। उसके चारो ओर वैरकें और अधिकारियो के मकान वने हुए है। कुछ आदमी इसी जगह पर आ-जा रहे थे और कुछ वृक्षो के नीचे सुस्ता रहे थे। अव से कुछ सप्ताह वाद यहाँ की हालत पलटी हुई थी। उस समय यहाँ सान्ता फे की चढाई पर जाने वाले सीमान्त के अनेको खोजी जमा हुए थे।

सेना के पडाव से गुजरते हुए हम किक्कापू गाँव की ओर गये। यह यहाँ से ५-६ मील परे होगा। राह वड़ी अनिश्चित और सन्देह भरी थी। यह हमें मिसूरी के सीमान्त पर उठने वाली दोनो ओर से ढलवाँ पहाड़ियो तक ले गई। यहाँ से दाई और वाई ओर देखकर हम दो किस्म के विरोधी नज़ारों का मजा ले सकते थे। वाईं ओर मीलो दूर तक मैदान फैला हुआ था। इसमें टीले और खड्ड दूर से ही दीख रहे थे। अनेक खाइयाँ भी दीख रही थी। या फिर दूर-दूर तक घास ही फैली नज़र आती थी। दूर सीमा पर उठने वाली पहाडियो पर वृक्षो की पक्तिया भी धूप मे चमकती नजर आ रही थी। इस सुन्दर दृश्य में खिचाव, मौसम की ताज़गी और जलवायु की अनुकूलता के कारण, और भी वढ़ गया था। हमारे नीचे, दाई ओर टूटे और उजाड जगलों का ही फैलाव था। हम हरे और सूखे पेड़ो की चोटियाँ साफ-साफ देख सकते थे। इनमें कुछ तने खडे थे, कुछ झुके हुए थे और ववण्डर मे गिर कर ढेरो के रूप मे जमा हो गये थे। उनसे परे, उनकी शाखा मे से झाकने पर, मिसूरी का मचलता हुआ गदला पानी साफ पहचाना जा सकता था। परले किनारे की ओर इसकी धार अधिक तेज़ थी।

यहाँ से रास्ता अदर की ओर मुड गया था। एक खुली चरागाह मे आते ही हमने एक ऊँची जमीन पर कुछ मकान देखे। बहुत से आदमी इन के चारो ओर खडे थे। किक्कापू गाँव के व्यापारी की ये दुकानें, मकान और घुडसाल थे। इस समय वह उस वस्ती के आधे से अधिक लोगो से घिरा हुआ था। उन लोगो ने अपने दर्जनो छोटे, कमजोर और उपेक्षित टट्टू बाड के जगले और वाहरी कोठरियो के पास बाधे हुए थे और वे स्वयं दूकान मे या आस-पास जमा थे। इनमे सभी रंग के चेहरे मौजूद थे—लाल, हरे, सफेद और काले। सभी के चेहरे अजब तरह से घुले-मिले और अनेक प्रकार के थे। सूती कमीजे, लाल-नीले कम्बल, पीतल के बुन्दे और विशेष दानो वाले हार आदि उन लोगो के शरीर पर काफी सख्या में दिखाई दे रहे थे। व्यापारी की आँखें नीली और चेहरा चौडा था। उसका वेश और उसका व्यवहार उसे ठेठ सीमान्त का ही वता रहे थे। इस समय उसके चारो ओर आदमी और स्त्रियाँ ग्राहको के रूप मे जमा थे और पेटियो आदि पर बैठे थे। इस समय उसकी आँखे बिल्ली की सी लग रही थी।

गाँव यहाँ से अधिक दूर न था। उसे देखते ही उसके निवासियो की दुर्भाग्य और उदासी से भरी हालत का साफ-साफ पता चल जाता था। उसका अनुमान करने के लिए जगल की घाटी में से वहनेवाली किसी पतली सी तेज धारा की कल्पना कीजिए जो कभी गिरे हुए पेडो या लट्ठो के नीचे छिपती चल रही हो और कभी खुले मैदान मे वहने लगती हो, या एक छोटी झील के रूप में वदल जाती हो। इस धारा के किनारे पर ही पेडो के बीच मे जगह साफ करके वनाये हुए छोटे-छोटे लट्ठो के घरो की कल्पना भी कीजिए, जो बिल्कुल ही टूटे-फूटे और लापरवाही से रखे हुए हो। इन मकानो को आपस में पतली-सी पगडण्डियाँ ही एक दूसरे से मिलाती थी। यहा हमे कभी कोई छुटा हुआ वछडा या कोई पालतू सूअर अथवा टट्टू मिल जाता था, जिसका स्वामी अपने ही घर के आगे लेटा हुआ धूप सेक रहा होता था। ऐसे लोग पास जाने पर हमें लापरवाही और सन्देह की निगाह से देखते थे। कुछ आगे वढने पर हमे इन लोगो के पडौसी पोत्तावत्तामी जाति के लोगो के घर मिले। उनके घरो को 'पुक्वी' कहते है। उनके घर इन लोगो के घरो से अधिक अच्छी दशा मे थे।

अन्त मे तेज गर्मी और उमस से परेशान होकर और थक कर हम अपने मित्र-व्यापारी के ही पास लौट आये। इस समय तक उसके चारो ओर की भीड़ कम हो गई थी। अब वह आराम कर रहा था। उसने हमें पुराने फ्रांसीसी तरीके के अपने सफेद और हरे रग के मकान में अन्दर बुलाया और एक सजे-धजे कमरे में ले गया। खिड़कियो के परदे गिराकर धूप से बचाव कर दिया गया। किसी घाटी की ही भाँति कमरा भी ठण्डा था। इसके फर्श पर गलीचा बिछा हुआ था। इसकी सी सजावट इस इलाके में पाने की आशा नही की जा सकती। सोफे, कुर्सियां, मेजें और किताबो की छोटी अलमारी आदि सभी चीजे पूरवी इलाके के सभ्य घरो की ही भाँति थी। एक-दो चीजे ऐसी भी पड़ी थी, जिनसे इस इलाके की सभ्यता की झलक भी मिल जाती थी। एक भरी हुई बन्द पिस्तौल सामने अगीठी पर पड़ी थी। इसी तरह, किताबो की अलमारी के शीशे में से दीख रहा था कि मिल्टन की पुस्तको के ऊपर ही एक बहुत खतरनाक चमकती छुरी रखी थी।

हमारा मेजबान कुछ देर के लिये बाहर गया और जब लौटा तो वह ठण्डा पानी, गिलास और शराब की एक बोतल साथ लेता आया था। इस भयकर गर्मी में ये चीजें निश्चय ही सबसे अधिक अच्छी थी। इसके कुछ ही देर बाद एक बहुत ही भली और हँसती हुई औरत आई वह यूरोपीय और अमरीकी खून की मिली जुली निशानी थी। निश्चय ही वह आज से एक-दो साल पहले बहुत सुन्दर रही होगी। उसने हमे बताया कि हमारे लिये साथ के कमरे में भोजन तैयार था। हमारा स्वागत करने वाली यह गृह-स्वामिनी जीवन के आनन्द से ही परिचित थी। उसे किसी भी चिन्ता से मतलब न था। हम भोजन के समय मछलियों के शिकार एव किले के अधिकारियो के जीवन की घटनाएँ सुनने में लगे हुए थे और वह वहीं बैठ कर हमारा सत्कार कर रही थी। काफी देर बाद इस सत्कार-प्रेमी व्यापारी और उसकी मित्र से विदाई लेकर हम फिर से छावनी लौट आये।

शॉ अपने डेरे की ओर चला गया, पर मै जनरल कीर्नी से मिलने के लिये रुक गया। वह अब भी मेज पर बैठा था। उसके साथ ही हमारा साथी कप्तान भी बैठा था। उसकी वेशभूषा इस समय वैसी ही थी, जैसी हमने वैस्टपोर्ट मे देखी थी। हाँ, काला पाइप इस समय जरूर एक ओर रखा

हुआ था। वह अपनी टोपी हाथ में घुमा रहा था और यात्रा में अपनी घुडसवारी और कभी-कभी होने वाले भैंसे के शिकार की बात सुनाता जा रहा था। वहा र—भी बैठा था। उसकी पोशाक अधिक अच्छी थी। इस समय हमने अंतिम बार सभ्यता के आनन्द चखे और इसी खुशी में, अपनी विदाई के गम को भुलाने के लिये शराब पी। तब फिर से घोडो पर चढकर अपने डेरो पर वापिस लौट आये। यहाँ अगले दिन के कूच की तैयारी पूरी हो चुकी थी।

—:o:—

४ : कूच

समुद्र-पार के हमारे साथी यात्री इस यात्रा के लिए पूरी तरह तैयार थे। उनकी गाडी मे छह टट्टू जुते हुए थे। उसमे कम से कम छह महीने के लिए सामान भरा हुआ था। इनके अलावा गोली-बारूद भी काफी मात्रा में था। कुछ राइफलें, छोटी शिकारी बन्दूकें, रस्सिया, काठियाँ, निजू सामान और अन्य कई प्रकार की छोटी-मोटी चीजे भी लदी हुई थी। इतनी अधिक चीजो के कारण कठिनाई भी होती है। उनमें से हर एक के पास दूरबीन और दिशा देखने वाला यन्त्र भी था। साथ ही, हर-एक ने एक-एक बडी अंग्रेजी दुनाली बन्दूक भी जीन में, सैनिको के समान ही, लटका रखी थी।

तेईस मई की पौ फटने तक हम नाश्ते से निबट चुके थे। तम्बू उखाड़ कर घोडो को कसा जा चुका था और यात्रा की सब तैयारी पूरी हो चुकी थी। देम्लारियर ने टट्टुओं को उठकर आगे चलने के लिए आवाज दी। हमारे मित्रों का गाडीवान राइट बहुत कोशिश के बाद अपने पशुओ को चलाने में सफल हुआ। गाड़ियो के चलते ही और सब यात्री भी पीछे-पीछे चल पड़े। इस प्रकार हमने बहुत बडे अरसे के लिये बिस्तरो और घर के सुख आदि को छोड़ दिया। यह दिन बहुत ही अच्छा और महत्वपूर्ण था, पर मुझे और शॉ को कुछ सन्देह थे, जो बाद में चल कर सच्चे सिद्ध हुए। हमें उसी समय पता चला कि यद्यपि र—ने इस रास्ते को हमसे बिना पूछे खुद ही चुना था, पर सारे दल मे से एक भी व्यक्ति इस रास्ते से परिचित न था। इस प्रकार से बढने का परिणाम एक-दम ही सामने आ गया। उसकी योजना के अनुसार हमें पिछले वर्ष जनरल कीर्नी के नेतृत्व मे फोर्ट लारामी जाने वाली कुछ सैनिक टुकडियो की राह पर चलना था। इस तरह वह ओरेगन की ओर जाने वाले यात्रियो की प्लाट् नदी के पास से जाने वाली बड़ी सड़क तक पहुँचना चाहता था। हम एक-दो घण्टे तक इसी तरह चलते रहे। इसी समय सामने परिचित मकानो का एक समूह दिखाई दिया। अपनी बाड़ के ऊपर से ही किक्कापू के व्यापारी ने हमें सम्बोधन करके पूछा, "कहो किधर आ रहे हो?" जब हमनें

देखा कि हम रॉकी पर्वत-माला के रास्ते से विपरीत दिशा पे मीलो दूर निकल गए है, और अपनी मजिल की ओर एक इच भी नही बढे, तो हममें से बहुतो ने उल्टी-सीधी बाते कही। इस व्यापारी ने हमें सीधा रास्ता बताया और सूर्य की ओर मुख करके हम मैदानो की ओर रास्ता खोजते बढने लगे। हमें छोटे और बडे पेड़ो में से राह खोजनी पडी, झरने और जोहड पार करने पडे, और मीलो तक फैले हुए हरे-भरे मैदानो में से गुजरना पडा। ये मैदान बहुत अधिक जगली थे। शायद मात्सेप्पा को भी इतने जगली मैदानो मे से गुजरना न पड़ा होगा।

"न मनुष्य और न पशु,
न खुर के निशान और न पद-चिन्ह,
उस फैली जगली धरती पर दीखते थे,
न कोई यात्रा का चिन्ह था, न किसी मेहनत का,
जैसे हवा भी गूगी हो उठी हो।"

आगे-आगे बढते हुए जब हम इन बडे मैदानो मे से एक से पार हुए। पीछे की ओर मुडकर देखने पर हमे मील भर से भी अधिक दूर तक बिखरे हुए घुडसवार आते दिखाई दिए। इस सारे समूह के अन्त मे सफेद छत वाली बैलगाड़िया आ रही थी। कप्तान ने खुशी मे चिल्लाकर कहा, "आखिर हम यहाँ आ ही पहुचे है।" सच यह था कि यहाँ आकर हमे घुडसवारों की एक बहुत बडी राह मिल गई थी। हम बडी प्रसन्नता के साथ इस राह पर बढ गये। इस समय हमारे भाव पहले से काफी ठीक हो गये थे। सांझ के समय हमने एक ऊँचे टीले पर अपना डेरा जमाया। इससे नीचे की ओर एक धारा लम्बी घास में से होती हुई बह रही थी। अधेरा बढ़ने लगा। हमने घोड़ो को चरने के लिए छोड दिया। हेनरी ने चेतावनी देते हुए कहा, "आँधी चलने वाली है, इसलिये तम्बू गहरे करके गाड़ो।" हमने उसका कहना मानकर तम्बू को अधिक से अधिक सुरक्षित कर लिया। इस समय तक आकाश बिल्कुल पलट गया था हवा मे सिलाव की गन्ध से हमे यह पता चल गया था कि दिन के साफ आकाश और सूर्य की गर्मी के बाद आने वाली रात बहुत ही तूफानी बन कर आयेगी। इस समय मैदान भी नया रूप धारण कर उठा था। इसके टीले बादलो की छाया में अधिक काले और गहरे रंग के हो

उठे थे। जल्दी ही कुछ दूरी पर बादलो की गरज सुनाई देने लगी। अपने शिविर के पास की ढलान के नीचे, घास के एक मैदान मे, हमने घोड़ो की अगली टांगें जकड कर उन्हे बाध दिया। अभी हम तम्बू मे पहुँच भी न पाये थे कि वर्षा शुरू हो गई। तम्बू के दरवाजे पर बैठ कर हम कप्तान को देखने लगे। वह अपना लम्बा चोगा पहने, इस वर्षा मे भी, घोड़ो के बीच घूम रहा था। उसे यह भय सता रहा था कि कही उसका कोई प्रिय घोडा भाग न जाय या उसके साथ कोई और दुर्घटना न हो जाय। उसकी निगाह दूर मैदान में दिखाई देने वाले तीन भेडियो की ओर लगी हुई थी, जैसे उसे उनकी ओर से कोई भय था!

अगली सुबह हम एक-दो मील भी न गये होगे कि अत्यन्त फैले हुए जगल दिखाई दिये। इनके बीच मे से एक चौडी और गहरी धारा बह रही थी। इसमे कीचड मिला पानी अधिक था; इसीलिये धोखे का डर भी अधिक था। देस्लारियर गाडी को लिए आगे-आगे चल रहा था। उसने अपना पाइप झटकाया और टट्टुओ पर चाबुक और गालियो की बौछार करने लगा। उसने गाडी नदी मे धसा दी, पर वह बीच मे ही फँस कर रह गई। वह स्वयं घुटनो गहरे पानी मे उतर पड़ा। चाबुको की मार और भगवान् की दया से वह टट्टुओ को उस दलदल में से बाहर निकालने मे समर्थ हो गया। तभी हमारे साथियो की गाडी भी किनारे पर आ पहुँची। पर यह रुक गई।

कप्तान का ध्यान धारा की ओर था। वह बोला, "मेरी राय मे—"

उसकी बात काट कर र—चिल्ला पड़ा, "बढ़ते चलो!"

परन्तु गाडीवान राइट अभी तक अपना मत स्थिर न कर सका था। वह अब भी एक जुते हुए टट्टू पर ही बैठा हुआ कुछ सोच रहा था और उसी दशा में सीटी बजा रहा था।

कप्तान ने अपनी बात फिर पूरी की, "मेरी राय में हमे सामान उतार कर गाडी को हलका कर देना चाहिए। मै शर्त लगाकर कह सकता हूँ कि अगर हमने ऐसे ही धारा पार करने की कोशिश की तो हम फँस जायेंगे।"

उसके छोटे भाई जैक ने भी तुरन्त हामी भरी, "हाँ, हम फँस जायेंगे!" और पूर्ण निश्चय के साथ उसने अपना सर हिला दिया।

विरोध करते हुए ज़िद्दी र—फिर चिल्ला पड़ा, "आगे बढ़ो! बढते

चलो !"

अपने साथियो की इस हरकत को देखते हुए हम प्रसन्न से बैठे थे। हमारी ओर देख कर कप्तान ने कहा, "अच्छा ! मै तो केवल सलाह ही दे सकता हूँ। अगर किसी को नही माननी तो न माने।"

इस बीच राइट अपना इरादा बना चुका था। उसने तुरन्त ही गालियो की बौछार शुरू कर दी। देस्लारियर ने फ्रैंच भाषा मे जो कुछ कहा था, राइट की गालिया भी उससे मिलती जुलती ही थी। पर ऐसा लगता था कि छोटे मोटे पटाको के बाद अब जैसे कोई तोप गोले उगलने लगी हो। इसके साथ ही उसने अपने खच्चरो को मुक्के भी मारने शुरू किये और वे बहुत जल्दी ही कीचड मे धँस पडे। गाडी उनके पीछे घिसटती रही। कुछ देर को लगा कि शायद गाडी पार न हो पाएगी। परन्तु, तभी राइट अपनी काठी पर जमकर एक पागल की भाँति गालियो और चाबुक की बौछार करने लगा। इन छोटे-छोटे खच्चरो पर नदी पार जाने का भरोसा ही और कौन कर सकता था ? इस कठिन मौके पर इन सब खच्चरो को मिलकर काम करना चाहिये था, पर इसी समय ये एक दूसरे को धक्का देकर गाडी से अलग हो गये और धारा के दूसरे किनारे पर फिर से इकट्ठे हो गए। गाडी धुरी तक कीचड मे धँस गई थी और हर क्षण अधिक धँसती जा रही थी। इसे खाली करने के अलावा और कोई चारा नही रह गया था। तब इसके नीचे से कीचड खाली करके तथा झाडियें और शाखें आदि बिछाकर गाडी को निकालने का रास्ता तैयार करना जरूरी था। यह सब मेहनत करने पर बहुत देर बाद ही गाडी बाहर आ सकी। अगले पखवाडे मे इस तरह की कोई न कोई रुकावट दिन मे चार पाच बार आ ही जाती थी। इसीलिए प्लाट् नदी की ओर हमारी चाल बहुत धीमी रही।

छ-सात मील और आगे जाकर हमने दोपहर बिताने के लिए पडाव डाला। यात्रा फिर शुरू करने से पहले जब सब घोडो को खोल कर पानी पीने भेजा गया, तो मेरा घर लौटने के लिए उतावला घोडा—पौन्टियक—एक दम ही उछल कर धारा के पार चला गया और पुराने इलाको की ओर तेजी से दौडने लगा। मै अपने दूसरे घोडे पर चढकर उसके पीछे-पीछे भागा। एक छोटा चक्कर काटकर मै उसके आगे निकल गया और उसे लौटा लाने की

आशा करने लगा। पर वह तभी बहुत लम्बी छुलाँगे मारता हुआ मैदान मे बहुत दूर तक निकल गया और थोडी देर बाद फिर से मेरे पास लौट आया। मैने बार-बार उसे पकडना चाहा पर नतीजा वही रहा। पौन्टियक इस मैदान से उकता गया था। इसलिए मैने एक और उपाय बरतने का निश्चय किया। मै उसके पीछे धीरे-धीरे चलने लगा। मुझे आशा थी कि मै उसकी गर्दन से लटकने वाली खोजी रस्सी को उसके काफी दूर से ही पकड लूँगा। मेरा यह पीछा मजेदार होता गया, क्योकि मीलो तक मै उस दुष्ट को बिना चौकन्ना किए उसके पीछे चलता गया और धीरे-धीरे उसके नज़दीक आता गया। अन्त मे मेरा घोडा उसके इतने पास पहुँच गया कि उसकी पूँछ हिलने से उसकी नाक को छूने लगी। मै लगाम खीचने की अपेक्षा धीरे से धरती पर उतर गया। उतरते समय मेरी बन्दूक काठी से टकरा गई और इसकी आवाज से चौक कर वह भाग खडा हुआ। घोडे पर फिर से चढ कर मैने मन ही मन कहा,—"मेरे मित्र, अब अगर ऐसा किया तो मैं तुम्हे गोली मार दूँगा।"

यहा से लीवनवर्थ का क़िला चालीस मील दूर था। मैने वहाँ तक उसका पीछा करने का फैसला किया। मैने अकेले ही बिना भोजन किए रात बिताने का निश्चय किया और सुबह होते ही फिर आगे बढने का इरादा बनाया। अब भी एक आशा बाकी थी। जहाँ हमारी गाडी कीचड मे धँस गई थी वह जगह सामने ही थी। हो सकता है इस दौड के कारण पौन्टियक प्यासा हो उठा हो और वह पानी पीने के लिए रुक गया हो। जितना हो सकता था, मै उतना उसके पास होकर चल रहा था। पर साथ ही मै उसे किसी प्रकार चौकाना नही चाहता था। परिणाम मेरी आशा के अनुकूल ही हुआ, क्योकि वह पेडो मे छिपकर बढता हुआ पानी के पास तक जाकर रुक गया था। उतरकर अपने घोडे हेन्ड्रिक को थामे-थामे कीचड मे से पार जाकर मैने बहुत सतोष के साथ पौन्टियक की खोजी रस्सी उठाली और उसे बाँह पर तीन बार लपेट कर कस लिया। दूसरे घोडे पर चढते हुए मैने मन ही मन कहा,—"अब तुम जरा भाग कर देखो।" पर पौन्टियक लौटने पर तुरन्त राजी न हुआ। हेन्ड्रिक भी लौटने के लिए राजी न था। उसे मेरा विवश करना अच्छा न लगा। वह यह समझ कर प्रसन्न था कि हम घर की ओर लौट रहे है। अब उसे चाबुक लगते ही होश आ गई। वह फिर से खुशी-खुशी डेरे की ओर, पौन्टियक

को पीछे-पीछे घसीटते हुए बढने लगा। एक-दो घण्टे बाद सूरज के छिपते समय मैंने मैदान के एक टीले पर गढे तम्बुओ को देखा। यह एक जंगल के पीछे दिखाई दे रहे थे। इनके पास ही एक चरागाह में घोडे चर रहे थे। वहाँ जैक चौकडी मार कर बैठा हुआ रस्सियाँ जोड रहा था और बाकी सब घास पर लेटे हुए तम्बाकू पी रहे या कहानिया सुन-सुना रहे थे। उस रात हमने भेडियो के समूह का एक संगीत सुना, जो अब तक के ऐसे सब सगीतो से अच्छा था। सुबह हमने उन भेडियो मे से एक को तम्बुओ के पास ही घोडो के बीचो-बीच बैठे देखा। वह अपनी सलेटी रग की आँखो से हमारी ओर देख रहा था। पर, अपनी ओर बन्दूक तानी जाती देख कर वह तेजी से उछला और एक दम भाग निकला।

अगले एक या दो दिन का वर्णन मे छोड रहा हूँ, क्योकि उन दिनो कोई खास बात नही घटी। अगर कभी मेरे किसी पाठक का दिल इन मैदानो को देखने का करे, और वह प्लाट् का यही "सबसे बढिया" रास्ता अपने लिए चुने, तो मै विश्वास दिलाते हुए उसे कहूँगा कि वह तुरन्त ही अपनी कल्पना के लोक मे पहुँचने की उम्मीद न रखे। उसे अपनी कल्पना के 'महान अमरीकी रेगिस्तान' मे पहुँचने से पहले कुछ नीरस और भयावह भाग भी पार करना होगा। यह रेगिस्तान एक उजाड-वियावान प्रदेश है। यहाँ भैसो और आदि-वासियो का पीछा किया जा सकता है। सभ्यता यहाँ के आदिवासियो से कोसो दूर रहती है। इससे पहले का इलाका कुछ अधिक फैला हुआ और उपजाऊ है, और दूर सीमान्त तक सैकडो मील मे फैला हुआ है। यह इलाका ही इस मैदान के आकर्षक रूप को बताता है। इसी इलाके ने ही अनेको यात्रियो, चित्रकारो, कवियो और उपन्यासकारो की कल्पनाओ को रगीनी दी है। वे लोग कभी इससे आगे न बढे होगे। अगर कोई दर्शक चित्रकार की सी नज़र रखता हो तो वह यहा पर अपनी साधना का समय बहुत चाव के साथ बिता सकता है। यहाँ के नजारे बहुत अच्छे तो नही है, पर तो भी उनमे सुन्दरता और आनन्द ज़रूर है। यहा समतल मैदान इतने फैले हुए है कि उन्हें एक नजर में पूरा आँका भी नही जा सकता। ऊँची-नीची हरियाली ऐसी लगती है जैसे समुद्र मे कुछ स्थिर टीले उठे हुए हो। यहा नदियो की धारे, जगलो से घिरी हुई और बिखरी हुई अमराइयो मे से बहती हुई, बहुत बडी सख्या में

मिलती है। ऐसा यात्री भले ही कितना ही उत्साही हो, पर कुछ जगह उसका उत्साह भी बुरी तरह टूट जायगा। उसकी गाडियाँ कीचड़ में धँस जायँगी। उसके घोडे बन्धन तुडाकर भाग जायेंगे। जुग्रा टूट जायेगा और धुरी की लकडी कमज़ोर साबित हो जाएगी। प्राय उसे बहुत घने काले कीचड पर ही सोना मिलेगा। भोजन के रूप में उसे बिस्कुटो और नमकीन चीज़ो पर ही सन्तोष करना होगा। क्योकि चाहे यह बात अजीब ही लगे, इस इलाके में शिकार बहुत कम मिलता है। आगे बढने पर, ऐसा यात्री, अपनी राह की घास मे से चमकते हुए बारहसिंगे के बडे-बडे सीगो को भी चमकता हुआ देखेगा। और कुछ आगे चलकर उसे भैंसो की बडी-बड़ी सफेद खोपड़ियाँ भी पड़ी हुई मिलेंगी। ये भैंसे कभी इसी उजाड़ प्रदेश में अनेको की सख्या में घूमा करते थे। हो सकता है कि ऐसा यात्री हमारे ही समान यहां पूरे पन्द्रह दिन तक घूमता रहे और हिरण के खुर बराबर भी कोई चीज़ उसे देखने को न मिले। बसन्त के दिनो मे यहाँ मैदानी मुर्गी तक भी मिलनी कठिन होती है। परन्तु इन सब कमियो को पूरा करने के लिए उसे यहाँ दूसरे असंख्य जन्तु घेरते हुए मिलेंगे। रात के समय भेडिये उसे अपने सगीत से मुग्ध करेंगे और दिन के समय वे उसके आस-पास, बन्दूक के निशाने की पहुँच में ही, मँडराते हुए दिखाई देंगे। उसका घोड़ा कभी-कभी अचानक ही बैंजर नामक जन्तु की माँद मे खुर फसा बैठेगा। उसे चारो तरफ दलदल और कीचड़ मे से टर्राते हुये हज़ारो मेढ़को की आवाज़े आएगी। ये मेढक हर रग, आकार और लम्बाई-चौडाई के मिलेंगे। यहा घोडे के पाँवो के नीचे से चुपचाप निकलते हुए या फिर रात के समय तम्बू मे सरकते हुये सैकडो साँप मिलेंगे। इसके साथ ही मडराते और भिनभिनाते असख्यो मच्छर उसकी पलको से नीद को भगा देंगे। जब कभी वह तपती धूप में फैले हुये मैदान की लम्बी यात्रा के बाद बहुत प्यासा होकर किसी जोहड के किनारे पानी पीने के लिए उतरेगा तो वह देखेगा कि उसके प्याले के तले पर अनेको मेढको के अण्डे या छोटे बच्चे हरकत कर रहे हैं। इस सबके साथ ही वह यह भी पायेगा कि प्रतिदिन सुबह एक तेज़ काटती हुई धूप उसे सताया करेगी और हर शाम को चार बजे के लगभग उसे लगातार एक तूफान उठता और बरसता मिलेगा।

एक दिन सुबह की थका देने वाली यात्रा के बाद दोपहर को सुस्ताने के

लिए हम खुले मैदान में ही रुक गये। कोई भी पेड़ दिखाई नही दे रहा था। पर पास ही के एक खड्ड में एक चश्मा अवश्य बह रहा था। वह बल खाता हुआ और कही-कही रुके हुए पानी के गड्ढे बनाता हुआ बढ रहा था। कही उसके तल मे कीचड जमा हुआ था। इस प्रकार वह एक बडी हलकी सी धार के रूप मे छोटी-छोटी झाडियो के बीच से होता हुआ और लम्बी घास की जडो को छूता हुआ आगे बढ रहा था। दिन बहुत ही गर्मी भरा और कठोर था। घोडे और खच्चर मैदान मे ही अपनी सुस्ती मिटाने के लिए लोट-पोट हो रहे थे। या फिर नीचे की झाडियो मे चर रहे थे। हम भोजन कर चुके थे। देस्लारियर अपना पाइप पीता हुआ घास पर ही घुटनो के बल बैठा हुआ था और बर्तनो को साफ कर रहा था। आगे बढ़ने का इशारा मिलने से पहले कुछ आराम कर लेने की नीयत से शॉ वही गाडी की छाया में लेटा आराम कर रहा था। हेनरी सोने से पहले सापो के निशान देख कर निश्चिन्त हो जाना चाहता था, क्योकि उसे इनसे ही सब से अधिक डर लगता था। उसने गाडी के पास जब कुछ सन्देह पैदा करने वाले बिल देखे तो उसके मुख से अनेको गालिया निकलने लगी। मै गाडी के पहिये के पास ही पडने वाली एक हल्की-सी छाया मे बैठा घोडे के पाँवो में बाधने वाली रस्सियो को ठीक कर रहा था, ताकि पौन्टियक की पिछली रात को तोडी हुई रस्सियो को उनसे बदल सकूँ। हमारे मित्रो का डेरा हमसे कुछ ही दूरी पर था। वहाँ भी इसी प्रकार की सुस्ती छायी हुई थी।

साँप के बिलो को देखना छोडकर ऊपर को सिर उठाते हुए हेनरी ने पुकारा—"अरे! यह तो हमारे कप्तान आ रहे है।"

कप्तान हमारे पास आकर चुपचाप खडा हो गया और हमें देखने लगा।

अन्त में वह बोला, "पार्कमैन! ज़रा उधर शॉ को देखो। वह गाडी के नीचे सो रहा है। उसके कधे पर गाड़ी की धुरी से लगातार मैला तेल टपक रहा है।"

यह सुन कर शॉ उठ पड़ा। उसकी आँखें अधखुली थी। इशारे के स्थान को छूकर उसने देखा कि उसकी लाल कमीज चिकनाई से भर गई है।

कप्तान ने हंसते हुए कहा, 'जब वह आदिवासी औरतो के बीच जायेगा, तब अच्छा न लगेगा। क्यो, यह बात ठीक है न?

तब वह भी गाडी के नीचे सरक आया और कहानियाँ सुनाने लगा। उसके पास कहानियों का अटूट भंडार था। रह-रह कर वह घोड़ो की ओर देखता रहता था। अन्त मे वह बहुत तेज़ी से उछल पड़ा और बोला, "देखो, वह घोडा उधर पहाड़ो की ओर भागा जा रहा है। अरे, वह भाग निकला शॉ! यह तुम्हारा ही बड़ा घोड़ा है। नही, नही, यह तुम्हारा नही है। यह जैक का घोड़ा है। जैक! जैक!" यह सुन कर जैक उछला और हमें खोई-खोई नज़रो से देखने लगा।

कप्तान गरजा, "जाओ, अपना घोडा पकड़ लाओ, नही तो वह खो जाएगा।"

जैक तुरन्त ही घास पर भाग निकला। पाजामे उसके पैरों मे अटकने लगे। कप्तान बहुत उत्सुकता से उसे देखता रहा। अन्त मे, घोड़ा पकड़े जाने के बाद वह चैन से बैठ गया। अब उसके चेहरे पर चिन्ता और गम्भीरता छा चुकी थी।

वह बोला, "मै तुम्हें समझा दूँ कि ऐसी बात हमें बहुत महगी पड़ेगी। एक दिन इसी तरह हम हर घोड़े को गायब पायेंगे और तब हमारी हालत बहुत बुरी हो जाएगी। मुझे अब भरोसा हो गया है कि हमें बारी बारी से घोड़ो पर पहरा देना होगा, खास कर जब भी हम डेरा डालें! मान लो, अगर सौ पौनी एक साथ ही हल्ला बोल दें, और इन घाटियो में से उछल कर अपने कपड़े फहराते हुए सामने आ जाएं, तब क्या होगा? दो, मिनट में ही ये सारे घोड़े आखो से ओझल हो जाएगे।" हमने कप्तान को सुझाया कि अगर सौ पौनी आ गये, तो निगरानी करने वाले के साथ हम सब को भी वे कुछ ही देर मे मिटा देंगे।

कप्तान बात बचा कर फिर बोला, "खैर, कुछ भी हो! हमारा सारा ढाँचा ही गडबड़ है। मुझे इस बात पर पूरा विश्वास है। हमारा सारा रंग ढग सैनिक तरीके का कतई नही है। जिस तरह से थोड़ी-थोडी दूर पर बिखरे हुए हम चलते है, उस तरह चलने से कोई भी शत्रु आगे चलने वाले को समाप्त भी कर दे, तो वह हमारे आने से पहले ही भाग जाएगा।"

शॉ बोला, "अभी हम दुश्मनो के इलाके में नही पहुँचे। जब हम उधर पहुँचेंगे, तब साथ-साथ यात्रा करनी आरम्भ कर देंगे।"

कप्तान बोला, "फिर डेरे में ही पडे-पड़े हम पर हमले की सम्भावना है। अगर हमारे पहरेदार न हो, और हम बेतरतीब ढंग से डेरा डाला करे, तो हमें कभी भी अचानक खतरे का सामना करना पड सकता है। मेरे मत में हमे डेरा एक गोलाई मे डालना चाहिए और बीच में आग सुलगानी चाहिए। हमे पहरेदार खडे करने चाहिए और उनके बीच पहचान का रोज़ ही कोई नया शब्द चुन लेना चाहिए। इसके साथ ही हमारे एक दो आदमी दल के आगे-आगे चलने चाहिएं, ताकि वे कुछ आगे बढ कर डेरे की जगह चुन लिया करें और दुश्मन के पास होने पर खतरे की सूचना दे दिया करें। यह मेरा निजी राय है। मै जबरदस्ती मनवाना नही चाहता। मैने तो सलाह देना उचित समझा। अब आप जानो, जैसी आपकी मर्जी हो।"

लगता था कि उसे यह सबसे ज्यादा पसन्द था कि दो आदमी दल के आगे-आगे चलते रहे। इस बात पर कोई भी आदमी उसका साथ देने को तैयार न था। इसलिए उस दोपहर बाद उसने अकेले ही आगे-आगे चलने की ठान ली। चलते हुए उसने मुझे भी अपने साथ चलने को पुकारा। हम दोनो ही साथ साथ निकल पडे और एक या दो मील आगे तक निकल गये। कप्तान पिछले बीस साल की सैनिक सेवा में बहुत कुछ सीख चुका था। वह स्वभाव से आनन्दी-जीव था। इसलिए उसके साथ चलने का अपना ही मजा था। वह एक या दो घण्टे तक लगातार कहानियाँ सुनाता रहा और मजाके करता रहा। हमने जब पीछे की ओर देखा, तो मैदान फैला हुआ नजर आया। कोई भी घुडसवार या गाडी दिखाई न दी।

कप्तान बोला, 'मेरे विचार मे हम दोनो को तब तक रुक जाना चाहिए, जब तक सब लोग हम से न आ मिले।"

मेरी भी यही राय थी। सामने काफी घने जँगल थे। उनके बीच मे से होती हुई एक छोटी नदी बह रही थी। इसे पार करके हम लोग दूसरी ओर की एक समतल चरागाह पर आ निकले। यह एक ओर पेडो से घिरी हुई थी। हमने अपने घोडे झाडियो के साथ बाँध दिये और वही घास पर बैठ गये। यहाँ बैठ कर मै अपनी नई बदूक की खासियत कप्तान को समझाने लगा। बहुत देर बाद कुछ दूरी पर, पेडो के पीछे से, आने वाले लोगो की आवाज सुनाई देने लगी।

कप्तान बोला, "उधर वे आ रहे हैं। आओ चल कर देखें कि वे लोग धारा किस तरह पार करते है ?"

हम घोडो पर चढ़ कर धारा तक आये। यहाँ से पगडंडी इस धारा के पार गई थी। धारा पेड़ो से भरे गहरे खड्ड से हो कर बह रही थी। जब हम ने नीचे की ओर देखा तो कुछ घबराये हुए घुडसवार नदी पार कर रहे थे। इन सब हमारे साथियो के साथ ही चार सैनिक भी चले आ रहे थे।

शॉ सब से पहले अपने घोडे को चाबुक मारता हुआ किनारे पर चढ़ आया। उसका चेहरा गुस्से से भरा था। सबसे पहले उसने र—के लिए गाली निकाली, जो सबसे पीछे-पीछे चलता आ रहा था। इसकी बेवक़ूफ़ी के कारण ही हम लोग रास्ता बिल्कुल भूल गये थे। हम प्लाट नदी की ओर न बढ कर, इयोवा आदिवासियो की ओर चल पड़े थे। यह बात हमे उन सैनिकों से पता चली। यह लोग बहुत दिन पहले लीवनवर्थ किले से निकल भागे थे। इन्होंने हमे बताया कि अच्छा होगा यदि हम उत्तर की ओर तब तक बढ़ते रहे जब तक ओरेगन के प्रवासियों द्वारा बनाई हुई राह तक न पहुँच जाएं। वे लोग इसी साल इस राह से गुज़रे थे।

इस प्रकार बहुत बुरी मानसिक हालत में हम यहां डेरा डाल कर रुके। सेना के भगोडे अधिक देर नही रुक सकते थे। इसलिए वे लोग तुरन्त ही आगे बढ गए। अगले दिन सेंट जोसफ की राह पकड़ कर हमने अपने घोड़ो का रुख लारामी किले की ओर मोड दिया। यह किला यहां से, सात सौ मील के लगभग, पश्चिम की ओर था।

—·०·—

५ : महानोल

ओरेगन और कैलीफोर्निया के प्रवासियो ने इंडिपैंडेन्स के पास के अपने डेरो में ही यह खबर सुनी कि सेट जोसफ से और भी कई दल उत्तर की ओर चलने वाले है। उनका ख्याल था कि ये लोग मोर्मन जाति के थे। इनकी सख्या तेईस सौ के लगभग थी। यह बात सुनते ही सब मे चिन्ता की एक लहर-सी दौड गई। इलिनोइस और मिसूरी के लोग इन प्रवासियो में सब से अधिक थे। उनका इन लोगो से कभी अच्छा सम्बन्ध न रहा था। ये लोग सारे देश मे अपने झगडो और खून खराबी के कारण बदनाम थे। अपने इलाको मे भी ये इसी प्रकार बदनाम थे। कोई भी नही कह सकता था कि जब इस प्रकार के दो शत्रु दल इन मैदानो मे एक दूसरे के मुकाबले में लडेंगे तब क्या परिणाम होगा ? ऐसे खूंखार और भयकर दलो पर न सेना का वश चलता है और न कानून का ! औरतो और बच्चो ने चिल्लाना शुरू कर दिया। आदमी भी कम घबराये हुए नही थे। मुझे बाद मे पता चला कि उन्होंने जनरल कीर्नी से अपने कुछ सैनिक प्लाट नदी तक भेजने के लिए प्रार्थना की थी। यह प्रार्थना नही मानी गई। बाद मे साबित हुआ कि इसके माने जाने का कोई कारण भी न था। सेट जोसफ मे आने वाले प्रवासी भी भले ईसाई थे और वे स्वय मोर्मन लोगो से घृणा करथे थे। मोर्मन सतो के कुछ परिवार इस मौसम मे इसी राह से बढे अवश्य, किन्तु वे इन प्रवासियो के जाने की प्रतीक्षा बहुत दिन तक करने के बाद ही गये। उन्हें भी इन सभ्य कहलाने वाले लोगो से डर था।

अब हम सेंट जोसफ की राह पर चल रहे थे। यह साफ हो गया कि ये वडे दल हम से कुछ ही दिन के सफर के फासले पर, आगे-आगे, चल रहे थे। हम ने भी उन्हे मोर्मन ही समझा और हमे भी उनसे भय लगता रहा। यात्रा वहुत उकता देने वाली थी। एक दिन हम लगातार चार घण्टे, विना एक भी झाड़ी या वृक्ष देखे, चलते रहे। चारो ओर जिधर भी देखते थे नई फूटती हुई घास का हरा मैदान और छोटे-छोटे टीले ही दिखाई देते थे। कही-

कही कौआ, गीध आदि अवश्य दिखाई दे जाते थे।

हम एक दूसरे से पूछने लगे, "आज की रात भोजन और पानी का प्रबन्ध कैसे होगा।" दिन छिपने ही वाला था और पानी पास में न था। कुछ देर बाद दाहिनी ओर, काफी दूर पर, एक हरी सी चोटी दिखाई दी। यह एक पेड की चोटी थी, जो कि मैदान के एक टीले के पीछे से दीख रही थी। रास्ता छोड़ कर हम इस की ओर जल्दी-जल्दी बढ़े। यहाँ पहुँच कर हमने जाना कि यहाँ बहुत से पेडो और झाड़ियों से घिरे हुए कुछ जोहड़ एक खड्ड मे थे। हम ने इस पास के एक टीले पर डेरा डाल दिया।

शाँ और मैं तम्बू में बैठे थे। तभी देस्लारियर ने आकर अपना चेहरा दरवाजे से अन्दर झुका कर और अपनी आखें फैला कर हमें शाम का भोजन तैयार होने की सूचना दी। भोजन के लिए टीन के प्याले, रकाबियाँ और चम्मच रखे गये थे और इन सब के बीच में, घास पर ही, कॉफी का वर्तन भी रख दिया गया था। भोजन जल्दी ही समाप्त हो गया। परन्तु, हैनरी बहुत देर तक उसी तरह चौकडी मारे कॉफी पीता रहा। इन मैदानों मे कॉफी का प्रयोग बहुत अधिक होता है और हेनरी को यह अधिक प्यारी लगती थी। वह इसे मीठे या दूध के बिना ही पीना पसन्द करता था। इस मौके पर यह उसे बहुत अधिक पसन्द आई, क्यो कि यह बहुत गाढ़ी और काले रंग की थी।

छिपता हुआ सूरज बहुत ही लुभावना था। नीचे की चरागाह में छोटे-छोटे वृक्षो के बीच फैले हुए जोहडो का पानी इस की लाली से लाल हो उठा था।

शाँ बोला, "मुझे आज रात नहाना है। देस्लारियर, क्या नीचे कोई तैरने का प्रबन्ध हो सकता है?"

देस्लारियर ने कन्धे हिलाते हुए टूटी-फूटी अग्रेजी में, अपने मालिक की इच्छा को पूरा करने की भावना से, कहा, "मुझे पता नही। फिर भी, आपकी जैसी इच्छा हो।"

मैने उसके पांव की ओर इशारा करते हुए कहा, "इसके जूते की ओर देखो।" जूते पानी में डूबकर काले कीचड़ से लिपट गए थे।

शाँ ने कहा, "आओ हम खुद चल कर देखेंगे।"

हम साथ-साथ चल पडे। झाडियो के पास पहुँचते ही कुछ दूरी पर हमे धरती धोखा देती लगी। जगह-जगह कीचड भरा हुआ था। बडी कठिनता से लम्बी घास की जडो पर पाव रखते हम बढे। लगता था जैसे कीचड के समुद्र में छोटे-छोटे टापुओ पर चल रहे हो। एक भी गलत कदम हमारे जूतो का भी वही हाल कर सकता था, जो देस्लारियर के जूतो का हुआ था। वात कुछ कठिन दिखाई दी। हम अलग-अलग दिशाओ मे वट कर चलने लगे। शॉ दाहिनी ओर से बढा और मै वाई ओर से। अन्त मे मैं झाडियो के किनारे तक आ गया। ये झाडियाँ पानी मे पैदा होने वाली किस्म की थी और इनके फूल भी गुच्छो मे खिले हुए थे। इनके वीच-बीच में घास की कोई एक-आध जड भी दिखाई दे जाती थी। यहा कीचड़ एक दम काला और गहरा था। मैने कठिनता से, कूद कर ही, इसे पार किया। तब मैं इन झाडियो में से जैसे-तैसे पूरी ताकत के साथ आगे बढने लगा। अब मै एक धारा के किनारे पहुँच गया था। यह धारा कीचड़ मे से होकर वह रही थी और कुल चार उगल गहरी थी। मेरे यहा पहुँचते ही यहाँ की शान्ति टूट गई। एक वहुत वडा हरा मेंढक अजीव आवाज़ में टर्राया और वहुत तेजी के साथ किनारे से उछला। उस के फैले हुए पजे पानी के ऊपर चमके और ज्यो ही उसने उन्हे ऊपर को उठा कर झटका दिया, मैंने उसे वहुत तेजी से पानी की गहराई में जाते देखा। वहाँ से कुछ वुलवुले उठते दिखाई दिये। अपने वुजुर्ग का अनुकरण करते हुए कुछ छोटे-छोटे चित्तीदार मेढक भी उछल कर पानी मे कूद गए। तभी तीन छोटे-छोटे केकडे भी पास के पौधो की जडो से उतर कर पानी मे घुस गए। इसी समय काली और पीली धारी वाला एक साप भी किनारे मे सरका और दूसरी ओर निकल गया। यही, जमा हुए पानी मे, पडे एक पत्थर को मैने गलती से हिला दिया और उसके नीचे से सैंकडो छोटे-छोटे मेढ़क-वच्चे निकल पड़े।

शॉ दूर से ही पूछने लगा, "क्या जहां तुम खड़े हो, वहा नहाने का कोई मौका है ?"

मेरा उत्तर वहुत उत्साहजनक नही था। अव मैं लौट कर अपने साथी के साथ-साथ नई खोज मे वढने लगा। दाई ओर कुछ दूरी पर ही पेडो और झाडियो से घिरी एक ऊँची जगह थी, जहां से ढलान एक दम ही पानी की

ओर झुक गई थी। वहाँ हमें सफलता की अधिक आशा थी। इस लिए हम इधर ही चल दिए। जब हम यहाँ पहुँचे तो हमे पानी और पहाडी के बीच मे राह खोजनी कठिन दिखाई दी। यहा कुछ छोटे-छोटे पेड अगूरो की बेलो से उलझ कर छाये हुए थे। हल्की-हल्की रोशनी मे बढते हुए हम जब-तब किसी पुरानी मीठे फलो वाली झाडी को पकड़ बैठते। इस प्रकार सहारा ढूढते हुए शॉ कुछ आगे चल रहा था। अचानक मुझे उसकी चीख़ सुनाई दी। मैंने देखा वह एक हाथ से एक शाखा थामे पानी मे धन्स गया था। उसका ध्यान पानी मे तैरते हुए पाच फुट लम्बे एक साप पर लगा हुआ था। यह साप काले और हरे रग की चित्तियो से भरा हुआ था और पानी के पार जा रहा था। इसे देखते हुए शॉ को अपना पाव खीचना याद न रहा। हमारे हाथ मे न कोई छडी थी और न कोई पत्थर। हम उसे यू ही चुप-चाप देखते रहे और कुछ देर बाद फिर आगे बढ़ने लगे। हमें अपने धीरज का नतीजा भी जल्दी मिल गया। कुछ ही दूर जाकर हमे घास का एक छोटा सा टापू मिला, जो झाड़ियो से घिरा हुआ था। यह और भी किस्मत की बात थी कि यहा काई, घास, या झाडियो की शाखा आदि पानी पर छाई हुई नही थी। कुछ गज तक पानी बिल्कुल साफ और उजला था। हमने एक छड़ी के सहारे देखा कि यह चार फुट गहरा था। हम ने कुछ पानी हाथ मे लेकर देखा। यह काफी साफ था। हम इस मे नहा सकते थे। इस लिए हमने नहाने का निश्चय किया। परन्तु, नहाते समय अचानक ही हजारो बड़े-बडे मच्छर चारो ओर कीचड में से उड कर मडराने लगे और अपने हजारो ड को से सताने लगे। जैसे-तैसे हम वहा से पूरी ताकत और तेजी से भाग निकले।

हम अपने तम्बुओ की ओर लौटे। नहा कर हम ताजा हो चुके थे। पिछले दिनो की गरमी के कारण यह नहाना जरूरी भी हो गया था।

शॉ बोला, "कप्तान की ओर देखो! उसे क्या हो गया है?" कप्तान मैदान मे कुछ दूरी पर अपनी जगह पर ही खड़े-खडे अपने टोप को बहुत तेजी से अपने सिर के चारो ओर घुमा रहा था। कभी वह एक पाव उठाता था, तो कभी दूसरा। पहले वह बहुत ही घबरा कर जमीन की ओर देख रहा था। और तब, बहुत ही अपमान-जनक नजर और घबराये हुए चेहरे से ऊपर की ओर ताकने लगा, जैसे किसी न दिखाई देने वाले दुश्मन को खोज रहा हो।

हम ने उसे आवाज देकर बात पूछनी चाही। पर उसने उस न दिखाई देने वाले दुश्मन की ओर गालियो की बौछार के रूप मे ही हमें उत्तर दिया। जब हम उसके पास पहुँचे तो ऐसा लगा, जैसे एक साथ ही मधुमक्खियो के बीसियो छत्तो ने हमला बोल दिया हो। हमे कानो मे एक भयकर गूज सुनाई दी। छोटे-छोटे काले कीडे ऊपर आकाश मे भरे पडे थे और उनमे से हजारो कीड़े बहुत नीचे होकर उड रहे थे।

कप्तान हमें घबराता हुआ देखकर बोला, "घबराओ नही, ये कीडे डसते नही।"

यह सुनते ही मैने अपने टोप के सहारे एक कीडे को नीचे गिरा लिया और देखा कि यह टिड्डी ही थी, कुछ और नही। बहुत झुक कर देखने पर पता चला कि सारी धरती ही जैसे इन के छेदो से भरी पडी थी।

हम इस जगह से जल्दी ही विदा हुए और ऊँचे टीले से होकर अपने तम्बुओं तक आए। हमने यहाँ देखा कि देस्लारियर की जलाई आग अब तक भी बुझी न थी। हम इस के चारो ओर बैठ गए और शॉ ने सब को यह बताया कि हमारे नहाने के लिए कैसी सहूलियत मौजूद है ? उसने कप्तान को सुबह नाश्ते से पहले हर हालत मे वहा जाने की सलाह दी। कप्तान उन कीड़ो से अब तक परेशान था। उसने फिर हाथ मार कर एक कीडे से अपने को छुडाया। उसने कहा कि वह ऐसी बात को सम्भव नही मानता। इस समय तक हमें भी अपने सिरो के ऊपर ऐसी आवाज सुनाई देने लगी, जैसे सैकडो गोलियाँ सरसराती और भिन-भिनाती हुई हमारे सिरो पर से गुजर रही हो। अचानक ही पहले मेरे माथे पर किसी कीडे का डंक चुभा, फिर गर्दन पर, और तब सभी दिशाओ से जैसे बहुत-से पजे मुझ पर गढने शुरू हो गए। मानो पजो वाला कोई जानवर मेरे सारे बदन पर ही अपने हाथ फेर कर कुछ खोज रहा हो। मैने कीडा पकडा और आग मे डाल दिया। हमारे दल के सभी लोग अपने-अपने डेरो में खिसक गए और अपने तम्बुओ के दरवाजे बन्द करके इस हमले से बचने की आशा करने लगे। पर यह सब व्यर्थ साबित हुआ। सुबह होने तक यह कीडे तम्बू मे घुस कर हमे सताते ही रहे। सुबह हमने अपने कम्बल उतारकर देखा कि उनमे सैंकडो कीडे चिपटे हुए थे। उठते ही हमारी निगाह मे पहली बात यह आई कि देस्लारियर

तलने की वाटी को खाली कर रहा था। इसे उसने हत्थे से पकड़ कर बहुत दूर पर थामा हुआ था। लगता था कि उसने इसे रात भर आग पर रख दिया था और वहुत-से कीडे जल कर इसमे जमा हो गए थे। आग के कारण और भी सैकड़ो कीडे जल कर राख में गिर पड़े थे।

घोड़ो और टट्टुओ को चरने के लिए खुला छोड दिया गया था। हम अभी नाश्ते के लिए आराम से बैठे ही थे कि हेनरी और कप्तान ने हमे चौका दिया। उन्होने हमे किसी खतरे की चेतावनी दी। देखने पर पता चला कि सारे-के-सारे—तेईस—पशु गायब थे। ये सभी हमारे पुराने इलाको की ओर लौट चले थे। इनके आगे-आगे मेरा घोडा पौंटियक चल रहा था, जो कि स्वय सुधारा नही जा सकता था। वह अपने बँधे हुए अगले पांवो के साथ ही उछल-उछल कर बहुत तेज भागता हुआ जा रहा था। हम मे से तीन या चार आदमी उनका रास्ता काटने के लिए ओस से भरी घास मे से होकर तेज़ी से उनका पीछा करने लगे। एक मील से भी अधिक दौड़ने के बाद शॉ ने एक घोडे को पकड लिया। उसने उसकी लटकने वाली रस्सी को उसकी लगाम से ही बाँध दिया और खुद उसकी पीठ पर जा चढा। उसे लेकर वह सब घोडो से आगे जा निकला। अब हम उन सब को इकट्ठा करके अपने डेरो तक वापिस लाए। तब सबने अपने-अपने घोडो को कस कर तयारी की। कुछ घोडो ने अपनी अगली टाँगो की रस्सियाँ तोड़ दी थी, इसलिए कुछ लोगो की गालियाँ भी सुनाई दी। इस प्रकार बन्धनों में ही भाग जाने से कुछ की रस्सिया वहुत अधिक घिस गई थी।

चलने मे हमे कुछ देर हो गई। दोपहर बाद बहुत जल्दी ही हमे डेरे भी डालने पड़े, क्योकि आँधी और वर्षा का एक बहुत ज़ोरदार झोका आ गया था। इस तूफान मे ही हमने बहुत कठिनता से अपने तम्बू गाड़े। सारी रात यह तूफान गरजता और बरसता रहा। सुबह के उजाले मे हमने यह देखा कि मूसलाधार बारिश का स्थान हल्की-हल्की बूँदा-बाँदी ने ले लिया था। दोपहर के लगभग मौसम अच्छा होने के आसार बहुत कम थे, लेकिन हमने आगे बढना शुरू कर दिया।

इस खुले मैदान मे हवा विल्कुल गुमसुम थी। बादल ऐसे दीखते थे, जैसे रूई के अम्बार हो जहां भी नीला आकाश दीखता था, वही कुछ न कुछ धुंध

और गीलापन सा भी नजर आता था। सूरज की धूप इतनी तेज और गरम थी कि उसे बर्दाश्त करना कठिन था। हमारा दल धीरे-धीरे इस समाप्त न होने वाली मैदानी सतह पर बढता जा रहा था। घोडे कीचड़ मे धसते हुए अपने सिर नीचे लटकाए बढ रहे थे। सभी आदमी काठियो पर आराम से बैठे थे। आखिर, शाम होते-होते फिर से वही पुराने परिचित बरसने वाले घने काले बादल चारो ओर आसमान में जमा होगए और दूर पर उनके गरजने की आवाज़ चारो ओर मैदान मे फैलती हुई सुनाई दी। दोपहर बाद की यात्रा मे ऐसी आवाज़ एक परिचित बात ही बन गई थी। कुछ ही मिनटो में सारा आकाश इन बादलो से बुरी तरह घिर गया और सामने का मैदान तथा कही-कही दीखने वाले पेडो के समूह इस काले अधेरे में गाढे रगो मे बदलते दिखाई दिए। तभी सबसे घने बादल मे से जोर की बिजली चमकी। मैदान एक कोने से दूसरे कोने तक जैसे काँप उठा। इसके साथ ही एक लम्बी गरज की आवाज सुनाई दी। तभी वर्षा की गन्ध लिए वायु का एक तेज झोका आया और उसने हमारे आसपास की घास को झुका दिया।

गॉ बहुत तेजी से अपने दूसरे घोडे को साथ लेता हुआ आगे बढा और चिल्लाया, "आगे बढो! हमे इसी समय बढ चलना चाहिए।" सारा दल ही तेजी से बढ चला और सामने के वृक्षो तक आ गया। यहाँ आकर हमने देखा कि इनके परे एक बडी चरागाह मौजूद थी। हम बहुत जल्दी जमीन पर उतर पडे। इस घबराहट मे हमारी काठियो को भी नुकसान पहुचा। सबने ही नीचे उतर कर घोड़ो के पॉव जॉचे और उनकी रस्सियाँ फिर से ठीक से बाँधी। अब उन्हें चरने के लिए खुला छोड दिया गया। ज्यो ही गाड़ियाँ इस जगह पर पहुँची हमने तम्बुओ के बाँस लेकर उन्हें गाड़ना शुरू किया। आधी आने से पहले हम उसके स्वागत की तैयारी कर चुके थे। रात के अधेरे जैसी आधी घिर आयी। हमारे पास के वृक्षो में वर्षा की तेज आवाज़ सुनाई देने लगी।

हम अपने तम्बू में ही बैठे थे। अपना चौडा टोप कानो तक लटकाये और वर्षा से चमकते अपने कधे आगे बढाते हुए देस्लारियर ने अपना सिर झुका कर पूछा, "क्या आप अभी तुरन्त खाना चाहेंगे? मुझे विश्वास है कि मै आग जला लूंगा। मै कोशिश कर देखता हू।"

"तुम खाने की परवाह मत करो। आओ, तुम भी अन्दर आ जाओ।"

यह सुनकर वह दरवाजे से कुछ अन्दर आकर बैठ गया, क्योंकि उसकी दृष्टि मे अधिक आगे आना उचित न होता। हमारा तम्बू ऐसी मूसलाधार बारिश के मुकाबले के लिए कोई बहुत अच्छी जगह न थी। वर्षा इसमें सीधी तो नही घुस सकती थी, पर कपड़े से छन-छन कर हमें यह अच्छी तरह गीला अवश्य कर रही थी। हम अपनी-अपनी काठियो पर उदास चेहरो के साथ बैठे रहे और हमारे टोपो पर से गिरता हुआ पानी हमारी गालों से होकर बहता रहा। मेरा रबड का बना बरसाती कोट बारिश से भीग कर बीसियों धारें बहा रहा था। शॉ का कम्बल से बना कोट स्पंज की तरह पानी से भर गया था। इससे भी अधिक बुरा तो तब लगा, जब हमने देखा कि तम्बू में अनेक छोटे-छोटे गड्ढो मे पानी भरना शुरू हो गया था। एक बाँस के पास तो इतना पानी भर गया था कि उससे सारे तम्बू को ही खतरा होने लगा था। हमें लगा कि रात आराम से बितानी कठिन होगी। सूरज छिपने के बाद यह तूफान अचानक वैसे ही रुक गया, जैसे शुरू हुआ था। अचानक ही लाल आकाश का एक कोना साफ हो गया। मैदान के पश्चिम की ओर से उजली किरणें चारो ओर फैल गई। सूर्य की ये लाल-लाल किरणें पानी पर बिखर गईं और गिरती हुई बूंदो में से झाकती हुई सतरंगी-सी दिखाई देने लगी। तम्बू के अन्दर का पानी भी धरती ने सोख लिया।

परन्तु हमारी आशा धोखा दे गई। अभी रात पूरी न उतरी थी कि फिर से वही तूफान फूट पड़ा। पूरबी किनारे जैसा तूफान यहाँ नहीं होता। यहां यह अधिक भयकर होता है। हमारे ही सिरो पर बहुत तेज गरज के साथ यह फूट पडा और सारे मैदान पर गरजने लगा, मानो चारो ओर ही यह अजीब कडक के साथ घूम गया हो। सारी रात बिजली कड़कती रही और सामने के पेड़ उसके प्रकाश मे चमकते रहे। इसकी चमक में चारों ओर का फैला हुआ मैदान साफ दिखाई दे जाता था। इसके मिटते ही ऐसा लगता था जैसे हम अधेरे की किसी दीवार से घेर लिए गये हों।

इसने हमे अधिक परेशान न किया। कभी-कभी हमे एक बहुत तेज आवाज चौंका देती थी। इससे हमें बिजली की गड़गड़ाहट और वर्षा की घिरती हुई तेज बाढ का ध्यान हो जाता था। जमीन पर रबड़ के कपडे बिछाकर और कंबल

ओढ कर हम सो रहे थे। बहुत देर तक तो हम पानी से बचे रहे। पर जब पानी बहुत अधिक इकट्ठा हो गया, तब वह बाहर भी न निकल सका। इस लिए रात खतम होने पर हम अनजाने ही वर्षा के बनाए एक छोटे से जोहड मे लेटे हुए थे।

सुबह जगने पर हमने देखा कि आसार कुछ अच्छे न थे। वर्षा बहुत तेज तो न थी, पर फिर भी लगातार हमारे तम्बू पर गिर ही रही थी। हमने अपने कम्बल उतारे। उनका हर रेशा पानी की बूदो से भरा हुआ था। हम अच्छे मौसम की इन्तजार करने लगे। मैदान पर बादल अब भी काले और गहरे रंग के होकर छाए हुए थे। धरती की हालत भी आसमान से अधिक अच्छी न थी। चारो ओर पानी के जोहड ही जोहड़ दिखाई देते थे। घास तो जैसे समाप्त ही हो गई थी। हमारे घोडो और टट्टूओ ने चारो ओर कीचड ही कीचड बना दिया था। हम से कुछ दूर ही अकेला और सुनसान सा एक तम्बू, हमारे साथियो का खडा था, जैसे वह मातम से भरा हुआ हो। उनकी गाडिया भी उसी तरह भीगी खडी थी। कप्तान घोडो की देख भाल करके लौट रहा था। कोहरे और वर्षा मे से होकर वह अपने लबादे को कधे पर डाले, पाईप सुलगाए हुए, अपने भाई जैक के साथ-साथ चल रहा था। उसका पाईप उसकी मूछो के नीचे ऐसा चमक रहा था, मानो खुदाई से निकली कोई पुरानी चीज हो।

दोपहर को आकाश साफ हुआ। हम आधा फुट गहरे कीचड मे से होते हुए बढने लगे। उस रात हम पर वर्षा की कृपा ही रही।

अगले दिन, दोपहर बाद, हम धीरे-धीरे बढ रहे थे। हमारे दाई ओर एक छोटा सा जंगल था। जैक कुछ आगे-आगे चल रहा था। वह चुप था, मानो वह जीवन भर बोला ही न हो। तभी अचानक वह मुडा और जगल की ओर इशारा करके अपने भाई की ओर गरज कर बोला, "अरे बिल! सामने गाय दिखाई दे रही है।"

तुरन्त ही कप्ततान अपने भाई को साथ लेकर आगे बढ गया और गाय को पकडने की कोशिक करने लगा। पर गाय जैसे उनके इरादे को पहचान गई थी। वह पास के वृक्षो मे जा छिपी। र—भी उनसे जा मिला। उन तीनो ने उसे खदेड कर बाहर निकाला। हम देखते रहे कि किस तरह

उन तीनो ने उसे घेरने और उसकी नाक मे नथ फंसाने का यत्न किया। यह काम वे खोजी रस्सियो से ही कर रहे थे। इसके बाद थक-हार कर उन्होने हल्के तरीके बरते और प्यार से गाय को दल मे वापिस ले आए। इसके तुरन्त बाद ही फिर, हर रोज के सामान, आँधी आ गई। हवा इतनी तेज चल रही थी कि मैदान पर धारें भी, उसी दिशा मे, सीधी पड़ने लगी। घोड़ो ने अपनी पूछे आधी की ओर करली और सिर झुका कर खड़े हो गए। वे इस हमले को चुप्पी और सहनशीलता के साथ सहने लगे। हमने भी अपने सिर अपने कधो के बीच झुका लिए और सामने की ओर झुक गए, ताकि हमारी पीठें बारिश के बोझ को सहलें और हमारी रक्षा हो सके। इसी बीच इस गड़बड का लाभ उठाकर वह गाय भाग निकली। कप्तान को दुख हुआ वह भी आधी और तूफान की परवाह न करके, अपनी टोपी को थोड़ा आगे की ओर झुकाकर एक बडी पिस्तौल लेकर उसके पीछे-पीछे पूरी तेज़ी से निकल गया। कुछ देर के लिए हमे वे दोनो ही दिखाई न दिए। धुंध और वर्षा ने एक परदा सा खडा कर दिया था। बहुत देर बाद हमें कप्तान की आवाज़ सुनाई दी और हमनें उसे तूफान मे से उछलते आते देखा। वह बहुत सधा हुआ घुड सवार लग रहा था। अपने बचाने के लिए उसने हाथ ऊँचा उठाकर पिस्तौल पकडी हुई थी। उसके चेहरे पर चिन्ता और उत्तेजना छाई हुई थी। गाय उसके आगे-आगे चल रही थी। साफ लगना था कि अब भी मौका मिलते ही वह भाग जाएगी। कप्तान हमे आगे बढकर उसे सम्भालने को कह रहा था। पर, वर्षा की धार हमारी पीठ पर इतनी तेज़ी से गिर रही थी, कि हमें अपने सिर उठाने मे भी डर लगता था। हमे डर था कि कहीं और पानी हमे तग न करे। इसीलिए हम बिना हिले-डुले वैसे ही बैठे रहे और कप्तान की ओर देखते हुए उसकी उतावली हरकतो पर हसते रहे। इसी समय गाय फिर एक बार उछली और भाग निकली। कप्तान ने भी अपनी पिस्तौल फिर मजबूती से पकड़ी, घोडे को ऐड लगाई और उसके पीछे भाग निकला। इस बार उसका इरादा कुछ अधिक बुरा था। कुछ ही देर मे हमे वर्षा के कारण हल्की पडी हुई गोली चलने की एक आवाज़ सुनाई दी और तभी शिकारी अपने शिकार के साथ आता हुआ दिखाई दिया। गाय घायल हो चुकी थी और इसीलिए लाचार थी। थोड़ी ही देर बाद आँधी का

जोर कम हुआ और हम आगे बढ चले। गाय जैक के पीछे-पीछे बहुत पीडा के साथ चल रही थी। कप्तान ने उसे जैक के सपुर्द किया था। वह स्वयं आगे-आगे खोजी के रूप में चल रहा था। हम एक धारा के बाद आने वाली सामने के पेडो की एक लम्बी कतार के पास से गुज़र रहे थे। उसी समय कप्तान हमारी ओर दौडता हुआ आया। वह बहुत उत्तेजित था। पर फिर भी हस रहा था।

वह हम से बोला, "गाय को वही छोड दो। सामने उसके मालिक आ रहे दीखते है।"

सच ही, पेडो के पास पहुचते ही, हमने उनके पीछे एक सफेद बडे तम्बू जैसी कोई चीज़ देखी। पास जाने पर हमे पता चला कि वह, मोर्मन लोगो का डेरा न होकर, एक सफेद चट्टान थी, जो राह के बीच ही खुले मदान मे खड़ी हुई थी। अब फिर से गाय को अपनी जगह पर लाया गया। वह डेरा पडने तक हमारे साथ-साथ चलती रही। तब र—ने उसके दिल के पास अपनी दोनाली बन्दूक तान कर एक एक करके दोनो गोलिया दाग दी। तब उस गाय को काटा गया और यात्रा के सामान में उसके मास को भी जोड लिया गया।

अगले एक दो दिन मे ही हम 'महा-नील' (बिग ब्लू) नदी तक पहुच गए। इस इलाके की सभी नदिया ऐसे बडे नामो से ही पुकारी जाती है। यू तो हमने सारे दिन भर ही छोटी-मोटी धाराए और गड्डे पार किए थे, परन्तु इस नदी के किनारे के जगलो को पार करते हुए हम ने जाना कि हमारे सामने अभी बहुत कठिन मौके आने थे। यह धारा वर्षा के कारण भर कर चौडी गहरी और तेज होकर बह रही थी।

अभी हम यहा पहुँचे ही थे कि र—ने अपने कपड़े उतारे और पानी में कूद गया। रस्सी को दाँतो मे दबाए, तैर कर या चल कर, वह पानी मे बढने लगा। हम उसकी ओर उत्सुकता से देखने लगे कि आखिर उसका उद्देश्य क्या है? तभी हमने उसे चिल्लाते सुना, "इस रस्सी को उस ठूँठ पर लपेट दो। सोरेल, तुम सुन रहे हो। बोईस्फोर्ड, जरा इधर ध्यान दो। तुम कुछ लोग इधर आ जाओ और मुझे सहायता दो!" जिन आदमियो को ये हुक्म दिए गए, उन मे से किसी ने भी इन पर ध्यान नही दिया, यद्यपि इन्हें बिना रुके लगातार दिया गया था। हेनरी ने काम समझाना शुरू किया और सब काम तरीके से

होने लगा। अब भी र—की तेज़ आवाज़ लगातार सुनाई दे रही थी और वह बहुत अधिक हलचल मे लगा हुआ था। उसके हुक्म कोई ताल-मेल न रखते थे और सब की हँसी का कारण बन रहे थे। जब उसने देखा कि कोई भी उसकी बात नही सुन रहा, तब उसने भी अपना रुख बदल लिया। जो आदमी जिस काम पर लगा हुआ था, उस ने उसे ठीक वही काम करने के लिए कहना शुरू किया। उसे मुहम्मद और पहाड़ की कहानी शायद याद थी। शॉ हँस पडा। र—ने जब यह देखा तो घृणा से भरकर वह कुछ बोलने लगा, पर तभी वह चुप पड गया।

आखिर फट्टो की नाव तैयार हो गई। हमने अपना सारा सामान उस पर लाद दिया। हर-एक ने अपनी बन्दूके अपने-अपने पास रखी। सोरेल, राइट, आदि चारो सहायको ने चारो कोनो को सम्हाल लिया, ताकि फट्टे अलग न हो जाए और वे इसके साथ ही तैरने लगे। कुछ ही देर मे हमारा सारा सामान इस मचलते पानी पर तैरने लगा। किनारे पर बैठे हम परिणाम की इतजार कर रहे थे। तभी हमने देखा कि दूसरे किनारे यह नाव बहुत आसानी से लग गई। खाली गाडी भी आसानी से पार हो गई। घोडो पर चढकर हम भी पार आ गए। दूसरे पशुओ को तैर कर पार होने के लिए खुला छोड़ दिया गया।

—.०.—

६ : प्लाट् नदी और रेगिस्तान

अब सेंट जोसफ की बनायी राह अन्त पर ही थी। हमारी यह यात्रा बहुत एकान्तपूर्ण रही थी पर, तेईस मई को हम उस चौराहे पर आ पहुंचे, जहा हमारी राह ओरेगन को जाने वाले अन्य यात्रियो की राह से मिलकर एक हो गई थी। यहा से हमारा एकान्त समाप्त हुआ। उस दिन बहुत देर तक लकड़ी और पानी को ढूंढने के लिए हम निरर्थक ही बढते रहे। अन्त मे, साँझ के समय हमे किरणो से चमकता हुआ एक छोटा-सा जोहड़, पेडो और झाडियो से घिरा हुआ, दिखाई दिया। पानी एक खड्ड की तह मे था और चारो ओर मैदान एक समुद्र की भाँति फैला हुआ था। हमने इसके पास ही अपने तम्बू गाड़ दिये। इससे पहले ही हेनरी ने बहुत दूर एक टीले पर कुछ खास चीज देख ली थी। परन्तु, साझ के धुधलके मे कुछ भी साफ देखा नही जा सकता था। खाने के बाद हम आग के चारो ओर लेट गए। तभी हमारे कानो में बहुत दूर से हँसी-ठट्ठे की एक विचित्र सी आवाज आई। बहुत सी औरतें और मर्द हँस रहे थे। पिछले आठ दिनो से हमने एक भी मनुष्य नही देखा था। इस लिए किसी भी ऐसी आवाज को समीप पा कर हमारे मन मे बहुत अधिक उत्सुकता जगनी स्वाभाविक थी।

अधेरा होने पर सामने की पहाडी से एक पीले से चेहरे वाला घुडसवार उतरा और जोहड पार करता हुआ हम तक आया। उस ने एक बडा लबादा पहना हुआ था और उस के चौडे टोप से कानो के पास ओस की कुछ बूँदें जमा होकर टपक रही थीं। इसके पीछे ही मजबूत और अच्छे ढाँचे वाला बुद्धिमान् दिखाई देने वाला पुरुष आया। उसने बताया कि वह प्रवासियो के एक दल का एक अन्य नेता था। उनका दल यहा से एक मील आगे पडाव डाले पड़ा था। उनके साथ बीस गाडिया थी। उनके बाकी बचे हुए दल ने अभी महानील नदी पार नही की थी। वे लोग एक स्त्री के बच्चा होने की प्रतीक्षा कर रहे थे और इसी बीच आपसी झगडो मे उलझ रहे थे। यही वे पहले यात्री थे, जिन्हे हमने पहली बार पीछे छोडा, हालाकि हमे सारी यात्रा

भर बहुत से यात्रियो के निशान दिखाई देते रहे थे । कभी-कभी हमें राह में एक ऐसी कब्र दीख जाती, जो किसी व्यक्ति के बीमारी या किसी और रूप में मरने पर खड़ी की गई होती थी । धरती अधिकतर फटी हुई और भेड़ियो के निशानो से भरी हुई थी । कुछ लोग इन के हमलो से बच गए थे । एक सुबह हमे एक छोटी-सी पहाडी की चोटी पर एक लकड़ी की तख्ती दिखाई दी । ऊपर चढ कर हमने इस पर लोहे से दागे हुए ये शब्द पढे :

मेरी ऐलिस, ७ मई १८४५ को मरी, आयु दो मास" !

इस प्रकार के निशान उस राह मे मिलने एक आम बात थे ।

सुबह डेरा उठाने मे हमे कुछ देर हो गई । अभी हम कुछ ही दूर गए होगे जब हमने अपने सामने क्षितिज के पास बहुत सी चीज़ों को बराबर फासले पर, कुछ-कुछ दूरी पर, मैदान की सतह पर ही चलते हुए पाया । इसी समय बीच में एक टीला आ गया और सामने का नजारा दीखना बंद हो गया । हम इसी टीले पर चढे । अब हमें अपने बिल्कुल सामने ही यात्रियो का एक लम्बा काफिला दिखाई दिया । उनकी सफेद और भारी गाडियाँ बहुत हल्के-हल्के चल रही थी और पीछे पशुओ का समूह चल रहा था । पांच-छह पीले चेहरे वाले मिसूरी-निवासी घोडो पर चढे हुए आपस में गाली-गलौच कर रहे थे । उनके शरीर बडे नपे-तुले और सधे हुए थे । उन्होने किसी घरेलू दर्जी के बने हुए कपडे पहन रखे थे । हमारे पास पहुँचने पर उन्होने हमसे पूछा, "तुम्हारा क्या हाल है ? तुम ओरेगन जा रहे हो या कैलिफोर्निया ?"

हम ज्यो ही उनकी गाड़ियों के पास से होकर गुजरे, कुछ बच्चे पर्दा हटा कर हमें झाँकने लगे । सामने की ओर बैठी, चिन्ताओ से दबी और पतली-दुबली मातायें या भारी-भरकम लड़कियाँ अपना-अपना काम छोड़ कर, हमें उत्सुकता से देखने लगी । हर गाड़ी के साथ ही उसका स्वामी चल रहा था । वह अपने, भारी बोझे से लदे बैलो को इस लम्बी यात्रा के लिए हौसला दे रहा था । इन सब लोगो में बहुत घबराहट और बेचैनी फैली हुई थी । इनमें कुछ लोग अविवाहित भी थे । वे हमे बढ़ता हुआ देखते और फिर अपनी धीमी चाल से बढ़ती गाड़ियो को देखते । कुछ ऐसे भी थे जो बिल्कुल ही बढना नही चाहते थे, क्यो कि पिछले साथी अभी आकर साथ नही मिले थे । कुछ ऐसे भी लोग थे, जो अपने चुने नेता के विरुद्ध आवाज उठा रहे थे

और उसे हटाना चाहत थे। यह बात बडी उम्मीदे रखने वाले कुछ लोगो के कारण अधिक बढ गई थी, क्योकि वे स्वयं नेता बनना चाहते थे। औरतो का दिल कभी-कभी घर जाने की ओर हो उठता था, क्योकि वह सामने के रेगिस्तान और असभ्य इलाके से डरने लगी थी।

हमने इस दल को भी बहुत पीछे छोडा और यह आशा की कि अब इनसे फिर न मिलना होगा। तभी हमारे साथियो की गाडी कीचड भरे एक गड्ढे मे इस तरह धँस गई कि उसे निकलने मे घटो लग गए। तब तक पिछले साथी भी हमारे बहुत पास तक आ पहुँचे। आने वाली हर गाड़ी उस कीचड में से धँस कर निकलती रही। इस समय दोपहर हो चुकी थी। इस स्थान पर छाया और पानी मौजूद थे। हमने बहुत सन्तोष के साथ देखा कि वे लोग यही डेरा डालना चाहते थे। जल्दी ही उनकी गाडियाँ एक घेरे के रूप में खडी हो गयी। पशुओ को चरागाह मे खुला छोड़ दिया गया और अपने उदास और दु खी चेहरे लिए आदमी लकडी और पानी की चिन्ता में इधर उधर घूमने लगे। उन्हें इसमे बहुत कम सफलता मिली। जब हम कुछ आगे वढ आए तो मैनें एक बहुत लम्बे आदमी को लडखडाती चाल मे आते देखा। वह अपने प्याले में पडे पानी को बडे सन्तोष से देख रहा था। उस की आवाज मे नाक का स्वर भी मिला हुआ था।

उसने कहा, "इधर देखो! इसमे जानवर ही जानवर भरे हुए है।"

जब उसने हाथ फैलाकर दिखाया तो प्याले मे काई और कीडे बहुत अधिक भरे हुए थे।

सामने की छोटी-सी पहाडी मे चढ कर हम पीछे की चरागाह में साफ देख सकते थे कि प्रवासियो के पिछले डेरे मे कुछ गड-बड़ मच रही थी। आदमी एक तरफ इकट्ठे होकर कुछ बहस कर रहे थे। हम लोगो में से र— अपनी जगह से गायब था। कप्तान ने बताया कि वह अपने घोडे की नाल ठीक कराने के लिए पीछे रुक गया है। हमें अनुभव हुआ कि कुछ न कुछ गड़बड जरूर है। फिर भी हम वढते रहे और अच्छे पानी की एक धारा के पास आकर भोजन और आराम के लिए रुक गए। अब तक भी र— न लौटा। अन्त मे बहुत दूरी पर अपने घोडे समेत वह आता दिखाई दिया। उसके पीछे ही पीछे एक बहुत बडी कोई सफेद-सी चीज भी आती दिखाई दी।

"वह यह सफेद-सा सामान क्या साथ ला रहा है ?"

कुछ ही देर बाद यह भेद खुल गया। एक के पीछे एक चार गाडियाँ और उनके बैल पहाडी पर से धीमे-धीमे उतरते हुए साफ दिखाई देने लगे। सबसे आगे र— शाही सवारी की भाँति चल रहा था। लगता है घोड़े की नाल ठुकवाते हुए प्रवासियो का झगड़ा कुछ अधिक तेज हो गया था। कुछ लोग आगे बढना चाहते थे और कुछ रुक जाना चाहते थे। कुछ ऐसे भी थे जो लौटना अधिक अच्छा समझते थे। उनके कप्तान कीर्सले ने हिम्मत हार दी और वह बोला, "अच्छा अगर तुम मे से मेरे साथ कोई आगे चलना चाहे, तो वह चल सकता है।"

दस आदमियो, एक स्त्री और एक बच्चे के अलावा चार गाडियाँ इस दल मे थी। र— ने अपनी शरारती आदत के कारण इन सब को हमारे साथ चलने के लिए निमत्रण दे दिया। लगता है उसके सामने इन को साथ लेने का एक बडा कारण यह था कि उसे आदिवासियो के हमले का खतरा था, नही तो वह ऐसे बोझ को साथ न लेता। हर तरह से हमारा शान्ति के साथ आगे बढना जारी रहा। हमारे नये साथी बहुत ही खुले दिल वाले और बुद्धिमान् थे। वे कुछ असभ्य जरूर थे। पर तो भी उनमे कोई और बुराई न थी। उनसे साथ न चलने की बात कहने का प्रश्न ही नही था। मैने कीर्सले से केवल इतना ही कहा कि अगर उनके बैल हमारे खच्चरो के साथ-साथ न चल सके, तो उन्हे पीछे छूट जाना पडेगा, क्योकि अब हम अधिक देरी सहने को तैयार न थे। उसने तुरन्त ही विश्वास दिलाया कि वह ऐसा कोई अन्तर नही पडने देगा और उसके बैल सदा साथ-साथ ही चलेंगे।

अगले दिन हमारे साथियो की गाडी की धुरी टूट गई और एक चश्मे में फँसकर उसका सारा सामान नीचे आ गिरा। इसके कारण हमारा पूरा दिन बरबाद हो गया। इस बीच हमारे नये साथी अपनी राह पर बढ़ते रहे और वे इतनी तेजी से चले कि हमे उनसे मिलने मे पूरा एक सप्ताह लग गया। तब हमने उन्हे प्लाट् नदी के किनारे-किनारे बढते हुए एक दिन पा लिया। पर, इस बीच बहुत-सी और भी बाते हमारे साथ बीत चुकी थी।

यह डर था कि यात्रा की ऐसी मजिल पर कही पौनी आदिवासी हम पर हमला करके हमे लूट न लें। इस लिए हमने बारी-बारी से रात मे पहरा

लगाना शुरू किया। पहरे को तीन हिस्सो में बाँटा गया और रात के हर हिस्से के लिए दो आदमी तैनात किए गए। देस्लारियर और मेरी बारी साथ-साथ थी। हम सैनिको जैसे इधर उधर घूम कर परेड नही करते थे। फिर भी, हमारे नियम बहुत कठिन थे। हम दोनो कम्बल ओढ कर आग के पास बैठ जाते और देस्लारियर पहरे के साथ-साथ रसोई का काम भी करता रहता था। वह किसी हिरण का सिर उबालकर नाश्ते की तैयारी करने की चिन्ता में रहता था। इस पर भी हम बहुत सावधान रहते थे और दूसरो से अधिक चौकन्ने गिने जाते थे। और लोग अक्सर अपनी बन्दूक जमीन पर रखकर, कम्बल मे लिपट कर, अपने घर या किसी और बात के ख्याल मे उलझकर, बेखबर हो जाते थे। यह बात इस इलाके के लिए ठीक भी मानी जा सकती थी। क्योकि यहाँ के आदिवासी केवल घोड़े और टट्टुओ को छोडकर और कुछ नही लूटते थे। हालाँकि पौनी लोगो का अधिक विश्वास नही किया जा सकता था। यहाँ से आगे पश्चिम की ओर पहरा कुछ अधिक चौकन्ना होना चाहिए। पहरेदार को आग के पास बैठकर अपने को प्रकाश मे नही लाना चाहिए, क्योकि वहाँ के निशानेबाज आदिवासी ऐसे समय अँधेरे से ही तीर या गोली निशाना साधकर दाग देते है।

अपने डेरे के इन पहरो मे जो कहानिया सुनने को मिलती थी, उनमे से बोईसफर्ड की कहानी अधिक अच्छी थी। उसने बताया कि एक बार वह ब्लैकफुट लोगो के प्रदेश मे अपने कुछ साथियो के साथ पशु फँसा रहा था। पहरेदार ने सब बात समझकर अपने को आग से कुछ दूर छिपा रखा था। वह चारो ओर ध्यान से देखता रहा। बहुत देर बाद उसने एक शक्ल चुपके से आग की ओर आती देखी। उसने तुरन्त गोली दाग दी। परन्तु, राइफल के घोडे की तेज़ आवाज ने उस ब्लैकफुट आदिवासी को और भी अधिक चौकन्ना कर दिया। उसने अपना बाण आवाज की दिशा में ही छोड दिया। उसका निशाना इतना सही था कि उसका तीर पहरेदार के गले मे से होता हुआ निकल गया। और तब, एक ऊँची आवाज के साथ वह आदिवासी भाग गया।

मैने अपने पहरे के साथी की ओर देखा। वह आग पर झुककर फूँक मार रहा था। मुझे लगा कि कठिनाई के समय शायद वह अच्छा सहायक साबित नही होगा।

मैने कहा, "देस्लारियर। अगर पौनी लोगो ने हम पर हमला किया तो क्या तुम भाग जाओगे !"

उसने बडे निश्चय के साथ जवाब दिया, "हाँ जी, ज़रूर !"

इसी समय भौकने, गुर्राने, चीखने और चिल्लाने की सैकडो मिल-जुली आवाजें चारो ओर से आने लगी। ये आवाजें बहुत पास से ही आ रही थी, मानो बहुत से भेड़िये, उनकी स्त्रियें, और उनके बच्चे आदि एक साथ ही इकट्ठे हो गए हो। मेरे साथी ने वही से देखकर हँसना शुरू किया। वह उनकी आवाज़ो की नकल उतारने लगा। इसके मुकाबले मे भेडियो की आवाज़ें और तेज़ हो गई। लगता था उनका बडा गवैया हमारे साथी की आवाज़ से नाराज़ हो गया था। ऐसा लगता था जैसे सबसे पहले कुछ दूर पर बैठा हुआ वह गवैया गाता था और तब उसके ये साथी गाने लगते थे। वह एक छोटा और किसी को नुकसान न पहुँचाने वाला जानवर था। उसकी जाति की यह आदत है कि वे घोडो के बीच मे घुसकर उनकी भैसो की खालो की बनी रस्सियो को चबा जाते है। इस मैदान मे दूसरे जानवर कुछ अधिक खूँखार होते है, खासकर सलेटी रग के भेड़िये, जिनकी तेज़ चीख थोड़ी थोड़ी देर बाद पास या दूर से सुनाई दे जाती थी।

अन्त मे मुझे नीद आ गई। जब जागा तो देखा कि मेरा साथी भी सो रहा था। इस नियम के टूटने से मुझे डर हुआ और इच्छा हुई कि उसे चौकन्ना करने के लिए उठाकर जगाऊँ। पर, मैने उसे कुछ देर सोने दिया, ताकि बाद में मै उसे डाँट सकूँ। जब-तब मै घोडो मे जाकर देख आता था कि सब ठीक है या नही ?. रात बहुत ठडी अँधियारी और गीली थी। घास पर ओस की बूँदें पड़ी हुई थी। यहाँ से कुछ ही गज की दूरी पर तम्बू दिखाई दे रहे थे। घोड़ो के अलावा यहाँ कुछ और न दिखाई देता था। वे भी सोते हुए तेज साँस ले रहे थे, करवट बदल रहे थे, या घास चर रहे थे। बहुत दूर अंधियारे मैदान में एक जगह कुछ लाल-सी रोशनी धीरे-धीरे बढ़ती दिखाई दी, जैसे कही आग जल उठी हो। कुछ देर बाद चाँद एक बडी लाल थाली के रूप में ऊपर उठ आया। कुहरे मे से वह और भी बड़ा दिखाई देता था। यह धीरे-धीरे ऊपर उठता गया। कुछ छोटे-छोटे बादल इसकी राह मे आए और हट गए। ज्यो-ज्यो इसकी रोशनी बढ़ती गई, पशुओ की पास में उठने वाली चिल्लाहट भी

बढ़ती गई। मानो पशुओ को इस नए घुस आने वाले चाँद से कुछ भय था। इस स्थान पर इस समय कुछ ऐसा खिंचाव और डर मिला-जुला था जो स्वयं में अद्भुत था। मीलो दूर तक या तो मै जग हुआ था या ये चिल्लाने वाले पशु।

कुछ दिन बाद हम प्लाट् नामक नदी के पास पहुँचे। सुबह ही हमारे पास दो घुडसवार पहुँचे। हम उन्हे उत्सुकता और चाव से देखने लगे। ऐसे एकान्त में इस प्रकार का अचानक सामना सदा ही अजीब उत्तेजना भर देता है। वे गोरे ही थे, हालाँकि वहाँ के रिवाज के अनुसार उनके पास राईफल नही थी।

हैनरी ने उन्हें देखकर कहा, "मूर्ख ! मैदानो में कही इस तरह भी बढ़ा जाता है। अगर कही पौनी तुम्हे ऐसे देख लें तो यूँ ही समाप्त कर दे।"

पौनियो ने उन्हे लगभग पकड ही लिया था, अगर हम ही पहुँच न जाते। मै और शॉ उनमे से टर्नर नाम के एक आदमी को जानते थे। उसे हमने वेस्ट पोर्ट मे देखा था। वे दोनो एक प्रवासी दल के सदस्य थे, जो हमसे कुछ आगे चल रहा था। अपनी बन्दूकें छोडकर वे कुछ बिछडे हुए बैलो को देखने निकले थे। यह उनके अनजानपन और जल्दबाजी को सूचित करता था। उनकी यह लापरवाही उन्हें बहुत महँगी पडी। हमारे आने से कुछ ही देर पहले उन्हे पाँच छह आदिवासियो ने घेर लिया और उन्हें निहत्था पाकर उनमे से एक ने टर्नर के घोडे की लगाम पकडकर उसे उतरने पर लाचार किया। उसके पास एक भी हथियार न था, पर उसके साथी ने अचानक ही जेब से पिस्तौल निकाली और तान दी। इस पर पौनी कुछ सहम गए। तभी उन्हें कुछ दूर पर हम पहुँचते हुए दिखाई दिए। हमे देखते ही उनका सारा दल भाग गया। अब भी टर्नर की यह जिद थी कि वह आगे ही जाएगा। उसे छोडने के काफी देर बाद साँझ के समय उस उजाड और ऊसर मैदान मे हम अचानक ही पौनियो की एक बडी राह को पा गए। वे इस राह से अपने गाँवो से दक्षिण की ओर शिकार की जगहो तक जाया करते थे। हर गर्मी के मौसम मे यहाँ से उनके असभ्य मर्द, औरत, बच्चो और घोडो, खच्चर आदि का समूह हजारो की संख्या मे अपने हथियारो और साज-सामान के साथ गुज़रता है। उनके पास सैंकडो भयकर कुत्ते भी होते है, जिन्हें ठीक से भौंकना भी नही आता और जो भेड़ियो की तरह ही चिल्लाते है। पौनी लोगो के स्थायी गाँव प्लाट् के निचले

हिस्से मे बसे हुए हैं। गर्मियो की मौसम मे इनके बहुत से निवासी शिकार और लूटमार के लिए मैदानो में निकल जाते है। इनके कत्ल और डाके के काम इतने भयकर होते है कि सरकार को इन्हे पूरी तरह दण्ड देना चाहिए। पिछले साल डाकोटा जाति के एक वीर ने इन गाँवो में अकेले ही तूफान मचा दिया था। वह एक अन्धेरी रात में अकेला ही इन गाँवो में घुस आया और एक घर की छत पर, बाहर की ओर से, चढ गया। सब सो रहे थे और वह चिमनी की राह से धीरे से अन्दर कूद पडा। उसने अपनी कृपाण निकाली और आग तेज़ करके अपने शिकारो को चुन-चुनकर, एक-एक कर, उन्हे मारने और उनका सिर उतारने लगा। इसी समय एक बच्चा अचानक ही चीख पड़ा। वह वीर इस घर से भागा और उसने सियू लोगो की तरह युद्ध के समय की आवाज की। उसने अपना नाम लेकर अपनी जीत की घोषणा की और अंधेरे मे ही मैदान की ओर भाग निकला। उसके जाने पर सारे गाँव मे भगदड मच गई। कुत्ते भौकने और चीखने लगे, औरते रोने लगी और गुस्से से भरे वीर हुकार भरने लगे।

हमे बाद मे पता चला कि हमारे मित्र कीर्सले को भी एक ऐसी ही छोटी घटना में सफलता मिली। वह और उसके साथी जंगल से अच्छा परिचय रखते थे और बन्दूक चलाने मे भी चतुर थे। परन्तु, इस मैदान पर जैसे वह सब कुछ भूल-सा गए थे। उनमे से कभी किसी ने यहाँ के जंगली भैंसों को न देखा था। उन्हें उसकी आदत और शक्ल के बारे मे बहुत कम मालूम था। प्लाट् पर पहुँचने के अगले दिन जब उन्होने कुछ दूरी के एक टीले पर कुछ शाखे हिलती देखी, तो सावधान हो गए। कीर्सले ने उनसे कहा, "सब अपनी रायफले निकाल लो। हमें शाम के भोजन के लिए ताजा मांस मिलने वाला है।"

यह लोभ काफी बडा था। लगभग दस आदमी अपनी गड़ियाँ छोड़कर तेजी से निकल पड़े। कुछ घोड़ो पर और कुछ पैदल ही इन ख्याली भैसो की ओर बढ़ गए। इसी बीच एक छोटे टीले ने बीच में आकर परला नजारा आँखो से छिपा दिया। आध घण्टा दौड़ने और पीछा करने के बाद उन्होने खुद को लगभग तीस पौनियो से घिरा हुआ पाया। वे घबराहट और अचरज में डूब गये। पौनी लोगों के पास धनुष-बाण ही थे इसलिए वे अपनी अन्तिम घड़ी

पास समझकर घबरा गए, क्योकि उन्हें पता था कि ऐसे मौके पर उनकी क्या हालत होती ? उन्होने बहुत ही दोस्ती भरे वचन बोलने शुरू किए और बहुत प्रेम से हाथ मिलाने के लिये आगे बढे । मिसूरी के हमारे ये दोस्त भी झगडा बच जाने के कारण बहुत खुश थे ।

अब हमारे सामने छोटी-छोटी रेतीली पहाड़ियाँ क्षितिज पर फैली हुई दीखने लगी। उस दिन हम दस घटे तक घोड़ो पर चढ़कर बढते रहे । उन छोटी-छोटी पहाडियो के बीच खड्डो तक पहुँचते-पहुँचते अँधेरा हो गया था । आखिर हम एक चोटी पर पहुँच गए । यहाँ से हमे सामने ही प्लाट् की घाटी दिखाई दे रही थी । हमने घोडो की लगामें खीची और खुशी से सामने के नजारे को देखने लगे । यह बहुत ही अच्छी बात थी । हमारी उम्मीदो और कल्पना को इसने जगा दिया, हालांकि कोई खास बात अब भी सामने न थी । कोई भी सुन्दर या महत्त्व की चीज हमारे सामने न थी। केवल एक लम्बा चौडा मैदान, उसका एकान्त और जगली वातावरण ही हमारे सामने फैला था । मीलो तक एक बडी झील के समान फैला हुआ मैदान हमारे सामने था । प्लाट् नदी छोटी-मोटी धारो मे बट कर इसमें से गुजर रही थी, या फिर कही-कही छोटे-से छायादार टापुओ के रूप मे पेडो का छोटा सा जंगल दिखाई दे जाता था । इस उजाड मैदान मे यही कुछ अच्छे नजारे थे । सामने कोई भी जिन्दा चीज नही दिखाई दे रही थी । कही कुछ छिपकलियो जैसे छोटे जन्तु इधर-उधर दौडते अवश्य दिखाई दे जाते थे ।

यात्रा का कठिन भाग हमने पार कर लिया था । पर अब भी-हम लारामी के किले से चार सौ मील दूर थे और हमारा तीन सप्ताह से अधिक का रास्ता बाकी था । इस सारे समय हम एक लम्बे सँकरे और रेतीले मैदान मे से गुज-रते हुए राकी पर्वतमाला तक पहुँचे । हमारे दोनो ओर छोटी-छोटी रेतीली पहाड़ियाँ कही-कही बहुत जगली रूप धारण कर गई थी और काफी दूर तक फैली चली गई थी । इनके परे सैकड़ो मील का एक उजाड और अनगाहा मैदान एक ओर अरकंसास तक और दूसरी ओर मिसूरी नदी तक फैला हुआ चला गया था । हमारे आगे और पीछे इस उजाड़ मैदान में दूर-दूर तक कोई भी फर्क न दीखता था । कभी यह धूप मे चमकता हुआ तपी हुई रेत का समुद्र बन जाता, तो कभी लम्बी खुरदरी घास से ढका हुआ मैदान । इधर-उधर

भैंसो की खोपड़ियाँ और हड्डियाँ वहुत अधिक बिखरी पडी थी। यह मैदान हजारो भैंसो ने एक साथ ही गाहा था। प्राय: इसमे कही-कही गोल गड्ढे पड़े हुए थे। यहाँ भैंसो ने गरमी में लोट लगाई थी। हर घाटी और नाले मे अच्छी बनी हुई पगडडियाँ उतर रही थी, जो कि पास की पहाडियो से आई थी। यहाँ ही दिन में दो बार नियम से भैंसो के जत्थे प्लाट् नदी मे पानी पीने आते थे। नदी बहुत फैली हुई थी, पर इसमें पानी एक पतली चादर के रूप में फैला था। यह आधा मील चौड़ी और डेढ़-दो फुट गहरी थी। इसके किनारे नीचे तथा झाडी और पेडो से रहित थे। रेत बहुत गीली और पानी में बहुत अधिक मिली हुई थी। चुल्लू भर पानी पीने पर भी दाँतो मे रेत की किरकिरी अनुभव होती थी। हालाँकि यह खुला और नंगा मैदान उकता देने वाला और भयकर लगता है, तो भी यहाँ के जगली जानवर, असभ्य आदमी और दूसरे जगली दृश्य इस घाटी को किसी भी यात्री के लिए लुभावना और चाव भरा बना देते है। इन मैदानों का शायद ही कोई यात्री यहाँ के अपने घोडे और राइफल के आनन्द को भूल पाता होगा।

सुबह जल्दी ही हम प्लाट् नदी के किनारे पहुँच गए। बहुत से असभ्य लोगो का एक जत्था हम तक आया। इनमें से हर कोई नंगे पाँव था और हर एक अपने घोड़े को रस्सी से थाम कर चल रहा था। उनकी वेशभूषा बहुत ही थोड़ी चीजो की थी: एक छोटी कमर-पेटी और घिसा हुआ चिथडे जैसा भैंसे की खाल का कधे पर पडा एक कपड़ा ही उनके शरीर पर था। हरएक का सिर मुंडा हुआ था। केवल माथे से चोटी की जगह तक ही थोडे से बाल बचे हुए थे, जैसे किसी मादा भेडिये की पीठ के बाल हो। हरएक के हाथ मे धनुष-बाण था और हरएक के घोडे पर शिकार से प्राप्त भैंसो का सुखाया हुआ मांस लदा हुआ था। मैदान के अर्धसभ्य आदिवासियो के बाद ये ही आदिवासी हमें पहले-पहल दिखाई दिए। ये उनसे एकदम भिन्न थे।

ये वे ही पौनी थे, जिन्हें कीर्सले पहले ही मिल चुका था। ये लोग पास के मैदान मे ही शिकार खेलने वाले एक बड़े दल मे से थे। यह बहुत तेज़ी से हमारे तम्बुओ से एक फ़र्लांग के अन्दर ही अन्दर होकर गुज़रे। पर इन्होंने अपनी शरारत भरी आदत को भुलाकर, इस मौके पर, न हमारी ओर देखा, न रुके। मै कुछ दूर बढ़कर उनसे मिलने गया और उनके सरदार से कुछ बातें

की। उसे मैंने पावभर तम्बाकू भेंट दिया। इस अचानक मिलने वाली भेंट के लिए उसने बहुत धन्यवाद दिया। हमसे कुछ आगे चलने वाले प्रवासियो के एक दल पर इन्होने या इनके कुछ साथियो ने भयकर हमला किया था। उनमें से कुछ दूरी पर पिछडे हुए दो आदमियो को इन्होने घेर लिया। वे लोग घोड़ो को एड लगाकर भाग निकले। इस पर पौनियो ने आवजें कसनी शुरू की और उनमें से पिछले की पीठ अपने बानो से छेद दी। अगला साथी भागकर अपने दल के पास इस खबर को ले गया। डरे हुए उन प्रवासियो ने बहुत दिन तक वही डेरा डाले रखा और अपने मरे हुए साथी को खोजने भी कोई न निकला।

हमारे न्यू इग्लैंड का जलवायु यहाँ से कुछ मिलता-जुलता था। जैसे, इसी सुबह धूप कुछ तेज और हवा घुटी-घुटी सी थी। सूर्य चढ रहा था पर उसकी धूप सताने वाली न थी। इसी समय अचानक ही पश्चिम की ओर बादलो का एक काला अम्बार उठा और एकदम ही हम पर ओले और वर्षा गिराने लगा। ऐसे लगा जैसे सुइयो भरी आँधी आई हो। इस समय घोडो की हालत देखने लायक थी। वे बहुत ही नाराज-से होकर अपनी छोटी छोटी पूँछे दबाए काँप रहे थे। छोटे भेडियो की-सी आवज करता हुआ वह तूफान हम पर से गुजरता रहा। राइट् के टट्टुओ की लम्बी कतार पर इस आँधी की बुरी मार पडी। वे एक घेरे में बँध गए, जैसे सर्दियो के तूफान में बर्फ के इलाके के पक्षी इकट्ठे हो जाते है। इस तरह कुछ देर तक अपने घोडो की पीठ पर झुके हुए हम लोग वैसे ही खडे रहे। हम बोल तक न सकते थे। हालाँकि, इस हालत में भी क्प्तान ने एक बार हमारी ओर देखना चाहा। उसका चेहरा एक दम लाल था और उसकी पेशियाँ बडी खिची हुई थी। लगता था जैसे उसने बुरी साईत में घर छोडने के अपने इरादे को ही गालियाँ दी हो। वह ऐसे ही कुछ फुस-फुसाया। यह सिलसिला बहुत देर तक जारी न रहा। इसके दबते ही हमने अपने तम्बू गाड़ दिए और बादलो से घिरा बाकी दिन उन्ही तम्बुओ में बिताया। हमारे प्रवासी साथी भी पास में ही अपना तम्बू डाले पड़े थे। अपना काम पहले सम्हाल लेने के कारण हमने आस-पास मिलने वाली तमाम लकडी जमा कर ली थी और, इसलिए केवल हमारे ही डेरे की आग तेजी से जल रही थी। इसी बीच इस आग के चारो ओर कुछ मैले और असभ्य-से लोग जमा हो गए। वर्षा में भीग कर वे लोग काँप रहे थे। इनमे से दो-तीन आदमी राकी

पर्वतमाला में पशु फँसाने के काम के कारण या फिर कम्पनी की नौकरी मे आदिवासियो के गाँवों में व्यापार करने के कारण आधे असभ्य-से ही लग रहे थे। ये सब ही कनाडा से आए दीखते थे। इनके सख्त, झुर्रीदार चेहरे और छोटी-छोटी मूँछें इनकी छोटी सी टोपियों के नीचे बड़े अजीब से दीख रहे थे। लगता था कि ये भी बहुत बुरे लोग है। इनमे से बहुत से होते भी बहुत बुरे है।

अगले रोज़ हम कीर्सले की गाड़ियो से जा मिले। इसके बाद के एक-दो सप्ताह तक हम साथ-साथ चले। इस साथ का एक लाभ भी था कि अब हमें पहरे के लिए जल्दी-जल्दी नही जागना पडता था। अधिक आदमी होने के कारण अब बारी कुछ देर से आती थी।

—:o:—

७ : भैंसा

प्लाट् नदी के किनारे चार दिन बीत गये, पर हमें कोई भी भैंसा दिखाई न दिया। निशानो से साफ था कि पिछले साल वे बहुत बडी संख्या में रहे होगे। जगल मे पेड़ बहुत ही कम थे। फिर भी हमें एक ऐसी लकडी मिल गई जो बहुत अच्छी तरह जलती थी और जिसका कोई बुरा असर न होता था। एक दिन सुबह ही गाडियाँ चल पडी। मै और शॉ घोड़ों पर सवार हो गए थे, पर हेनरी बुझते हुए अगारो के पास अब भी बैठा हुआ था। पास ही उसका मजबूत व्यादोत जाति का टट्टू उसके पास ही खडा हुआ हमारी ओर देख रहा था। अन्त मे हेनरी उठा और उसने अपने टट्टू की गर्दन थपथपायी, तब वह इस पर चढ गया, पर उसका हृदय प्रसन्न न था। इस टट्टू के गुणो के कारण उसने इस का नाम 'पाच सौ डालर' रख दिया था।

"हेनरी, क्या बात है ?"

"ओह ! मुझे अकेलापन खल रहा है। मैं यहाँ कभी नही आया। पर उधर मैदानो और दूसरी जगहो पर मैने चारो ओर भैंसे ही भैंसे देखे है। यहा तो जैसे कुछ है ही नही।"

साँझ से पहले उसने और मैने एक हिरण की खोज में अपना दल छोड़ा और आगे निकल गए। बहुत दूर पर, शायद दाहिनी ओर, एक या दो मील दूर हमे बहुत बडी-बडी सफेद गाडियाँ और घुडसवारो की छोटी-छोटी पंक्तियाँ दिखाई देने लगी। वे सब इतना धीरे-धीरे चल रहे थे, जैसे बिल्कुल ही न बढ रहे हो। बाईं ओर नंगी, जली हुई और सुनसान रेतीली पहाड़ियाँ दिखाई दे रही थी। सामने का फैला मैदान लम्बी लहराती घास से हरा-भरा था। यह घास हमारे घोडो के पेटो को छू रही थी। हवा के झोको से यह खूब लहरा रही थी और इसके बीच में हिरण और भेडिये इधर-उधर घूमते फिर रहे थे। भेडियो की पीठो के बाल, उनके उछलने पर, कभी-कभी दीख जाते थे। हिरण अपनी अजब उत्सुकता मे कभी-कभी हमारे पास तक आ जाते थे। उनके छोटे सीग और सफेद गले घास मे से दिखाई दे जाते थे, विशेषकर, जब वे हमारी

और अपनी काली-काली आँखो से देखने लगते।

मै घोडे से उतरा और भेड़ियो पर निशाना साधकर शिकार का मजा लेने लगा। हेनरी इधर-उधर के इलाके पर नजर दौड़ा रहा था। बहुत देर बाद वह एकाएक चिल्लाया और मुझे घोड़े पर सवार होने को कहने लगा। उसने रेतीली पहाड़ियो की ओर इशारा किया। हमारे सामने एक-डेढ मील दूर दो काली सी शाखें एक पहाडी पर से गुजरती दिखाई दी और उसकी चमकती चोटी चोटी के पीछे जा छिपी। हेनरी ने अपने घोडे को चाबुक लगाई और बढ़ने के लिये आवाज दी। मै उसके पीछे-पीछे चलता हुआ उन पहाडियो की ओर तेजी से बढने लगा।

उन पहाडियो मे से एक रास्ता एक गहरी घाटी में उतर रहा था। मैदान की ओर यह अधिक चौडा था। हम इस राह पर बढे। आगे बढ़ने पर हमने चारो ओर ऐसी ही छोटी-छोटी पहाड़ियो से अपने को घिरा पाया। इनमें से आधी से अधिक पहाड़ियो की ढलवाँ पीठें नगी थी, जबकि बाकी हिस्से पर छोटी-मोटी घास के गुच्छे नजर आ जाते थे। कही-कही छोटे-मोटे कँटीले पौधे भी दिखाई दे जाते थे। इस इलाके में अनेको छोटी-मोटी खाइयाँ थी। ज्योही आकाश मे अँधेरा छाने लगा और बादलो से भरी हवा चलने लगी, झाड़ियाँ और चोटियाँ अधिक भयंकर और उजाड लगने लगी। पर हेनरी के चेहरे पर उत्सुकता ही उत्सुकता नजर आ रही थी। उसने अपनी काठी के नीचे की खाल मे से एक बाल उखाडा और हवा मे उड़ा दिया। इससे हवा का रुख पता चल गया। यह हमारे सामने की ओर उड गया। शिकार भी हमारे सामने की ओर ही था। इसलिए उस तक पहुँचने के लिए हमे अपनी चाल बहुत तेज करनी आवश्यक थी।

हम इस घाटी से धीरे-धीरे ऊपर चढे और खड्डो को पार करते हुए सांप जैसी टेढी-मेढी एक दूसरी घाटी में पहुँच गए। इसमें उतर कर हम पूरी तरह छिप गए। हम फिर ऊपर चढे और साथ की झाडियो में कुछ खोजते रहे। इसी समय अचानक हेनरी ने लगाम खीची और नीचे उतर पड़ा। लगभग दो फर्लांग दूर एक पहाड़ी पर भैंसो का एक जलूस सा चल रहा था। सभी बहुत धीरे-धीरे और उदास से बढ रहे थे। इनके पीछे दूर के एक गड्ढे से और भी भैंसे एक दूसरी हरी पहाडी पर चढने लगे। तब एक बड़ा सा

सिर, अपने टूटे हुए सीगो के साथ, पास की एक घाटी से ऊपर निकला। तब बहुत धीरे-धीरे शाही चाल से एक-एक करके बहुत से जानवर आने लगे और अपने शत्रु से बिल्कुल बेखबर होकर घाटी पार करने लगे। तुरन्त ही हेनरी जमीन पर लेटकर घास और झाड़ियो में से होता हुआ अपने बेखबर शिकार की ओर बढ़ने लगा। उसके पास मेरी और उसकी अपनी दोनो बन्दूके थी। वह जल्दी ही मेरी नजर से ओझल हो गया। भैसे अब भी निकलते आ रहे थे। कुछ देर तक चारो ओर चुप्पी छाई रही। मै अपने घोडे पर बैठा सोचता रहा कि वह क्या करना चाहता है? तभी अचानक दोनो बन्दूको से गोली छूटने की आवाजे आईं और भैसो की वह लम्बी कतार सामने की पहाड़ी पर से तुरन्त ही बिखर कर ओझल हो गई। अब हेनरी उठ खडा हुआ और उनकी ओर देखने लगा।

मैने कहा, "तुम निशाना चूक गये हो।"

हेनरी ने कहा, "हाँ! आओ, चलो, चले!" वह घाटी मे उतरा और नये सिरे से बन्दूकें भर कर घोडे पर सवार हो गया।

हम पहाडियो तक भैसो के पीछे-पीछे चले। जब तक हम चोटी पर पहुँचे, भैसे आँखो से ओझल हो चुके थे। परन्तु, कुछ दूरी पर घास मे एक मरा हुआ पशु पड़ा था और उससे कुछ दूर एक और मौत से लड़ रहा था। हेनरी ने मेरा ध्यान खीचते हुए कहा, "तुमने देखा, मै उस पर निशाना चूक गया हूँ!"

उसने करीब डेढ सौ गज दूर से गोलिया चलाई थी और दोनो ही गोलियाँ उनके फेफडो में से पार हो गई थी। भैसे के शिकार में यही निशाना सबसे अच्छा माना जाता है।

अँधेरा बढ चला और साथ ही आँधी बढती नजर आने लगी। हमने अपने घोडो को इन शिकारो के सीगो से बाँध दिया। हेनरी तुरन्त ही चीर-फाड के काम मे बहुत सुघड तरीके से लग गया। मै भी उसकी नकल करने लगा। जब मैने वह मास अपने घोडे की पीठ से बाँधना चाहा, तो वह डर और घृणा से कुछ बिदका। मास बाँधने के लिए हम एक फालतू रस्सी काठी के पिछली ओर बाँधे रखते थे। बहुत देर बाद हम इस कठिनाई को पार कर पाए और तब इस नये भोजन के बोझ को, चुने हुए हिस्सो के रूप में, लेकर

हम चल पड़े। अभी हम लौट कर कुछ ही घाटियाँ पार कर पाये होगे कि एकदम मूसलाधार वर्षा के झोके पर झोके सामने से हमारे चेहरो पर टकराने लगे। अभी सूर्य छिपने मे एक घटा बाकी था। फिर भी अँधेरा एकदम बहुत घना हो गया था। जमा देने वाले इस आँधी और तूफान ने हमारी खाल को एकदम ही सुन्न कर दिया। पर हमारे घोडो की तेज और भारी चाल ने हमारी गरमी बनाए रखी। हम उन्हे इस तेज वर्षा मे भी अपने चाबुको से तेज चलने पर विवश करते रहे। यहाँ मैदान बहुत कठोर और समतल हो गया था। सामने हर ओर मैदानी कुत्तों की बनाई पगडण्डियाँ और उनकी मादो के पास ताजा मिट्टी के ढेर बहुत अधिक दिखाई देने लगे। लगता था जैसे किसी खेत मे सैकड़ो छोटी-छोटी पहाड़ियाँ खड़ी हो। इस पर भी न तो भौंकने की आवाज सुनाई दे रही थी और ना ही किसी कुत्ते की नाक निकलती दीख रही थी। लगता था सभी अपनी माँदो के अन्दर गहरे चले गए हो। हमें उनकी सूखी और आराम देने वाली जगहो से ईर्ष्या होने लगी। घंटा भर बहुत कठिन सवारी करने के बाद हमे आँधी मे से झाँकते हुए अपने तम्बू दिखाई देने लगे। उनके एक ओर से हवा ने उन्हें झुका दिया था, तो दूसरी ओर से वे फूल रहे थे। दूरी पर बँधे हुए घोडे और खच्चर काँपते हुए एक दूसरे से सटकर खड़े हुए थे। ऊपर के तीन सूखे हुए पेडो में से गुजरती हवा की सीटियाँ सुनाई दे रही थी। एक संरक्षक की भाँति शॉ अपने तम्बू के दरवाजे पर काठी डाले बैठा था और आराम से अपना पाइप पी रहा था। हमने माँस का बोझ उसके सामने ही जमीन पर उतार कर रखा। पर वह उसे देखकर चुप रह गया। इसके बाद आने वाली रात बहुत अधेरी और भयकर थी। पर अगली सुबह धूप इतनी अच्छी और सुहानी थी कि कप्तान ने भी भैसे के शिकार पर जाने की चाह दिखाई। भैंसे नदी के किनारे इन मैदानो मे अपनी मूर्खता के कारण इधर-उधर घूमते रहते थे। यह था प्लाट् के किनारे का वातावरण।

कप्तान को अचानक ही जो शिकार की सूझी, यह सब मौसम की वजह से ही नही था। वह सदा ही अपने शिकारी होने का दावा भरता था। पहली दोपहर को भी वह अपने कुछ साथियो के साथ शिकार पर निकला था, पर परिणाम मे उन्हें अपने सबसे अच्छे घोडे की हानि सहनी पडी। सौरेल ने

एक भैंसे का पीछा करते हुए उसे बुरी तरह घायल कर दिया था। कप्तान को अपने यूरोप के ढग की ही घुडसवारी का पता था, इसलिए सौरेल के इस प्रकार शिकारी ढग पर खाई और खड्डो में से घोड़ा दौडाने को उसने अच्छी निगाह से न देखा। सौरेल की यह आदत राकी पर्वतमाला में इसी प्रकार घोडा दौडाने के कारण पडी थी। दुर्भाग्य से यह घोडा र— का था और सौरेल को उससे बहुत अधिक घृणा थी। लगता है कप्तान ने खुद भी एक भैंसे का पीछा करने की कोशिश की। हालाँकि वह अच्छा घुडसवार था, पर तो भी ज़मीन के ऊबड-खाबड़ होने के कारण वह जल्दी ही हिम्मत हार बैठा। उसे ऐसी जमीन से बहुत घृणा थी।

अगले दिन सुबह जब हम सैर से लौटे तो हेनरी चिल्लाया, "लारामी क़िले से ये दोनो—पैंपिन और, फ्रैडरिक—आए है।" हमें बहुत दिन से इस मिलन की इन्तजार थी। पैंपिन उस किले का मालिक था। वह भैंसो की खालो और बीवर जन्तुओ के व्यापार के लिए नदी की राह आया था। ये चीजें उसने पिछली सदियो के व्यापार में कमाई थी। मेरे थैले में एक पत्र उसके नाम था, जो मै उसे देना चाहता था। इसलिए हेनरी को उनकी नावे रुकवाने को कहकर मै चिट्ठियाँ लेने के लिए अपनी गाडी की ओर चल पडा। गाडियाँ हमसे चार मील आगे चली गई थी। आधे घटे में मै पत्र लेकर बहुत तेज चाल से वापिस लौटा। रास्ते मे मैने बहुत से आँधी के मारे टूटे हुए वृक्ष देखे और उनके पास से गुजरते हुए आदमियो और घोडी की पक्तियाँ देखी। यहाँ आने पर मुझे अजीब जमघट के दर्शन हुए। कुल किश्तियाँ ग्यारह थी और वे सभी खालो से लदी हुई थी। सब को किनारे से बाँध दिया गया था, ताकि तेज धार मे वे बह न जाएँ। उनके खेनेवाले नाविक मैक्सिको के लोग थे। उनके असभ्य चेहरे मुझे देखने के लिए ऊपर उठ गए। एक किश्ती में बीचोबीच पैंपिन सामान ढकने वाले तिरपाल पर बैठा हुआ था। वह मजबूत और डीलडौल वाले शरीर का था। उसकी आँखे चमकीली और सलेटी रंग की थी। फ्रेडरिक भी अपने स्वामी के पास ही खड़ा था। वह भी लम्बा और कठोर ढाँचे वाला था। इनको छोडकर कुछ पहाड़ी आदमी भी इस दल मे थे, जिनमें से कुछ किश्तियो मे ही लेटे हुए थे और कुछ किनारे पर टहल रहे थे कुछ ने आदिवासियो के समान भैंसो की खालें रंगकर ओढी हुई थी।

थी। एक की गालो पर लाल रग का पाउडर मला हुआ था। ये सब दोगले थे, हालाँकि उनमे फ्रांसीसी खून अधिक लगता था। उनमें से कुछ की आँखें आदिवासियो की तरह साँप-की-सी लगती थी। कुछ भी हो वे सभी अपने को लाल रग वाले आदिवासियो मे खपा देने के लिए उत्सुक दीखते थे।

मैंने उस धनी—पैंपिन—से हाथ मिलाए और पत्र दिया। इसके बाद तुरन्त ही नावें धारा में बढ़ गईं। उन्हें जल्दी करनी आवश्यक थी, क्योकि लारामी किले से अब तक की यात्रा पहले ही एक महीने से अधिक समय ले चुकी थी और नदी भी हर रोज उथली होती जा रही थी। दिन में पचासो बार नाव ज़मीन मे फँस जाती थी। सच तो यह है कि प्लाट् नदी मे प्रत्येक नाव खेने वाले को अपना आधा समय इन्ही रेतीली उलझनो मे बिताना पड़ता है। इनमें से स्वतन्त्र नाविको की दो नावें इसी तरह उथले में उलझ गई थी और इस प्रकार, सारे समूह से अलग हो गई थी। यह घटना पौनी लोगों के गाँव के पास की है। उन लोगो ने इन्हें अकेला पाकर एकदम ही घेर लिया और इनकी हर चीज लूट कर ले गए। जाते-जाते मज़ाक के तौर पर वे इनके नाविको और व्यापारियो को नाव पर बाँध कर डाल गए और छड़ियो से अच्छी मरम्मत कर गए।

हमने उस रात नदी के किनारे ही डेरा डाला। हमारे साथी प्रवासियो मे एक बड़ा लड़का था, जिसकी आयु लगभग अठारह वर्ष की रही होगी। उसका सिर काफ़ी बड़ा और गोल-मटोल था। उसके चेहरे का रंग भी बुखार के बार-बार हमलो के कारण फीका पड गया था। टोप को वह ठोड़ी के नीचे कसकर पहना करता था। उसका शरीर ठिगना और गठीला था, परन्तु उसकी टाँगें जरूरत से ज्यादा लम्बी थीं। मैंने साँझ के समय उसे पहाडी पर खूब लम्बे-लम्बे डगो से चढते देखा। वहाँ वह पहाड़ी की चोटी पर खडा हुआ बहुत अजीब लग रहा था। कुछ ही क्षण में हमे पहाडी के पीछे से उसके चीखने की आवाज़ सुनाई दी। हम में से कुछ साथी अपनी बदूकें सँभाले उसे बचाने के लिए दौड़ पड़े। उनका ख्याल था कि या तो उसे किसी आदिवासी ने घर दबोचा है या किसी काले भालू ने। सच यह था कि उसने खुशी के मारे वैसा शोर किया था। वह दो भेड़ियो के बच्चो के पीछे उनकी माँद तक दौड़ता गया था और वहाँ अपने घुटनों के बल झुककर

एक कुत्ते की भाँति उनकी घात में बैठा था।

सुबह होने से पहले ही इस लड़के ने एक नई गड़बड़ पैदा कर दी। आधी रात के समय पहरे की जिम्मेवारी उसकी थी। पर, पहरे पर आते ही उसने अपने सोने के लिए एक गाड़ी के नीचे कुछ बोरियाँ बिछा ली और उन पर अपना सिर टिका कर आँखें बन्द करके सो गया। हमारे डेरे का पहरेदार यह सोचकर कि उसे दूसरी ओर से कोई वास्ता नही, अपने घोड़ो और खच्चरो की देखभाल से ही सन्तुष्ट रहा। उसने बताया कि रात को भेड़ियों का शोर कुछ अधिक था, पर इस पर भी किसी गड़बड़ का डर न था। पर, सुबह होते ही किसी भी घोड़े या अन्य पशुओ के खुर आदि का एक भी निशान वहाँ न बचा था। वह लडका जब सो रहा था, तब भेड़िए घोड़ो की रस्सियो को काटकर उन्हे भगा चुके थे।

इस प्रकार हमे प्रवासियो साथ के यात्रा करने के र—के निश्चय का मजा चखना मिला। अब उन्हे इसी हालत मे छोडकर बढ जाना अच्छा न था। इसलिए हमने कुछ देर रुककर उनके पशुओ को ढूँढना अच्छा समझा। शायद पाठक यह जानना चाहे कि उस टौम नाम के लडके को क्या दण्ड मिला? मैदानो में यात्रा के कानून के अनुसार ऐसे आदमी को अपने घोडे की लगाम पकड़कर सारे दिन पैदल चलना चाहिए। हमे अपने साथियो पर गुस्सा आया कि उन्होने उसे ऐसा कोई भी दण्ड नही दिया। पर यह भी सच है कि अगर वह हमारे दल में होता तो हम भी उसे कोई दण्ड न दे पाते। मजा तो यह था कि हमारे साथियो ने उसे दण्ड देने की बजाय उसकी अयोग्यता के कारण उसे पहरे से कतई छुट्टी दे दी। इसलिए अब वह खूब डटकर सोने लगा। ऐसा इनाम किसी भी प्रकार अच्छा नही कहा जा सकता। क्योकि इससे बाकी पहरेदारो का हौसला टूट जाता है। कौन चाहता है कि इस प्रकार अपनी नीद से जागकर कोई भी ऐसे कठिन पहरे के लिए तैनात किया जाए और अपनी नीद के अच्छे तीन घण्टे इस पहरे पर बिताए? खासकर तब, जब कि दूसरे खुर्राटे भर रहे हो।

अगले दिन अचानक ही एक शोर गूँज गया—"भैसा! भैसा!"

हमने देखा कि सामने एक बडा भैसा अकेला ही घूम रहा था, जैसे उसे किसी भी साथी से नफरत हो। सम्भव था कि पहाड़ी के पीछे की ओर और

भी भैंसे हों। डेरे के नीरस और सुस्ती भरे जीवन से घबराकर मैं और शॉ अपने घोड़ों की काठियाँ कसकर और पिस्तौलें सँभालकर हेनरी के साथ शिकार की खोज में बढ़ गए। हेनरी का इरादा खुद शिकार का नही था। वह हमें मदद भर देना चाहता था। उसने अपनी बंदूक साथ रखी हुई थी, पर हम उन्हें बोझ समझकर पीछे छोड़ आए थे। हम पाँच-छः मील तक बढ़ते रहे, पर भेड़ियों, सांपों और मैदानी कुत्तों को छोड़कर हमे कुछ भी दिखाई न दिया।

शॉ ने कहा, "इस तरह तो काम नही चलेगा।"

"क्या ? कैसे काम नही चलेगा ?"

"एक तो यहाँ जंगल नहीं है और दूसरा यहाँ की ज़मीन ऐसी नुकीली घास से भरी है कि कोई भी घायल हो जाए। मेरे विचार में आज शाम तक हममें से कोई न कोई घायल अवश्य होगा।"

उसके इस विचार मे कुछ सत्य था, क्योंकि यहाँ की ज़मीन घुड़दौड़ के लिए कोई विशेष अच्छी न थी। हम ज्यो-ज्यो आगे बढे यह और भी खराब होती गई। बाद में तो खाइयों, घाटियो और खड्डों से इस तरह भर गई कि इसे पार करना बहुत कठिन हो गया। अन्त में अपने से एक मील आगे हमने भैंसों का एक जत्था देखा। एक हरी ढलान पर कुछ भैंसे चर रहे थे, जबकि बाकी भैंसे नीचे के एक चौड़े खड्ड में इकट्ठे होकर आराम कर रहे थे। हम अपने को छिपाते हुए, कुछ घूमकर, उनकी ओर बढ़े और तब उनसे दो सौ गज की दूरी पर ही हम पहाड़ी पर चढ़ आए। यहाँ से हमें वे साफ दिखाई दे रहे थे। एक चट्टान के पीछे हम उतर पड़े और छिपकर अपनी पिस्तौल जाँचने लगे। फिर से घोडो पर चढ़कर हम पहाड़ी पार करके उनकी ओर एक तेज़ चाल से बढे। उन्हें भी अचानक ही हम से खतरा हो गया। जो पहाड़ी पर थे वे नीचे उतर पड़े और जो नीचे थे वे एक झुण्ड में इकट्ठे हो गए। तब वे सब मिलकर उछलते हुए एक-दूसरे से टकराते आगे बढ़ने लगे। हमने भी अपने घोड़ो को एड़ लगाई और पूरी चाल से उनका पीछा किया। ज्यों ही यह जत्था डर के कारण तोडता-फोडता आगे-आगे भागता हुआ एक दर्रे के पास पहुँचा, हम भी इसके पीछे-पीछे पहुँच गए। धूल के अंबार के कारण हमारी साँस घुट रही थी। हम उनके जितना ही समीप आये, उनका डर और उनकी

चाल उतनी ही बढती गई। हमारे घोडो के लिए यह काम बिल्कुल नया था। इसलिए वे बहुत डरे हुए लग रहे थे। नजदीक पहुँचने पर घबरा कर इधर-उधर बिदकने लगे। वे इन जानवरो मे घुसने से कतरा रहे थे। अब ये भैंसे छोटी-छोटी टुकड़ियो में बँटकर अलग-अलग दिशाओ में भागने लगे। इस समय शॉ न जाने किधर छिप गया। हम दोनो ही एक-दूसरे के विषय में कुछ न जान पाए। मेरा घोड़ा पौंटियक इन पहाडियो के उतार-चढाव पर एक जगली हाथी की तरह बढ रहा था। उसके ज़ोरदार खुर जमीन पर हथौड़ो की तरह पड़ रहे थे। उसमें उत्सुकता और डर दोनो मिले-जुले थे। वह सामने के डरे हुए जत्थे को घेरने के लिए उतावला था, पर पास आते ही निराश होकर एक ओर को मुड जाता था। हमारे सामने के ये विद्रोही जानवर बहुत अच्छे नही लग रहे थे। उनकी सटाएँ और उनके सर्दियो मे बढ आने वाले पीठ के बाल कम होते जा रहे थे। उनकी खाल खुरदरी हो चुकी थी। दौडते हुए उनके कुछ बाल हवा मे भी मिल जाते थे। बहुत देर बाद मैने अपने घोडे को एक भैंसे के पीछे लगा दिया। मैने बहुत कोशिश की कि मेरा घोडा इसकी बगल मे पहुँच सके। पर, नाकाम रहने पर मैने दूर से ही भैंसे पर गोली दाग दी, हालाँकि मेरी जगह बहुत अच्छी न थी। इस गोली की आवाज से मेरा घोडा इतना अधिक डरा कि मै अपने शिकार से फिर पीछे पड़ गया। मेरी गोली भैंसे की पीठ में बहुत पीछे लगी थी, इसलिए उसे कुछ अधिक हानि न हुई। भैंसे को मारने के लिए कुछ खास जगहो पर निशाना साधना होता है, नही तो शिकार साफ बच निकलता है। यह जत्था पहाडी की चोटी पर बढने लगा। मै भी इसका पीछा करता रहा। जब मेरा घोड़ा पहाड़ी के दूसरी ओर उतरने लगा तो मैने देखा कि दाईं ओर हेनरी और शॉ भी आराम से एक खड्ड मे उतर रहे हैं। हमारे सामने की अगली पहाडी के पीछे सारे भैंसे छिपते जा रहे थे। उनकी छोटी-छोटी पूँछें तनी हुई थी और उनके खुर धूल मे से चमक रहे थे।

इसी समय मैंने शॉ और हेनरी को देखा। वे मुझे पुकार रहे थे। इस दशा मे घोड़े का रोकना बहुत ही कठिन था, क्योकि वह बहुत तेज़ी मे था। मेरे पास उसे रोकने के लिए वैसे साधन भी न थे, क्योकि मै रास का एक ज़रूरी हिस्सा डेरे पर ही छोड आया था। मुँह मे फँसाए जाने वाले इस हिस्से के बिना उसे एकदम रोकना कठिन था। मेरा घोडा इतना मजबूत और कठोर

था कि शायद ही कभी कोई घोड़ा उससे अधिक इन मैदानो और खड्डों में दौड़ा होगा। परन्तु इस नए शिकार के नजारे ने उसे डर से भर दिया और इसीलिए जब वह पूरी तेज़ी पर होता तो उसे रोकना कठिन होता था। पहाडी की चोटी पर पहुँच कर मुझे भैंसो का निशान तक भी दिखाई न दिया। वे सब पहाड़ियो और खड्डो मे छिप चुके थे। मैंने अपनी पिस्तौलें फिर से भरी और जब तक उन्हें सामने की एक तलहटी में घूमते हुए फिर से न देख लिया, बढ़ता ही रहा। इस समय तक इन भैंसो का डर कुछ कम हो गया था। मेरा घोडा इनके बीच घुस गया। वे इधर-उधर बिखर गए और मुझे फिर से उनका पीछा करना पड़ा। बारह के लगभग भैंसे मेरे सामने पहाड़ियों पर चढ रहे थे और उनके चढ़ाव-उतार पर अपने भारी-भरकम शरीर को लेकर बढ़ रहे थे। एड़ और चाबुक लगाने पर भी मेरे घोड़े ने पीछा करने में आना-कानी की। पर कुछ दूरी पर एक भैंसा अपने जत्थे से कुछ पीछे पड़ गया। मैंने बहुत कठिनाई से अपने घोडे को उसके कुछ पास तक पहुँचने पर मजबूर किया। भैंसे की पीठ पर पसीना आया हुआ था, वह तेज साँसें ले रहा था और उसकी जीभ फुट भर नीचे तक लटक रही थी। धीरे-धीरे मै उससे आगे बढ़ गया और घोड़े को उसके साथ चलाने लगा। अचानक ही भैंसे ने अपनी चाल धीमी कर दी और हमारी ओर घूमकर गुस्से और बेचैनी के साथ अपने भारी-भरकम सिर और सीगो को नीचे झुकाकर हमले के लिए तैयार हो गया। मेरा घोड़ा डर के मारे एक तरफ उछल गया। मै लगभग नीचे गिर ही गया था, क्योकि ऐसे झटके के लिए तैयार न था। मैंने अपनी पिस्तौल घोड़े के सिर पर तानी। पर, उसी समय भैंसा फिर से भागने लगा। मैने अपनी गोली उसी पर दाग दी। तब मैने फिर से लगाम खीची और अपने साथियों से मिलने का निश्चय किया। समय बहुत अधिक हो गया था। घोडा पूरी तरह साँस नही ले पा रहा था। उसके पासों में पसीना बुरी तरह छूट रहा था। मै खुद भी अनुभव कर रहा था, जैसे गरम पानी में भीग गया हूँ। भविष्य मे कभी बदला लेने का इरादा करके मै अपनी जगह और राह की बात सोचने लगा। मेरी यह खोज ऐसी ही थी, जैसे महान सागर में कोई जहाज निशान खोजना चाहे। मुझे खयाल न था कि मै कितने मील और किस दिशा में भागता आया हूँ। मेरे चारों ओर यह विस्तृत मैदान टीलो और खाइयो के रूप में फैला हुआ

था। एक भी पहचाना निशान मुझे दिखाई न दे रहा था। मेरे गले में दिशा देखने की एक घडी लटकी हुई थी। मैंने उत्तर की ओर बढने का निश्चय किया। मै यह नहीं जानता था कि प्लाट् यहाँ से अपना रास्ता बदल लेती है। इसलिए मै दो घण्टे तक इसी दिशा में बढ़ता रहा। ज्यों-ज्यो मैं आगे बढता गया, मैदान का रंग बदलता गया। अब खाइयाँ कुछ छोटी और हलकी थी, पर प्लाट् नदी या किसी आदमी का कोई भी निशान दिखाई नहीं दिया। चारो ओर जंगल-ही-जंगल फैला हुआ दिखाई दे रहा था और मैं अपने उद्देश्य से हमेशा की भाँति दूर था। अब मुझे अपने ही भटक जाने का डर हुआ और घोड़े पर चढ़े-ही-चढ़े मैंने अपने सारे जंगल के ज्ञान को बटोर कर उसका लाभ उठाना चाहा, ताकि मैं इस आफत से बच सकूँ। मुझे सूझा कि इस समय भैंसे ही मुझे रास्ता दिखा सकते है। अचालक ही मुझे उनके द्वारा बनाया हुआ, नदी की ओर जाने वाला, एक रास्ता मिल गया। मेरी राह से यह एकदम दाईं ओर मुड गया था। ज्यो ही मैंने घोड़े को इस दिशा में मोड़ा, उसके खडे कानो और स्वतन्त्र चाल ने मुझे बता दिया कि मेरी दिशा बिल्कुल ठीक थी।

इस बीच मेरी यह खोज अकेली ही रही थी। इस सारे इलाके में चारों तरफ भैंसे-ही-भैंसे अनगिनत रूप में, फैले हुए दिखाई दे रहे थे। नर, मादा और कट्टो के रूप मे कतारें बाँधकर झुंड के झुंड सामने की ढलानों पर इकट्ठे थे। वे दाएँ और बाएँ पहाड़ियो पर चढ़ रहे थे। सामने के पीले से टीले पर उनके काले-काले निशान ही दिखाई दे रहे थे। कभी-कभी किसी खुर्राट अकेले बूढे भैंसे को मै चौंका देता था। वह या तो चर रहा होता या सो रहा होता था। मेरे समीप पहुँचते ही वे उछल पडते, मेरी ओर जड़-से बनकर देखने लगते और तब एकदम भाग जाते। यहाँ हिरण भी बहुत अधिक थे। भैंसों के पास रहने पर वे भी तन जाते हैं। वे मुझे देखने के लिए रुकते, अपनी बड़ी-बड़ी आंखो से कुछ देर देखते, पर तभी अचानक ही कुलाँचें भरकर सामने के फैले हुए मैदान पर निकल कर आराम करने लगते। मानों वे भी किसी घुड़-दौड़ के घोड़े हो। यहाँ के बुरे दीखने वाले भेड़िये भी अपनी खड्डो और रेतीली खाइयो से मुझे झाँकने लगे। मुझे मैदानी कुत्तो के गाँवों में से कई बार गुज़रना पड़ा। वे अपनी माँद के सामने बैठे होते थे और अक्सर भौंकते रहते

थे। हर चीख के साथ उनकी पूँछ उठ जाती थी। ये मैदानी कुत्ते अपने साथियों के चुनाव में बहुत सधे हुए नही होते। इनके घेरे में ही सैकड़ो साँप और छोटे-छोटे, गोल आँखो वाले, उल्लू इनके पड़ोसियों की भाँति बसे रहते हैं। यह मैदान जीवन से भरा-पूरा लगता है। मैं वार-वार पशुओ से भरी हुई पहाड़ियों को देखता जाता था। मुझे लगा कि मैंने कुछ घुड़सवार देखे है। जब मैं पास पहुँचा तो आदिवासियो के आने की मेरी उम्मीद और डर मिट गया। सामने भैंसों का जत्था था, उनका नही ! इन सारे पशुओ में एक भी आदमी की शक्ल दिखाई न दी।

जब मैं भैंसों की राह पर मुड़ा, तब मैदान बदला हुआ नज़र आने लगा। कहीं-कही कोई एक-आध भेड़िया नज़र आ जाता। वे दाईं या बाईं ओर बिना देखे कुछ इस तरह दौड़ जाते, जैसे उन्होंने कोई अपराध किया हो। चिन्ताओ के हट जाने के कारण अब मैं अपने चारों ओर की चीज़ों को अधिक अच्छी तरह देख सकता था। मैंने पहली बार अनुभव किया कि यहाँ से पूरब की ओर पाये जाने वाले किसी भी जन्तु की अपेक्षा यहाँ के जन्तु काफी भिन्न थे। बड़ी-बड़ी तितलियाँ मेरे घोड़े के सिर पर ही उड़ रही थी। यहाँ की टिड्डियाँ भी काफ़ी चमकदार थी। ये ऐसे-ऐसे पौधो पर मडरा रही थीं, जिन्हें मैंने पहले कभी नहीं देखा था। सैंकड़ो छिपकलियाँ और गिरगिटें इधर से उधर दौड़ती फिर रही थीं। लगता था जैसे बिजली कौंध गई हो।

नदी से मैं बहुत दूर निकल चुका था। भैंसो के इस रास्ते पर मुझे काफी अधिक दौड़ना पड़ा। तब कहीं जाकर मुझे एक टीले की चोटी पर से चमकती हुई प्लाट् नदी नज़र आई। चारो ओर रेतीले तट फैले हुए थे। इससे कुछ पार चमकती हुई पहाड़ियो की एक कतार दिखाई दे रही थी। वह मानो आकाश तक उठी हुई थी। जहाँ मै खड़ा था वहाँ से दूर-दूर तक कही भी एक भी पेड़-पौधा या कोई आदमी दिखाई न देता था। चारो ओर धूप से तपी हुई भूमि ही नजर आती थी। नदी से कुछ ही दूर मुझे पगडंडी मिल गई। अभी तक हमारा दल उधर से गुज़रा न था, इसलिए मै दाईं ओर मुड़ कर उनसे मिलने चला। घोड़े की तेज चाल ने बता दिया कि मेरा रास्ता ठीक था। सुबह डेरा छोड़ते हुए मैं कुछ बीमार था। अब इस छह-सात घटे की घुड़-दौड़ ने मुझे बिल्कुल थका दिया। इसलिए मैंने घोड़े को रोक कर

उसकी काठी खोल दी और उसकी रस्सी को हाथ से बाँध कर मै, काठी का सिरहाना बना कर, वही सो गया और अपने दल के आने की प्रतीक्षा करने लगा। इस बीच मेरा मन उन घावो पर विचार करता रहा, जो मेरे घोडे ने इस बीच पाए थे। कुछ देर बाद सफेद गाड़ियाँ मैदान मे दूर से आती हुई दिखाई दी। लगभग उसी समय सामने की पहाडियो से दो घुडसवार उतरते दिखाई दिए। ये दोनो हेनरी और शॉ थे, जिन्होने सुबह कुछ देर तक मुझे ढूँढने के बाद एक ऊँची पहाडी पर खड़े होकर मेरी प्रतीक्षा करनी उचित समझी। वे भी अपने घोड़ो को बाँधकर सो गये थे, ताकि मै भी उन्हे पहचान सकूँ। हमे प्रवासियो से पता चला कि खोये हुए पशु दोपहर तक मिल गए थे। साँझ होने से पहले-पहले हम आठ मील का रास्ता और तै कर चुके थे। आज जब मै अपनी डायरी खोलता हूँ तो मुझे ये शब्द उस दिन के सम्बन्ध मे लिखे मिलते है।

"जून ७, १८४६—चार आदमी गायब है—र—सोरेल, तथा दो प्रवासी साथी,—वे सुबह एक भैंसे के पीछे के लिए निकले थे, पर अब तक भी नही लौटे है। पता नही वे जीवित है या नही ?"

मुझे याद है कि इस अवसर पर हमारी एक सभा हुई थी। हम आग के चारों ओर इकट्ठे हुए, क्योकि हेनरी आग पर ही गोलियाँ ढालने में लगा हुआ था। आजकल ऐसे प्रत्येक कठिन अवसर पर वह ही हमारी एकमात्र शरण होता था। कप्तान अपना भारी चेहरा लिए हुए हेनरी के पास पहुँचा। जैक के चेहरे से भी यह उदासी साफ झलक रही थी। वह कप्तान के पीछे ही चल रहा था। तभी प्रवासी भी अपनी-अपनी गाडियो मे से आकर इसी जगह पर इकट्ठे हो गए। उनके गायब होने के विषय मे कई प्रकार की बातें बताई गईं। एक दो प्रवासियो ने बताया कि उन्होने पशुओ का पीछा करते हुए उन्हे कुछ दूरी पर कुछ और आदिवासियों द्वारा घेरे और पीछा किए जाते हुए देखा था। वे लोग पहाड़ियो में भेडियो जैसे दौड रहे थे इस बात को सुन कर कप्तान का चेहरा और भी उदास हो गया और वह बोला, "ऐसे जंगली इलाके मे से होकर यात्रा करना सचमुच खतरनाक है।" जैक ने भी इस राय मे हामी भरी। हेनरी ने कुछ भी सम्मति न दी। उसने केवल इतना ही कहा, "हो सकता है वह भैंसे की खोज में

बहुत दूर निकल गया हो, या किसी आदिवासी ने उसे मार डाला हो, या वह गुम हो गया हो ! मै कुछ नही कह सकता।"

सुनने वालो को इतनी टिप्पणी से ही संतुष्ट रहना पड़ा। प्रवासी अपने बिछुड़े साथियो के विषय मे जानना तो चाहते थे, पर वे इस घटना से भयभीत हुए न लगते थे। वे अपनी-अपनी गाड़ियो की ओर लौट गए। कप्तान भी कुछ सोचता हुआ अपने तम्बू में चला गया। शॉ और मैं भी अपने तम्बू मे लौट आए।

—:o.—

८ : साथियों से विदाई

आठ जून के दिन दोपहर ग्यारह बजे हम प्लाट् नदी के दक्षिणी मोड़ पर पहुँचे। इसे यही से पार किया जाता है। राह मे मीलो तक रेगिस्तान ही फैला हुआ था। उसमें कही भी हरयाली न थी। बीच-बीच में कुछ पहाड़ियाँ घास से ढकी हुई सिर उठाए दीख पड़ती थी। पर इनके बीच मे धूप में चमकती रेत ही फैली हुई थी। मैदान की ही सतह पर बहने वाली नदी भी रेत का ही फैलाव मात्र दीखती थी। यह आधा मील चौडी थी। इसमें पानी बह अवश्य रहा था, पर इतना कम था कि नीचे का तला छिप नहीं पा रहा था। इतनी चौड़ी होने के कारण इसकी गहराई कही भी डेढ फुट से अधिक नहीं है। इसके किनारे रुक कर हमने कुछ लकड़ियाँ इकट्ठी कीं और भैंसे के मांस का भोजन पकाया। दूसरे किनारे बहुत दूर पर एक हरी-भरी चरागाह थी जहाँ हमे प्रवासियो के एक डेरे के बहुत से तम्बू और गाड़ियाँ दिखाई दे रही थीं। हम अपने बिल्कुल सामने पानी के किनारे कुछ मनुष्यो और पशुओ को साफ़-साफ़ देख रहे थे। इसी समय चार या पाँच घुड़सवार नदी मे घुसे और दस मिनट में इसे पार करके ढीली रेत के दूसरे किनारे पर चढ़ आए। उन लोगों के चेहरे बडे भद्दे लग रहे थे। वे पतले थे और उनकी खाल का रंग धूप के कारण गाढा पड चुका था। उनके चेहरो से चिन्ता का बोझ टपक रहा था। उनके ओठ तने हुए थे। उनके लिए चिन्ता का कारण भी था। उन्हें यहाँ डेरा डाले तीन दिन हो चुके थे। आते ही पहली रात उनके एक सौ तेईस पशु भेडियो द्वारा भगा दिये गये थे। यह उनके पहरेदारो की असावधानी के कारण ही हुआ था। ऐसी भयकर और निराशा देने वाली दुर्घटना उनके साथ पहली ही बार न घटी थी। इन बेचारो ने जब से अपने इलाके छोडे, तब से ही कोई न कोई दुर्भाग्य इन पर टूटता रहा। इनके दल के बहुत सारे लोग मर चुके थे। एक साथी को पोनियो ने मार डाला था। एक ही सप्ताह पहले डाकोटा लोगो ने इनके सारे अच्छे-अच्छे घोड़े लूट लिए थे। अब इनके पास बहुत ही थोड़े घोड़े रह गए थे। जो थे, वे भी बहुत घटिया किस्म के थे। उन्होंने हमें

बताया कि एक दिन साँझ के समय इस नदी के किनारे उन्होने डेरा डाला था और अपने बैल, गाय आदि चरागाह में खुले छोड़ दिए थे। उनके घोड़े इस से भी कुछ दूर चर रहे थे। अचानक ही इसी समय उन्हें सामने की पहाड़ियो पर आदिवासियो के घुड़सवार जत्थे घिरते दिखाई दिए। ये लोग सख्या में छः सौ से अधिक ही थे। एक बड़े शोर के साथ ये डेरे पर टूट पड़े और प्रवासियों को डराते हुए उनसे कुछ गज दूर तक आ पहुँचे। तभी अचानक इन्होंने घोड़ो को घेर लिया और पाँच मिनट में ही अपने इस शिकार को लेकर सामने की पहाड़ियों के दर्रो से निकल कर गायब हो गए।

अभी ये लोग हमे अपनी हालत बता ही रहे थे कि कुछ और लोग भी हम तक आते दिखाई दिए। ये कोई और न थे; र—और उनके साथी ही थे, जोकि किसी दुर्भाग्य के शिकार तो न हुए थे, पर जो शिकार की खोज में बहुत दूर अवश्य निकल गए थे। उनके कहने के अनुसार उन्हें कोई आदिवासी तो न दिखाई दिया, पर भैंसे लाखो की सख्या मे जरूर दिखाई दिए। र—और सोरेल के घोड़ों की पीठ पर काफी मास लटक रहा था।

प्रवासियो ने नदी फिर से पार की और चले गए। हमने भी उनके पीछे चलने की तैयारी की। शुरू मे बैलो वाली गाड़ी किनारे की रेत मे धँस गई और बहुत धीरे-धीरे बढने लगी। कभी-कभी तो बैलो के खुर पानी से अछूते ही रह जाते थे और कभी, अगले ही क्षण, कुछ गहरी पानी की धार में धँसे होते। वे किनारे से बहुत धीरे-धीरे बढ़ने लगे और बहुत देर बाद नदी के बीच में दिखाई दिए। इससे अधिक कठिन मौका हमारी खच्चरो की गाड़ी के लिए था, क्योकि वह ऐसी तेज धार को पार करने के लायक न थी। हम इसे चिन्ता से तब तक देखते रहे जब तक कि यह पानी मे बहुत दूर पहुँचकर एक सफेद निशान के रूप मे न दीखने लगी। यह रेत मे फँस गई थी। खच्चरो के पाँव सँभल नही पा रहे थे और पहिए भी गहरे से गहरे धँसते जा रहे थे। धीरे-धीरे पानी गाड़ी के तले पर आना शुरू हुआ और उसने तमाम चीजों को गीला करना शुरू कर दिया। इधर के किनारे पर खड़े हम तुरन्त ही इसे निकालने को बढ़े। तमाम मर्द पानी मे कूद पड़े और खच्चरो के साथ ताकत लगाकर उन्होंने बड़ी कठिनता से इस गाड़ी को बाहर निकाला और दूसरी ओर पहुँचाया।

जब हम दूसरे किनारे पर पहुँचे तो कुछ असभ्य-से लोगों ने हमे घेर लिया। वे भद्दे और बड़े डील-डौल के न थे, पर तो भी कठिन परिश्रम के कारण कठोर अवश्य ही गए थे। अपनी शक्ति का अपने इलाक़ो में कोई उपयोग न देखकर, वे इन मैदानो मे निकल आए थे। उनमे यहाँ की कठि-नाइयो से हौसला और शक्ति और अधिक बढ़ गई। कभी यही हौसला और शक्ति उनके जर्मन पुरखो के अन्दर भी थी, जब उन्होने अपने जगलो से निकलकर यूरोप पर छाते हुए सारे रोमन साम्राज्य को हथिया लिया था। इसके एक पखवाडे बाद, जब हम लारामी किले में रुके हुए थे, यह दल भी उधर से गुज़रा। उनका एक भी खोया हुआ पशु वापिस न मिला था, हालाँकि वह उनकी खोज में एक सप्ताह तक वही रुके रहे थे। उन्हे लाचार होकर अपने सामान और खाने-पीने की चीजो को पीछे छोडना पडा। अगली यात्रा के लिए उन्हें गायो और बछडों को गाडियों में जोतना पडा। इस यात्रा का सबसे कठिन हिस्सा अब भी बचा हुआ था।

यह बात ध्यान देने के योग्य है कि इस जगह हमें कई बार पुराने ढंग की कुछ टूटी-फूटी मेजें या सनावर की लकडी का कुछ और सामान यहाँ पड़ा हुआ मिल जाता था। इनमे से बहुत चीजे उस जमाने की थी, जब अमरीका अंग्रेजो के चगुल में फँसा एक उपनिवेश था। शायद यह सामान इंगलैंड से लाया गया था। यह अपने स्वामियो के भाग्य के साथ-साथ कभी एलेथनी को पार कर ओहियो या केन्टुकी ले जाया गया था और तब वहाँ से इलिनोइस अथवा मिसूरी की ओर गया था। अब यही सामान इन ओरेगन जानेवाले यात्रियो की गाडियो मे समा गया। परन्तु, रास्ते की कठिनाइयाँ कभी कोई नही सोच पाता है। ये ही मनपसद निशानियाँ जल्दी ही धूप के कारण इन गरम मैदानो मे खराब हो जाती है।

हमने अपनी यात्रा फिर शुरू की। अभी हम मील भर भी न गए होगे कि पीछे से र—चिल्ला उठा, "आज हम यही डेरा डालेंगे।"

"तुम क्यो डेरा डालना चाहते हो ? अभी तो तीन भी नही बजे। सूर्य की ओर देखो।"

"हम तो यही रुकेंगे।"

हमारे हिस्से मे इतना ही उत्तर मिला। देस्लारियर पहले ही काफी आगे

अपनी गाड़ी ले जा चुका था। दूसरी गाड़ियों को रास्ते से हटता देखकर उसने भी अपनी गाड़ी उधर ही मोड़नी शुरू की। हमने पीछे से आवाज़ दी, "देस्लारियर ! तुम बढ़ते रहो !" और वह छोटी गाड़ी फिर से बढने लगी। ज्यो-ही हम कुछ आगे बढे, हमें अपने पीछे अपने साथियों की गाड़ी टूटने और उसके रुकने की आवाज़ सुनाई दी। हमने सुना राइट् अपने खच्चरो पर सैंकड़ों गालियो की बौछार कर रहा था। शायद उसका गुस्सा किसी और पर था, पर वह उसे इन असहाय जानवरो पर निकाल रहा था।

इस प्रकार की कोई न कोई घटना होती ही रहती थी। हमारा अंग्रेज दोस्त र—हमे हर तरह से तंग करने का इरादा किए हुए था। उसकी हम से सहानुभूति न थी। वह जानता था कि हमे यात्रा निपटाने की जल्दी थी, पर वह इसे जानकर लम्बा डाल रहा था। इसीलिए वह कही भी कभी भी बिना सोचे समझे डेरा डालने की जिद्द कर बैठता था। कभी कहता था कि पन्द्रह मील का सफर दिन भर में बहुत होता है, तो कभी कुछ और कहता। हमने जब देखा कि हमारी इच्छा कभी मानी नही जाती, तब हमने अपनी राह तय करने की जिम्मेवारी अपने हाथ मे ले ली। हम र—की घृणा को स्वीकार करके भी आगे आगे बढ़ने लगे और जहाँ भी मुनासिब समझते डेरा डाल लेते। हमें इस बात की अधिक परवाह न थी कि हमारे साथी वही डेरा डालते है या नही ? हालाँकि वे लोग अपने गुस्से से भरे और उदास चेहरे लिए हमारे आस-पास ही अपना तम्बू गाड़ते थे।

इस तरह से साथ-साथ यात्रा करना हमारी रुचि के अनुकूल न था। इस लिए हमने अलग होने की तैयारी शुरू कर दी। हमने अगली सुबह बहुत जल्दी ही डेरा छोडने का निश्चय किया और लारामी किले तक बहुत जल्दी और तेजी से, चार पाँच दिन में ही पहुँच जाने का निश्चय किया। कप्तान तुरन्त ही घोड़ा दौड़ाता हुआ हम तक आया। हमने अपनी बात उसे समझा दी।

उसने कहा, "सच कहता हूँ, यह अजीब यात्रा है।" उसके दिमाग में यह बात समा गई थी कि हम लोग दल को छोड़कर जा रहे है। उनकी नजर में यह बात यात्रा के इस मौके पर बहुत खतरनाक थी। उसने हमे सुझाया कि हम कुल चार थे और उसके दल में अब भी सोलह आदमी थे। क्योंकि हम

आगे-आगे चलेंगे, इसलिए सारी मुसीबतें भी हम पर ही टूटेंगी। उसका चेहरा अब भी ढीला न पड़ा और वह अपनी पुरानी बात को दोहराता हुआ फिर से अपने साथियों से सलाह के लिए उनकी ओर मुड़ गया। अगली सुबह सूर्य निकलने से पहले ही हमारा तम्बू उखाड़ा जा चुका था। हमने अपने अच्छे घोड़े गाड़ी में जोते और चल पड़े। चलने से पहले हमने अपने मित्रों और प्रवासियों से विदाई के लिए हाथ मिलाए। उन सबने हमारी यात्रा की सुरक्षा के लिए अपनी शुभकामना प्रकट की। हो सकता है उनमें से कुछ के दिल में यह भाव भी रहा हो कि अगर हम पर आदिवासी टूट पड़ें तो अधिक अच्छा होगा। कप्तान और उसका भाई एक पहाड़ी की चोटी पर अपने लबादों में लिपटे खड़े थे। वे इतने धुंधले से दीख रहे थे जैसे वह कुहरे की आत्माएँ हों, उनकी निगाह घोड़ों के समूह पर लगी हुई थी। हम ज्यों ही उनके नीचे से निकले हमने अलविदा कहते हुए उनकी ओर हाथ हिलाए। कप्तान ने बहुत ही अच्छी तरह से हमें प्रणाम किया। जैक ने भी उसकी नकल असफलता से करनी चाही।

लगभग पाँच मिनट में ही हम पहाड़ियों की तलहटी तक पहुँच गए। पर यहाँ हमें रुकना पड़ गया। मेरा घोड़ा हेन्ड्रिक गाड़ी में जुता हुआ था। वह आगे न बढ़ने की कसम खा चुका था। देस्लारियर ने हर तरह से उसे मारपीट कर बढ़ाने की कोशिश की, पर वह थक-हारकर रह गया। लगता था, जैसे घोड़ा एक चट्टान बनकर रह गया था और अपने दुश्मन की ओर बड़े गुस्से से देख रहा था। बदले का मौका मिलते ही वह इतने जोर से उछला कि गाड़ीवान बहुत कठिनता से हवा में उछलने से बच सका। यह काम कोई फ्रांसीसी आदमी ही कर सकता था। तब शॉ और उसने दोनों ओर से घोड़ों को पीटकर ठीक करना चाहा। घोड़ा पहले तो कुछ देर चुप खड़ा रहा, पर जब वह अधिक मार न खा सका तो उसने उछलना-कूदना शुरू कर दिया। इससे गाड़ी और उसमें पड़े सामान को खतरा हो गया। हमने पीछे डेरे पर निगाह डाली। वह पूरी तरह से दिखाई दे रहा था। हमारे साथी हमारी ही नकल करके अपने तम्बुओं को उखाड़ रहे थे और पशुओं को इकट्ठा कर रहे थे।

मैं बोल पड़ा, "इसे गाड़ी से अलग कर दो।" मैंने अपनी काठी पोंटियक

से उतारकर हेन्ड्रिक पर रखी। पौंटियक को गाड़ी में जोत दिया गया। अब देस्लारियर ने फिर से आगे बढ़ने की आवाज़ दी। पौंटियक पहाड़ी पर ऐसे चढ़ने लगा, जैसे उसके पीछे बँधी गाड़ी का बोझ एक पंख जितना हो। हमने चोटी पर चढ़कर देखा कि हमारे साथियों की गाड़ियाँ अभी चलनी ही शुरू हुई थी। हमें तनिक भी डर नहीं था कि वे हमें पार कर जाएँगे।

राह छोड़कर हम इस इलाके में से सीधा बढ़ने लगे। नदी की मुख्य धारा तक पहुँचने के लिए हमने सबसे छोटी और सीधी पगडंडी पकड़ी। तुरन्त ही एक गहरी घाटी हमारे सामने आ पड़ी। हम इसके किनारे-किनारे बढ़कर कम ढलान वाली जगह तक पहुँचे और तब इसमें बहुत हौले-हौले उतर पड़े। 'ऐश हॉलो' नाम की वन घाटियों के बाद हम दोपहर बिताने के लिए वर्षा के पानी के एक जोहड़ के पास रुके। पर तुरन्त ही फिर हम बढ़ चले और साँझ होने से पहले-पहले यहाँ से दक्षिण की ओर प्लाट् नदी के किनारे की घाटियों में उतर पड़े। हमारे घोड़े रेत में गिट्टों तक धँसकर चलने लगे। सूरज आग की तरह तप रहा था। हवा में मक्खियाँ और मच्छर भरे पड़े थे।

अन्त में हम प्लाट् पर पहुँच गए। इसके किनारे पाँच-छः मील तक चलने के बाद, ठीक सूरज छिपने के समय हमने एक बड़ी चरागाह मे सैकड़ों पशु और उनके पीछे प्रवासियों के अनेकों डेरे देखे। उनमे से कुछ लोग संदेह में डूबकर हमसे मिलने बढ़ आए। जब उन्होंने देखा कि हम सभी उनसे अलग शक्ल और लिबास लिए पहाड़ियों मे से निकल रहे है और हमारी संख्या भी चार से अधिक नहीं है तब उन्होंने समझा कि हम खूँखार मोर्मन लोगों मे से ही है। वे इन लोगो से मुकाबला न करना चाहते थे। जब हमने उन्हें अपना असली परिचय दिया, तब उन्होंने खुले दिल से हमारा स्वागत किया। उन्होंने इस बात पर अचरज प्रगट किया कि इतने थोड़े लोगों का कोई दल इतने बड़े इलाके मे बढ़ने का साहस कैसे कर सकता है? हालाँकि आदिवासी और पशु फँसाने वाले इससे भी छोटे दलों में निकलते है। उन लोगों की गाड़ियों की संख्या पचास के लगभग रही होगी। चारों ओर तम्बू गड़े हुए थे। इस प्रकार एक घेरा सा बनाया हुआ था। हम उनके खेमे तक गए। उनके घोड़े तम्बुओं के घेरे में ही बँधे हुए थे। चारों ओर जलती हुई आग की

हलकी-हलकी रोशनी चमक रही थी और बच्चों और औरतो की शकलें दिखाई दे रही थी। इस प्रकार का पारिवारिक दृश्य बहुत ही खिंचाव से भरा था। परन्तु, हम उन लोगो के सवालो की बौछार से तग आकर वहाँ से बहुत जल्दी ही निकल आए। उनके मुकाबले में उत्तरी अमरीकनों की उत्सुकता भी कम ही ठहरती है। उन्होने हम से नाम, धाम और उद्देश्य आदि सब कुछ विस्तार से पूछा। जब उन्होने हमारे काम-धंधे के बारे में पूछा, तो हमे बड़ा अजीब लगा। उसे लोगो की नजर में ऐसे इलाके मे घूमने का मतलब केवल रुपया बटोरना हो सकता है। इस पर भी हमें वे लोग अच्छे लगे। वे साफ दिल, उदार और सभ्य थे, हालाँकि वे सीमान्त के कम असभ्य इलाके से ही आ रहे थे।

हम उनसे एक मील आगे बढ कर डेरे के लिए रुके। पहरे के लिए हमारे पास आदमी नही थे और उससे थकान भी अधिक होती। इसलिए हमने आदिवासियो का ध्यान बचाने के लिए अपनी आग बुझा दी और घोडो को अपने आस-पास चारों ओर बाँध लिया। इस प्रकार सुबह होने तक हम निश्चित होकर सोते रहे। अगले तीन दिन तक हम बिना रुके बढते रहे। तीसरी शाम हमने 'स्कॉट्स ब्लफ' नाम के सोते के पास डेरा डाला।

हेनरी और मै सुबह जल्दी ही निकल पडे और इस सोते के पश्चिम की ओर निकलकर मैदान में बढ़ने लगे। तुरन्त ही हमारी निगाह मे सामने कुछ मील दूर की पहाड़ियो पर से उतरती हुई भैसो की एक कतार दिखाई दी। हेनरी ने अपने घोडे की लगाम खीची और मैदान के पार बहुत सधी हुई निगाह से झाँकते हुए उसमें असल बात खोज निकाली। वह बोला, "ये आदिवासी हैं! लगता है बूढे स्मोक के गाँव के लोग हो। आओ, हम चलें! मेरे प्यारे घोड़े बढ़ो!" और, तब घोडे की पीठ पर झुकते हुए तेजी से आगे बढने लगा। मै भी उसकी बगल मे होता हुआ बढा। बहुत जल्दी मैदान मे लगभग दो मील पर एक काली शाखा-सी हिलती दिखाई दी। यह शक्ल बड़ी-से-बडी होती गई और तब एक आदमी और घोड़े के रूप में बदल गई। हमने देखा कि एक नंगा आदिवासी पूरी तेजी से हमारी ओर बढा आ रहा था। हमसे एक फर्लांग की दूरी तक पहुँचकर उसने एक गोल चक्कर काटा और मैदान पर कुछ अजीब भेद-भरे निशान-से बनाए। हेनरी ने अपने घोड़े को भी

वैसे ही चक्कर काटने के लिए मजबूर किया। उसने उन इशारों को समझाते हुए बताया कि यह आदिवासी सरदार स्मोक का ही गाँव था। उस आदिवासी के बढ़ने पर हम उसकी प्रतीक्षा के लिए रुक गए। इसी समय वह अचानक ही छिप गया, जैसे वह धरती में कहीं डूब गया हो। तभी वह एक बहुत गहरी घाटी में से ऊपर आया। पहले उसके घोड़े का सिर उठता हुआ दिखाई दिया। तब घोड़ा और घुड़सवार दोनो ही हम तक आए। उसने ज्योही लगाम खीची, घोड़ा तुरन्त रुक गया। तब हाथ मिलाने और मित्रता जताने का काम शुरू हुआ। मुझे आज अपने उस अतिथि का नाम भूल गया है। अपने लोगो मे वह कोई बड़ा आदमी भी नही था। पर तो भी अपनी हस्ती और साज-सामान की दृष्टि से वह डाकोटा जाति का एक अच्छा योद्धा था। उसकी पोशाक सादी ही थी। अपने और लोगो की भाँति वह छः फुट लम्बा था। उसके शरीर का ढाँचा बहुत ही सुन्दर और मजबूती से गठा हुआ था। उसकी खाल भी बहुत ही साफ और कोमल थी। उसने कोई भी रंग नही मले हुए थे। उसका सिर नंगा और बाल पीछे को बँधे हुए थे। उनके बीच मे एक पक्षी की हड्डियो से बनी सीटी सजावट के लिए लटकाई हुई थी। उसके सिर के पीछे से पीतल की चमकती हुई कई छोटी-बड़ी गोल रकाबियो की एक माला लटक रही थी। यह जेवर काफ़ी भारी था। इसे डाकोटा लोग अधिक पहनते है और इसके लिए वे लोग व्यापारियो को अच्छी खासी कीमत देने को तैयार रहते है। उसकी छाती और बाहें नंगी थी। उनपर ढकी हुई भैंसे की खाल उसकी कमर तक खिसक आई थी और कमर-पेटी के सहारे टिक गई थी। उसके पाँव मे मोकास्सिन के जूते पड़े थे। यही थी उसकी वेशभूषा! हथियारो के नाम पर उसके पास कुत्ते की खाल से बना तरकस पीठ पर लटक रहा था और एक बहुत ही मजबूत धनुष उसके हाथ मे था। उसके घोडे की रास में लोहे की लगाम न थी। घोड़े के जबड़े के चारो ओर बालो की बनी एक रस्सी बँधी हुई थी। यही उसकी लगाम थी। उसकी काठी सादी खाल से ढकी और लकड़ी की बनी थी। आगे और पीछे दोनों ओर लकड़ी की ऊँचाई डेढ़-डेढ़ फुट थी। इस तरह से युद्ध में योद्धा अपनी जगह पर पूरी तरह जमा रहता था। उसे कोई भी बात यहाँ से हिला नही सकती थी।

अपने नये साथी के साथ बढ़ते हुए हमने एक पहाड़ी की चोटी पर डेरा बनाकर बैठे हुए उसकी जाति के बहुत से आदिवासियो को देखा। पास ही की एक खड्ड में से मर्दों, औरतों और बच्चो का, घर के बाँसों आदि को ढोने वाले घोड़ों के साथ आनेवाला, एक जलूस इसी समय जा रहा था। उस सारी सुबह आगे बढते हुए हमने ऐसे ही लम्बे-लम्बे असभ्य लोगों को अपने आस-पास से गुजरते हुए पाया। दोपहर के समय हम हॉर्स क्रीक (घोड़ो की धारा) पर पहुँचे। आदिवासी भी हमसे कुछ पहले ही वहाँ पहुँचे थे। धारा के दूसरे किनारे एक बहुत डील-डौल और ताकत वाला आदमी खड़ा था। वह लगभग नंगा था और उसने अपने हाथ में एक सफ़ेद घोड़े की लगाम थामी हुई थी। पास पहुँचते हुए वह हमे देख रहा था। यही था वह सरदार, जिसे हेनरी ने 'स्मोक' (धुआँ) के रूप में परिचित कराया था। ठीक उसके पीछे उसकी सबसे छोटी और प्यारी स्त्री एक खच्चर पर बैठी हुई थी। उस खच्चर पर सफेद खाल ढकी हुई थी, जो काले और सफेद रंग के दानो से जड़ी थी। उसके चारो किनारे धातुओ के बने हल्के-हल्के जेवर लटक रहे थे, जो चलते हुए बजते थे। वह लड़की बहुत ही हलके और साफ रग की थी। उसके गालो पर हलका-सा पराग मला हुआ था। वह हमें देखकर मुस्करा रही थी। उसने हाथ में अपने वीर पति का लम्बा भाला उठाया हुआ था, जिसके ऊपर पख लगे हुए थे। उसकी गोल सफेद ढाल खच्चर के एक ओर लटकी हुई थी और हुक्का पीठ की ओर लटक रहा था। उस लड़की की पोशाक एक हिरण की खाल से बनी थी, जिसे उस इलाके की एक खास प्रकार की मिट्टी से सफ़ेद बना दिया गया था। इस पर पत्थर और दाने आदि कई प्रकार की शक्लो में सजाए गए थे और चारो ओर झालरें लटक रही थीं। इस सरदार के पास ही कुछ ऐसे लोग भी खडे थे, जो ऊँचे दर्जे के थे और जिनके कंधो से भैंसो की सफेद खाले लटक रही थी। वे लोग हमे बहुत उदासी से देख रहे थे। इनके पीछे कई एकड जमीन में छोटे-छोटे डेरे पड़े हुए थे। यहाँ सैनिक, स्त्रियां और बच्चे मक्खियो की तरह भिनभिना रहे थे। हर रंग और कद के सैकड़ो कुत्ते इधर-उधर दौड रहे थे। पास की एक चौडी और उथली धारा मे बहुत से लडके, लडकियां और स्त्रियां चीखती ,चिल्लाती और हँसती हुई खेल रही थी। उसी समय प्रवासियों का एक लम्बा जलूस अपनी भारी

भरकम गाड़ियों के साथ धारा पार करता हुआ नजर आया। ये लोग जिन आदिवासियों के डेरों के पास से गुजरे, उन्हें ही इन्होंने अगले ही कुछ दिनों में समाप्त कर देना था।

यह डेरा केवल दोपहर के लिए ही डाला गया था। कोई भी तम्बू या घर गाड़ा नहीं गया था। उनके ढकने के चमड़े के कपड़े और लम्बे-लम्बे बाँस इधर-उधर हथियारों और घर के सामान के बीच बिखरे पड़े थे। हर सुस्ताने वाले सैनिक की पत्नी ने उसके लिए छाया करने का प्रबन्ध कर दिया था, और इसके लिए उसने दो एक बांसों पर खाल के कपड़े को ढक दिया था। इस छाया में हर सैनिक अपनी प्रिय जवान पत्नी के साथ हँसी-मजाक करता हुआ बैठा था। उसके सामने उसके ओहदे का चिह्न, उसकी भैंसे की खाल से बनी ढाल, दवाइयों की संदूकडी, धनुष-बाण, भाला और हुक्का आदि तीन बाँसों को जोडकर बनाई हुई एक तिपाई पर टिके हुए थे। कुत्तों के बाद सबसे ज्यादा शोर मचाने और हलचल करने का काम बूढ़ी औरतों का था, जो चुड़ैलों से कम बुरी न दीखती थीं। उनके बाल खुले हुए और हवा में उड़ रहे थे। एक आध चिथड़े-नुमा छोटा-सा भैंसे की खाल का टुकड़ा ही उनके शरीर को ढक रहा था। उन पर कृपा का मौका दो पीढ़ियाँ पहले ही बीत चुका था। अब डेरे के सबसे कठिन कामों का बोझ उनके कंधों पर ही था। उन्हें घोड़ों की काठियाँ बाँधनी होती थीं। मकान गाडने होते थे। बिस्तर बिछाना और शिकारियों के लिए मांस पकाना भी उनका ही काम माना जाता था। इन बूढ़ी औरतों की फटी हुई आवाजों, कुत्तों के शोर और लड़कियों और बच्चों के चिल्लाने के और हँसने से एक ओर बड़ा शोर उठ रहा था और दूसरी ओर सैनिक बहुत शांत होकर पड़े थे। इस सबके कारण वह वातावरण बहुत ही लुभावना हो उठा था।

हमने आदिवासियों के इस डेरे के पास ही अपना डेरा डाला और उनके बहुत से सरदारों और सैनिकों को दावत पर बुलाया। हमने उनके सामने बिस्कुट और काफी रखी। वे आधा घेरा बनाकर सामने ही बैठे और उन्होंने यह सब कुछ बहुत जल्दी समाप्त कर दिया। जब हम दोपहर बाद की यात्रा के लिए आगे बढ़े तो बाद में आने वाले हमारे कुछ अतिथि हमारे साथ हो लिए। इनमें से एक बहुत ही भारी भरकम आदमी था, जिसको उसके डील-

डील और चरित्र के कुछ गुणों के कारण 'लाकोशो' कहा जाता था। हौग (सुअर) नाम का यह आदमी अपने छोटे से खच्चर पर चढ़ा हुआ था, जो इसके बोझ को सह नही पा रहा था। फिर भी यह अपनी टाँगों के सहारे से ही चलता जा रहा था। यह आदमी कोई सरदार न था, ना ही उसने जिन्दगी मे कभी ऐसा बनने की कोशिश की। वह न सैनिक था और न शिकारी, क्योंकि वह मोटा और सुस्त था। वह गाँवों में सबसे धनी आदमी था। डाकोटा लोगो में धन-दौलत घोड़ों से गिनी जाती है और इस आदमी ने अपने पास तीस से अधिक घोड़े इकट्ठे कर लिए थे। यह घोड़े उसकी अपनी जरूरत से दस गुणा अधिक थे। फिर भी और अधिक घोड़े बटोरने की उसकी हवस अभी बाकी थी। अपना खच्चर तेजी से मुझ तक बढाते हुए पास आकर उसने मुझे हिलाया और समझाया कि वह मेरा विश्वास-योग्य मित्र है। तब उसने बहुत से इशारे करने शुरू किए। उसके चेहरे पर खुशी और मुस्कान थी। उसकी छोटी-छोटी आँखो में हल्की-सी चमक दिखाई दे रही थी। मैं आदिवासियो की इशारो की भाषा तो नही जानता था, पर तो भी कुछ अनुमान जरूर कर लिया। पूरी बात समझने के लिए मैने हेनरी को पास बुला लिया।

लगता है वह मुझ से विवाह का एक सौदा पटाना चाहता था। मेरा घोड़ा लेकर वह अपनी लडकी देना चाहता था। मैने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया। इसके बाद वह हँसी मजाक करता हुआ, अपने कपडो को सँभालकर, फिर पीछे की ओर मुड गया।

हमने उस रात एक ऐसी जगह डेरा डाला, जहाँ प्लाट् नदी दो ऊँची चोटियो के बीच होकर बहती थी। वह यहाँ भी मैली और तेज धार वाली ही थी, पर इसके किनारे पेड़ उगे हुए थे। धारा और पहाडी के बीच के हिस्से में कुछ घास भी उगी हुई थी। इस जगह पर आने से पहले हमने देखा कि दाईं ओर लगभग दो तीन मील दूर कुछ प्रवासियो ने डेरा डाला हुआ है। आदिवासी भी हमारे पास की ही एक पहाड़ी पर इकट्ठे हो रहे थे। उन्हें आशा थी कि पहले ही की भाँति उन्हें हमसे बहुत कुछ खाने-पीने को मिलेगा। हमारे सामने के स्वाभाविक नजारे में चारो ओर शान्ति थी। केवल नदी की धारा का शोर ही उसे तोड़ रहा था। पेडो की मुडी-तुड़ी शाखो के बीच में से हमने 'ब्लैक हिल्स' नाम की पहाडियो की चोटी पर छिपते हुए सूरज की

रगीनी को देखा। इसके रंग से नदी भी लाल हो उठी थी। हमारा सफेद-तम्बू-भी इसके लाल रंग में रंग चुका था। सामने की उजाड़ चोटियाँ भी इसी रंग में रग उठी थी, जैसे उनपर आग लग गई हो। यह रंगीनी तुरन्त समाप्त हो गई। हमारी आग की रोशनी को छोड़कर और कोई रोशनी बाकी न बची। हम अपने कम्बलो में लिपटकर तम्बाकू पीते और बातें करते हुए आधी रात तक वैसे ही आग के चारो ओर लेटे रहे।

हमने अगली सुबह धूप से तपता हुआ मैदान पार किया। प्लाट् नदी के इस किनारे पर बहुत सारे फूली लकड़ी के पेड़ लगे हुए थे। उनमें से होते हुए हमने सामने, बहुत दूर पर, एक मकान-सा देखा। पास आकर हमे इसकी लम्बाई-चौड़ाई से इसके लठ्ठों का बना एक बड़ा मकान होने का अनुमान हुआ। यह एक व्यापार की जगह थी, जिसपर दो व्यापारियो का निजी अधिकार था। इसे पुराने व्यापार केन्द्रों की भाँति एक गोल दायरे वाले किले के रूप मे बनाया गया था, जिसमें रहने के कमरे और दूकान आदि का सारा-प्रबन्ध अन्दर ही अन्दर, था। इसकी दो ओर ही बनी हुई थी। इस जगह पर अब रक्षा का काम नही होता था। ऐसे ही लकड़ी के बने घर सीमान्त प्रदेश मे आगे बढ़ने के साथ-साथ आदिवासियों के विरुद्ध रक्षा का अच्छा काम देते-रहे हैं। इस किले के पास ही दो और भी लकड़ियो के घर गाड़े हुए थे। उनके लट्ठों पर तेज़ धूप पड़ रही थी। उनमें एक बूढ़ी औरत को छोड़कर कोई भी जिन्दा चीज़ दिखाई न दे रही थी। उस औरत ने पास के एक डेरे में से अपना सिर बाहर निकाल कर झाँका। इसके साथ ही चार-पाँच कुत्तों के बच्चे और एक आदमी दरवाज़े में से बाहर आया। यह काली आँखो वाला कोई फ्रांसीसी था। उसकी पोशाक अजब तरीके की थी। उसके काले घुँघराले बाल बीच मे से चीर निकाले हुए थे और कंधो पर लटक रहे थे। उसने धुएँ पर सुखाई हिरण की खाल की कमीज़ पहनी हुई थी, जिसपर रंगे हुए दानों से बहुत कुछ काढ़ा हुआ था। उसके जूते भी उसी प्रकार बहुत सजे हुए थे। उसकी जुराबों पर से झालर लटक रही थी। यह रिचर्ड था। जैसा हमें हेनरी ने बताया। यह बहुत ही मजबूत, पहलवान और साहसी था, हालाँकि इसका शरीर ठिगना ही था। उसके शरीर या वेश में कोई भी चीज़ फालतू न थी। उसका अंग-अग बहुत गठा हुआ और सुदृढ़ था। उसके शरीर की हर पेशी अपनी लचक

और मज़बूती में तनी हुई थी। लगता था कि कठोरता और मज़बूती का वह एक शरीरधारी पुतला था।

रिचर्ड ने हमारे घोड़े नवाह्रा जाति के एक दास को दिए। वह बहुत ही नीच-सा दिखाई देने वाला आदमी था और उसे मैक्सिको की सीमा से बन्दी बनाया गया था। हमारी बन्दूकों आदि को बहुत नम्रता पूर्वक किनारे रखवा कर, वह हमें अपने घर के मुख्य कमरे में ले गया। यह कमरा दस फुट लम्बा और चौड़ा था। इसकी दीवारो और फर्श काली मिट्टी से पुते हुए थे और छत लकड़ी से ढकी हुई थी। मैदान से लाई गई चार चपटी चट्टानों के सहारे एक बड़ी भट्टी बनाई गई थी। आदिवासियो-का-सा-धनुष और तरकस भी वही लटका हुआ था। राकी पर्वत-माला की और भी बहुत अच्छी चीज़ें वहाँ पड़ी हुई थी। आदिवासियो की दवाइयो का एक थैला, चिलम और तम्बाकू की थैली आदि, दीवार पर लटके हुए थे। बन्दूकें एक कोने में टिकी हुई थीं। कोई खास सामान सजावट के लिए न था। एक छोटी सी चारपाई पर भैसे की खाल ढकी हुई थी और इस पर एक दोगली स्त्री आराम कर रही थी। उसके बाल दोनो कनपटियो पर गुच्छे के रूप मे इकट्ठे थे और उसके गाल पराग से लाल थे। वही पर और भी दो-तीन पहाड़ी आदमी फर्श पर ही चौकड़ी मारे बैठे थे। उनका वेश भी रिचर्ड के समान ही था। इनमे सबसे अधिक खिचाव वाला एक आदिवासी लड़का लग रहा था। वह नंगा था। उसका चेहरा सुन्दर था। उसका बदन हलका और चुस्त था। वह दरवाज़े के पास के कोने में आराम से बैठा था। उसका एक भी अंग रत्तीभर भी हिल नही रहा था। उसकी आँखें एक-दम जड़ी हुई सी थी। वह किसी आदमी को नहीं देख रहा था। बल्कि, ऐसा लगता था कि जैसे वह अपने सामने की अंगीठी को देख रहा हो।

इन मैदानो में अपने मित्रो के साथ तम्बाकू पीने की बात छोड़ी नही जा सकती, फिर चाहे वह मित्र आदिवासी हो या गोरा। इस लिए दीवार से चिलम उतारी गई और उसमें तम्बाकू और शोगसाशा मिलाकर डाले गए। तब इसे सुलगाकर घेरे में बैठे सभी आदमियो को बारी-बारी से दिया गया। सभी ने इस में से कुछ कश खीचे। इस प्रकार आधा घण्टा वहाँ बिताकर हमने छुट्टी ली। हमने विदा होते हुए अपने इन नये मित्रो को मील भर दूर

नदी के पास के अपने डेरे पर काफ़ी पीने के लिए निमंत्रित किया।

इस समय तक हम भी बडे उजड्ड-से लगने लगे थे। हमारे कपड़े चिथड़े-चिथड़े हो चुके थे। इस पर मजा यह कि बदलने के लिए हमारे पास बहुत कम चीज़ें थीं। यहाँ से लारामी किला अब भी सात मील दूर था। वहाँ इस हालत मे सभ्य कहे जाने वाले लोगो के बीच जाने मे हमें लाज आई। इसलिए नदी के किनारे रुक कर हमने अच्छी तरह सज धजकर तैयार होने का निश्चय किया। हमने पेड़ो पर छोटे-छोटे शीशे लटकाए और अपनी दाढ़ी-मूँछ साफ़ की। यह काम हम पिछले डेढ़ महीने से न कर पाए थे। हम प्लाट् नदी में खूब अच्छी तरह नहाए। पानी बहुत मैला था और किनारे पर पीला कीचड भरा हुआ था। तो भी हमें नहाना ज़रूरी था। इसके लिए हमने पेडो की शाखा आदि इकट्ठी करके एक जगह पानी जमा कर लिया और उसमें नहाए। रिचर्ड के घर से उसकी किसी स्त्री द्वारा बनाए चमकीले जूते भी हमने पहन लिए। और भी जो कुछ अदला-बदली कर सकते थे हमने की। हम अपने आप को और भी अधिक आदर के लायक बनाकर अपने मेहमानो की इतजार करने लगे। वे आए और चाय आदि पी। बाद में तम्बाकू पीकर हमने उन्हें विदाई दी। इसके बाद हमने अपने घोड़ो को लारामी किले की ओर मोड़ दिया।

हमें चलते हुए एक घंटा हो गया था। इस समय हमारे सामने एक कसर पहाड़ी आ गई, जिससे आगे की राह दीखनी बन्द हो गई। इसे पार करते ही हमें एक धारा मिली, जो प्लाट् नदी में ही मिलती थी। इस धारा के पार एक चरागाह दिखाई दी, जिसमें जगह-जगह झाड़ियाँ उगी हुई थी। यही पर एक ओर, जहाँ दो धारें एक साथ मिलती थी, किले की नीची दीवारें दिखाई दीं। यह लारामी किला नहीं था। यह एक और किला था, जो अब लारामी किले के बन जाने के कारण उजाड़ हो गया था और गिरने की हालत मे था। कुछ ही देर बाद आगे बढ़ने पर पहाडियो के बीच से झांकता हुआ लारामी किला साफ दिखाई देने लगा। धारा के बाईं ओर इसकी ऊँची नींवें, दीवारें और परकोटे दिखाई देने लगे। इसके पीछे की ओर ऊँची और उजाड़ पहाड़ियाँ मौजूद थी। इन पहाड़ियों से भी पीछे सात हज़ार फुट ऊँची 'ब्लैक हिल्स' की पहाड़ियाँ नज़र आ रही थी।

हमने लारामी धारा को किले के सामने की एक जगह से पार करने की

कोशिश की। यहाँ धारा बहुत भरकर और तेजी से चल रही थी। हम इसके किनारे के साथ-साथ बढ़कर पार करने का एक अच्छा स्थान खोजने लगे। उधर किले की दीवार पर हमें देखने के लिए कुछ आदमी चढ़ आए। हैनरी ने बोर्दू को दूर से ही पहचान लिया और अपने इस परिचित को पहचानते ही उसका चेहरा खुशी से खिल उठा। वह बोला, "इधर वह बोर्दू दूरबीन लेकर खड़ा है और उधर बूढ़ा वास्किस, टकर, और मे आदि खड़े हैं। सच ही, वहाँ सीमौनू भी खड़ा है।" सीमौनू उसका अपना मित्र था। यही वह दूसरा व्यक्ति था, जो हेनरी के मुकाबले में दूसरा अच्छा शिकारी था।

हमने जल्दी ही नदी पार करने की जगह ढूँढ ली। हेनरी ने हमें रास्ता दिखाया। उसका टट्टू नदी तक बहुत ही शांति से बढ़ता गया। धारा में भी वह उसी शान्ति के साथ चुपचाप उतर पड़ा। हम भी उसके पीछे-पीछे चले। पानी हमारी काठियों तक बढ़ आया था पर हमारे घोड़े बड़ी आसानी से पार हो गए। छोटे-छोटे खच्चर तेज धारा के साथ गाडी समेत ही बहने लगे, परन्तु हमारे देखते-देखते उन्होंने नदी के तल के पत्थरों पर पाँव जमाकर, जैसे-तैसे तेज धार का मुकाबला करते हुए, बडी कठिनता से नदी पार की। अन्त में सभी बड़ी सुरक्षापूर्वक किनारे आ पहुँचे। तब हमने एक छोटा-सा मैदान पार किया। एक खड्ड में उतर कर ज्यों ही ऊपर चढ़े, हमने अपने को लारामी किले के दरवाज़े के सामने पाया। इस दरवाज़े के ऊपर ही एक बहुत बड़ा बुर्ज बना हुआ था, जिसे रक्षा के उद्देश्य से बनाया गया था।

— :o: —

९ : लारामी किले के नज़ारे

आज उस बात को एक साल से भी अधिक बीत गया है, पर फिर भी लारामी किले और उसके निवासियों की जब भी याद आती है, ऐसा लगता है जैसे वह कोई सचाई न होकर पुराने समय का सपनों भरा कल्पना का कोई चित्र हो। इस सभ्य कहलाने वाले संसार से वहाँ का संसार कतई भिन्न था। वे ऊँचे-लम्बे आदिवासी भैंसों की खाल से बने अपने कपड़े पहने इधर से उधर भागते फिर रहे थे या फिर मकानों की ऊँची-नीची छतों पर पूरी बेफ़िक्री से आराम कर रहे थे। अनेक स्त्रियाँ सजी-धजी अपने-अपने कमरों के सामने झुंड बाँध कर बैठी थीं। उनके दोगले बच्चे उनके सामने ही किले के हर कोने में भागते फिर रहे थे। इनको छोड़कर और लोगों में पशु फँसाने वाले, व्यापारी और नौकर-चाकर आदि अपने-अपने काम में या आनन्द मनाने में लगे हुए थे। यह था उस समय का किले का दृश्य।

जब हम दरवाज़े पर पहुँचे, पहले-पहल हमारा स्वागत अच्छे ढंग से न हुआ। उन लोगों ने हमें अविश्वास और संदेह की निगाह से देखा। तब हेनरी ने उन्हें बताया कि हम व्यापारी नहीं हैं। हमने वहाँ के अधिकारी को उनके मालिक-व्यापारियों का एक परिचय-पत्र दिया। उसने इसे लेकर इधर-उधर पलटा और जैसे-तैसे पढ़ने की कोशिश की। पर वह बेचारा इस विद्या में कतई कोरा था। इस लिए उसने वहाँ के लेखक से सहायता ली। लेखक का नाम मौफ़ैलो था। वह पतला-दुबला हँसमुख फ्रांसीसी युवक था। पत्र सुनते ही लगा कि धीरे-धीरे बोर्दू ने अपनी ज़िम्मेवारी को पूरी तरह पहचानना और अनुभव करना शुरू कर दिया। यद्यपि उसके स्वागत की भावना में कोई कमी न थी, पर तो भी वह ऐसे मौके पर अधिकारी के रूप में पूरा न उतरता था। स्वागत की सारी रस्मों को छोड़ कर, एक-आध शब्द भी बिना बोले, उसने तुरन्त ही इधर-उधर दौड़कर हमारे लिए प्रबन्ध करना शुरू कर दिया। हम उसके पीछे-पीछे दरवाज़े के दूसरी ओर बने हुए जंगले और सीढ़ियों की तारीफ़ करते हुए चलने लगे। उसने हमें इशारा किया कि अच्छा

होगा यदि इस जंगले के साथ ही हम अपने घोड़े बाँध दें। ऐसा कहकर वह सीढ़ियाँ चढने लगा और एक छज्जे पर जाकर रुक गया। यह जगह साफ़ न थी। उसने पाँव की ठोकर से दरवाजा खोला। हमे वह बड़ा कमरा पूरी तरह दीखने लगा। यह कमरा किसी अनाज भंडार की अपेक्षा अधिक सजा हुआ लगा। इसमें थोड़ा-सा ही सामान था। एक हल्की-सी चारपाई बिना बिस्तर के पड़ी थी, दो कुर्सियाँ, दराजो वाली एक मेज, पानी लाने की एक बाल्टी और तम्बाकू के काटने के लिये एक फट्टा भी वहाँ पड़े हुए थे। दीवार पर एक ओर पीतल का बना हुआ क्रॉस लटका हुआ था और उसके पास ही एक बहुत ताज़ा खोपडी लटक रही थी। इस खोपड़ी पर गज भर लम्बे बाल लटक रहे थे। मैं बाद मे बताऊँगा कि यह दुखदायक निशानी किस बात की थी? इसका सम्बन्ध बाद की घटनाओं से बैठता है।

लारामी किले मे हमारा यह कमरा ही सबसे अच्छा हिस्सा था। यहाँ का असली मालिक पैपिन जब भी यहाँ होता तो वह इस कमरे मे ही रहता था। उसके चले जाने पर अधिकार बोदूँ के हाथ मे आ जाता था। बोदूँ ठिगना पर गठीले शरीर का आदमी था। वह अपने इस नये अधिकार को पाकर कुछ फूल गया था। अब उसने भैंसो की खालें मँगाने के लिए चिल्लाना शुरू किया। इन्हें लाकर फर्श पर बिछाया गया और हमारे बिस्तर तैयार किए गए। आज तक राह मे हमे जितनी बार सोना पड़ा, उनसे आज का बिस्तर अधिक आरामदेह था। अपने कमरे को ठीक-ठाक करने के बाद हम बाहर छज्जे पर निकल आए, ताकि बहुत देर से अपनी कल्पना मे बसाये इस लारामी किले को आराम से देख सकें। आखिर हम यहाँ पहुँचे भी तो बहुत दिन बाद और अनेक कठिनाइयों को पार करके! हमारे नीचे एक चौकोर जगह मे छोटे-छोटे कमरे, एक घेरे मे, बने हुए थे। उन सबके दरवाज़े इस बीच के चौकोर मैदान की ओर ही खुलते थे। इन सब का प्रयोग अलग-अलग उद्देश्य से होता था। परन्तु इन मे बहुत से किले मे काम करने वाले नौकरों के रहने के थे। उन नौकरो की पत्नियो की संख्या भी उनके बराबर ही थी। उन्हें यहाँ अपनी पत्नियो को साथ रखने की खुली छूट थी। हमारे सामने ही दरवाज़े का बुर्ज दिखाई देता था। इस पर तेजी से दौड़ते हुए घोडे की एक तस्वीर बनी हुई थी। तख्तो पर ही बनी हुई यह तस्वीर लाल रंग से बनाई गई थी और इससे

उतनी ही शूरवीरता और चतुरता टपकती थी, जितनी कि आदिवासी अपने भैंसो की खालों के कपड़े और मकान बनाते हुए दिखाते थे। इस सारे इलाके में ही ऐसे दीखता था, जैसे हर कोई अपने-अपने काम में लगा हुआ हो। वास्किस एक बूढ़ा व्यापारी था। उस की बहुत सारी गाड़ियाँ पहाड़ो में स्थित एक बहुत दूर की दूकान के लिए सामान लेकर जाने ही वाली थी। कनाडा निवासी नौकर इस यात्रा के लिए पूरी तेज़ी के साथ जुटे हुए थे। पास ही खड़े एक-दो आदिवासी उन्हें बहुत गम्भीर होकर देख रहे थे, जैसे उन्हें कोई चिंता ही न हो।

यह किला 'अमरीकी फर कम्पनी' की दूकानों में से एक है। इस इलाके के आदिवासियो के साथ तमाम व्यापार इसी के ज़रिये से होता है। यहाँ इसके अधिकारियो का अपना ही शासन चलता है। अमरीका की केन्द्रीय सरकार का अधिकार यहाँ कम चलता है। जिन दिनो हम वहाँ पर थे, सरकारी सैनिको की चौकियाँ सात सौ मील दूर, पूर्व की ओर थीं। यह छोटा-सा किला धूप मे सुखाई ईंटो से बना हुआ है। बाहर से चौकोना-सा दीखता था। इसकी नीवें और परकोटे मिट्टी के ही बने हुए थे। सामने के दोनों कोनों पर दो बुर्ज भी बने हुए थे। परकोटो की ऊँचाई पन्द्रह फुट के लगभग होगी और उन पर लकड़ी का एक और जंगला लगा हुआ था। अन्दर के मकानों की छतें सैनिको के खड़ा होकर गोला-बारी करने का काम देती थीं। यह मकान दीवारो से एकदम सटकर बने थे। किले के अन्दर का हिस्सा कुछ भागों मे बँटा हुआ है। एक ओर एक चौकोना हिस्सा चारो ओर बने भंडारो, दफ्तरो और रहने के घरो से भरा हुआ है। दूसरे हिस्से में एक तंग जगह पर घुड़साल बनी हुई है, जिसके चारो ओर मिट्टी की ऊँची-ऊँची की दीवारें हैं। यहाँ रात के समय अथवा आदिवासियो से खतरा होने पर, घोड़े और खच्चर इकट्ठे करके बाँध दिए जाते है। बड़े दरवाज़े में दो रास्ते हैं। उनके बीच में एक गोल ढका हुआ छोटा-सा रास्ता है। एक-एक छोटी-सी खिड़की ज़मीन से कुछ ऊँचाई पर अगल-बगल से इस बीच के रास्ते मे खुलती है। यह पास के कमरे की खिड़की है। इस लिए बीच का रास्ता बंद हो जाने पर भी कोई आदमी बाहर ही खड़ा होकर कमरे के अन्दर वाले लोगों से, इस छोटी खिड़की के द्वारा, बातचीत कर सकता है। इस तरह जिन आदिवासियों पर सन्देह होता है, उन्हें

अन्दर आने से रोका जा सकता है। ऐसे लोगो को व्यापार के लिए किले के अन्दर नही आने दिया जाता। जब भी खतरा होता है, सारे दरवाज़े बन्द करके इस खिड़की की राह से ही काम लिया जाता है। और दूकानो पर भले ही खतरे की यह बात निश्चित हो, परन्तु इस किले मे यह बात उतनी निश्चित नही है। इस के पड़ोस मे ही बहुत बार आदमी मार दिए जाते है, पर तो भी यहाँ के लोगो को आदिवासियो के हमले का कोई खास खतरा नही होता।

हम अपने इन नये कमरो में अभी बहुत देर तक निश्चित होकर आराम नही कर पाए थे कि एकदम ही चुपके से किसी ने हमारे कमरे का दरवाजा खोला। एक काला चेहरा और दो चमकती आँखें हमें देख रही थी। तभी एक लाल बाह और कधा अन्दर घुस आया और उसके साथ ही एक लम्बा चौड़ा आदिवासी अन्दर आ गया। उसने हमे अपने हाथो से हिलाया और प्रणाम किया। वह फर्श पर ही बैठ गया। उसके पीछे और भी बहुत सारे लोग आए और बहुत धीरे-धीरे आराम से अपनी-अपनी जगह चुन कर बैठ गए। उन्होने हमारे सामने आधा घेरा बना लिया। ऐसे समय चिलम सुलगाकर हर एक के हाथ में देनी होती है। इस समय भी वे लोग हमसे यही उम्मीद लेकर आए थे। किले मे रहने वाली औरतो के पिता, भाई या दूसरे सम्बन्धी ही इस समय हमारे मेहमान बन कर आए थे। उन्हें इस किले मे रहने और आराम से अपने दिन बिताने की छूट दे दी गई थी। और भी दो-तीन आदमी बीच में चले आए। वे छोटी उमर के थे और अपनी उमर या कारनामो की कमी के कारण उन्हें कोई भी महत्त्व का दर्जा प्राप्त न था। ऐसे समय बूढ़ो और सैनिको के साथ बैठने में उन्हें लाज आती थी। इस लिए वे अपनी आँखें हम पर से बिना हटाए भी वही अलग होकर खडे रहे। उनकी गालो पर पराग मला हुआ था, उनके कानो मे शख के बने झुमके लटके हुए थे और उनकी गर्दनो मे दानो से बनी मालाएँ पडी हुई थी। उन्होने आज तक न तो शिकारी के रूप में प्रसिद्धि पाई थी और न ही किसी आदमी को मार कर इज्जत पाई थी। इस लिए उन्हें आदर न दिया जाता था और इसी लिए ये कुछ अधिक शरमीले बने हुए थे। इन दर्शको के कारण हमें कुछ कठिनाई अनुभव हुई। वे हमारे कमरे की हर चीज़ देखने पर तुले हुए थे। उनकी आँखें हमारे सामान और हमारी पोशाकों को जाँचने मे लगी हुई थी। बहुत से लोग यह बात नही

मानते, पर तो भी इन आदिवासियों की उत्सुकता प्रायः सबसे अधिक उन चीजों के बारे में रहती है, जिन्हें वे अच्छी तरह पहचानते हैं। जिन बातों को वे नहीं जानते उनकी तरफ से वे बेखबर रहते हैं। जिन चीजों की वे कल्पना भी नहीं कर सकते, उनके विषय में वे जानने का यत्न भी नहीं करते। आश्चर्य में डूब कर वे केवल उसे एक 'महान् औषधि' ही मानते हैं। जिस भी चीज को यह नाम दे दिया जाए, आदिवासी उसकी ओर से बिल्कुल बेफिक्र हो जाता है। ये लोग कभी भी अनुमान और कल्पना का सहारा लेकर नई बात सोचने की कोशिश नही करते। अपनी घिसी-पिटी पुरानी बातों को ही सोचते रहते हैं। उनकी आत्मा जैसे सो चुकी है। उन्हें कोई भी धर्म-प्रचारक या सुधारक नही जगा सकता। कम-से-कम अब तक तो जगाने में कोई सफल नहीं हुआ है।

साँझ होते समय जब हम छत पर से ही चारो ओर के उजाड़ मैदान को देख रहे थे, हमने, बहुत दूर पर एक झुंड-सा देखा। जैसे लकड़ी की कई छोटी-सी इमारतें हमारे सामने के मैदान में पश्चिम की ओर कुछ दूरी पर खड़ी हो। ऊपर की ओर उन पर जैसे कुछ बोझ लदा हुआ था और नीचे हड्डियो जैसी कोई सफेद चीज चमक रही थी। यह डाकोटा सरदारो के शवो के गाड़े जाने की जगह थी। उनकी निशानियाँ, उनके मरने के बाद, इस किले के पास ही रख दी जाती हैं ताकि शत्रुओ के हाथो मे पडने से बची रह सकें। फिर भी अनेक बार ऐसा हुआ है कि काक जाति के आदिवासियो के लड़ाकू दलों ने इस इलाके पर हमला करते हुए इन इमारतनुमा ढाँचो को उखाड़ फेंका और उनमें से उन सरदारो के शरीरो को निकाल कर फेंक दिया। डाकोटा लोग बहुत थोड़ी सख्या में होने के कारण यही से अपने पुरखो के निशानों को उखाड़ा जाता हुआ देखते रहे और अपमान का कडवा घूँट पीकर रह गए। जमीन पर पड़ी हुई सफेद चीजें भैंसो की खोपड़िया थीं, जिन्हें इन कब्रगाहों के आसपास घेरे मे सजा दिया जाता था। इन मैदानों का यही रिवाज है।

रात की हल्की रोशनी में हमने पहचाना कि पचास या साठ घोड़े किले के पास तक आ गए। ये घोड़े इस बस्ती के ही थे। दिन में इन्हें नीचे की चरागाहो में हथियारबन्द रखवालो के साथ चरने के लिए भेजा गया था और इस समय ये घुड़साल में लौटकर आ रहे थे। इसी समय बडा दरवाजा खुला।

इसके पास ही एक कनाडा निवासी पहरेदार के रूप में खडा था। उसकी भौहों के बाल सलेटी से रंग के थे। उसकी कमर-पेटी में सैनिको जैसी ही एक पिस्तौल लटक रही थी। उसका साथी एक घोड़े पर सवार था। उसकी बदूक उसके सामने की काठी पर टिकी हुई थी। उसके लम्बे बाल उसके चेहरे के सामने की ओर उड रहे थे। और वह सबसे पीछे-पीछे चलता हुआ सबको चढ़ने के लिए कह रहा था। कुछ ही क्षण में घुड़साल का तग दरवाजा सबके लिए खोल दिया गया। जगली घोड़े दुलत्तियाँ झाडते हुए और एक दूसरे को काटते हुए, अशान्त होकर वहाँ जमा हो गए।

तभी एक कनाडियन ने एक बेतुकी-सी घण्टी बजाई। यह हमे शाम के भोजन की सूचना देने के लिए बजाई गई थी। भोजन हमें एक नीचे के कमरे में बहुत भद्दी मेज पर परोसा गया। इसमें रोटी और भैंसे का सूखा मांस शामिल था। इसके खाने से दात मजबूत हो सकते थे। भोजन के इस दौर में इस बस्ती के बड़े-बड़े लोग और स्वामी बैठे। हेनरी को भी इसमें आदरपूर्वक बिठाया गया। भोजन करने के बाद हमारे उठते ही इसी मेज पर एक बार फिर खाना परोसा गया। इस बार रोटी नही दी गई। यह भोजन शिकारियों, पशु फसाने वालो आदि मझले वर्ग के लोगो के लिए परोसा गया था। बचे-खुचे आदिवासियो और कनाडियन नौकरो को अपने-अपने कमरे में ही खाने के लिए सूखा मास दे दिया गया था। यह सब अन्दरूनी बात बताते हुए यही मै उन दिनो वहाँ सुनी गई एक बात बताये बिना न रहूँगा।

कभी यहाँ पियेर् नाम का एक बूढ़ा नौकर था। उसका काम भोजन के समय लोगो को भडार से मास निकालकर देना होता था। दया और सहानुभूति के कारण वह मास के सबसे अच्छे और मोटे हिस्सो को अपने साथियों में बाँट देता था। यहाँ के अधिकारी की निगाह से यह बात बहुत दिन तक बच न सकी। वह इस बात पर बहुत ही बिगड़ उठा। उसने जिस किसी भाँति इस बात को रोकने का निश्चय कर लिया। अन्त में उसने एक उपाय सोचा। यह उपाय उसकी रुचि के मुताबिक था। मांस के कमरे के साथ ही मिट्टी की दीवार से अलग किया हुआ एक और कमरा था। यहाँ पर रोएँदार खाले इकट्ठी की जाती थी। इस कमरे का किले से सम्बन्ध एक चौकोन झरोखे के द्वारा ही था। यह झरोखा भी उस मिट्टी की दीवार में ही था। यह कमरा

बिल्कुल अँधेरा था। एक शाम बिना किसी के देखे ही अधिकारी मांस वाले कमरे में घुसा और इस छेद के द्वारा इस अँधेरी कोठरी में घुस गया तथा खाली आदि में छिप कर बैठ गया। तभी अपनी लालटेन लेकर पियेर बुड़बुड़ाता हुआ वहाँ आया और मांस के टुकड़ो को खीचने लगा। उसने सबसे अच्छे टुकडे, सदा की भाँति काटे। तभी अचानक ही उसे एक गूँजती-सी भूत की आवाज़ अन्दर के कमरे से आती हुई सुनाई दी, "पियेर, पियेर! इस मोटे मांस को छोड़ दो। केवल पतला मांस ही लो।" उसके हाथ से मांस गिर गया और वह किले में, अन्दर की ओर, चिल्लाता और चीखता हुआ भागा। भंडार में भूत को देख कर वह बहुत डर गया था। वह दहलीज़ पर ही गिर पड़ा और बेहोश हो गया। दूसरे कनाडियन नौकर उसे बचाने के लिए दौड़े। कुछ ने उसे उठाया और कुछ दो लकड़ियो का क्रास बनाकर अन्दर से भूत को भगाने के लिए गए। इसी समय वह अधिकारी भी बड़ा उदास चेहरा लिए हुए दरवाज़े पर आ पहुँचा। उसे होश में लाने के लिए स्वामी ने सारी बात साफ़ करनी उचित समझी। पर यह बात उसी के विरुद्ध जा पड़ी।

अगली सुबह हम वास्किस और मे नाम के व्यापारियों से बात करते हुए दरवाज़ो के बीच में ही बैठे हुए थे। ये दोनो व्यापारी और मौंथिलों ही ऐसे व्यक्ति थे, जो इस किले में रहने वाले लोगो में से कुछ पढ़े-लिखे थे। मे हमें यात्री कंकलो के विषय में कुछ बता ही रहा था कि तभी एक भद्दी सूरत का ठिगना चिथड़ों में लिपटा आदिवासी तेज़ी से घोड़ा दौडाता हुआ, किले में हम तक आ गया। पूछे जाने पर उसने बताया कि स्मोक नाम के आदिवासी सरदार का गांव पास तक ही आ गया था। कुछ ही मिनट बाद हमे सामने नदी के पास की पहाड़ी चोटियो पर कुछ घुडसवार असभ्य लोगों की बेतरतीबी भीड़ इकट्ठी होती हुई दिखाई दी। मे ने अपनी कहानी समाप्त की। तब तक वह सारा गाँव ही लारामी धारा तक उतर कर उसे पार करने लगा था। मै नदी के किनारे तक चला गया। यह धारा काफी चौड़ी है और तीन या चार फुट गहरी और तेज़ बहने वाली है। काफी दूर तक कुत्ते, घोडे और आदिवासियो से यह धारा घिरी हुई थी। मकान बनाने वाले तम्बू और लम्बे बांस घोड़ों पर लदे हुए थे। उनका बोझिल हिस्सा आगे की ओर घोड़ो की पीठ पर बँधा हुआ था। दोनो तरफ दो या तीन बल्लियाँ बँधीं हुई थी। दूसरा

किनारा नीचे की ओर लटक रहा था। इस तरह घोड़ों की पीठ पर सामान लादने के लिए एक काठी जैसी बन गई थी। घोड़ो से कुछ ही पीछे एक टोकरी इन बल्लियों के बीच मे लटका दी गई थी। उसे मजबूती से बाँधा गया था। इस टोकरी में बहुत-सा घरेलू सामान, कुत्तों के पिल्ले, छोटे बच्चे, अथवा कोई बहुत ही बूढ़ा आदमी बैठा दिया जाता था। ऐसी बहुत-सी गाड़ियाँ इस समय नदी से पार आ रही थी। उनके साथ ही अनगिनत कुत्ते भी आ रहे थे। उन पर भी छोटी-छोटी ऐसी ही गाडियाँ-सी बना दी गई थीं। इनके पीछे अपने घोडो पर ही बैठे हुए सैनिक लोग आ रहे थे। उनके साथ ही घोड़े की पीठ पर बिल्ली की सी आँखों वाले कुछ छोटे बच्चे भी बैठे थे। औरतें खच्चरों पर ढोए हुए सामान पर ही बैठी हुई पार आ रही थी, हालांकि घोड़ों पर पहले ही बहुत ज्यादा बोझ लदा हुआ था। चारो ओर बहुत ही गड़बड़-झाला सा मचा हुआ था। सब कुत्ते साथ मिलकर चिल्ला और भौंक रहे थे। कुत्तों के छोटे पिल्ले इन गाड़ियो में बैठे उदासी से गुर्रा रहे थे, क्योंकि नदी का पानी उन तक पहुँच रहा था। काली आँखो वाले छोटे बच्चे अपनी टोकरी के किनारों को पकडे बैठे हुए थे और पानी को इतना पास आते देखकर चौकन्ने हो गए थे। चेहरे पर पानी के टकराते ही वे घबरा जाते थे। कुछ कुत्ते अपने बोझो के साथ ही धारा मे बह गए थे। वे बहुत करुणाजनक स्वर में चिल्ला रहे थे। उन्हें पकड़ने के लिए बुढिया औरतें उन्हें खीच लाती थी। जो घोड़ा किनारे पर पहुँचता गया, धीरे-धीरे वह ऊपर चढ़ने लगा। बाद में खुले घोड़े और उनके बछडे ऊपर चढ़ने लगे। खुले होने के कारण वे अक्सर भीड़ में से तेजी से बढने लगते। उनके पीछे-पीछे बूढी औरतें चिल्लाती हुई दौड़ रही थी। उत्तेजना से ऐसे मौके पर ऐसा करना उनका स्वभाव ही था। भारी-भरकम जवान औरतें खूब सज-धज कर किनारे पर इधर-उधर खडी थी और हर एक ने अपने हाथ मे अपने स्वामी का भाला पकड़ा हुआ था। यह एक निशानी के तौर पर था, ताकि प्रत्येक गृहस्थी का सामान एक साथ ही इकट्ठा हो सके। कुछ ही क्षण मे यह भीड़ फिर खिसकने लगी। प्रत्येक परिवार अपने घोड़ो और सामान के साथ किले के पीछे के मैदान तक कतार बांधकर चलता आया। यहाँ पहुँच-कर आधे घण्टे के अन्दर ही अन्दर कोई साठ-सत्तर मकान खड़े हो गए। उनके सैकड़ो घोड़े आसपास के मैदानो मे चर रहे थे और उनके

कुत्ते इधर-उधर घूमते फिर रहे थे। किला योद्धाओं से भर गया और बच्चे दीवारो के नीचे लगातार चीखते-चिल्लाते भाग रहे थे।

अभी ये नये आने वाले लोग आकर पहुँचे ही थे कि बोर्दू अपनी पत्नी की ओर चिल्लाता हुआ आया और दूरबीन माँगने लगा। उसकी आज्ञाकारिणी पत्नी 'मारी' एक आदर्श पत्नी थी। वह तुरन्त ही दूरबीन ले आई और बोर्दू उसे लेकर परकोटे पर चढ़ गया। पूर्व की ओर देखते हुए उसने कहा कि और भी परिवार आ रहे है। कुछ ही क्षण बीतने के बाद साफ दिखाई देने लगा कि प्रवासियो का भारी जलूस पहाड़ियो मे से होकर लगातार बढ़ता आ रहा था। वे नदी तक आए और बिना रुके या मुड़े वे एकदम इस के पार आ गए और इधर के किनारे पर धीरे-धीरे चढ़ते हुए किले और आदिवासियों के गाँव की ओर बढने लगे। परन्तु, यहाँ से लगभग दो फर्लांग दूर ही एक अच्छी जगह पाकर उन्होने घेरा डाल लिया और अपनी गाड़ियाँ रोक दी। कुछ समय तक हमारी शान्ति में कोई अन्तर न पड़ा। प्रवासी अपना घेरा डालने की तैयारी करते रहे। अपना काम खत्म करते ही उन्होने किले पर जैसे एक साथ ही धावा बोल दिया। चौड़े किनारों वाले टोप पहने, पतली शक्ल और घूरती हुई आँखो वाले आदमियों की एक भीड दरवाज़े पर जमा हो गई। लम्बे और भद्दे दीखने वाले ये आदमी खड्डी का बुना कपड़ा पहने हुए थे। उनकी औरतो के चेहरे मुरझाए हुए और शरीर पतले थे। वे भी वहाँ जमा हो गई थी। लगता था जैसे सभी उत्सुकता से वहाँ खिंचे चले आए थे और जैसे उन्होंने किले का कोना-कोना लूट लेना हो। इस सब बात को देखकर हम घबरा गए और अपने कमरे मे लौट आए। हमें आशा थी कि इस कमरे में हमें शान्ति अवश्य मिलेगी। आने वाले इन लोगो ने अपनी पूछ-ताछ पूरे उत्साह के साथ जारी रखी। उन्होने हर कमरे और कोठी मे घुसकर उसे अच्छी तरह देखा, हालाँकि उनमें रहने वाली औरतें बहुत घबरा गई थीं। उन्होंने पुरुषों के हर कमरे को यहाँ तक कि 'मारी' और वहाँ के मालिक के मकान को भी, जैसे तह तक छान डालने का निश्चय कर रखा था। अन्त में हमारे दरवाज़े पर भी बहुत से लोगो का एक जत्था आया। पर, हमने उन्हें किसी प्रकार का बढ़ावा न दिया।

अपनी उत्सुकता शान्त करने के बाद वे अपने काम-काज के लिए आगे

वढे। आदमी अपनी अगली यात्रा के लिए सामान खरीदने मे लग गए। वे या तो इस सामान को पैसो के बदले खरीद रहे थे, या उसके बदले अपनी कुछ फालतू चीजो को दे रहे थे।

इन प्रवासियो को पशु फँसाने वालो और व्यापारियो से खास घृणा थी, क्योंकि ये उन्हे दोगला मानते थे। ये उन्हे फ्रासीसी आदिवासी के नाम से पुकारते थे। किसी कारण वे यह मानते थे कि ये लोग उनके प्रति किसी प्रकार की शुभ-भावना नही रखते थे। इनमे से कुछ का तो यह विश्वास भी था कि फ्रांसीसी लोग उन पर हमला करने के लिए आदिवासियो को उकसाते रहते थे। डेरे पर पहुँच कर हमें वहाँ फैले हुए गड़बड-झाले और अनिश्चय के ही दर्शन हुए। लगता था कि लोग जैसे स्वय पर से विश्वास खो वैठे थे। वे बौखलाए हुए और अचरज में पड़े हुए थे। लगता था जैसे जंगल मे भटके हुए कुछ स्कूल के लडके इकट्ठे हो। उन सबके ही अन्दर कुछ इस प्रकार की भावना भरी हुई थी कि उनके पास बहुत देर तक ठहरना कठिन था। ऐसे जंगल के रहने वालो के लिए जंगल ही अच्छा रहता है इस दूर के रेतीले मैदान में ऐसे आदमी हमेशा ही चक्कर मे पड़ जाते है। ऐसे लोग पहाड़ी आदमियो से कतई भिन्न होते है। उनका यह अन्तर वैसा ही होता है जैसा किसी छोटी नाव खेने वाले कनाडियन और किसी जहाज के अमरीकी नाविक का। इस पर भी मै और मेरा साथी प्रवासियो की इस दशा का कारण खोजने में सफल न हुए। ऐसा उनकी कायरता के कारण न था। ये लोग बहुत वीर थे, पर, एकदम असभ्य और मैदान के हालात से अनजान थे। ये न तो इस इलाके और न ही यहाँ के निवासियो के बारे में अधिक जानते थे। उन्हे अब तक काफी दुर्भाग्य का सामना करना पड़ा था और इससे भी अधिक दुर्भाग्य आ पड़ने की उन्हें उम्मीद थी। उन्होने सारे रास्ते भर न तो मनुष्यता को ठीक से मापा था और न ही अपनी चतुराई का पूरा प्रयोग किया था।

उन लोगो ने हमें भी सन्देह की दृष्टि से ही देखा। अजनवी होने के कारण उन्होने हमे अपना शत्रु समझा। जब हमने देखा कि हमे सीसे की गोलियां और कुछ और जरूरी चीजें चाहिएँ तो हम उन लोगो के डेरे की ओर गए। बहुत झिझक, सन्देह और आनाकानी के बाद कही सौदा तय हुआ और शर्ते निश्चित हुई। तव प्रवासी सामान लेने अन्दर गया। पर कुछ

देर बाद जब हम उसकी प्रतीक्षा करते थक गए और उसे ढूंढने लगे, तो हम ने देखा कि वह अपनी गाड़ी के जुए पर बैठा है। हमें पहुँचता हुआ देखकर वह बोल उठा, "देखो, आगन्तुक ! मुझे लगता है मै यह सौदा नही कर सकूँगा।"

लगता है सौदे की जगह से ही उसका कोई साथी उसके पीछे-पीछे उसके साथ ही चला आया था। उसने उसे यह समझा दिया था कि हम उसे ठगना चाहते थे, और यह भी कि अच्छा होगा यदि वह हमसे सौदा न करे। प्रवासियो की घबराहट और डर से भरी यह मानसिक हालत उन्ही के लिए कभी-कभी खतरे का कारण बन जाती थी। आदिवासियो के सामने यदि आत्मविश्वास और बहादुरी के साथ बहुत सावधान रहकर कोई बात की जाए तो वे लोग अच्छे पड़ौसियो की भाँति व्यवहार करते है। परन्तु यह सब इस पर आधारित है कि आप उनमे कितना आदर या डर जगा देते है। अगर आपने उनके सामने अनिश्चय या डर दिखाया तो आप निश्चय ही उन्हें भयकर शत्रु के रूप मे बदला हुआ पाएँगे। डाकोटा लोगो ने उनकी इस घबराहट को अच्छी तरह भाँप लिया और तुरन्त उसका लाभ उठाया। उन्होंने बहुत बढ़ा-चढाकर अपनी माँगें रखनी शुरू कर दी। उनकी यह आदत ही बन चुकी है कि किले के पास आने वाले हर दल के पास जाकर वह दावत माँगते है। स्मोक का सारा गाँव इसी इरादे से बहुत दिनो की लम्बी यात्रा करके इस किले के पास तक आया था। कॉफी के एक प्याले और दो-तीन बिस्कुटो को पाकर ही वे खुश हो जाते थे। उनके दावत माँगने पर ये प्रवासी मना नही कर सकते थे।

सूर्य छिपने के समय आदिवासियो का गाँव उजाड हो चुका था। हम बूढे आदमियो, सैनिको और बच्चो से मिले। वे खूब सज-धजकर प्रवासियो के डेरे की ओर जा रहे थे। उनके चेहरे पर उम्मीद झलक रही थी। वहाँ जाकर वे आधा घेरा बनाकर बैठ गए। स्मोक सबसे बीच मे बैठा। उसके दोनो ओर सैनिक बैठे। उनसे परे जवानो और लड़कों की बारी आई। और, सबसे अन्तिम हिस्से पर औरतों और बच्चों को बिठाया गया। जल्दी-से-जल्दी बिस्कुट और कॉफी निपटा दिए गए। प्रवासी फटी आंखो से इनको देखते रह गए। लारामी किले पर जाने वाले हर दल के साथ यही कुछ

दोहराया जाता था। आदिवासियों की हरकतें और उम्मीदें रोज ही बढती जा रही थी। एक शाम को केवल शरारत के कारण ही उन्होने जिन प्यालो मे चाय पी, उन्हे तोड डाला। इस बात से प्रवासी इतने निराश हुए कि उनमे से कुछ ने अपनी बन्दूके उठा ली और उस भीड को खत्म करने पर तुल गए। जब हम इस इलाके से लौटे तब डाकोटा लोगों की यह आदत और हरकतें कुछ अधिक ही बढ गई थी। वे लोग प्रवासियो को नष्ट कर देने की धमकियाँ देने लगे थे और एक दल पर तो उन्होने गोली भी चला दी थी। इस प्रदेश मे सेना और सैनिक कानून को स्थिर करने की बहुत जरूरत है। अगर लारामी किले या उसके आसपास जल्दी ही फौजें तैनात न की गईं तो यात्री सदा ही इस प्रकार के भयकर खतरो के शिकार होते रहेंगे।

डाकोटा या सियूँ जाति के ओजिल्लाला और ब्रूल तथा और कई वर्ग एकदम असभ्य है। सभ्यता का उनपर कोई भी असर नही हुआ। उनमें से एक भी आदमी न तो यूरोप की कोई भाषा बोल सकता है और न ही कभी किसी अमरीकी बस्ती मे गया है। जब प्रवासियो ने इस राह से ओरेगन की तरफ जाना शुरू किया, तब से एक-दो साल पहले तक इन आदिवासियो ने कही भी किसी भी गोरे को काम करते न देखा था। उनकी दृष्टि मे केवल वे ही गोरे आए थे जो अमरीकी फर कम्पनी के इन व्यापार केन्द्रो में काम करते थे। आदिवासी लोग उन्हें बुद्धिमान् समझते थे, पर अपने से कम! वे लोग भी आदिवासियो की भाँति ही चमडे के घरो मे और भैसो के मास पर जीवित रहते थे। परन्तु, जब अपने बैलो और गाडियो के साथ इन प्रवासियो ने उनके इलाके पर हमला-सा बोल दिया तब उनके अचरज का ठिकाना न रहा। वे सोच भी नही सकते थे कि इस धरती पर इतने अधिक गोरे आदमी रहते होंगे। अब धीरे-धीरे उनके अचरज का स्थान अपमान की भावना लेती जा रही है। यदि सावधानी न बरती गई तो परिणाम बहुत अधिक अफसोस-नाक होगा।

हमे आदिवासियो के घर को अन्दर से देखने की इच्छा थी। मै और शॉ दोनो ही अक्सर उनके गाँव मे जाया करते थे। सच तो यह है कि हम प्राय हर शाम उनके यहाँ जाते थे। शॉ ने स्वय को डाक्टर के रूप मे परिचित कराया था। इसलिए हमे वह एक बहाना मिला हुआ था। अपनी रोज की

इस सैर का परिचय देने के लिए मैं एक दिन की घटना को ही बयान करना काफी समझता हूँ। अभी सूरज छिपा ही था। घोड़े घुड़साल में बन्द किए जा रहे थे। इसी समय 'मैदानी मुर्गा' नाम का युवक कुछ लड़कियों को लिए हुए दरवाज़े पर आया। वह अच्छा खासा छैल-छबीला था। उसने उन लड़कियों के साथ एक चक्कर काटते हुए रास रचाना शुरू किया। जब उसने एक लम्बी और लहरदार तान शुरू की तो उन लड़कियों ने भी एक दुःखभरी तानें उसमे मिलानी शुरू की। एक मकान के दरवाज़े के बाहर ही लड़के, लड़कियाँ और जवान सुस्ती मे बैठे हँस खेल रहे थे। उन पर उदासी-भरी निगाह डालता हुआ एक सजा-बजा सैनिक खड़ा था। उसका मुँह काले रंग से पुता हुआ था। यह इस बात की निशानी थी कि उसने किसी पोनी जाति के आदमी का सिर काट लिया है। इनको पार कर हम आगे बढे। यहाँ हमें अपने और लाल होते पश्चिमी आसमान के बीच में बहुत बड़े और ऊँचे डेरे दीखने लगे। हम तुरन्त ही स्मोक के घर चले गए। यह किसी भी अन्य मकान से अच्छा न था। बल्कि, यह कुछ खराब ही था। प्रजातन्त्र मानने वाली इस जाति में सरदार को कभी ऊँचा स्थान नही मिलता। एक भैंसे की खाल पर स्मोक चौकड़ी मारे बैठा था। उसने हमे देखते ही बहुत प्यार से प्रणाम किया। निश्चय ही ऐसा शॉ के डाक्टर होने के कारण किया गया था। इस घर मे चारो ओर बहुत सी औरतें और बच्चे बैठे थे। शॉ के मरीज़ो की शिकायत प्रायः आँखो की सूजन के सम्बन्ध मे होती थी, जो कि धूप लगने से हो जाती थी। इस प्रकार की बीमारी का इलाज वह सफलता से कर लेता था। वह अपने साथ होमियोपैथिक दवाइयो का एक बक्सा भी लाया था। ओजिल्लाला लोगो मे इलाज का यह नुकसान न पहुँचाने वाला तरीका लेकर सबसे पहले पहुँचने वाला व्यक्ति शायद वह ही था। हमारे लिए सामने ही एक खाल बिछा दी गई। अभी हम उस पर बैठे ही थे कि एक मरीज़ हाज़िर हो गया। यह सरदार की ही लड़की थी। उसे गाँव की सबसे अच्छी दीखने वाली लड़की कहा जा सकता था। डाक्टर के साथ बहुत खुला व्यवहार होने के कारण उसने अपने को डाक्टर के हाथो में पूरी तरह छोड दिया और उसके हर इलाज को सहने लगी। शॉ अपना काम करता रहा और वह उसे देखकर सारे समय हँसती रही। शायद इन आदिवासी

औरतो को मुस्कराना आता ही नही। इस रोगी को विदा करने के बाद एक और नमूना सामने आया। यह बुढिया बहुत ही कमजोर और बुरी दीखने वाली थी। यह सबसे अँधेरे कोने मे बैठी दर्द के मारे आगे-पीछे झुक रही थी और दोनो आँखो पर हथेलियाँ रखकर उन्हे रोशनी से बचा रही थी। स्मोक के कहते ही वह बड़े अनमने भाव से आगे आगई और उसने अपनी आँखे दिखाईं। सूजन के कारण उसकी आँखे छिप ही गई थी। डाक्टर ने ज्योही अपना हाथ उस पर मजबूती से रखा तो वह दुःख से रोने लगी। वह दर्द के मारे परेशान थी। इसीलिए वह अपना तमाम धीरज खो बैठी। पर डाक्टर अपना असर बैठाना चाहता था। वह बहुत देर बाद अपनी मनपसन्द का इलाज करने के बाद सफल हो पाया।

अपना काम पूरा करने के बाद उसने कहा, "यह बडी अजीब बात है कि मैं अपने साथ स्पेनी मक्खियाँ लाना भूल गया हूँ। हमे इनकी इस सूजन का इलाज करने के लिए कोई दूसरी उत्तेजना देने वाली चीज रखनी ही चाहिए।"

ऐसी किसी चीज के अभाव में उसने आग मे से एक जलता हुआ लाल अंगारा लिया और उस बुढिया की कनपटी पर रख दिया। इससे एक जबरदस्त छाला पड गया। वह बहुत तेजी से चीखी और सब लोग हँस पडे।

अभी यह सब कुछ हो ही रहा था कि सरदार की सबसे बड़ी पत्नी कमरे मे आई। उसने हाथ मे लकड़ी का हथौड़ा पकड़ा हुआ था। इसका अगला हिस्सा पत्थर का बना हुआ था। और भी ऐसे बहुत से हथियार न्यू इंगलैंड में मिलने वाले पत्थरो से बने हुए हथियारो जैसे लगते थे। इसके हत्थे पर खाल मढी हुई थी। मैने एक कोने में कुछ देर पहले छोटे-छोटे काले पिल्लो को भैंस की खाल मे छिपे हुए पाया था। इस आने वाली बुढिया ने उन्हें एकदम ही तंग कर दिया। उसने उनमे से एक के पिछले पाँव पकडे और खीचकर दरवाजे के बाहर ले गई। वहाँ उसने उसके सिर पर यह हथौड़ा मार कर उसे मार डाला। मुझे यह पता था कि यह सब किस लिए हो रहा है। इसलिए मैने पीछे के छेद से अगली बातो को देखना चाहा। वह औरत उस कुत्ते को टाँगो से पकड़कर एक जलती हुई आग पर इधर से उधर घुमा रही थी। कुछ देर बाद उसके सारे बाल झड गये। इसके बाद उसने अपना

चाकू नगा किया और उसके छोटे-छोटे टुकड़े करके एक पतीली में डालने लगी। कुछ ही क्षण में हमारे सामने एक बड़ी सी थाली मे परोसकर यह स्वादु मास लाया गया ! कोई भी डाकोटा जाति का व्यक्ति अपने अतिथि का सबसे बड़ा सत्कार कुत्ते का मांस परोसकर ही करता है। यह दावत सबसे बड़ी दावत गिनी जाती है। मुझे पता था कि ऐसी दावत को मना करना उनका अपमान समझा जाएगा। इसलिए हमने उस छोटे से कुत्ते के मांस को शायद उसके अनजान बाप के देखते ही देखते खाना शुरू कर दिया। इस बीच स्मोक अपने बड़े हुक्के को तैयार करता रहा। हमारे भोजन समाप्त करते ही उसने इसे जलवा दिया और अब यह हुक्का हरएक के हाथ में से होकर गुज़रने लगा। यह सब हो जाने के बाद हमने उनसे छुट्टी ली और बिना किसी दिखावे के वहाँ से विदा होकर किले के दरवाजे पर आ पहुँचे। वहाँ हमे अपना परिचय देकर ही अन्दर आना मिला।

—: ० :—

१० : युद्ध की तैयारियाँ

सन् १८४६ की गर्मियाँ डाकोटा लोगो के लिए युद्ध की तैयारियो की बहार बनकर आईं। पश्चिम की तरफ के सभी डाकोटा जाति के लोग इन तैयारियो मे लगे हुए थे। कारण यह है कि सन् १८४५ मे उन्हे अपने दुश्मनो के हाथो कई बार मार खानी पडी। युद्ध करने वाले लोगो के बहुत से दल बाहर हमले के लिये भेजे गये थे। उनमे से बहुत से समाप्त हो गए थे और बहुत से हारकर टूटे-फूटे दिल से वापिस लौटे। इस प्रकार सारी जाति ही दुःख में डूबी हुई थी। शेष मे से दस योद्धा 'नाग' जाति के इलाके की ओर गए थे, जिनका नेतृत्व 'ववडर' नाम के नायक के एक बेटे ने किया था। लारामी के मैदानो को पार करते हुए उन्हे अपने से अधिक दुश्मनो का सामना करना पडा। वे घेर लिए गए और उनका हर आदमी मार दिया गया। यह हरकत करने के बाद नाग जाति के लोग अधिक चौकन्ने हो गए और डाकोटा लोगो के क्रोध से डरने लगे। उन्होने कत्ल किए हुए उस आदमी का सिर वापिस भेजकर संधि की इच्छा प्रकट की। इसके लिए साथ मे उन्होने इसके साथ ही उसके सम्बन्धियो और जाति-भाइयो के लिए कुछ तम्बाकू भेजा। उन्होने बूढे व्यापारी वास्किस को मझोलिये के रूप मे चुना। हमारे कमरे में जो खोपड़ी टगी थी, उसका यही भेद था।

पर 'ववडर' इस बात पर राजी न हुआ। हालाँकि उसका स्वभाव उसके नाम से मेल नही खाता था, तो भी वह आदिवासी था और अपनी आत्मा की गहराई से नाग जाति के लोगो से घृणा करता था। खोपडी के वापिस आने से बहुत पहले ही उसने बदला लेने की तैयारियाँ पूरी कर ली थी। उसने तम्बाकू और दूसरी भेटो के साथ अपने दूत डाकोटा जाति के सभी वर्गों के पास भेज दिए थे। ये लोग तीन सौ मील के अन्दर रहने वाले सभी लोगो के पास गए और उन्हे नाग जाति के विरुद्ध इकट्ठा होने के लिए एक विशेष स्थान और समय की सूचना देकर लौटे। सभी ने यह योजना एकदम स्वीकार कर ली। इस समय अनेको गाँव, लगभग पाँच-छह हज़ार की

आबादी के साथ, धीरे-धीरे मैदानो में से होकर बढ रहे थे और लावोंते के डेरे की ओर मिलने के निश्चित स्थान पर पहुँचने का यत्न कर रहे थे। यह स्थान प्लाट् नदी के किनारे पर था। वहाँ पर उन्होने युद्ध की सारी रस्में, विशेष समारोह के साथ, पूरी करनी थी। तब योजना के अनुसार एक हजार योद्धा शत्रु के इलाके की ओर भेजे जाने थे। इस सब तयारी का परिणाम क्या हुआ? यह बात आगे बताऊँगा।

मै इस सब बात को सुनकर बहुत खुश हुआ। मै इस इलाके मे आदि-वासियो के चरित्र को समझने के लिए ही आया था। अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिये यह जरूरी था कि मै उनके बीच मे उनके जैसा ही बनकर रहूँ। मैने किसी गाँव में रहने की उनसे प्रार्थना की और स्वयं को किसी एक घर का सदस्य बनाने की पेशकश की। यहाँ से यह सब चर्चा प्राय: इस सबन्ध में ही रहेगी कि वे लोग कैसे बढे और उनके रास्ते मे कैसे-कैसे वे रुकावटे आईं जिनकी आशा भी न थी?

हमने निश्चय किया कि लावोते के डेरे के इस सम्मिलन को देखने से किसी प्रकार भी चूकना न चाहिए। हमारे सोचे अनुसार देस्लारियर को किले मे हमारे घोडो और साज सामान की रखवाली करनी थी। हमें अपने साथ सबसे रद्दी जानवर और अपने हथियार ले जाने थे। इस बात की पूरी सम्भावना थी कि एक-दूसरे को न जानने वाले और दूर-दूर से आकर मिलने वाले इन लोगो मे ईर्ष्या और लडाइयाँ पैदा हो जाएँगी। ये लोग पहले ही काफी असभ्य थे। इस लिए हमे सावधान रहना जरूरी था कि कही हम भी कोई ऐसी भावना उनमे भड़काने के कारण न बन जाएँ। हमारी योजना तो ऐसी ही थी, पर हमारा दुर्भाग्य यह था कि हम इस रूप मे लावोते के शिविर को न देख पाए। एक सुबह एक जवान आदिवासी हमारे किले मे आया और हमारे लिए दुर्भाग्य की बात साथ ले आया। यह नया आने वाला आदमी बहुत ही साफ-सुथरा आदिवासी था। उसका चेहरा पराग से पुता हुआ था। उसके सिर पर मैदानी मुर्गे की पूँछ बंधी हुई थी। यह मुर्गा राकी पर्वतमाला के पूर्व की ओर देखने में नही मिलता। उसके कानो में शंख के बने झुमके लटक रहे थे और उसने एक चमकीला लाल कम्बल अपने शरीर पर लपेटा हुआ था। उसके हाथ मे अमरीकी सैनिको की एक तलवार थी। पर यह

दिखावे के लिए ही थी, क्योंकि इन मैदानो की लड़ाइयों में छुरी, बन्दूक और धनुष-वाण का ही प्रयोग होता है। बाहर जाते हुए कोई भी बिना हथियार के नही जाता। इस आदिवासी की पीठ पर भी धनुष-वाण लटके हुए थे। इस वेश में पीले घोडे पर चढा हुआ, अत्यधिक शान अनुभव करने वाला, यह युवक 'घोडा' नाम से प्रसिद्ध था। यह दरवाज़े तक आया। न वह दाएँ मुडा और न बाएँ। वह सीधा ही उस दिशा में बढ गया जहाँ औरतें अपने दोगले बच्चो को लेकर बैठी थी। उसने तिरछी निगाहो से उन्हें देखा। यह आदमी जो खबर लाया था वह आगे आनेवाली घटनाओ को बुरा बना देने वाली साबित हुई। वह हेनरी की पत्नी से बहुत बचपन से गहरे सम्बधो में बँधा हुआ था। आज वह बहुत सख्त बीमार थी। वह और उसके बच्चे 'बवंडर' के ही गाँव मे थे। वह जगह यहाँ से कुछ दिन के सफर की दूरी पर थी। हेनरी की इच्छा थी कि वह मरने से पहले पत्नी के दर्शन कर सके और अगर हो सके तो अपने बच्चो की देखभाल और सहायता का प्रबन्ध कर सके। वह बच्चो को बहुत प्यार करता था। उसे अपनी इस इच्छा को पूरा करने से रोकना बहुत बुरा होता। इसलिए हमने स्मोक के गाव में अपने को शामिल करने का इरादा छोड दिया और 'बवडर' के गाँवो में मिलने और उसके साथ शिविर की निश्चित जगह तक बढने का निश्चय किया। मै बहुत हफ्तो से हल्का-हल्का सा बीमार चला आ रहा था। किले मे पहुचने के तीसरे ही दिन, जागते समय, मुझे बहुत जबरदस्त पीडा अनुभव हुई और उतना ही नुकसान अनुभव हुआ, जितना किसी सेना को बडी लडाई हारने पर होता है। डेढ़ दिन में ही मै बहुत कमजोर हो गया। अब मै बिना तकलीफ केघूम-फिर भी नहीं सकता था। मेरे पास कोई डाक्टर भी नही था। ना ही मुझे बीमारी के लायक खुराक चुननी मिल सकती थी। इसलिए मैने अपने को भगवान् के सहारे छोड दिया और कष्ट की बिना परवाह किए अपनी बची-खुची ताकत को प्रयोग करने का निश्चय किया। इस प्रकार हम 'बवंडर' के गाँवो की ओर बीस जून को चल पडे। हालांकि मेरे पास ऊँचे किनारो वाली पहाडी काठी थी, तो भी मैं घोडे की पीठ पर बड़ी कठिनता से जमकर रह सका। किला छोड़ने से पहले हमने लम्बे बालों वाले एक कनाडियन—रेमन्ड—को नियुक्त कर लिया। उसका चेहरा उल्लू जैसा था और देस्लारियर के चेहरे से वह मुकाबला कर

रहा था। हमने केवल इसे ही नये साथी के रूप में नही पाया, बल्कि रेनल नाम का एक दोगला व्यापारी भी हमारे साथ हो लिया। उसकी पत्नी मार्गोत और उसके दो भतीजे भी हमारे साथ थे। इनके साथा ही 'घोडा' नामक आदिवासी सुन्दर युवक और भाई—'तूफान'—भी हमारे साथ थे। इस सब साथ को लेकर हम मैदान में पहुँचे और घिसी पिटी पगडंडी को छोड़कर उजाड पहाड़ियो को पार करने लगे। इन पहाड़ियों ने लारामी धारा की घाटी को चारो ओर से घेरा हुआ था। आदिवासी और गोरे, कुल मिलाकर, हम आठ आदमी और एक औरत थे।

व्यापारी रेनल अत्यन्त पतला, दुबला और स्वार्थ का पुतला था। उसने अपने हाथ में घोड़ा नाम के आदिवासी की सैनिकों वाली तलवार पकडी हुई थी और वह व्यर्थ की सैनिक चहल-कदमी करके आनन्द ले रहा था। वास्तव मे आधे से अधिक जीवन आदिवासियो में बिताने के कारण उसने, आदतें ही नही, भाव भी उनके ही अपना लिए थे। उसकी पत्नी मार्गोत डार्ड मन से अधिक भारी शरीर वाली एक मादा जानवर कही जा सकती थी। वह भी घोडो के पीछे बँधी टोकरी में बैठी हुई चल रही थी। उसी टोकरी में, उसके भारी-भरकम बोझ के अलावा और भी बहुत-सा सामान पड़ा था। खोजी रस्सी को पकडे हुए वह अपने पीछे-पीछे एक लादू घोड़े को चला रही थी जिस पर उनके घर ढकने वाली खालें लदी हुई थी। देस्लारियर हमारी गाडी के साथ-साथ-चल रहा था और रेमड पीछे-पीछे खाली घोड़ो को खदेडता हुआ चला आ रहा था। दोनो आदिवासी अशान्त थे। अपने हाथो में धनुप और तीर-तरकशो को सम्भाले वे पहाड़ियो पर जल्दी-जल्दी बढ रहे थे। वे किसी भेड़िये या हिरण को घनी झाड़ियो मे से चौंका देते थे। मैं और शॉ इस असभ्य जलूस के आगे-आगे चल रहे थे। कपड़े न रहने पर हमने भी पशु-फँसाने वालो जैसी हिरण की खाल की वेशभूषा पहन ली थी। हेनरी सबसे आगे-आगे चल रहा था। एक के बाद दूसरी पहाड़ियों, खड्डो आदि को पार करते हुए हम एक ऐसे प्रदेश में से गुजरे जो बिल्कुल उजाड, फटा-फटा और झुलसा हुआ था तथा जिसमे हमारे परिचित पौधो मे से एक भी पौधा नहीं उगा था। हाँ, यहाँ अनेको ओपधियाँ अवश्य लगी थीं। खासकर एबूसिन्थ नाम का पौधा हर ढलान पर लगा हुआ था। दूसरी ओर कीकर की

फलियाँ हर घाटी में लटक रही थी। काफी देर बाद हम एक ऊँची पहाड़ी पर चढे। हमारे घोडे आग जलाने वाले पत्थरो तथा लाल आदि अन्य अनेक पत्थरो पर से होते हुए शिखर तक पहुँचे। हमने लारामी धारा के जगली तटो की ओर देखा। यह धारा हमसे बहुत दूर एक बल-खाते साँप की तरह बहुत पतली और तग-सी होकर इधर-उधर बिखरे हुए फूली लकडी वाले और नीबू की किस्म के पेडो मे से होकर बह रही थी। पर्वतो की चूने जैसी सफेद चोटियाँ जंगलो और चरागाहो की हरी-भरी घाटियो से घिरी हुई लगती थी। इन्ही के बीच से होकर हम बढे और रात का डेरा नदी किनारे डाला। सुबह हमने नदी के साथ-साथ एक विस्तृत घास के मैदान को पार किया। सामने एक बगीचा था और उसकी छाया मे ही एक पुराने व्यापारी-केन्द्र के मकानो के निशान बचे हुए थे। यह अमराई जगली गुलाबो से भरी हुई थी। उनकी सुन्दर सुगन्ध हमे अपने घरो की याद दिला रही थी। हम ज्योही पेडो से बाहर निकले। एक चार फुट लम्बा और आदमी की भुजा जितना मोटा साप सामने चट्टान पर कुडली मारे बैठा दिखाई दिया। वह हमे देखकर फुफकार रहा था। पास के कुछ पेडो मे से एक खरगोश, जो हमारे इलाके के खरगोश से दुगुने आकार का रहा होगा, उछलकर सामने आ कूदा। 'कल्यू' नाम के पक्षी हमारे सिरो के ऊपर ही शोर करते हुए मँडरा रहे थे और मांदो के आगे बैठे अनेको छोटे-छोटे मैदानी कुत्ते हमारी ओर देखकर भौक रहे थे। अचानक ही एक हिरण सामने की झाडियो मे से उछला। उसने हमारी ओर उत्सुकता से देखा। और, तब अपनी सफेद पूँछ खडी करके इस तरह से उसने जम्हाई ली, जैसे वह कोई शिकारी कुत्ता हो। हमारे दोनो आदिवासी युवक साथियो ने एक सफेद भेडिया एक खड्ड में देख लिया। यह बछड़े जितना बड़ा रहा होगा। वे चीखते हुए उसके पीछे भाग पडे। किन्तु वह भेडिया धारा मे कूद कर पार चला गया। तभी गोली चलने की आवाज़ आई। पर, गोली उसके सिर के ऊपर से ही निकल गई थी। वह सीधी चढाई पर जैसे-तैसे चढ ही गया। मजाक करने के लिए जैसे वह कुछ पत्थर और मिट्टी भी नदी मे सरका कर गिराता गया। कुछ थोडा आगे चलने पर हमने धारा के दूसरे किनारे, इस इलाके की दृष्टि से, एक अजीब दृश्य देखा . सामने के वृक्षो के समूह में से लगभग दो सौ बारहसिगो का जत्था चरागाह में निकल आया।

चलते हुए उनके सीग एक दूसरे से टकरा रहे थे। हमे देखते ही वे भाग खड़े हुए और सामने के खुले स्थानो में से होते हुए पेडो के समूहो में और बिखरी हुई अमराइयो मे जा छिपे। हमारे बाईं ओर एक उजाड़ और ऊसर मैदान क्षितिज तक फैला हुआ था। हमारे दाईं ओर एक गहरी खाई थी, जिसके तल में लारामी धारा बह रही थी। आखिर हम इस सीधी ढलान के एक किनारे पर पहुँच गए। हमारे सामने एक संकरी घाटी बहुत लम्बी घास और बिरले वृक्षो के साथ मील भर तक फैली हुई थी। धारा इसी के साथ-साथ बह रही थी। दूसरे किनारे पर पहुँचकर हम रुके और हमने वही डेरा डाल लिया। वहाँ एक बडा-सा पेड अपनी शाखाओ को फैलाए हुए खडा था। हमने उसी के नीचे अपना तम्बू गाड़ा। हमारे सामने आधा-सा घेरा बनाती हुई लारामी धारा, सामने की सफेद ऊँची चोटियो के नीचे से होती हुई, बहती जा रही थी। हमारे दाईं ओर काफी घने छोटे-छोटे वृक्षों के समूह थे। सामने की चोटियाँ भी झाडियो से आधी ढकी हुई थी। हमारे पीछे की ओर भी, हरे मैदान में, कही कही फूली लकडी के बडे वृक्ष बिखरे हुए थे। इनमे से मील भर दूर मे आने वाला कोई भी दुश्मन या दोस्त साफ दिखाई दे सकता था। हमने यहाँ कुछ दिन रहने और 'बवंडर' के आने की प्रतीक्षा करने का निश्चय किया; क्योकि यदि वह लावोने शिविर की ओर गया हो तो वह इधर से होकर ही जाएगा। उसे खोजने के लिए आगे जाना अधिक उचित न था। यह सारा प्रदेश कटा फटा था। साथ ही उसकी स्थिति और हरकतो का भी कुछ निश्चय न था। इसके अलावा हमारे घोडे बहुत थक चुके थे और मेरी अपनी हालत यात्रा करने के योग्य न थी। यहाँ हमें घास, पानी और मछली काफी मात्रा मे मिल सकती थी। छोटा-मोटा शिकार, बारहसिंगे और हिरण आदि के रूप मे, मिल सकता था हालाँकि भैंसे यहाँ नही थे। हमारे संतोष में एक ही कमी थी। हमारे पीछे की ओर झाडियो और सूखी घास, का एक लम्बा चौडा मैदान था। इसमें घुसना बहुत खतरनाक था। इसमें फनियर साँपो के अनेको बिल मौजूद थे। हेनरी ने 'घोडे' को आगे भेज दिया, ताकि वह उसकी पत्नी तक संदेश ले जा सके और वह अपने सम्बन्धियो समेत, सारे गाँव को पीछे छोडकर, जल्दी से जल्दी हमारे डेरे तक पहुँच सके।

हमारा दैनिक कार्यक्रम इतना नियमित चलने लगा, जैसे हमारी कोई

अच्छी जमी हुई गृहस्थी हो। पुराना वृक्ष बीचो-बीच में था। हमारी राइफलें उसी के तने के सहारे टिकी रहती थी और हमारी काठियाँ उसके चारो ओर जमीन पर पडी रहती थी। इसकी ऊबड़-खाबड़ जड़ें कुछ इस प्रकार मुडी हुई थी कि हम उन्हे आराम कुर्सियो के रूप में प्रयोग कर सकते थे और इस की छाया में आराम से बैठकर पढ़ सकते और तम्बाकू पी सकते थे। परन्तु, इन सबसे बढ़कर खाने का समय हमारे लिए सबसे अधिक चाव-भरा होता था। भोजन के लिए सामान भी बहुतायत से मिल जाता था। कोई न कोई बारहसिगा या हिरण अवश्य ही किसी झाड़ी से कूदकर आ निकलता और उसकी पीठ और कमर इस तने के साथ टिक जाती। मुझे वह डेरा अब भी एक सैनिक डेरे की भाँति याद आता है ' वह पुराना वृक्ष, सफेद तम्बू, उसकी छाया मे सोता हुआ शाँ और नदी की धारा के किनारे रेनल का छोटा-सा घर। रेनल का घर एक चूल्हे जैसा दिखाई देता था। वह फटी-पुरानी भैसो की खालो से ढकी हुई बल्लियो से बना था। उसका एक पासा खुला हुआ था। दरवाज़े के साथ बारूद का डिब्बा और गोलियो का थैला लटक रहे थे। साथ ही उसका लम्बा लाल हुक्का और तरकस तथा धनुष-बाण भी लटक रहे थे। रेनल स्वय, रग को छोडकर, बाकी सब बातो में आदिवासियों जैसा ही था। वह भी भैसे का शिकार पुराने हथियारो के साथ करना चाहता था। इस सब के बीच अँधेरे में, अपने भारी-भरकम बोझे को घर के साज-समान, रोएँदार खालो, कम्बलो और रगे हुए चमडे आदि के बीच छिपाए बैठी, श्रीमती मार्गोत पहचानी जा सकती थी। यहाँ वह सुबह से शाम तक बैठी रहती थी। मोटापे और सुस्ती से वह भरपूर थी। उसका पति या तो चिलम पीता रहता, हमसे छोटी-मोटी भेंटे माँगता रहता, या अपने झूठे कारनामो की कहानियाँ सुनाता रहता। वह कभी-कभी इन मैदानी इलाको के अनुकूल कोई स्वादभरी चीज पकाने मे व्यस्त भी रहता। रेनल अपने काम मे मँजा हुआ था। देस्लारियर और वह मिलकर रसोई का काम निपटाते थे। उधर रेमंड भैसे की सफेद खाल बिछाकर भोजन का सामान परोसता। चाय और भोजन का सामान इसी खाल पर फैला दिया जाता और तब वह हमें हमारे तम्बू में आकर बहुत नम्रता से तैयारी की सूचना देता। क्षण भर तक हम उल्लू जैसी उसकी गोल-गोल आँखो को देखते रहते। और कुछ वह हमें कहने

आता उसे भूल जाता। पर, तब वह बहुत हिम्मत से याद करके हमें बताता कि खाना तैयार हो चुका है। सूरज छिपने के समय घोड़े वापिस बुला लिए जाते। इस घडी यह जगली और एकान्त वातावरण एक नया ही रूप धारण कर लेता। घोड़े सारा दिन-भर पास की चरागाह मे चरते रहते, पर शाम के समय उन्हें डेरे के पास-ही बाँध दिया जाता। मैदान अँधेरे में ढकता जाता और हम आग के चारो ओर बैठकर बातें करते रहते। तब हमें नीद आने लगती। अपनी काठियाँ जमीन पर ही फैला कर अपने कम्बलो मे लिपटे हुए उस आग के चारो ओर सो जाते। हमने कोई पहरेदार नही खड़ा किया, क्योकि अब हम काफी सुस्त हो चुके थे। इस पर भी हेनरी भरी हुई रायफल अपनी बगल में रखकर सोता था। बिना बात के भी सावधानी बरतना उसके वीर स्वभाव का अंग बन चुका था। हमें जब-तब इस बात का सकेत मिलता रहता था कि वहाँ हमारी दशा बहुत सुरक्षित नहीं थी। काक जाति की बहुत सी लड़ाकू टुकड़ियाँ हमारे आस-पास के इलाके मे ही थी और उनमे से एक यहाँ से कुछ ही दिन पहले गुज़री थी। उन्होने एक पेड़ की छाल उखाड़कर उस पर कुछ चित्रो के द्वारा एक बात लिखी थी। इसका सार यह था कि उन्होंने अपने शत्रु डाकोटा लोगो के इलाके पर हमला किया है और अब वे इनसे मुकाबले की आशा रखते है। एक सुबह हमने सारे इलाके को धुन्ध से घिरा हुआ पाया। शॉ और हेनरी घोड़ो पर चढकर कुछ दूर तक गए और एक विशेष खबर लेकर लौटे। उन्होने हमारे डेरे से कुछ ही दूरी पर तीस घुड़सवारों की एक ताजा पैंड़ के निशान देखे। वे लोग न तो गोरे हो सकते थे और ना ही डाकोटा, क्योकि हमे किसी भी ऐसे दल के पास होने की खबर न थी। निश्चय ही ये लोग काक जाति के थे। इस धुन्ध के कारण ही हम एक कठिन युद्ध से बच सके। अगर वे हमें देख लेते तो वे हम पर और हमारे आदिवासी साथियो पर निश्चय ही हमला कर देते। इस बारे मे हमे जो संदेह था भी वह एक-दो दिन बाद ही मिट गया। क्योकि तब दो तीन डाकोटा जाति के लोग हम तक आए। उन्होने उसी सुबह एक घाटी में छिपकर काक जाति के लोगो को जाते हुए देखा और गिना था। उन्होंने बताया कि जब तक वे चुगवाटर नाम की जगह तक न चले गए, तब तक इन्होंने उन्हे अपनी निगाह मे रखकर उनका पीछा किया। वहाँ काक लोगो ने डाकोटा जाति के पांच

मृत शरीरो को ज़मीन से खोदकर निकाला और उन्हें शत्रुओं की रीति के अनुसार पेड से बाँधकर लटका दिया। तब उन्हे अपनी बन्दूको से दाग कर कण-कण मे उड दिया।

हमारा डेरा एकदम सुरक्षित भले ही नही था, तो भी यहाँ काफी आराम था। कम-से-कम शॉ के लिए तो यह बात ठीक थी। मै तो बीमारी और अपने इरादो मे देरी होने के कारण बहुत दु खी था। ज्यो ही अपनी बीमारी से उबरने के कुछ लक्षण मुझे दिखाई दिए, मै मैदान मे हथियारो से सजकर निकलने लगा। कभी शॉ के साथ धारा मे नहाने जाता अथवा पडोस के मैदानी कुत्तो की बस्ती मे जाकर एक झूठ-मूठ का युद्ध खडा कर देता। रात के समय आग के चारो ओर बैठ कर हम आदिवासियो की अस्थिरता और अनिश्चय के लिए उन्हें कोसने लगते और 'बवडर' और उसके साथियो को गालिया देने लगते। अन्त मे हमारे लिए यह बात असह्य हो गई।

मैने कहा, "कल सुबह मै किले की ओर जाऊँगा और देखूँगा कि क्या नई खबर है।"

उसी शाम काफी देर बाद, जब आग बुझने वाली थी और सभी लोग सो चुके थे, बहुत दूर से अँधेरे मे से ही चीखने की एक आवाज़ सुनाई दी। हेनरी आवाज को पहचान कर उछल पडा और उसने उसका उत्तर दिया। हमारा मित्र 'घोड़ा' हमारे बीच आ गया। वह अभी-अभी गाँव की ओर से अपना काम पूरा करके लौटा था। उसने आकर बहुत ठंडे दिल से अपनी घोडी बाँध दी और बिना एक भी शब्द बोले खाना शुरू कर दिया। पर, उसकी यह बेफिक्री हमे बहुत खलने लगी। गाँव के सम्बन्ध में पूछने पर उसने बताया कि वह यहा से दक्षिण की ओर पचास मील दूर था और वह इतना धीमे धीमे बढ़ रहा था कि यहाँ पहुँचते उसे एक सप्ताह से कम नही लगेगा। तब हेनरी की पत्नी के विषय मे पूछने पर उसने बताया कि वह जितना भी जल्दी सभव है, उतनी तेज चाल से महतो तातोका और उसके बाकी भाइयो के साथ आ रही है। पर, शायद वह हम तक पहुँच नही सकेगी, क्योकि वह मरने-ही वाली है और हर घडी हेनरी के बारे मे पूछती रहती है। हेनरी का सभ्य चेहरा भी इस खबर की सुनकर उदास हो गया और लटक गया। उसने हमसे पूछा कि अगर हम खुशी से उसे जाने दें, तो वह सुबह ही उसकी खोज मे चल

पड़ेगा। इस पर शॉ ने उसके साथ चलने को कहा।

हमने सुबह होते ही अपने घोडो की काठियाँ कसी। रेनल ने अपने को अकेला छोड देने का विरोध किया। हम लोगो के जाने के बाद उसके पास दो कनाडा निवासी और दो आदिवासी ही रह जाते, खासकर जबकि शत्रु इतना पास था। उसकी शिकायतों का ख्याल न करके हमने उसे छोड़ा और चुग वाटर के मुहाने तक आकर अलग-अलग हो गए। शॉ और हेनरी दाईं ओर मुड़ गए, जबकि मै किले की तरफ मुड चला। अपने साथी और उसकी दुर्भाग्य से मारी पत्नी के बारे में कुछ कहने से पहले मै लारामी किले की कुछ बात कहना चाहूँगा। यह हमसे अठारह मील से अधिक दूर न था और मैं यहाँ तीन घंटे मे ही पहुँच गया। एक सिकुड़ी-सी आकृति वाला कनाडावासी, सफेद पोशाक में ऊपर से नीचे तक ढका हुआ, बड़े दरवाज़े के बीचो-बीच खड़ा था। उसने अपना ठिगना-सा जगली घोड़ा लगाम से पकड़ा हुआ था। इसे कभी उसने जंगल से ही पकडा था। उसके अपने अंग बहुत ही गठे हुए थे। उसकी आँखें साँप जैसी चमक रही थी। अपने सिर के चारो ओर उसने वह सफेद कपड़ा इस तरह लपेटा हुआ था, जैसे वह कपूचिन सम्प्रदाय का कोई साधु हो। उसका मुख पुराने चमड़े के टुकड़े जैसा लगता था और उसके होंठ सारे मुख पर फैले हुए लगते थे। उसने अपना लम्बा और झुर्रीदार हाथ फैलाकर स्वागत किया। ऐसा स्वागत किसी साधारण आदिवासी के स्वागत से अधिक स्नेह वाला था। वह मेरा मित्र था। हमने कभी आपस में घोड़े बदले थे। पाल नाम के इस व्यक्ति ने अपने को सम्मानित समझकर हर जगह यह घोषणा की थी कि गोरे आदमी बहुत अच्छे दिल के होते है। वह स्वय मिसूरी के डाकोटा लोगों में से एक था और दोगले दुभाषिये 'पियेर् दोरियो' नाम के प्रसिद्ध आदमी का बेटा था। इसके पिता का वर्णन इर्विंग की 'आस्तोरिया' नाम की पुस्तक मे बार-बार आया है। उसने बताया कि वह रिचर्ड के व्यापार-घर की ओर अपना घोडा, किन्हीं प्रवासियों को, बेचने ले जा रहा था। वे वहाँ डेरा डाले पडे थे। उसने मुझ से भी साथ चलने के लिए कहा। हमने साथ-साथ ही धारा पार की। पाल अपने जगली घोड़े को पीछे-पीछे घसीटता ला रहा था। हमने जब सामने के रतीले मैदानो को पार किया, तब उसने बात करनी शुरू की। वह एक प्रकार से अपने को मिला-जुला नागरिक अनुभव करता था।

वह गोरो की बस्तियो मे भी गया था और हजारो मील के दायरे में बसे आदिवासियो की अनेको जातियो को शान्ति और युद्ध के दिनो मे भी उसने देखा था। वह फ्रांसीसी भाषा की एक बोली और अग्रेजी का एक बिगड़ा रूप बोल लेता था। पर, तो भी वह पूरा आदिवासी ही था। जब वह अपनी जाति के शत्रुओ के विरुद्ध कारनामो का वणन कर रहा था, तो उसकी आँखे एक अजीब चमक से चमक उठी थी। उसने बताया कि मिसूरी के ऊपरी इलाके मे 'होहे' लोगो के एक गाँव को किस तरह डाकोटा जाति के लोगो ने, उसके आदमियो, औरतो और वच्चो को मारकर, मिटा दिया है और अब किस प्रकार बहुत अधिक सख्या मे होने के कारण उन्होने सोलह बहादुर देलावारे जवानो को मार डाला है। उन लोगो ने अपने शत्रुओ की भीड मे फँस कर भी अन्तिम आदमी तक लडकर कट जाना अधिक अच्छा समझा। उसने एक बात और भी मुझे बताई, जिसपर मैंने तब तक विश्वास न किया जब तक और कई जगहो से सुनकर मेरा सदेह दूर न हुआ।

छ साल पहले जिम बेकवर्थ नाम का, फ्रैंच, अमरीकी और नीग्रो खून से मिला जुला, दोगला आदमी फर कम्पनी की नौकरी मे रहकर काक जाति के एक बडे गाँव मे व्यापार करता था। वह पिछली गर्मियो मे सैंट लुई मे भी आया था। वह बहुत ही असभ्य, धोखेबाज, खूँखार और बेईमान किस्म का आदमी था। ऐसा बुरा चरित्र इस इलाके मे किसी और का नही सुना गया। वह किसी भी सोते हुए आदमी को कत्ल कर सकता था और कोई भी नीच-से-नीच काम करने को तैयार रहता था। एक बार जब वह काक लोगो के गाँव में था, ब्लैकफुट (कृष्णपाद) लोगो की तीस-चालीस की सख्या की एक टुकडी चुपचाप सरकती हुई आई और इक्के-दुक्के घूमते हुए लोगो को मारकर सारे घोड़ो को भगा ले गई। काक जाति के योद्धा उनके पीछे-पीछे भागे और एक स्थान पर उन्होने उन्हें घेर लिया। ऐसे मौके पर शत्रुओ ने अपने चारो ओर लट्ठो का एक आधा घेरा (परकोटा) सा बना लिया। वे इन लोगो के आने की प्रतीक्षा करने लगे। वल्लियो और छड़ियो से चार-पाँच फुट ऊँची बनाई गई दीवार उनकी रक्षा कर रही थी। काक जाति के लोग इससे भी ऊँची जगह लाँघकर अपने शत्रुओ का नामो-निशान मिटा सकते थे, पर तो भी उन्होने इस छोटे-से किले को पार करना असम्भव समझा। युद्ध के नियमो

के मुताबिक वे इसे पार करना बहुत बुरा समझते थे। चीखते और चिल्लाते हुए और एक ओर से दूसरी ओर शैतान के अवतार के रूप में घूमते हुए वे गोलियो और बाणो की बौछार इस जगले के ऊपर से करते रहे। परन्तु अन्दर के लोगो मे से एक भी घायल न हुआ। हाँ उनकी गोलियो से काक जाति के कुछ हमलावर जरूर मारे गए। एक दो घटे तक मूर्खो के ढग की यह लडाई चलती रही। जब-तब काक जाति का कोई वीर योद्धा युद्ध का गीत गाता हुआ और अपने को सबसे अधिक वीर बताता हुआ आगे बढता और कुल्हाड़ी लेकर सामने के जगले को काटने की कोशिश करता। अपने मित्रो की तरफ पीछे लौटते हुए उसपर पीछे से बाणो से वर्षा होती और वह गिर कर मर जाता। इस पर भी सबने मिलकर कोई हमला न किया। कृष्णपाद लोग अपने इस बेड़े मे सुरक्षित रहे।

अन्त में वेकवर्थ का धैर्य टूटा और उसने काक जाति के लोगो से कहा, 'तुम सब लोग निरे मूर्ख और बुद्धू हो। आओ, अगर तुम मे से कोई बहादुर है तो मेरे साथ आए। मै तुम्हें बताऊँगा कि इनसे कैसे लडना है !' उसने पशु फँसानेवालो जैसी अपनी पोशाक उतार दी और नगे बदन, आदिवासियो के समान ही, आगे बढने लगा। उसने अपनी राइफल जमीन पर ही रख दी और एक हल्की-सी कुल्हाडी हाथ में लेकर बढ़ा। वह मैदान मे दाहिनी ओर एक खड्ड मे छिपता हुआ आगे दौडा और तब चट्टानो के पीछे से चढते हुए उनके पीछे की ओर पहुँच गया। चालीस या पचास लडाकू युवक भी उसके पीछे-पीछे गए। नीचे से आने वाली चीख और चिल्लाहट से वह समझ गया कि कृष्णपाद लोग उसके बिल्कुल नीचे ही थे। आगे दौडकर उसने एक बडी चट्टान को पकडा और उनके बीच कूद पडा। कूदने के साथ ही उसने एक आदमी को उसके लम्बे बालो से पकड़ लिया और नीचे गिराकर खीचते हुए उसका गला काट डाला। उसने तब एक दूसरे आदमी की कमर पेटी खीचकर एक बहुत भयंकर धक्का मारा और उसके पाँव पकड़कर बहुत जोर के साथ काक जाति का जयघोष किया। उसने अपने चारो ओर अपना कुल्हाड़ा कुछ इस तरह चलाया कि कृष्णपाद लोगो के बीच मे से उसने रास्ता साफ कर दिया। अगर वह चाहता, तो लकड़ियो के बने हुए किले की दीवार को लाँघकर अपने को बचा सकता था। परन्तु यह जरूरी नही था, क्योंकि उसके दल

के लडाकू सैनिक उसकी आवाज सुनकर अपने शत्रुओ मे एक-एक करके कूदने लगे। सामने की ओर से भी उसके दल के लोगों ने नारे के उत्तर में नारे लगाए और तुरन्त ही बढ चले। इस नकली किले के अन्दर जो लड़ाई हुई वह भयंकर थी। कुछ देर तक तो घिरे हुए लोग छेड़े हुए चीते की भाँति बहुत खूँखार होकर लडे, पर कुछ ही देर बाद उनमें से एक-एक आदमी मारा जा चुका था और उनके कुचले हुए शरीर वही बिखरे पड़े थे। उनमें से एक भी भाग न सका।

पाल ने अपनी कहानी जब तक समाप्त की, हमे रिचर्ड का व्यापारी किला दिखाई देने लगा। इसके चारो ओर अनेक किस्म के आदमियो की भीड़ लगी हुई थी और इसके कुछ ही दूरी पर सामने की ओर प्रवासियो का एक खेमा गड़ा हुआ था।

मैने कहा, "पाल तुम्हारे मिनिकौग्यू घर किधर है ?"

पाल ने उत्तर दिया, 'अभी तक तो नही आए। हो सकता है कल तक आ जाएँ।"

मिसूरी से चले हुए डाकोटा लोगो के दो बडे-बड़े गाँव, तीन सौ मील की यात्रा करके, युद्ध मे शामिल होने के लिए आज ही रिचर्ड के डेरे तक पहुँचने वाले थे। पर, अब तक भी उनके पहुँचने का कोई निशान न था। इसलिए एक बहुत ही शोर-शराबे वाली, शराब मे मस्त, भीड में से होते हुए मै बल्लियो और गारे से बने हुए एक मकान में घुसा। इस किले मे यही सब से बड़ा मकान था। यहाँ अनेक जातियो और रँगो के लोग जमा थे। सभी ने थोडी बहुत शराब पी हुई थी। कैलिफोर्निया के कुछ प्रवासियो को यात्रा की इस अन्तिम मंजिल मे पता चला कि उनके पास सामान कुछ अधिक है, जो उनके लिए बोझ साबित हो रहा है। इसलिए उन्होने इसका बडा हिस्सा व्यापारियो को बेच दिया या यूँ ही फेंक दिया। परन्तु मिसूरी की शराब के बोझ को हल्का करने के लिए उन्होने उसे अँधा होकर पीना ही उचित समझा। यहाँ कमजोर-सी औरतें अपने बिस्तरो पर लेटी हुई थी। कुछ मैक्सिको वासी धनुष और बाण लिए बैठे थे। कुछ आदिवासी शराब के नशे मे चूर थे। कुछ लम्बे बालो वाले पशु-फँसाने वाले कनाडा निवासी और अमरीका के जगलो के निवासी अपनी पिस्तौल और छुरी लटकाए हुए यहाँ जमा थे। कमरे के बीचो-

बीच एक बहुत लम्बा और पतला आदमी ऊन का एक भद्दा कोट पहने हुए खड़ा मारे इकट्ठे लोगों को जैसे कोई भाषण दे रहा था। वह एक हाथ को हवा मे हिला रहा था और दूसरे में उसने शराब की बोतल कसकर पकड़ी हुई थी। इस बोतल को वह हर मिनट अपने होठो से लगा रहा था हालाँकि यह बहुत पहले ही खाली हो चुकी थी। रिचर्ड ने इस आदमी से मेरा परिचय कराया। इसका नाम कर्नल र— था। कभी यह अपने दल का नेता रहा था। कर्नल ने मेरी कमीज के कालर पकड़ते हुए अपनी हैसियत मुझ पर जतानी शुरू की। उसने बताया कि उसके आदमियों ने बग़ावत करके उसे नेतागीरी से हटा दिया है। फिर भी लोग उसके दिमाग के कायल थे। संक्षेप में, अब भी वही उनका सच्चा नेता था। इधर कर्नल बोल रहा था और उधर मैं चारों ओर जमा असभ्य लोगों को देख रहा था। सच यह था कि वह ऐसे लोगो का नेतृत्व रेगिस्तानी मैदान की इतनी बड़ी यात्रा के बीच करने के लिए तैयार न था। बाकी लोगों मे से डेनियल बर्न नाम के प्रसिद्ध व्यक्ति के तीन पोते खड़े थे। उन्होंने अपने मशहूर दादा के गुणों को पूरी तरह पाया था। वे कद में लम्बे थे। पर उनमें अपने दादा जैसी शान्ति और धीरज दिखाई न देता था।

इस दल के लोगों को इस समय के महीनों बाद एक बहुत भयंकर दुर्भाग्य का सामना करना पड़ा। कैलिफोर्निया से बहुत दिन बाद लौटते हुए जर्नल कीर्नी इस बात की खबर लाया था। पहाड़ों के बीच वे गहरी बर्फ मे फँस गए थे। ठण्ड और भूख से तंग आकर, उन्होंने एक दूसरे के मांस को खाकर, अपना गुज़र किया।

इस गड़बड़झाले से मैं उकता गया। मैंने पाल को बुलाया और वहाँ से निकल चलने को कहा। पाल धूप में किले की दीवार के नीचे बैठा आराम कर रहा था। वह उछला और घोड़े पर सवार हो कर मेरे साथ लारामी किले की ओर चल पड़ा। जब हम यहाँ पहुँचे, तो दरवाजे से एक आदमी बाहर निकल रहा था। उसकी पीठ पर बोझ था और कंधे पर राइफल रखी थी। कुछ लोग उसके चारों ओर इकट्ठे होकर उससे विदाई के लिए हाथ मिला रहे थे। मैंने अचरज किया कि कैसे एक आदमी अकेला ही पैदल इस लम्बे रेतीले मैदान की यात्रा पर निकल पड़ा है? परन्तु, मुझे उसी समय इस बात

का उत्तर मिल गया। उस कनाडा निवासी का नाम पैरो था। वह वहाँ के स्वामी से लड बैठा था और अब उसका किले मे रहना असभव था। अपने अधिकार के मद में आकर बोदूँ ने उसे गाली दी थी और उसने उत्तर मे घूसो से उसकी मरम्मत कर दी थी। दोनो ही किले के बीचों-बीच एक दूसरे से जूझ पडे। एक ही क्षण मे बोदूँ नीचे आ गिरा। अब वह गुस्से मे आए हुए इस कनाडा-निवासी के रहम पर था। अगर इसी समय उसका साला—एक आदिवासी—बीच मे न आ पडता, और उसके दुश्मन को पकड़ न लेता, तो शायद बोदूँ के साथ बुरी बीतती। पैरो उस आदिवासी के हाथो से छूट गया। तब दोनो ही गोरे अपने-अपने कमरो से बन्दूकें लेने के लिए भागे। जब बोदूँ ने अपने दरवाजे से कनाडा निवासी को हाथ मे बन्दूक लिए हुए और मैदान के बीचो-बीच खडे होकर लड़ाई के लिए ललकारते हुए सुना, तो उसका दिल जवाब दे गया। उसने अधिक उचित समझा कि वह कमरे में ही छिपा रहे। बचाने वाले बूढे आदिवासी ने भी अपने बहनोई की कायरता से घबरा कर उसे बार-बार, मैदान मे निकल कर, गोरे लोगो के तरीके से लड़ने के लिए उकसाया। बोदूँ की पत्नी ने भी अपना अपमान अनुभव करके अपने स्वामी को बार-बार कुत्ते और बूढी औरत के समान बताया। पर, इस सब का कोई भी असर न हुआ। बोदूँ की कायरता उसके साहस पर जीत गई थी। अब वह हिलने को तैयार न था। नीचे पैरो अपने कायर स्वामी के लिए बुरी-बुरी गालियो की बौछार करता जा रहा था। इस सबसे हारकर उसने सूखे मास का एक गट्ठर बाँधा और अपनी पीठ पर लाद कर, मिसूरी में स्थित, पियेर किले की ओर चल पडा। रास्ता रेगिस्तानी प्रदेश में से होकर जाता था और तीन सौ मील से भी अधिक लम्बा था। राह मे आदिवासियो का खतरा था। पर तो भी वह अकेला, पैदल ही, चल पडा।

उस रात मै किले में ही रहा। सुबह होते ही नाश्ता करके मै बाहर निकल ही रहा था कि मैने एक आदिवासी को दरवाजे का सहारा लेकर खडे पाया। उस समय मै एक व्यापारी से बाते कर रहा था। यह आदिवासी बडा लम्बा, मजबूत और भारी-भरकम था। मेरे लिए यह अजनबी था। मैने उसके विषय में पूछा कि वह कौन है ? व्यापारी ने बताया कि उसका नाम 'बवडर' है। वह ही डाकोटा लोगो की युद्ध की सारी तैयारी के लिए जिम्मेवार था। इन

लोगो का, आपस मे एक दूसरे की जान लेना, धर्म-सा ही बन गया है। अपने घरो मे शान्तिपूर्वक रहने और भैंसो की खालो का व्यापार करने की बजाय ये लोग आपस मे लडने को ही अपना धर्म समझ बैठे है।

उस व्यापारी की इस राय से इस देश के सभी गोरे सहमत थे। वे सभी लोग इनके आपसी युद्धों से घबराते थे, क्योकि इससे उनके व्यापार पर बुरा असर पडता था। किले तक आने के लिए 'बवडर' ने अपना गाँव एक दिन पहले ही छोडा था। उसका युद्ध का उत्साह शुरू से अब तक ठडा न पडा था। अपने पुत्र की मृत्यु का बदला लेने के लिए ये लम्बी और उलझी हुई तैयारियाँ उसके दिल को उकता देने वाली सिद्ध हो रही थी। उसी सुबह बोर्दू ने उसे भेंटें आदि देकर खुश किया और तब उसे समझाया कि अगर वह युद्ध पर गया, तो उसके घोडे तक नष्ट हो जाएँगे और वह गोरे लोगो से व्यापार के लिए भैंसे आदि नही मार सकेगा। उसने यह भी कहा कि अच्छा होगा, यदि वह युद्ध जैसी मूर्खता भरी बात का ख्याल भी न लाए और अपने घरो मे रहकर एक बुद्धिमान् पुरुष की भाँति आराम से अपना जीवन बिताए। इस बात से 'बवडर' का अपना इरादा डोल गया था। अब वह एक बच्चे की भाँति अपने को इरादो से थका हुआ अनुभव करने लगा। बोर्दू ने बडे निश्चय के साथ यह भविष्यवाणी की थी कि अब वह युद्ध के लिए नही जाएगा। मनुष्यता से मुझे भी प्यार था, पर साथ ही आदिवासियो का युद्ध देखने की मेरी उत्सुकता भी कम न थी। मै इस मौके को, और उसके लिए होने वाली तैयारियो को, देखने से चूकना नही चाहता था। 'बवडर' ने जो आग लगाई थी, अब वह चारो ओर फैल चुकी थी। डाकोटा जाति के पश्चिम के लोग युद्ध के लिए कमर कसे हुए थे और मुझे उस व्यापारी से पता चला कि उनके छ बडे-बडे गाँव एक छोटी नदी के किनारे, यहाँ से चालीस मील की दूरी पर ही, जमा हो भी चुके थे। प्रतिदिन ही थे, अपने इस आक्रमण मे सहायता देने के लिए, महान् आत्मा (परमात्मा) की प्रार्थना कर रहे थे। यह व्यापारी उनसे कुछ ही समय पहले विदा होकर आया था और लाबोते डेरे की ओर उनका प्रतिनिधि बनकर जा रहा था। उसके कहने के अनुसार यदि उन लोगो को वहाँ भैंसे मिलने की उमीद बनी रही तो वे वहाँ अवश्य ही एक हफ्ते के अन्दर ही अन्दर पहुँच जाएँगे। मुझे भैंसो की यह गर्त अच्छी न लगी; क्योंकि

इस मौसम में आसपास भैंसे होते भी बहुत कम थे। मिनिकोंग्यू लोगो के दो गाँव भी पास ही डेरा डाले हुए थे। दोपहर के समय रिचर्ड के किले से आने वाले एक आदिवासी ने बताया कि वे आपस मे लडभिड कर अपने खेमे उखाडकर फिर से अपने-अपने इलाको को लौटने लगे थे। यह सब हुआ प्रवासियो की शराब के कारण। उन लोगो ने सारी शराब स्वय पीनी असंभव समझ कर, बची-खुची, उन आदिवासियो में बाँट दी। इसका परिणाम जानने के लिए किसी पैगम्बर की जरूरत न थी। बारूद मे आग लगाने के लिए एक चिनगारी काफी होती है। वही बात यहाँ भी हुई। वह युद्ध के उस उद्देश्य को भूल गए, जिसके कारण वे यहाँ इकट्ठे हुए थे और आपस में लडने, पर उतारू हो गए। उनकी दशा बिगडे हुए बच्चों की भाँति हो गई। उनके भाव बहुत गिरे हुए थे। शराब के इस शोर-शराबे मे उनके कुछ आदमी मारे भी गए। सुबह होते ही छोटी-छोटी टुकडियो मे मिसूरी के अपने-अपने इलाको की ओर वे लौटने लगे। मुझे लगा कि जिस बडे मिलन के लिए यह सब लम्बी तैयारियाँ और उत्सव हो रहे थे, जैसे वह मिलन अब कभी न हो सकेगा। लगता था कि अब आदिवासियो को अपने भयंकर रूप मे देखने का यह मौका फिर कभी न मिल पाएगा। इस सब बात के बीच मैने यह भुला दिया कि मै भी युद्ध की दशा मे अपने को एक बहुत बडे खतरे में डाल बैठता। इस बात को सोचकर मैने भी अपने मन को तसल्ली दी और अपने डेरे तक यह खबर पहुँचाने की तैयारी करने लगा।

मैने अपना घोडा पकडा। मुझे यह देखकर अचरज हुआ कि चट्टानों पर चढते हुए मेरे घोड़े के एक खुर में चोट लग गई थी और उसकी नाल भी उखड़ गई थी। लारामी किले मे इन घोडो की नाल लगाने का काम पन्द्रह रुपये हर पैर के हिसाब से होता था। मैने हैड्रिक नाम के अपने घोडे को घुड़साल मे एक खम्बे से बाँधा और रूबिदू नाम के लुहार को बुलाया। वह घोड़े के खुर को अपने घुटने में फँसाकर हथौडी और रेती लेकर अपने काम में जुट गया। मै यह सब कुछ देखने मे लगा था, कि मुझे पीछे से एक अजीब-सी आवाज सुनाई दी।

कोई कह रहा था, "हम मे से दो और खत्म हो गए। खैर अब भी हमारे बहुत से लोग बचे हुए है। मै और गिग्रास अभी कल ही पहाडो की ओर जाने

वाले है। मेरा ख्याल है खत्म होने की अगली बारी हमारी ही है। कुछ भी हो, हमारी जिन्दगी बहुत कठोर है।"

मैंने देखा कि सामने पाँच फुट का एक ठिगना आदमी खड़ा था। उसका बदन बहुत गठीला और मजबूत था। देखने मे वह भद्दा-सा लग रहा था। उसकी हिरण की खाल की कमीज, चिकनाई के कारण, काली हो चुकी थी। उसकी पेटी, चाकू, थैली और बारूद का डिब्बा आदि बहुत पुराने पड चुके थे। उसके पाँव का सबसे अगला जोड सालों पहले, सर्दियो में जम जाने के कारण मारा जा चुका था। इसलिए उसके जूते भी उसी हिसाब से सिकुडे हुए थे। उसकी पोशाक और सामान बता रहे थे कि वह एक स्वतंत्र पशु फँसाने वाला है। उसका चेहरा गोल और लाल था और उसपर बेफिक्री और प्रसन्नता झलक रही थी, हालाँकि यह बात उसकी कही हुई ऊपर की बात से मेल न खाती थी।

मैंने पूछा, "दो और खत्म हो जाने से तुम्हारा क्या मतलब है ?"

"ओह ! अरापाहो लोगो ने हमारे दो आदमियो को पहाड़ों में मार डाला है। यह बात हमे बुल्टेल् (वृषपुच्छ) नाम के आदिवासी ने अभी-अभी आकर बताई है। उन्होने एक को पीठ पीछे घायल किया और दूसरे को उसकी ही बन्दूक छीनकर मार डाला। यह है हमारी जिन्दगी। मै इस साल के बाद इस काम को छोड़ दूँगा। मेरी स्त्री चाहती है कि एक तेज घोडा और कुछ लाल फीते खरीद लिए जाये। मै उसके लिए ये चीजे बीवर नामक जानवर पकड़-कर भी ला सकता हूँ। उसके बाद मेरा काम खत्म हो जाएगा। तब मै नीचे, मैदानो मे, जाकर खेती पर गुजर करने लगूँगा।"

उसके पास ही खडे एक दूसरे पशु फँसाने वाले ने कहा, "रूलो ! मैदान मे तुम्हारी हड्डियाँ सूख जाएँगी।" वह आदमी कुछ असभ्य और बड़े भद्दे चेहरे वाला लग रहा था। रूलो हँस पडा और उसने गुनगुनाना और नाचना शुरू कर दिया। दूसरे आदमी ने कहा, "आप हमे बहुत जल्दी ही अपने रास्ते से गुजरता हुआ देखोगे !"

मैंने कहा, "अच्छा, कुछ देर रुको और हमारे साथ काफी पियो।" साँझ पास आ जाने के कारण मैंने भी किला छोड़ने की तैयारी कर ली।

ज्योही मै किले से निकला, मैंने प्रवासियों की एक लम्बी कतार को

धारा पार करते देखा। दो या तीन लोगो की प्रणाम भरी आवाज ने मुझे चौंकाया। वे पूछ रहे थे, "तुम कहाँ जा रहे हो ?"

"यहाँ से लगभग अठारह मील, दूर, नदी के किनारे।"

"इतनी दूर जाने के लिए अब समय कहाँ है ? अच्छा है जल्दी ही निकल जाओ। पर जरा आदिवासियों से सावधान रहना।"

मैंने उनकी इस सलाह पर ध्यान न दिया। धारा पार करके सामने के मैदानों पर एक लम्बा चक्कर काटते हुए मैं बढा। परन्तु जल्दी में चाल भी धीमी हो जाती है। यह बात मेरे साथ पूरी-पूरी घटी। मै जब तीन मील दूर की पहाडियों तक पहुँचा तब तक राह के निशान धुँधले पड़ने लगे थे। तेजी से आगे बढते हुए मुझे ये भी दिखाई देने बद हो गए। लारामी धारा को ध्यान मे रखकर मै एक सीधी रेखा मे बढता रहा। यह धारा छिपते हुए सूरज की रोशनी मे कभी-कभी दिखाई दे जाती थी। सूरज छिपने से आधा घंटे पहले मै इसके किनारे पर उतर आया। इस स्थान के एकान्त मे कुछ अजीब ही उत्तेजना थी। सामने से झाड़ियो मे निकलता हुआ एक बारहसिंगा अचानक ही उछला। अभी वह मेरे सामने तीस गज दूर पर भी न होगा कि मैंने घोडे पर चढे-चढे ही गोली दाग दी और वह उसी क्षण गिर पडा। मै निश्चिन्त होकर उसकी ओर बढा। जब आराम से मै दुबारा बन्दूक भरने लगा, तो मुझे अचरज मे डुबोकर वह एक दम ही उछला और तेजी से, अपने तीन पाँवो के बल पर दौडता हुआ, सामने की अँधेरी पहाडियो के बीच जा छिपा। उधर जाने का समय मेरे पास नही था। दस मिनट के बाद जब मै एक गहरी घाटी के तल मे मे गुजर रहा था, मैंने बहुत हल्की रोशनी में पीछे मुडकर देखा कि कोई चीज मेरा पीछा कर रही है। इसे भेड़िया ख्याल करके मै घोडे से उतर कर, छिप कर, बैठ गया और उसे मारने की प्रतीक्षा करने लगा। उसके सामने आते ही मैंने देखा कि यह कोई दूसरा बारहसिंगा था। मेरे सौ गज के फासले के अन्दर पहुँचने पर अपनी गर्दन झुकाकर यह निश्चिन्त होकर चरने लगा। मैने इसकी छाती के एक सफेद निशान की ओर निशाना साधा। मै अभी गोली दागने ही वाला था कि यह एक दम तेजी से भाग निकला। समुद्र मे तूफान में फँसे जहाज की भाँति कभी एक ओर और कभी दूसरी ओर भागते हुए यह पूरी तेजी के साथ एक ओर को निकल गया।

फिर एक बार रुका और पीछे मुड़कर उत्सुकता से देखकर फिर से पहले की तरह दौड़ने लगा। पर अब इसमे वह जोश न था। यह रुका और मेरी ओर ताकने लगा। मैने गोली दाग दी। यह ऊपर की ओर उछला और फिर अपने ही निशानो पर गिर पड़ा। दूरी नापने पर मैने देखा कि यह सवा सौ गज से अधिक दूर था। जब मै इसके पास खडा हुआ, तो इसने अपनी बुझती हुई आँखें मेरी ओर घुमाई। इसकी ये आँखें किसी सुन्दर स्त्री की काली और चमकदार आँखो जैसी ही थी। मैने सोचा, "शुक्र है, कि मै जल्दी मे हूँ। अगर कही मेरे पास समय होता तो मुझे इसके मरने पर अफसोस करना पडता।"

इस को चीरकर मैने इसका मास काठी के पीछे की ओर रख लिया और फिर से चलने लगा। अब पहाडियाँ पास से पास घिरती नजर आई। मैने सोचा कि रात अधिक हो गई है, इसलिए आगे जाना उचित न होगा। सुबह रास्ता खोजने का इरादा करके, रात वही बिताने की सोचने लगा। एक बार और हिम्मत करने की दृष्टि से मैने एक ऊँची चोटी पार की। बहुत सतोप के साथ मैने देखा कि मेरे सामने ही लारामी धारा पेडो के बीच बल खाती बह रही थी और पास ही पेडो की छाया मे किसी एक पुराने व्यापारी किले के खडहर दिखाई दे रहे थे। तारो की छाया मे मै वहाँ तक पहुँचा। उस धुँधली रोशनी मे घने पेडो और झाडियो के बीच से होकर बढना बहुत आनन्ददायक न लगा। मुझे किसी भी आवाज को सुनते ही किसी आदमी या पशु के लिए चौकन्ना हो जाना पडता था। उस सारे स्थान पर एक भी चीज हिलती नजर न आती थी। भूरे रग का एक ही पक्षी शाखो पर बैठा शोर कर रहा था। जब मैने खुला मैदान दुबारा देखा तब मै अत्यत प्रसन्न हुआ, क्योकि कोई भी आने वाली चीज यहाँ मुझे अच्छी तरह दिखाई दे सकती थी। 'चुग वाटर' के मुहाने पर पहुँचने तक अँधेरा बहुत घना हो चुका था। मैने लगाम ढीली छोड दी और घोडे को अपनी राह चलने दिया। वह बिना गलती किए अपनी सूझ के अनुसार तेज चाल से चलता रहा। नौ बजते-बजते वह हमारे डेरे के पास की चरागाह मे नीचे की ओर उतर रहा था। मैं अभी आग की रोशनी को खोजने की कोशिश कर ही रहा था कि मेरा घोडा अपनी तेज पहचान के द्वारा सच्चाई जानकर दूर से ही एक दम हिनहिना उठा। इस आवाज का उत्तर भी, तुरन्त ही, दूसरी ओर की हिनहिनाहट से मिला।

कुछ ही क्षण में मुझे अन्धेरे मे ही स्वागत भरी आवाज सुनाई दी। रेनल हाथ मे राइफल लिए यह देखने बाहर निकला था कि कौन आ रहा है ?

इस समय डेरे पर वह, उसकी पत्नी, दो कनाडा-निवासी और दो आदिवासी—कुल मिलाकर छः प्राणी थे। शॉ और हेनरी अब तक भी न लौटे थे। वे लोग अगली दोपहर को लौटे। उस समय उनके घोडे यात्रा के लायक न रहे थे। हेनरी का दिल टूट-सा गया था। उसकी पत्नी मर गई थी और उसके बच्चे आज के बाद से अपना सरक्षक न पाकर आदिवासी जीवन की हर प्रकार की कठिनाइयो और सख्तियो को सहने के लिए मजबूर हो गए थे। अपने इस शोक की दशा में भी उसने अपने 'मालिको' का ध्यान न छोडा। इस हालत में भी उसने अपने सम्बन्धी आदिवासियो से दो सजी हुई भैसे की खालें हमारे लिए प्राप्त की और उन्हे हमे भेट के रूप मे जमीन पर बिछा दिया।

शॉ ने अपना पाइप सुलगाया और अपनी यात्रा का किस्सा मुझे सुनाया। किले पर जाते हुए ये लोग मुझसे 'चुग वाटर' के मुहाने से अलग हो गए थे। वे सारे दिन भर उसी छोटी धारा के साथ-साथ चलते रहे। रास्ता उजाड और सुनसान था। उन्हें कई बार एक बडे भारी लडाकू दल के गुजरने के चिह्न मिले। ये चिह्न उसी दल के थे, जिसके आक्रमण से हम बच चुके थे। ये चिह्न ताज़ा थे। साँझ होने से एक घण्टा पहले वे किसी भी आदमी से बिना टकराए हेनरी की पत्नी और उसके सम्बन्धियो के डेरो पर पहुँच गए। वे लोग हेनरी के सदेश के अनुसार अपने आदिवासी गाँव को छोड़कर हम से मिलने हमारी ओर आ रहे थे। घर गाडे जा चुके थे। नदी के किनारे गडे इन घरो की सख्या पाँच थी। उसकी पत्नी इनमे से एक मे पडी थी। वह केवल हड्डियो का ढाँचा रह गई थी। बहुत दिन से वह न बोल सकती थी और न हिल-डुल सकती थी। वह केवल जिन्दा ही हेनरी को देखने के लिए थी। उसके साथ उसका बहुत गहरा और पक्का सम्बन्ध था। डेरे मे उसके घुसते ही वह कुछ अच्छी दीखने लगी और रातभर उससे बातें करती रही। सुबह होते ही उसे फिर से टोकरी वाली गाड़ी में डाला गया। सभी लोग हमारे पडाव की ओर चल पड़े। दल मे पाँच लडाकू वीर सैनिक थे और बाकी औरते व बच्चे थे। काक जाति के लड़ाकू दल को पास

ही अनुभव करके, वे सभी बहुत चौकन्ने हो उठे थे, क्योंकि वे लोग इन्हें बड़ी निर्दयता से समाप्त कर डालते। अभी ये लोग एक या दो मील ही बढे होंगे कि उन्हें बहुत दूर क्षितिज पर एक घुड़सवार दिखाई दिया। बहुत चिन्तित होकर वे सब रुक गए। बहुत देर बाद घुड़सवार के ओझल होने पर ही वे निश्चित हुए। उसी समय वे फिर चल पड़े। हेनरी, शॉ के साथ-साथ आदिवासियो से कुछ आगे-आगे चल रहा था। पीछे से महतो तातोका ने आवाज़ दी। पीछे लौटकर उन्होंने देखा कि सभी आदिवासी उस औरत की गाड़ी के चारो ओर इकट्ठे हो गए है। वे जब उसके पास पहुँचे, तब उसकी अन्तिम साँसें गले में अटकी हुई थी। एक ही क्षण में वह उसी टोकरी में मरी पड़ी थी। चारो ओर एकदम शान्ति छा गई। तब आदिवासियो ने मिलकर उस शव पर झुकते हुए शोक प्रकट करने के लिए रोना शुरू किया। शॉ ने इन आवाज़ो मे 'हल्लेलुजा' जैसी आवाज़े साफ सुनी। इन सब बातों से उसने यह अनुमान किया कि इन आदिवासियो की आदतें इज़राइल वासियो से मिलती है और हो सकता है कि वे उनके ही खोए हुए दस वशो में से एक वश के हो।

आदिवासी प्रथा के अनुसार हेनरी और सभी आदिवासी-सम्बन्धियो को शव के साथ-साथ गाडने के लिए कीमती भेंटें देनी आवश्यक थी। आदिवासियों को पीछे छोडकर वह और शॉ अपने डेरे की ओर चल पडे और बहुत कठिन परिश्रम के बाद दोपहर तक यहाँ पहुँच गए। यहाँ से ज़रूरी चीज़ें लेकर वे एकदम ही लौट पड़े। बहुत अँधेरा होने के बाद ही वे लौट पाए। वे सब बहुत भयकर पहाडियो के बीच में स्थित एक खड्ड मे ठहरे हुए थे। उनमे से चार तो दु:ख के मारे हुए दिखाई देते थे, परन्तु पाँचवाँ भाई उत्साह की आग से जलता हुआ दिखाई दे रहा था। उनके पास आते हुए चारो ओर शान्ति छाई हुई थी। लगता था जैसे घरो के अन्दर एक भी रहने वाला वहाँ नही है। कोई भी जीवित चीज़ हिलडुल नही रही थी। सारा दृश्य ही बड़ा डरावना-सा लग रहा था। वे उस डेरे के दरवाज़े तक गए। घोड़ों की टपटपाहट के अलावा और कोई भी आवाज़ सुनाई नही दे रही थी। एक औरत ने आगे बढ़कर बिना कुछ कहे उनके पशुओ को सम्भाल लिया। अन्दर घुसते ही उन्होंने देखा कि डेरा पहले ही आदिवासियों से भरा हुआ था।

बीचो-बीच आग जल रही थी। इसके चारो ओर तीन कतारे बनाकर अफसोस करने के लिए ये ओग जमा थे। इन नये लोगो के लिए मकान के सामने ही एक नया कमरा बना दिया गया था। उनके बैठने के लिए एक गलीचा बिछा दिया गया था और बहुत चुप्पी के साथ उनके हाथ मे चिलम सुलगाकर दे दी गई थी। इसी तरह, बैठे-बैठे ही उन्होने अधिकाश रात बिताई। बहुत बार आग बुझने को होती थी कि तभी कोई औरत उठकर उसमे भैसे की चरबी डाल देती थी। तब एक तेज़ लपट उसमे से उठती और लोगो के चेहरे अपनी उदासी और जडता को साफ झलका देते। यह चुप्पी लगातार चलती रही। सुबह होने तर शॉ ने कुछ सुख अनुभव किया। अब वह इस अफपोस वाले घर से अलग हो सकता था। हेनरी और उसने डेरे की ओर लौटने की तैयारी की। इससे पहले उन्होने अपनी बहुत सी कीमती भेंटे हेनरी की पत्नी के पास रखी। वह इस समय एक घर मे बैठी हुई हालत मे सजी-धजी रखी गई थी। उसके घर से कुछ दूरी पर ही एक बहुत अच्छा घोड़ा उसकी आत्मा के लिए, बलि देने के लिए, बाँधा गया था। यह इसलिए कि स्त्री लगडी थी और 'मुर्दों के स्वर्ग' की ओर यात्रा करने मे वह घोडे के बिना समर्थ न हो पाती। उसके लिए भोजन और घर-गृहस्थी का सामान भी साथ ही रख दिया गया था।

हेनरी उसे उसके सम्बन्धियो की दया पर छोड़कर शॉ के साथ तुरन्त ही डेरे पर लौट आया। उसकी निराशा बहुत देर बाद ही टूट पाई।

—.०—

११ : पड़ाव के नज़ारे

रेनल ने एक दिन पड़ाव से लगभग दो मील दूर से वन्दूक की आवाज़ सुनी। उसे लगा कि शायद काक जाति के लोग हमला करने वाले हैं। यह सोचकर वह निराश हो गया। हम वाहर गए हुए थे। लौटने पर उसने हमसे फिर अपने अकेला रह जाने की शिकायत की। अगले ही दिन उसकी चिन्ता का कारण स्पष्ट हो गया। मौरै, साराफैं, रूलो और गिग्रास नाम के चार पशु-फँसाने वाले हमारे डेरे तक आए और हमारे साथ टिक गए। ये ही लोग थे, जिन्होंने पहले दिन गोलियाँ चला कर रेनल के दिल में डर पैदा कर दिया था। उन्होंने हमारे पास ही डेरा डाला। उनकी वन्दूकें भी हमारी वन्दूकों के साथ ही पेड़ पर टिका दी गई। वहुत अधिक प्रयोग के कारण वे भद्दी और पुरानी हो चुकी थी। उनकी नंगी और मज़वूत काठियाँ, उनके भैंसो की खालों के कपडे, उनके जाल और छोटी-मोटी चीज़े हमारे तम्वू के पास ही रख दी गई थी। उन्होंने अपने पहाड़ी घोडो को चरने के लिए चरागाह की ओर हमारे पशुओं के साथ ही छोड़ दिया। वे चारो हमारे पेड़ की ही छाया मे दिन भर सुस्ताते रहते, तम्वाकू पीते रहते और अपने साहस की कहानियाँ सुनाते रहते। मै नही जानता कि राकी पर्वत माला के इन पशु-फँसाने वालो से अधिक वहादुरी के इतने कारनामे कही और भी सुनने को मिल सकते है।

इन लोगो के आ जाने से रेनल की घवराहट कुछ दूर हुई। हमें इस जगह से कुछ प्यार-सा होने लगा था। तव एक जगह पर वहुत अधिक दिन टिकना अच्छा न था। विना आवश्यकता के टिके रहने पर कोई बुरा परिणाम भी सामने आ सकता था। अव घास भी यहाँ उतनी अच्छी और चिकनी न रही थी। मिट्टी और कीचड़ से मिलकर यह कुचल गई थी। इसलिए हमने कुछ दूरी पर दूसरे पेड़ के नीचे, नदी के किनारे, अपना डेरा वदल लिया। इसका तना दो गज से अधिक चौडा रहा होगा और उस पर आदिवासियो ने वहुत से चित्र वनाकर अपनी वीरता और युद्धप्रियता की वातें लिखी हुई थी। इसकी वहुत ऊपर की शाखाओ मे एक मचान दिखाई दे रहा था। इस पर कभी

आदिवासी प्रथा के अनुसार मुर्दे रखे जाते थे ।

हम भोजन के लिए घास पर बैठे ही थे कि हेनरी चिल्लाया, "वह देखो, उधर 'बुलबियर' (साँड-रीछ) नाम का आदिवासी आ रहा है।" हमने सामने बहुत से घुड़सवारो को एक पास की पहाड़ी पर से आते हुए देखा । कुछ ही देर में चार बहुत मजबूत और अच्छी हैसियत वाले युवक हमारे सामने आए और घोड़ो से उतरे । इस बुलबियर का उनमे ऊँचा स्थान था । उसका ही दूसरा नाम 'महतो तातोका' था । यह नाम उसे ओजिल्लाला जाति के एक नेता के रूप में अपने पिता से, उत्तराधिकार मे मिला था । उसके साथ उसका एक भाई और दूसरे दो आदिवासी युवक थे । हमने इन अतिथियो से हाथ मिलाए और अपना भोजन समाप्त कर हमने, उनकी ही प्रथा के अनुसार, उन्हे कॉफी का प्याला और बिस्कुट भेट किए । इस पर उन्होने पूरी ताकत के साथ "हाऊ, हाऊ" की आवाज करके, प्रसन्नता प्रगट की । तब हमने चिलम सुलगाकर सबको बारी-बारी से पीने के लिए दी ।

"गाँव कहाँ पर रुका हुआ है ?"

महतो तातोका ने दक्षिण की ओर इशारा करते हुए कहा, "उधर ! वह दो दिन तक यहाँ पहुँचेगा "

"क्या वे अब भी युद्ध के लिए बढेगे ?"

"हाँ ।

इन दिनो मे कोई भी आदमी मानवता का प्रेमी बनकर नही रह सकता । हमने भी इस खबर का पूरा स्वागत किया । मुझे इस बात पर प्रसन्नता हुई कि आखिर 'बवडर' को युद्ध से हटाने के बोर्ड के प्रयत्न असफल हुए और यह भी कि आगे भी कोई और ऐसी बाधा न आएगी, जो हमे लाबोते के शिविर पर होने वाले बड़े मिलन को देखने से रोक सकेगी ।

अगले कुछ दिनो तक ये नये मित्र हमारे अतिथि बन कर रहे । उन्हे हमारे भोजन के बचे-खुचे हिस्से मे ही बहुत आनन्द आता था। वे हमारे लिए चिलम सुलगाते और इसे पीने मे भी हिस्सा बँटाते । कभी वे पेड की छाया में साथ ही साथ लेटकर हँसी और मजाक में डूब जाते । यह सब बात वीर योद्धाओ के लायक न थी । पर उनमे से दो सचमुच अच्छे योद्धा थे ।

दो दिन और बीत गए । तब तीसरे दिन हम आदिवासियो के गाँव की

प्रतीक्षा करने लगे। पर वह न आया। इसलिए हमे उसकी ओर खुद ही चलना पड़ा। हमने आशा की थी कि हम आठ सौ के लगभग आदिवासियो से राह में मिलेंगे, परन्तु हमने केवल एक आदिवासी को अपनी ओर आते देखा। उसने हमे बताया कि गाँव वालो का इरादा बदल गया है और वे अगले तीन दिन मे भी यहाँ न पहुँच सकेंगे। इस दूत को अपने साथ लेकर हम फिर से डेरे पर लौट आए और आदिवासियों की इस अस्थिरता की हँसी उड़ाने लगे। जब हम अपने डेरे के पास पहुँचे तो हमने इसे अकेला न पाया। इसके पास ही आँधी और तूफान से कमजोर पडा हुआ एक बड़ा सा डेरा गड़ा हुआ था। यहाँ आदमियो और घोडो की बहुत-सी अस्पष्ट शक्लें दिखाई दे रही थीं। कुछ रगीन हाथ भी आगे बढे हुए दिखाई दे रहे थे। इसकी छत से लम्बी-लम्बी बल्लियाँ बाहर झाँकती हुई दिखाई दे रही थी और इसके दरवाजे पर एक जादूभरी चिलम टँगी हुई थी। इसी प्रकार के जादू के कुछ और साधन भी वहाँ पड़े थे। अभी हम कुछ दूर ही थे कि हमें बहुत से रंगों और आकारों के आदमी अपने डेरे के आसपास घूमते हुए दिखाई दिए। पशु-फँसाने वाला मोरै एक दो दिन बाहर रहने के बाद लौट आया था। लगता था कि वह अपने सारे परिवार को भी साथ ले आया था। वह अपने साथ पत्नी को भी लाया था, जिस के बदले मे, मूल्य के रूप मे, उसे एक घोड़ा देना पड़ा था। शुरू मे तो यह बात किसी को भी बहुत सस्ती लगेगी। पर, वास्तव मे ऐसा सौदा होता बहुत महँगा है और इसे बहुत सोच-समझ कर ही करना चाहिए। बात यह है कि आदिवासियो की लड़की लेने का मतलब केवल कीमत देना ही नही होता, बल्कि बहू के सम्बन्धियो का बड़ा भारी बोझ भी उसके पति को उठाना पडता है। वे लोग खासकर गोरे लोगो के सिर पर मौज उडाने मे खूब आनन्द अनुभव करते है। वे जोको की तरह चिपट कर सब कुछ चूस जाना चाहते है।

मोरै ने बहुत बडी खानदानी लड़की नही ढूँढी थी। उसकी बहू के सम्बन्धी ओजिल्लाला समाज में बहुत नीची हैसियत के लोग थे। ये लोग यूँ तो प्रजातन्त्र के आदर्श को मानते है, पर तो भी इनमे ओहदे और स्थान के हिसाब से भेद होता है। मोरै की साथिन बहुत सुन्दर भी न थी। उसे भी अपनी पत्नी को सजाना न आता था। तभी उसने हरिण की सफेद बनाई हुई

खाल के कपडे की जगह प्रवासियो से लिए एक पुराने सूती कपडे की पोशाक उसे पहनाई। यह उस पर बिल्कुल नही सज रही थी। इस सारे खैमे में सबसे अधिक काम करने वाली अस्सी वर्ष की एक बुढ़िया थी। हमने कभी भी इससे अधिक बदसूरत और काम करने वाली औरत न देखी थी। उसकी तमाम पसलियाँ झुर्रीदार खाल के नीचे से गिनी जा सकती थी। उसका झुर्रीदार चेहरा किसी जीवित आदमी का न लग कर किसी पुरानी खोपड़ी-सा लगता था। उसमे धँसी हुई उसकी काली आँखें चमक रही थी। उसकी बाहें इतनी पतली पड चुकी थी, जैसे चाबुक की छडी। उसके बाल आधे काले और और आधे सफेद हो चुके थे। उलझे हुए-से वे जमीन पर लटक रहे थे। उसकी पोशाक बहुत पुरानी और फटी हुई भैंसे की खाल से बनी हुई थी, जो उसकी कमर पर पेटी से बँधी हुई थी। इस हलके से शरीर में भी बहुत ही अधिक मजबूती थी। उसने डेरा गाडा, घोडे बाँधे और सारा कठिन से कठिन काम खुद ही निपटाती रही। सुबह से लेकर शाम तक वह चीखने वाले उल्लू की भाँति इधर से उधर चिल्लाती फिरती। उसका भाई 'चिकित्सक' अथवा जादूगर था। वह भी उसी की तरह मजबूत था। उसका मुँह चौड़ा था। उसकी भूख के सम्बन्ध मे हमें पता चला कि वह बहुत अधिक बढी हुई थी। इनके अलावा इस डेरे में एक जवान पति-पत्नी भी थे। दूल्हा बहुत ही सुस्त और आलसी था। ऐसे लोग आदिवासियो और सभ्य कहलाने वाली जातियों में सभी जगह पाए जाते है। वह न तो शिकार खेलने के योग्य था और न ही युद्ध के लायक। उसके चेहरे से ही यह बात साफ हो जाती थी। ये लोग विवाह के बाद का आनन्द मनाने के लिए अभी कुछ दिन पहले ही मिले थे। ये लोग धूप मे ही बाँसो के सहारे भैंसे की खाल टाँग कर छाया कर लेते और कुछ खालें नीचे बिछा कर उस पर दिन भर बैठे रहते। मै न जान पाया कि कभी उनमे अधिक बातचीत हो पाती थी या नही? शायद उनके पास बात करने के लिए कुछ अधिक मसाला था भी नही। ये आदिवासी इधर-उधर की बात बनाने मे चुस्त होते भी नही है। इस खैमे मे आधा-दर्जन से अधिक बच्चे भी थे, जो इधर-उधर खेलते हुए या पक्षियो का शिकार करते हुए अथवा रेत के छोटे-मोटे घरो को बनाते हुए खेल कूद रहे थे। कुछ दूसरे बच्चे पत्थरो से मकान बना रहे थे।

यह दिन गुज़रते ही आदिवसी आने शुरू हो गए। दो-तीन या अधिक सख्या के दल आने लगे और वही घास पर बैठने लगे। चौथे रोज़ लगभग दोपहर को सामने की पहाड़ी पर कुछ घुड़सवार दिखाए दिए। उनके पीछे एक बहुत बडा जुलूस पहाड़ी से मैदान की ओर वेतरतीवे ढग से उतर रहा था। घोड़े, टट्टू, कुत्ते, लदी हुई गाड़ियाँ, घुड़सवार योद्धा, पैदल चलती औरतें, और बहुत से बच्चे इस समूह मे शामिल थे। यह एकान्त भरा मैदान कुछ ही देर में एक चहकते डेरे के रूप में वदल गया। अनेको घोड़े चारों ओर की चरागाहो में चरने लगे। सारा मैदान ही घुड़सवारों या घूमते हुए लोगो की हलचल से भर गया। सब से अन्त में 'ववडर' भी आया। हम तव तक भी एक सवाल का उत्तर हम न जान पाए थे : "क्या वह युद्ध की ओर अब भी बढ़ेगा। और क्या सुरक्षापूर्वक लावोते कैम्प के खतरनाक मिलन-स्थल पर पहुँच सकेंगे ?"

हमे यह सदेह बना ही रहा। वे लोग मिलते थे, पर कभी कोई निश्चय न कर पाते थे। समूह के रूप मे उनका काम करने का स्वभाव ही नही था। उनका उद्देश्य कितना ही महत्त्वपूर्ण क्यो न हो, वे लोग मिल-जुल कर उसे पाने का प्रयत्न नही कर सकते। यह बात राजा फिलिप, पौटिपक और तेकुमसे आदि सभी ने अनुभव की और इसी कारण नुकसान उठाया। कभी इन लोगों का एक नेता हुआ था, जिसने इन पर नियंत्रण किया था। पर, अब वह मर चुका था और ये लोग अपनी-अपनी मर्जी के मुताबिक चलने लगे थे।

यहाँ से आगे इन आदिवासियों का यह गाँव इस सारी कहानी का खास केन्द्र रहेगा। इसलिए इन लोगों के विषय में कुछ जान लेना अधिक अच्छा रहेगा। यह जाति सेन्ट पीटर नदी से राकी पर्वतमाला तक एक विस्तृत इलाके मे फैली हुई है। इस के कई स्वतन्त्र भाग है। उन्हें मिलाने वाली कोई भी केन्द्रीय सरकार या एक नेता नही है। उनकी भाषा, रीति-रिवाज और धार्मिक विश्वास ही उनके बीच एकता की कड़ी बनाते है। युद्ध के मौको पर भी वे इकट्ठे नही होते। बहुत बार वे आपस मे भी लड़ते रहते है। पूर्व के लोग उत्तरी झीलो के कबीलो से और पश्चिम के लोग राकी पर्वतमाला के नाग आदिवासियो से लगभग हमेशा ही लड़ते रहते है। जिस तरह ये लोग अलग-अलग समाजो मे बँटे हुए है, उसी प्रकार प्रत्येक समाज कई गाँवो मे बँटा हुआ

होता है। हर गाँव का एक मुखिया होता है, जो कि अपने गुणो के कारण ही आदर पाता है। कई बार यह मुखिया केवल नाममात्र का होता है और कई बार इसका अधिकार बहुत व्यापक होता है। कभी-कभी उसका यश और प्रभाव आसपास के गाँवो में फैलकर सारे समाज मे छा जाता है और वह अपने सारे समाज का मुखिया बन जाता है। कुछ वर्ष हुए यह बात ओजिल्लाला जाति के साथ भी थी। कोई भी योद्धा अपने उत्साह, साहस और कारनामो के कारण सबसे ऊँचे ओहदे पर पहुँच सकता है। अगर वह किसी मुखिया का बेटा हो या उसका परिवार बहुत बड़ा और उसकी लड़ाइयो में साथ देने वाला हो, तब भी वह यह ऊँचा पद पा सकता है। पर यह बात साफ है, कि मुखिया के रूप मे बडे-बूढो द्वारा स्वीकार कर लिए जाने पर भी, वह कभी भी अपने ओहदे या आदर के बाहरी दिखावे को प्रकट नही कर सकता। वह जानता है कि उसका यह ओहदा कितना अस्थिर है। उसे अपने अनिश्चित लोगो मे समझौता कराना होता है। कई लोग उससे ज्यादा अच्छी तरह, अधिक औरतो और घोडो के साथ और अधिक सज-धज कर रहते है। पुराने जर्मन राजाओ की तरह वह भी अपने लोगो और सरदारो को खुश रखने के लिए अपनी ओर से कुछ-न-कुछ भेंट आदि देता रहता है। इस प्रकार वह स्वय को निर्धन बना लेता है। अगर वह उन लोगो की कृपा न पाए, तो वे लोग उसका अधिकार छीन लेते है और उसे कभी भी पद से हटा देते है। रीति-रिवाजो के अनुसार वह अपने अधिकार को प्रजा पर जमाने के लिए किसी फौज या पुलिस का सहारा नही ले सकता। बहुत कम बार यह हो पाता है कि बहुत छोटे परिवार का कोई व्यक्ति बड़ी ताकत पा सके। प्राय सारा गाँव ही उसके खानदान और सम्बन्धियो से भरा होता है और यह सारा घूमने वाला समुदाय एक परिवार के रूप में ही आगे बढता है।

पश्चिम के डाकोटा लोगो के कोई स्थिर गाँव नही है। शिकार और युद्ध मे लगे हुए वे निरन्तर घूमते रहते है। उनमें से कुछ उजाड मैदानो पर भैंसो के शिकार को निकल जाते है और कुछ घोड़ों पर या पैदल ही ब्लैक हिल्स की ओर निकल कर 'पार्क्स' की ओर निकल जाते है। यह स्थान सुन्दर होकर भी भयानक है। भैंसो के शिकार से ही उनके जीवन की—निवास, भोजन, वस्त्र, बिस्तर और ईंधन आदि सभी आवश्यकताएँ पूरी हो जाती है। अपने

धनुष के लिए तात, गोंद, धागा, रस्सी, खोजी रस्सियाँ, काठियो को ढकने के आवरण, पानी की मश्के, नदी पार करने के लिए मश्को की नाव और व्यापारियो से जीवन का आवश्यक सामान खरीदने के लिए कमाई का साधन आदि सब कुछ उन्हें भैंसे से ही मिल जाता है। अगर भैंसा न हो, या कम पड़ जाए, तो उनके जीवन की भी बुरी दशा हो जायगी।

युद्ध उनकी साँसो में बसता है। अपने अधिकाश पडौसी कबीलों के प्रति उनके दिल में घृणा भरी हुई होती है। यह घृणा खानदानी बन चुकी होती है और लगातार हमलो और बदले की भावना से भड़कती रहती है। हर गाँव मे साल मे कई बार 'महान् आत्मा' को प्रसन्न किया जाता है। उसके लिए उपवास किए जाते है, सैनिक तैयारियाँ होती है और तब शत्रु के विरुद्ध योद्धाओं के जत्थे निकलने शुरू होते है। उन की यह भयकर उत्तेजना उनके हृदय मे बहुत-सी महत्त्वाकाक्षाओ को जन्म देती है और उनकी सारी ताकत को खपा लेती है। इसके कारण ही वे लोग सुस्त बनकर एक जगह नही बस जाते। अगर यह उत्तेजना न हो तो वे भी पहाडो के शान्तिप्रिय कबीलो की भाँति गुफाओ और चट्टानो मे बिखरकर, जगल के फल-फूल और पौधे खाकर, रहने लग जाएँ। पहाड़ो के पार के आदिवासी केवल आकार से ही आदमी दिखाई देते है। पर हर महत्त्वाकाक्षा और अभिमान से भरा हुआ डाकोटा योद्धा वीरता के अनेक गुणों से युक्त होता है। इन लोगो मे अपना प्रभाव और विशेषता पाने का एकमात्र तरीका वीरता का प्रदर्शन करना ही है। अपने भ्रमो और अन्धविश्वासो के कारण वे कभी-कभी उन लोगो को अपने बीच महत्त्व दे बैठते है, जो या तो जादूगर के रूप में होते है या फिर ज्योतिषी या सिद्धपुरुष के तौर पर भविष्य की बाते करते है।

आइए! हमारे डेरे में भी घुसकर देखिए, अगर आप तम्बाकू के धुएँ और घुटन को सह सकते है। यहाँ लोग एक दूसरे से बिल्कुल सटकर एक घेरा बनाए बैठे है, और एक दूसरे के हाथ मे चिलम बढाते हुए मज़ाक कर रहे है। वे लोग कहानियाँ कहकर और दूसरे ढंग से खूब खुश हो रहे हैं। इनके छोटे-छोटे, ताम्बे के-से रग वाले, नगे लड़कों और साँप-की-सी आँख-वाली लड़कियो की खुशी से हम भी भर उठते हैं। वे कुछ शब्द कहते हुए हमें तक आए, जिनका अर्थ हमें बाद मे पता चला कि वे हमें आकर खाने को

निमंत्रण दे रहे थे। इस पर हम उठे और डाकोटा लोगो के उस भारी-भरकम आतिथ्य को कोसते हुए चले। इन लोगो के इस सत्कार मे दिन-भर में कोई भी समय खाली नही रहता। हमें इनकी प्रथा को मानना ही पड़ता था, क्योंकि अगर हम न मानते तो ये लोग बुरा मान सकते थे। यह बन्धन मुझे बहुत भारी लगने लगा। मैं अभी बीमारी के प्रभाव से भी छूटा न था और घूमने-फिरने लायक भी न हुआ था। मेरे लिए दिन में बीस-बीस बार भोजन करना बहुत कठिन था। इतना ज़बरदस्त स्वागत सचमुच ऐसा लगता है, जैसे कि किसी की शुभ-भावना एक साथ ही उमड़ पड़ी हो। परन्तु, अगर ऐसे लोग—इन्ही मे से कम-से-कम आधे लोग—कही हमें अकेले में मैदानो में, निहत्थी हालत में पा लें तो हमारे हर सामान को हम से छीन लें और हमे बांसो से घायल करके मार दें।

एक सुबह हमें एक बूढ़े आदमी के डेरे पर बुलाया गया। यह अपने गाँव का भविष्यवक्ता था। हमने उसे आधा बैठे और आधा झुके हुए पाया। वह अस्सी बरस से ऊपर का था, पर तब भी उसके बाल एकदम काले थे और उसके कन्धों पर दोनो ओर लटक रहे थे। उसका शरीर अब भी बहुत ही गठीले ढग से बना हुआ था, जिससे उसकी पुरानी ताकत का पता चलता था। उसके चेहरे को देखकर उसकी ज़बरदस्त दिमागी ताकत का अन्दाज़ा भी होता था, जो अब भी मानी और सुनी जाती थी। इस बुज़ुर्ग के सामने ही उसका महत्त्वाकाक्षी युवक भतीजा 'महतो तातोका' बैठा था। इनके अलावा एक-दो स्त्रियाँ भी डेरे मे थी।

इस बूढ़े मनुष्य की कहानी भी कुछ विचित्र है। उससे आदिवासियो में फैले बहुत-से अधविश्वासो का पूरा अनुमान हो जाता है। वह भी वीरता मे मशहूर खानदान का ही आदमी था। पर जब वह अभी युवक ही था, तभी अपने जीवन का अगला लक्ष्य निश्चित करने से पहले उसने भी, और लोगो की तरह एक सस्कार पूरा किया। उसने अपना चेहरा काले रंग से पोत लिया और तब ब्लैक हिल्स के सबसे भयकर हिस्से मे, एक छोटी-सी घाटी में, कुछ दिन के लिए उपवास और प्रार्थना करता हुआ लेट गया। अपनी कमज़ोरी की दशा में उत्तेजना के कारण, अन्य आदिवासियो की भाँति, उसने भी दिखाई देने वाले सपनो को अलौकिक वरदान समझा। उसके सामने

बार-बार हिरण की आकृति आने लगी। ओजिल्लाला लोग हिरण को बहुत ही सुन्दर और शान्तिवाली आत्मा मानते हैं। परन्तु युवा आदमियों को इस प्रकार के उपवासो में इसके दर्शन कभी-कभी ही हो पाते है। प्राय. लोगो को भयकर काले भालू के ही दर्शन होते हैं, जिसे युद्ध का देवता माना गया है। वे उसे देखकर वीरता और यश की कामना से भर उठते है। बहुत देर बाद यह हिरण बोला। उसने इस युवक को बताया कि उसे, युद्ध के रास्ते पर न चलकर, शान्ति और चैन के रास्ते पर चलना है। आगे से उसे अपनी सलाहें देकर लोगो को दुखों से बचाते हुए सही रास्ते पर ले चलना है। दूसरे लोग युद्धो के द्वारा यश पाएँगे, पर इसे युद्धो मे यश नहीं मिलेगा। उसका यश किसी और ही बात मे है।

उपवास के इन दिनो में देखा गया, यह दृश्य ही स्वप्न-द्रष्टा के जीवन के सारे मार्ग को निश्चित कर देता है। उस समय से ही इस वृद्ध ने युद्ध के इरादे को छोड़कर शान्ति की ओर अपने तमाम प्रयत्न आरम्भ कर दिए। उसने लोगो को अपने स्वप्न की बात बताई। उन लोगों ने भी उसकी बातो को सही माना और उसके जीवन के इस नए रूप को स्वीकार किया। इस बूढ़े का नाम हमें केवल फ्रेंच में ही पता चला। यह था—'लोवोन्ये'।

उसके भाई का नाम 'महतो तातोका' था। वह उससे एकदम भिन्न था। उसका नाम, शक्ल और गुण—सभी कुछ—उसके बेटे को उत्तराधिकार में मिले थे। वह हेनरी की पत्नी का पिता भी था। यह बात हमारे लिए अच्छी सिद्ध हुई। क्योकि इस बहाने हमारा सम्बन्ध एक बहुत वीर परिवार से हुआ, जो कि इस यात्रा के लिए बहुत ही आवश्यक बात थी। इस महतो को नायक माना जाता था। कोई भी बडा सरदार वीरता के विषय में उससे अधिक प्रसिद्ध न था और न ही अपने लोगों पर किसी का इतना अधिकार चलता था। उसकी आत्मा बिल्कुल निडर थी और उसका निश्चय बिल्कुल अडिग। वह जो कुछ चाहता था वही कानून के रूप मे माना जाता था। वह बड़ा नम्र और सभ्य था। आदिवासियो की अपनी सभ्यता के कारण वह यह जानकर कि गोरो से मिलकर अपने लिए और अपने साथियो के लिए बहुत लाभ उठाये जा सकते हैं, वह सदा ही उनका मित्र बन जाता था। जब वह कोई भी काम करना निश्चित कर लेता था, तब वह सब योद्धाओं

को बुलाकर उस पर विचार करने का मौका देता, और जब उनकी बहस खतम हो जाती तब उन्हे अपना इरादा बता देता। सब लोग चुपचाप उसकी बात को मान लेते, क्योकि उसकी बात को न मानने का अर्थ दुर्भाग्य का सामना करना होता। वह उन पर उसी समय हमला कर देता या उन्हें मार डालता। अगर कोई और सरदार ऐसा करता तो शायद उसे अपनी जान से ही हाथ धोना पडता। परन्तु, महतो इस काम को बार-बार दोहराता और किसी की हिम्मत उसके विरुद्ध कुछ करने की न पडती। महतो ने एक ऐसी जाति में अपने को एकच्छत्र नेता के रूप में बना लिया, जिस में सदा से ही कभी भी किसी आदमी ने अपनी इच्छा के अलावा किसी कानून को नहीं माना था। अन्त में उसका जीवन भी समाप्त हुआ। उसके बहुत से शत्रु थे, जो धैर्यपूर्वक अवसर की प्रतीक्षा करते रहे। इनमें से, अपने सम्बन्धियो के साथ, हमारा परिचित मित्र—'स्मोक' भी एक था, जो उससे हृदय से घृणा करता था। वह एक दिन अपने गाँव में, अपने घर में, बैठा हुआ था। तभी महतो उसके गॉव मे अकेला ही घुसा। उसने अपने शत्रु के घर के सामने जाकर, बहुत ऊँची आवाज मे उसे बाहर आकर लडने के लिए ललकारा। पर स्मोक न हिला। इस पर महतो ने उसे कायर और बूढी औरत कहकर गालियाँ दी और घर के दरवाजे पर आकर उसके सबसे अच्छे घोडे को मार आया। यह अपमान भी स्मोक को हिला न सका। महतो तातोंका गर्व में डूबकर चला गया। सबने उसके लिये रास्ता छोड दिया। पर उसके दिन नजदीक आ चुके थे।

आज से पाँच-छ. साल पहले एक दिन बहुत गर्मी पड रही थी। स्मोक के सम्बन्धियो के बहुत-से घर फिर कम्पनी के लोगो के चारो ओर जमा थे। कम्पनी के लोग वहाँ शराब और बहुत-सी दूसरी चीजों का व्यापार करने आए थे। महतो भी अपने कुछ साथियो के साथ वही पर आया हुआ था। अभी वह अपने डेरे मे लेटा ही हुआ था कि उसके अपने साथियो और शत्रु के आदमियो के बीच एक झगडा उठ खडा हुआ। उसी समय युद्ध का बिगुल बज गया और गोलियो और बाणो की बौछार होने लगी। सारे डेरे में गड़बड मच गई। सरदार उठा और दोनो दलों के बीच जाकर लडाई रोकने के लिए कहने लगा। पर यह हमला पहले ही तैयारी के साथ किया गया था।

उसी समय दो तीन बन्दूको की आवाज़ आई और दर्जनो धनुष एक साथ गूँज उठे। यह वीर योद्धा उसी समय घायल होकर धरती पर गिर पड़ा। रूलो उस मौके पर मौजूद था और उसने ही मुझे ये बातें बताईं। यह झगड़ा बढता ही गया, जब तक कि दोनो ओर से कुछ आदमी मर न गए। जब हम इस इलाके मे थे, तब भी यह झगड़ा शान्त न हुआ था।

इस प्रकार बूढ़ा महतो मर गया, किन्तु अपने पीछे वह ऐसे खानदानी योद्धाओं की एक बड़ी और अच्छी सेना छोड़ गया, जो कि उसके यश को कायम रख सकती थी और उसकी मौत का बदला ले सकती थी। लड़कियों के अलावा उसके तीस बेटे थे। जो लोग आदिवासियों की रीति और व्यवहार को जानते है, उनके लिए यह सख्या आश्चर्य पैदा नहीं करेगी। उनमें से हमने बहुत से देखे, जिनका रग गहरा था और जिनके चेहरे एक खास ढाँचे मे ढले हुए दीखते थे। इन्हीं मे से था हमारा युवक अतिथि महतो! वह उनमें सबसे बड़ा था और कुछ के विचार में वह अपने पिता के यश को पाने का पूरा अधिकारी था। वह अभी इक्कीस वर्ष का भी नही दिखाई देता था। परन्तु, उसने शत्रुओं पर हमले किए थे और उनके अधिक से अधिक घोडे और औरते चुराई थी। उसके मुकाबले में कोई भी युवक इतना न बढ़ सका। घोड़ों की यह चोरी इन मैदानों में किसी व्यक्ति की विशेषता मानी जाती है। औरतों की चोरी भी इसी प्रकार की महत्त्वपूर्ण बात समझी जाती है। यह कार्य अपने आप में बहुत अच्छा नहीं है। कोई भी आदमी किसी की भी औरत चुरा लेता है। अगर वह बाद में कोई उचित भेंट उसके पहले स्वामी को दे देता है तो उनके बीच की शत्रुता मिट जाती है और एक खतरा टल जाता है। परन्तु, अदला-बदली का यह सौदा सबसे हीन दर्जे का माना जाता है। केवल खतरा ही नही टलता, बल्कि आदमी का अपना यश भी इसमें गायब हो जाता है। महतो औरों से काफी भिन्न था। उसने दर्जनो स्त्रियों को चुराकर भी उनके बदले में एक भी भेंट न दी थी। इतना ही नहीं, उसने तो अपने शत्रुओ के मुख पर, अपमान के रूप में, चाँटा तक मारा था। इस पर भी उसके मुकाबले की हिम्मत किसी में न जगी। वह अपने पिता के पद-चिह्नों पर पूरी तरह चल रहा था। हर जवान मर्द और औरत अपने-अपने तरीके से उसकी प्रशंसा करते थे। जवान मर्द युद्ध में उसका साथ देते

और औरतें उसे सबसे अधिक आकर्षक मानतीं। शायद उसकी यह निर्भीकता बहुत-से आश्चर्यों को जन्म दे सकती थी। घाटी से आने वाला कोई बाण या अँधेरे से किया गया कोई हमला किसी वीरता की निशानी नहीं होता। आदिवासियो में ऐसी बात चलती ही रहती है। पर महतो की रक्षा एक और बात भी करती थी। उसका साहस और मजबूत इरादा ही अपने साथियो में उसे सबसे बड़ा नही बना रहे थे, बल्कि उसके शत्रु तक इस बात को जानते थे कि वह अकेला नही है। उसके तीस भाई भी है, जो योद्धा हैं और जवान है। अगर कही उन्होने उस पर कोई हमला कर ही दिया, तो कई सारे दिल उनके खून के प्यासे हो उठेंगे। बदला लेने वाला उनके हर कदम पर उनका पीछा करेगा। इसलिए महतो को मारने का अर्थ होता, खुद अपने मरने की तैयारी करना।

हालाँकि औरतो में वह बहुत प्रिय था, पर तो भी वह सुन्दर जवान न था। वह अपने साथियों की भाँति अच्छे कपडे और जेवर नही पहनता था। बल्कि, वह तो केवल लड़ाई के कारनामो के बल पर ही अपनी सफलता मानता था। न तो कभी, उसने चमकीले कम्बल ओढ़े और न ही चमकते हार पहने। बल्कि, वह अपने ताम्बे से नगे बदन में ही, यश पाने के लिए, सब जगह निकल जाता था। उसकी आवाज बड़ी गहरी और भारी थी। छाती से निकलती हुई वह ऐसे लगती थी, जैसे कोई बाजा बज रहा हो। इस सब पर भी वह आदिवासी ही था। धूप मे लेटे हुए उसे देखने पर वह अपनी एडियाँ हवा मे उठाता हुआ और अपने भाइयो से मजाक करता हुआ मिलेगा। क्या ऐसे समय में वह कोई वीर नायक लग सकता है? और अब वीरता के मौके पर उसे देखो! साँझ के समय सारा गाँव उसे देखने उमड़ पड़ता है, क्योकि कल वह दुश्मन के विरुद्ध लडाई पर जाने वाला है! उसके सिर के मुकुट में चील के पंख लगे हुए है और उनकी कतार की कतार हवा मे लहरा रही है। उसकी छाती पर उसकी गोल ढाल लटक रही है, जिसपर बीच मे से चारो ओर पंख ऐसे फैले हुए है, जैसे कोई तारा हो। उसकी पीठ पर तरकश कसा हुआ है। उसके हाथ में उसका लम्बा भाला है, जिसका लोहे का नुकीला हिस्सा डूबते सूरज की चमक से चमक रहा है। इस प्रकार, एक वीर की भाँति, चमकता हुआ वह सारे घरों के चारा ओर

घूमता है, और अपने घोड़े की चाल को खुला छोड़ता हुआ वह 'महान् आत्मा' की स्तुति के गीत गाता चलता है। उसके मुकाबले के दूसरे जवान योद्धा उसकी ओर अचरज से देखते है। गालो पर पराग मले सुन्दर लड़कियाँ उसे प्रशंसा की दृष्टि से देखती है, छोटे बच्चे आनन्द के जोश में हँसने और चिल्लाने लगते है और बूढ़ी औरते घर-घर में उसकी प्रशसा गाती फिरती है।

हमारे आदिवासी मित्रो मे महतो सबसे अच्छा था। हर घंटे और हर दिन असभ्य आदिवासियों के हर उमर और दर्जे के लोग हमारे डेरे पर आते और उसे घेर लेते। परन्तु, वह हमारे तम्बू में लेटा रहता और अपनी आँखें, हमारी सम्पत्ति को लूटे जाने से बचाने के लिए, खुली रखता।

'बवंडर' ने एक दिन हमें अपने घर पर निमन्त्रित किया। दावत समाप्त हुई और हुक्का घुमाया गया। यह काफ़ी बड़ा और अच्छा था। मैंने इसकी प्रशंसा की।

बवंडर ने पूछा, "यदि तुम विदेशियों को भी यह पसन्द है तो तुम इसे रखते क्यो नही ?"

ओजिल्लाला लोगो में इस प्रकार का हुक्का एक घोड़े की कीमत के बराबर का समझा जाता है। यह भेंट किसी सरदार या योद्धा के लिए ही उचित जँचती थी। पर, बवंडर आज अपनी उदारता मे आगे बढ़ गया था। उसने मुझे वह हुक्का दिया, पर साथ ही उसे यह भी पूरा विश्वास था कि बदले में मैं भी उसे बराबर की या अधिक कीमत की कोई चीज़ दूँगा। आदिवासियो मे भेंट देने या लेने मे यह शर्त शामिल समझी जाती है। अगर यह शर्त पूरी न की जाए तो चीज़ वापिस भी माँग ली जाती है। इसलिए मैंने एक चमकदार सूती रूमाल बिछाकर उसपर बहुत-सा केसर, तम्बाकू, चाकू और बारूद बिछा दिए और तब सरदार को अपने डेरे पर बुलाकर, अपनी मित्रता का विश्वास दिलाते हुए, वे चीजें स्वीकार करने की प्रार्थना की। वह "हाऊ ! हाऊ !" कहकर उन चीज़ो को समेटता हुआ अपने घर की ओर प्रसन्नता के साथ चला गया।

एक दिन दोपहर के बाद कुछ घुड़सवार आदिवासियों का एक दल झाड़ियो के पीछे से एक दम सामने आया। उनके साथ एक टट्टू भी था, जिसकी पीठ पर बुरी हालत में पडा हुआ एक हब्शी बैठा हुआ था। उसकी

गाले और आँखे गड्ढो में धँस चुकी थी और उसकी पुतलियाँ फैली हुई थी। उसके होठ सिकुडे हुए और किसी मुर्दे की भाँति फैले हुए थे। जब वे उसे हमारे डेरे के सामने लाए और उन्होने उसे काठी से नीचे उतारा तो न वह चल सकता था और न खडा हो सकता था। वह कुछ दूर तक सरक कर चला। पर, तब बहुत कमजोरी के कारण वही घास पर बैठ गया। सभी घरो से निकलकर बच्चे और औरतें चीखते-चिल्लाते वहाँ घिर आए और उसके चारो ओर खडे हो गए। वह बेचारा अपने हाथो के सहारे बैठा हुआ बड़ी निराशा से अगल-बगल में देख रहा था। वह भूख के कारण मरने ही वाला था। तैतीस दिन तक इस मैदान में वह भूखा ही घूमता रहा। उसके पास कोई हथियार तक न था। पहनी हुई कमीज और पाजामे के अलावा उसके पास जूते या कोई और कपडे न थे। रास्ता पहचानने के लिए न उसके पास बुद्धि थी और न ही उसे मैदान मे पैदा होने वाली चीजो का पता था। वह गिरगिटो और छिपकलियो को ही इतने दिन तक खाता रहा, या फिर जगली प्याजो और एक मैदानी कबूतर के घोसले में पडे तीन अण्डो को खाकर ही इतने दिन जिन्दा रहा। इन दिनो में उसने एक भी आदमी न देखा। इस अनन्त और निराशा भरे रेगिस्तान मे घूमते हुए वह नाउमीद होकर बढता रहा। और, तब चलने की ताकत न रहने पर घुटनो के बल सरकने लगा। इतनी ताकत भी खत्म हो जाने पर वह लेट गया। उसने रात में सफर और दिन मे चमकती धूप में सो जाने की बात निश्चित की। वह हमेशा स्वप्न में ही मक्का और शोरबे को देखा करता। ये ही दो चीजे उसे मिसूरी मे अपने स्वामी के यहाँ मिला करती थी। हमारे डेरे का हर लाल या गोरा निवासी इस बात से अचरज मे डूब गया कि वह केवल भूख से ही नही बचा, बल्कि पड़ोस मे ही बहुत अधिक पाए जाने वाले काले भालुओ से भी वह बच गया। हर रात मे भौंकने वाले भेड़िए भी उसका कुछ न बिगाड सके।

उसके आते ही रेनल ने उसे पहचान लिया। वह एक साल पहले अपने स्वामी के यहाँ से भाग कर रिचर्ड के दल में मिल गया था, जो इस समय सीमात से पहाड़ो की ओर आ रहा था। वह रिचर्ड के साथ मई महीने के अन्त तक रहता रहा। तब वह रेनल और कुछ दूसरे आदमियो के साथ कुछ छूटे हुए घोडो को ढूँढने निकला। एक तूफान में वह दूसरो से भटक गया और

आज तक उसके बारे में फिर कभी नही सुना गया था। उसके अनुभव की कमी और सहायता से रहित होने के कारण किसी को सपने में भी उम्मीद न थी कि वह ज़िन्दा होगा। आदिवासियो ने उसे ज़मीन पर इसी हालत में पड़ा हुआ पाया था।

वह वहाँ बैठा ऊपर की ओर देखता रहा। पर, उसमें इतनी भी हिम्मत न रह गई थी। चारो ओर खडे आदिवासी चुपचाप उसकी ओर देखते रहे। तब देस्लारियर ने उसके लिए शोरवा बनाया। वह कुछ देर इसे बिना चखे वैसे ही बैठा रहा। बहुत देर बाद उसने इसे उठाकर होठो से लगाया। अब वह एक-एक चम्मच करके इसे धीरे-धीरे पीने लगा। तभी, अचानक ही, उसकी भूख एक दम भड़क उठी। उसने प्याला उठाकर एक दम मुँह से लगा लिया और क्षणभर मे ही सब कुछ पी गया। अब वह मास माँगने लगा। हमने उसे सुबह तक प्रतीक्षा करने के लिए कहा। पर वह इतना अधिक ज़ोर देने लगा कि अन्त मे हमने उसे एक टुकडा दे ही दिया। उसने इसे, कुते की भाँति, चीर-चीर कर खा लिया। उसने और अधिक माँगा। पर, हमने उसे बताया कि अगर पहले-पहल वह इतना खा गया तो उसका जीवन खतरे में पड जाएगा। उसने यह बात मानली और यह भी कि अधिक माँगकर वह मूर्खता कर रहा है। पर, फिर भी वह और माँगने लगा। अब हमने कतई मना कर दिया, हालाँकि आदिवासी औरतें इस पर बहुत बुरा मानने लगी। हमारी निगाह बचाते ही वे चुपचाप सूखा मास ले आती और ज़मीन पर उसके पास रख जाती। उसके लिए इतना भी काफी न था। अधिक अँधेरा होने पर वह घोड़ो की टाँगो के बीच मे से सरकता हुआ आदिवासियो के डेरे तक चला गया। यहाँ उसने जी भर कर खाया। सुबह वह हमारे डेरे पर फिर से लाया गया। पर, अब मिग्रास उसे घोडे पर बिठा कर किले की ओर ले गया। अपने लोभ के परिणामो को सहने मे वह जैसे-तैसे समर्थ हो गया। जब वह इस इलाके से विदा हुआ, तब उसकी हालत काफी अच्छी थी और उसे भरोसा हो चुका था कि अब उसे कोई भी चीज या घटना कभी मार न सकेगी।

अभी सूर्य छिपने मे एक घटा बाकी था। गाँव का नजारा देखने लायक था। योद्धा लोग घरो मे शान्ति से बैठे थे, या धारा के किनारे जमा थे, या फिर घोडो को देखने और चराने के लिए बाहर निकल गए थे। गाँव के आधे

से अधिक लोग अपने घुटन वाले गर्म घरो को छोड़कर पानी के किनारे तक जा चुके थे। इस समय नदी मे लड़के-लडकियाँ और जवान स्त्रियाँ नहाती, तैरती, पानी उछालती और डुबकियाँ लेती देखी जा सकती थी। वे खूब हँस-खेल रही थी। सूर्य पूरा छिपने से पहले हमारे यहाँ नजारा कुछ और सुन्दर हो उठा। चारो ओर सूर्य की लाली खिल उठी। हमारे पेड को भी उसने छा लिया। चारो ओर टीलो पर भरे मैदान, अमराइयो और दूसरी जगहो पर भी एक शान्त सुन्दरता छा गई। यहाँ कुछ असभ्य शक्लें जमा थी। उनकी पीठ पर तरकस और उनके हाथो में बन्दूकें, भाले और दूसरे हथियार सजे हुए थे। वे घोड़े पर बैठे हुए अपनी बाहें छाती के सामने बाँधे हुए हमारी ओर स्थिर निगाहो से देख रहे थे। कुछ लोग ऊपर से नीचे तक सिर से पाँव तक भैसे की सफेद खाल से लदे, सीधे, तने खडे थे। कुछ दूसरे लोग घास पर ही बैठे हुए थे। उन्होने अपने घोडो की लगामें हाथ में पकड़ी हुई थीं। वे नगे बदन बैठे थे और उनकी खालो के कपडे नीचे सरक आए थे। कुछ और भी थे, जो भीड़ के रूप में लापरवाही से खडे थे। इनमे से एक बहुत ही गुस्सैल साथी था। इसका नाम 'पागल भेडिया' था। इसने पीठ पर तरकश और हाथ में धनुष लिया हुआ था। अगर इसके चेहरे पर ध्यान न दिया जाता, तो यह अपोले या विष्णु का अवतार ही दिखाई देता। पश्चिम के लोगो ने जब सबसे पहले बेल्वेडेर को देखा होगा, तब उसकी आकृति उन्हे भी ऐसी ही लगी होगी।

मैदान पर जब अँधेरा छाने लगा, तब घोडो को पास लाकर डेरे के इर्द-गिर्द बाँध दिया गया। भीड धीरे-धीरे तितर-बितर होने लगी। चारो ओर आगें जलने लगी और इनके प्रकाश में पशु-फँसाने वालो और आदिवासियो की शक्लें साफ दिखाई देने लगी। हमारे पास के परिवारो मे से एक परिवार प्राय: सदा ही आग जलाकर उसके चारो ओ जमा हो जाता था। इस आग के प्रकाश से उनके घर का हर कोना चमकने लगता। बुढिया औरतें आग के चारो ओर घूमती रहती और बच्चे तथा छोटी लड़कियाँ घटो घेरा बाँधे हँसती और बाते करती रहती। उनके प्रसन्न चेहरे दूर से ही चमकते रहते। आदि-वासियो के डेरे से हमे निरन्तर एक जैसी आवाज मे ढोलों के पीटने की आवाज़ आती रहती और उसके साथ ही सुनाई देते उनके युद्ध-गीत, जो कि धीरे-धीरे

दूरी के कारण मद पड़ते जाते। और, तब सुनाई देती उनकी लम्बी आवाज़े। यहाँ उसका युद्ध का नृत्य एक बड़े भारी मकान मे हो रहा था। कुछ रातो तक हमे असभ्य और अफसोस भरी आवाजें भी सुनाई देती रही। ये आवाजें भेड़ियो की दुखभरी आवाज़ो के समान ही उठती और गिरती थी। महतो के परिवार के लोगो की ये आवाज़ें हेनरी की पत्नी का अफसोस मनाने के लिए, अपने अगो को चाकुओ से छेदने के साथ-साथ, उठती थी। बहुत रात बीतने पर डेरे में शान्ति छा जाती थी। अँगारो की हल्की-हल्की चमक बाकी रह जाने पर आदमी ज़मीन पर ही कम्बल ओढ कर सो जाते। तब घोड़ों की आवाज को छोडकर और कुछ भी सुनाई न देता।

मुझे इन दृश्यो का स्मरण दु.ख और आनन्द दोनो की मिली-जुली भावना के साथ हो आता है। उस समय मै बीमारी के कारण इतना कमज़ोर हो गया था कि न तो ठीक तरह घूम सकता था और न ठीक से खड़ा हो सकता था। मेरी चाल शराबी के समान लड़खड़ाती और मेरी आँखो के आगे अँधेरा छा जाता। सामने के पेड़ और मकान तैरते हुए नज़र आते और मैदान एक समुद्र के उतार-चढाव का-सा लगने लगता। ऐसी हालत सभी जगह बुरी साबित होती है। इसलिए ऐसे इलाके मे, जहाँ मनुष्य का जीवन, उसकी अपनी भुजाओं के बल पर टिका रहता है, या फिर उसके अपने मज़बूत कदमो पर टिका रहता है, यह हालत और भी बुरी साबित होती है। ऐसे मौकों पर गीली ज़मीन पर, बीच-बीच मे वर्षा मे भीगते हुए, सोना बहुत अच्छा नही रहता। कभी-कभी तो मै अपने को बिल्कुल ही खोखला अनुभव करने लगता। मुझे लगता जैसे मै इन मैदानो से प्यार और सदा रहने के स्वप्नों का प्रायश्चित्त कर रहा हूँ।

मैने आराम और हल्के भोजन पर बल दिया। बहुत देर तक धीरज के साथ मै डेरे पर ही टिका रहता। बहुत होता तो आदिवासियों के गाँव तक लड़खड़ाता चला जाता और चक्कर खाता हुआ आदिवासियो के घरो के बीच घूमता रहता। मुझे लगा कि यह सब भी कुछ लाभकारी नही था। मै लगभग भूखा ही रहता। पाँच दिन में मैने केवल एक बिस्कुट ही रोज खाकर गुज़र कया। उस समय मै पहले से भी कमज़ोर हो चुका था। लगता था कि मेरे अन्दर की बीमारी भी जैसे जड़ से हिल चुकी थी। अब मैंने धीरे-धीरे

खुराक फिर बढानी शुरू कर दी ।

मैं अपने तम्बू के सामने सुस्ताकर स्वप्न देखता हुआ लेटा रहता और भूत और भविष्य की बातो पर सोचता रहता । इस समय कमजोरी और एकान्त की भावना से तंग आई हुई मेरी आँखें अचानक ही ब्लैक हिल्स की ओर घूम जाती । पहाड़ो में शक्ति की भावना का निवास होता है और जो भी इन तक पहुँचता है, उसमे ये शक्ति की भावना, किसी न किसी रूप मे, भर ही देते हैं। उस समय मुझे यह नही पता था कि इन पहाड़ियो के विषय में आदि-वासियो के मनो मे कितने भ्रम और कितनी दु खदायी अफवाहें भरी हुई है । पर, मुझे यह इच्छा जरूर सताती थी कि मै इनके दर्रो और खाली हिस्सो के अन्दर जाकर इन में छिपे आनन्दो और चीजो को खोज निकालूँ । इनका तेज धाराओ और शान्त जगलो को भी देखने की मेरी इच्छा थी । मुझे विश्वास था कि यह सब कुछ वहाँ छिपा हुआ है ।

—:o:—

१२ : दुर्भाग्य

एक कनाडावासी लारामी किले से अजीब ही खबर ले कर आया। हाल में ही पर्वतो में से एक पशु-फँसाने वाले ने प्रवासियो के साथ जाने वाली मिसूरी निवासी किसी स्त्री से प्यार बढ़ा लिया था। ये प्रवासी बहुत दिनो से किले के पास ही डेरा डाले पड़े थे। अगर किसी सुन्दरी का प्यार पाने का उपाय वीरता दिखाना ही हो तो पर्वतो से लौटे हुए ऐसे पशु-फँसाने वाले का छोडकर और कौन उसका अच्छा अधिकारी हो सकता है? इस किस्से में भी यही बात हुई। दोनो प्रेमियो ने एक योजना बनायी और उसे पूरी सावधानी के साथ पूरा करने का निश्चय किया। प्रवासियो के दल ने किला छोड़ा और उसके एक रात बाद हर रोज़ जैसे ही डेरा डालकर अपना पहरेदार खड़ा कर दिया। आधी रात के कुछ देर बाद ही वह पशु-फँसाने वाला एक घोड़े पर चढ़कर डेरे तक आया। उसने एक दूसरे घोड़े की लगाम भी थामी हुई थी। उसने दोनो घोड़े पेड से बाँधे और चुपचाप सरकता हुआ गाड़ियो की ओर ऐसे गया, जैसे वह भैसो के पास पहुँच रहा हो। आधे-सोते पहरेदार की निगाह बचाकर वह अपनी प्रेमिका से, निश्चित किये हुए तरीके से, डेरे से बाहर ही मिला। उसने उसे खाली घोडे पर चढ़ाया और उसे लेकर अँधेरे मे ही गायब हो गया। इस साहस का परिणाम हम तक फिर कभी नही पहुँचा। हम नही जान पाये कि उस गोरी प्रेमिका ने आदिवासियो जैसे घर में रहना क्यो स्वीकार किया और एक फक्कड पशु-फँसाने वाले को अपना पति कैसे चुना?

काफी देर बाद 'बवडर' और उसके लड़ाकू जवानो ने आगे बढ़ने का निश्चय किया। अपनी तैयारियाँ पूरी कर लेने के बाद उन्होने निश्चय किया कि वे लावोते नाम के डेरे की ओर नही जायेंगे। ब्लैक हिल्स की ओर से गुज़रते हुए उन्होने कुछ दिन भैसो के शिकार में बिताने का निश्चय किया, ताकि उनके पास मास आदि का काफी बड़ा भंडार और अगली मौसम के लिए मकान ढकने के भैसो के चमड़े इकट्ठे किए जा सकें। ऐसा होने के बाद

उन्होने शत्रुओ के विरुद्ध एक स्वतन्त्र लड़ाकू दल भेजने का निश्चय किया। उनके इस निश्चय ने हमें अजीब पशोपेश में डाल दिया। अगर हम पहले से निश्चित डेरे की ओर जाते है तो यह सम्भव है कि और भी बहुत से आदिवासियो के गाँव इसी प्रकार से वहाँ न पहुँचे और शायद वहाँ कभी भी वे लोग इकट्ठे न हो सके। हमारा पुराना साथी रेनल हमे चाहने लगा था। हो सकता है वह हमारे बिस्कुटो और काफी आदि मे अथवा समय-समय पर दी जाने वाली भेंटो से अधिक प्यार करता हो ? वह बहुत अधिक उत्सुक था कि हम गाँव के साथ-साथ ही बढें। उसने स्वयं भी ऐसा फैसला किया था। उसे पूरा विश्वास था कि ये आदिवासी मिलन के निश्चित स्थान पर कभी जमा नही हो पाएँगे। उसने यह भी कहा कि हमारी गाड़ी और सामान के लिए इन पहाड़ियो मे से होकर गुज़रना अधिक आसान रहेगा। उसे इस मामले में कुछ अधिक पता नहीं था। न तो वह ही और न हम गोरो में से कोई और ही उन कठिन रास्तो से परिचित था, जिनमें से होकर इन आदिवासियो ने जाने का निश्चय किया था। बाद में जब मै उधर से गुज़रा तब मुझे अपने दु.खी घोड़े को तंग घाटियो और धूप के दर्शन न पा सकने वाले घने छोटे वनो में से गुजरने पर मजबूर करना पडा। हमारी गाडी बहुत आसानी से 'पाइक' की चोटी तक चढ सकती थी। पर हम इस बात से अनजान थे। मिलन के निश्चित स्थान की ओर जाने मे कठिनाइयो और अनिश्चय के कारण हमने यह अधिक अच्छा समझा कि आधी छोड़ सारी को धावे, वाली कहावत के अनुसार हमें इन लोगो के साथ ही चलना चाहिए।

आदिवासियो और हम लोगो के डेरे पहली जुलाई की सुबह ही उखाड लिए गए। मै बहुत अधिक कमज़ोर था। थोडी-थोडी देर बाद कुछ चमचे शराब पीकर ही मै घोड़े पर बैठकर उस दिन की यात्रा के लिए समर्थ हो सका। हम से आधा मील आगे और आधा ही मील पीछे तक का यह रेतीला मैदान चलते हुए आदिवासियो के जत्थो से घिरा हुआ था। सामने का उजाड, कटा-फटा मैदान दायें और बाये बहुत दूर तक फैला हुआ था। बहुत दूर सामने की ओर ब्लैक हिल्ज़ नाम की पहाड़ियाँ दिखाई दे रही थी। हम भारी बोझे से लदी गाड़ियो और बुरी तरह लदे हुए लादू घोड़ो, पैदल चलती बूढी औरतों, घुड़सवार जवान औरतों, अशात बच्चों और सफेद खाल ओढ़े बूढ़े आदमियो

के पास से होते हुए इस बिखरे हुए जत्थे के आगे तक पहुँच गए। कुछ जवान योद्धा बहुत अच्छे घोडो पर चढ़े हुए थे। हेनरी ने पीछे की ओर दूर मैदान में देखते हुए कहा कि कोई घुडसवार हमारी ओर आ रहा है। सच यह था कि हमने अपनी ओर बढ़ती हुई एक हल्की सी आकृति सामने के एक टीले पर आती हुई देखी, मानो किसी दीवार पर कोई मक्खी चल रही हो। धीरे-धीरे हमारी ओर बढ़ते हुए यह काला दाग बढने लगा।

हेनरी ने कहा, "मुझे लगता है कि यह कोई गोरा है। इसके चढ़ने का ढग देखो.! आदिवासी इस तरह नही चढ़ते। हाँ, उसने अपनी बन्दूक अपने आगे काठी पर अवश्य रखी हुई है।"

वह घुडसवार मैदान के एक खड्ड में छिप गया। तुरन्त ही वह फिर से दिखाई देने लगा और आदिवासियो की भीड में होता हुआ हमारी तरफ बढ़ आया। उसके लम्बे बाल हवा में पीछे की ओर उड़ रहे थे। हमने उसके चेहरे और उसकी पुरानी हिरन की खाल की पोशाक से पहचान लिया कि वह पशु-फँसाने वाला गिग्रास ही था। वह अभी-अभी लारामी किले से ही आ रहा था और हमारे लिए सदेश लाया था। हेनरी के मित्रो मे से बिसोनेत नाम का एक व्यापारी इन्ही दिनो हमारे इलाके से आया था। उसका इरादा कुछ लोगो के साथ लावोते नाम के डेरे की ओर जाने का था। गिग्रास ने हमे बताया कि वहाँ कम-से-कम दस बारह गाँवो के आदिवासी अवश्य इकट्ठे होगे। बिसोनेत चाहता था कि हम भी नदी पार करके उनसे वहाँ जा मिलें। हमारे घोड़ो और सामान की देखभाल करने का भी उसने विश्वास दिलाया, क्योकि हमने आदिवासियों के साथ आगे जाना था। शॉ और मैने अपने घोडे रोके और कुछ देर विचार किया। न जाने किस बुरी घड़ी मे हमने उस ओर जाने का निश्चय किया।

उस सारे दिन हमारा और आदिवासियो का रास्ता एक ही रहा। एक घण्टे से भी कुछ कम समय में ही हम उस जगह पहुँच गये, जहाँ इस उजाड और ऊसर मैदान के अन्त में एकदम सीधी ढलान आ जाती है। इसके किनारे खडे होकर हमने देखा कि सामने एक बहुत बड़ी चरागाह थी। लारामी धारा यहाँ से बाईं ओर को मुड़ जाती थी। यहाँ से आगे वह गहराइयो में से होती हुई, अपने उथले पानी के साथ बढ़ गई थी। हम घोडो की पीठ पर बैठे हुए

तब तक प्रतीक्षा करते रहे और देखते रहे, जब तक उन आदिवसियों का पूरा का पूरा गाँव ही धीरे-धीरे नीचे उतर कर चरागाह में न फैल गया। कुछ ही देर में वह सारा मैदान अनेको प्राणियो की हलचल से भर गया। उनमें से कुछ साफ दिखाई दे रहे थे और कुछ बहुत ही धुँधले से दीख रहे थे। कुछ लोग बहुत जल्दी मे अब भी धारा पार कर रहे थे। ऊँचाई के इन किनारो पर कुछ बड़ी उमर के योद्धाओ का एक दल तम्बाकू पीता हुआ और इस सुन्दर दृश्य को स्थिर निगाहों से देखता हुआ बैठा था।

धारा के किनारे-किनारे, एक घेरे के रूप में, तुरन्त ही तम्बू खड़े हो गये। शान्त रहने की इच्छा से हमने लगभग आधा मील दूर डेरा गाडा। दोपहर के बाद हम गाँव की ओर गये। दिन बहुत ही शुभ था। सारा गाँव बहुत अधिक काम में जुटा हुआ और हमारे लिये सहानुभूति से भरा हुआ लग रहा था। बच्चो और छोटी लडकियो की टोलियाँ खूब हँस खेल रही थी। ढालें, भाले और धनुष उन तिपाइयो से उतार लिए थे, जिन पर वे मकानो के सामने ही टँगे रखे थे। योद्धा लोग घोड़ो पर सवार होकर पास की पहाडियो की ओर एक-एक करके निकलने शुरू हो गये।

शॉ और मै रेनल के मकान के पास ही धरी घास पर बैठे थे। तभी एक बुढिया अपनी प्रथा के अनुसार उबले हुए हिरण के मास का प्याला भर कर ले आई। हम कुछ जवान स्त्रियो को आँखमिचौनी खेलते देखते रहे। तभी पास की पहाडियो में से चीखती हुई युद्ध की तरह की आवाज़ें आने लगी। घुडसवारो की एक टोली गाँव की तरफ पूरी तेज़ी के साथ दौड़ती हुई आई। उनके बाल हवा मे इस तरह उड रहे थे, जैसे किसी जहाज़ की चिमनी मे से भाप निकल रही हो। पास आने पर वे ठीक तरह से बँट कर दो-दो करके आने लगे और कुछ दूरी पर एक घेरा बाँध कर खड़े हो गये। हर एक योद्धा अपनी-अपनी जगह पर ही युद्ध का गीत गा रहा था। उनमें से कुछ की पोशाकें बहुत ही अच्छी थी। उन्होने पखो के कालर वाले कपडे पहने हुए थे। ये कपड़े हिरण की खाल से बनाए हुए थे। इनके किनारे की झालरें शत्रुओ के सिर के बालो के गुच्छो से बनी हुई थी। बहुतों की ढाल पर भी सुनहरी चीलो के पंख लगे हुए थे। सबके धनुष और बाण पीठ पर बँधे हुए थे। कुछ ने लम्बे भाले या बन्दूकें अपने हाथो मे पकडी हुई थी। उनका नेता 'सफेद

खल' बहुत ही सुन्दर चमकदार पोशाक पहने उनके आगे खड़ा था। उसका घोड़ा सफेद और काले रंग का था। महतो के भाइयो ने इस तैयारी में हिस्सा न लिया, क्योकि वे अपनी बहिन की मृत्यु का शोक मना रहे थे और अब भी अपने डेरे मे बैठे थे। उन सबके शरीर सफेद मिट्टी से पुते हुए थे और उनके माथे पर से कुछ बाल कटे हुए थे।

योद्धा लोग गाँव के चारो ओर तीन बार परिक्रमा के लिये गये। ज्यो-ज्यो कोई प्रसिद्ध वीर सामने से गुज़रता, बूढ़ी स्त्रियाँ उसका नाम लेकर उसकी वीरता का बखान करतीं और नये योद्धाओ को उनके अनुकरण के लिए हौसला देती। इस जलूस के पीछे दो साल से भी कम आयु के बच्चे अपने कबीले के वीर योद्धाओ की प्रशसा करते हुए चल रहे थे।

यह सारा जलूस वैसे ही गाँव से बाहर निकल गया जैसे अन्दर आया था। आधे ही घण्टे बाद यह फिर से गाँव मे लौट आया। पर, अब एक-एक योद्धा चुपचाप आता गया।

यह सब समाप्त होने के बाद हमें आदिवासियो की गृहस्थी का एक नया नज़ारा देखने को मिला। एक चुडैल-सी औरत बहुत गुस्से मे भर कर अपने पति का अपमान कर रही थी। उसका पति मकान के बीचों-बीच निश्चिन्त होकर तम्बाकू पीता हुआ चौकड़ी मारे बैठा था। बहुत देर बाद उसकी चुप्पी के कारण पागलपन मे आकर उस औरत ने तम्बू की बल्लियाँ उखाड़ डाली और धीरे-धीरे सारा मकान पति के सिर पर गिरने लगा। वह इस सब के बीच दब गया। उसने इन चीजो को हटा कर अपना सिर बाहर निकाला। अब भी वह पहले जैसे ही निश्चिन्त होकर तम्बाकू पी रहा था। पर, अब उसकी आँखो मे एक शरारत खेल रही थी। उसकी औरत उसे कोसती हुई अपना घोड़ा तैयार करने के लिए बढ़ी। वह उसे पार करती हुई डेरे से बाहर नही निकल गई। शायद वह अपने पिता के घर जाना चाहती थी, चाहे वह और कही न जा चुका हो। वह योद्धा चुपचाप उठा और अपने को उस सब गड़बड़-झाले से अलग करके उसने बालो की एक रस्सी अपने लादू घोड़े के जबड़े पर बाँधी और एक बडी बल्ली के आखिरी हिस्से को तोड़कर चार फुट लम्बा एक डण्डा हाथ मे ले लिया। भैंसे पर चढ़ कर वह तेजी से मैदान की ओर निकल चला, ताकि अपनी साथिन को काबू में ला सके।

अगली सुबह सूरज चढ़ने पर हमने चरागाह के पार देखा। आदिवासियो के मकान गिराये जा चुके थे और वे लोग डेरा छोड़ने की तैयारी कर रहे थे। उनका रास्ता पश्चिम की ओर था। हम अपने तीनो आदमियो के साथ उत्तर की ओर बढ़े। चार पशु-फँसाने वाले और मोरै का परिवार भी हमारे साथ ही था। रात तक हम चलते रहे और एक छोटे से झरने के पास के पेड़ो मे हमने डेरा डाला। यहाँ सारे दिन भर बिसोनेत की प्रतीक्षा करते रहे, पर वह न दिखाई दिया। यहाँ से हमारे साथियों मे से दो पशु-फँसाने वाले हमसे विदा हुए और राकी पर्वतो की ओर चले गए। अगली सुबह बिसोनेत को न आता देखकर निराशा मे हमने अपना सफर फिर से शुरू कर दिया। हमारा रास्ता एकान्त, उजाड़ और धूप से झुलसे हुए मैदानो में से होकर गुजर रहा था। एक भी जीवित वस्तु नजर में नही आ रही थी। कही-कही कोई हिरण अवश्य दिखाई दे जाता था, पर वह भी तीर की भाँति निकल जाता था। दोपहर के समय हमें एक बहुत ही अच्छा और दुर्लभ नजारा दिखाई दिया। बहुत से पेड एक धारा के किनारे उगे हुए थे। इस धारा का नाम 'हौर्सशू' धारा था। पेड़ कुछ दूरी तक खूब पत्तो से ढके हुए थे। उनके नीचे काफी घनी और ऊँची घास उगी हुई थी। धारा बहुत तेजी से बह रही थी। उसका पानी बहुत साफ था। इसके नीचे की रेत साफ चमक रही थी। पेड़ो से भरी घाटियो से गुजरती हुई यह धारा गहरे रंग की हो उठी थी। मै एकदम थका हुआ था। इसलिये हार कर मै जमीन पर लेट गया।

सुबह सूर्य बहुत ही सुहावने रूप मे निकला। ऐसा आनन्द इस मैदान पर हमेशा ही छा जाता होगा। हम लोग आगे बढ़े और जल्दी ही हमारे चारो ओर ऊँची नगी पहाड़ियाँ नजर आने लगी। इन पर कही-कही नाशपातियों और थोहर आदि के पौधे लगे हुए थे और वह दूर से छिपकलियो जैसे लग रहे थे। सामने मैदान भी था, जिस पर न तो घास ही अधिक थी और न ही जो मुलायम थी। इस पर बुरे लगने वाले ऊँचे पेडो की एक कतार खडी थी, जिस से एक सीमा-रेखा-सी बन गई थी। वहाँ किसी मनुष्य वा जानवर का नामो-निशान भी मालूम न पड़ता था और ना ही किसी जीवित वस्तु का। हालाँकि, इस स्थान पर ही वह जगह थी, जहाँ आदिवासियो के सारे गाँवो ने जमा होना था। हमें यहाँ हजारो आदिवासियो से मिलने की आशा थी। हमने चारो ओर

बहुत ध्यान से देखना और सुनना शुरू किया। हमने पूरी तेजी के साथ अपने घोडो को सामने के पेडो में से बढ़ने के लिये मजबूर किया। सामने बहुत दूर तक छोटे-छोटे पेड फैले हुए थे। उनके बीच से होकर एक पतली-सी धारा वह रही थी। हम झुकी हुई शाखाओं को हटाते हुए आगे बढने लगे। अब दाएँ-बाएँ सभी ओर हिरण कूदने लगे। बहुत देर बाद हमें सामने का मैदान दिखाई दिया और हम इस पर बढ आये। हमें एक भी डेरा या कोई और जीता-जागता निशान न दिखाई दिया। चारो ओर मीलो दूर तक रेगिस्तान ही फैला हुआ दिखाई दे रहा था। एक भी झाड़ी, पेड़ या पशु नजर नही आ रहा था। हमने लगामे खीची और आदिवासियो के विरुद्ध अपने भाव प्रगट किये। हमारी यात्रा बुरी तरह व्यर्थ हुई। मेरे लिये तो यह और भी बुरी पड़ी। क्योकि, मै जानता था कि मेरी सेहत में थोड़ी गड़बड़ भी बहुत भयानक सिद्ध होगी और इस प्रकार मै अपने उस उद्देश्य में सफल न हो सकूँगा, जिसके लिये तीन-चार हज़ार की मील की दूरी तै करके मै यहाँ तक आया था।

फिर आदिवासी कहाँ थे? वे लोग यहाँ से लगभग बीस मील दूर एक स्थान पर बहुत बड़ी सख्या में जमा होकर युद्ध के नाच आदि कर रहे थे। शायद इस जगह पर भैसो की कमी के कारण वे नही आये थे। भैसो की खालो और मास से ही उनका सारे साल का काम चलता था। इसलिये उन्हे यहाँ इकट्ठा होने में लाभ न दिखाई दिया। यह सब बात हमें बहुत दिन बाद पता चली।

शॉ ने अपने घोड़े को एड़ लगाई और आगे की ओर निकल गया। मै उससे भी अधिक उतावला था। पर मै यह सब कुछ करने की शक्ति से हीन था। इसलिये मै धीमी चाल से बढ़ने लगा। हम एक अकेले पुराने पेड़ तक पहुँच गये। यही एक-मात्र जगह थी, जहाँ हम डेरा डाल सकते थे। इसकी आधी से अधिक शाखाएँ मुरझा चुकी थी। बाकी शाखाओ पर बहुत ही थोड़े पत्ते रह गए थे। इस कारण छाया भी बहुत थोड़ी थी। हमने अपनी काठियाँ तने की छाया में डाल दीं और उन पर बैठ गये। इसी तरह हम एक-दो घण्टे तक छाया के साथ-साथ अपनी काठियाँ सरकाते हुए बैठे रहे। धूप अब भी बहुत तेज थी।

—:०:—

१३ : आदिवासियों की शिकार-यात्रा

अन्त मे हम ताबोते नाम के डेरे पर पहुँच गए। इस ओर हमारी आँखें न जाने कब से लगी हुई थी। उस दिन दोपहर और साँझ के बीच में जितना भी चिन्ता भरा समय बीता, वह हमारी बेचैनी से भरा हुआ था। मै एक पेड़ के नीचे लेटा हुआ सोच रहा था कि अब आगे क्या किया जाए ? मेरी निगाह छाया और सूर्य पर टिकी हुई थी। लगता था, दोनो ही न हिलने की कसम खा चुके थे। हर क्षण यह उम्मीद जगती थी कि व्यापारी बिसोनेत और उसके साथियो के डेरे इसी समय जंगलो से निकल कर बाहर आते दिखाई देंगे। शॉ और हेनरी उनका पता लेने के लिए कुछ दूर तक बढ गए थे। वे सूर्य छिपने से पहले न लौट पाए। जब वे लौटे तो उनके चेहरे प्रसन्न न थे।

शॉ ने बताया, "हम यहाँ से दस मील दूर तक गए और सबसे ऊँची जगह पर चढ गए। परन्तु न तो हमें कोई भैसा दिखाई दिया और न कोई आदिवासी। हाँ, हमारे चारो ओर बीस-बीस मील तक केवल मैदान ही मैदान नजर आता था। हेनरी का घोडा खड्डो और खाइयो में चढने उतरने के कारण नाकाम हो गया था। शॉ का घोडा भी बहुत अधिक थक गया था।

शाम के भोजन के बाद हम आग के चारो ओर इकट्ठे हुए। मैने शॉ से एक दिन और प्रतीक्षा करने की प्रार्थना की। मुझे आशा थी कि शायद बिसोनेत आ जाए। अगर तब भी वह न आया तब हम देस्लारियर को सामान और गाडी के साथ लारामी किले में ही वापिस भेज देंगे और हम स्वय 'बवंडर' के गाँव की ओर चल पड़ेंगे। हमारा यत्न होगा कि हम इसे पहाड़ो मे से गुजरते हुए ही पकड ले। शॉ ने इस प्रस्ताव का विरोध किया। वह आदिवासियो के शिकार को देखने के लिए उतना उत्सुक न था। तब मैंने अकेले ही इस राह पर बढने का फैसला किया। यह बात मैने बडे अनमने ढंग से स्वीकार की, क्योकि मुझे पता था कि मेरी इस कमजोर हालत में ऐसा प्रयत्न बडा दु:खदायी और हानि देने वाला साबित होगा। मुझे आशा थी कि अगले ही दिन बिसोनेत आ जाएगा और हमारा रास्ता तय करने के लायक कोई

खास खबर देगा। इस प्रकार मैं अपने उद्देश्य को अधिक अच्छी तरह पूरा कर सकूँगा।

मेरे न रहने पर हेनरी और उसकी राईफल दल की रक्षा के लिए अधिक जरूरी थे। इसलिए मैने रेमंड को बुलाकर अपने साथ चलने के लिए कहा। रेमड चारो ओर सूनी-सी निगाहें दौड़ाने लगा। अन्त में उसे कुछ सूझा और वह अपनी गाड़ी के नीचे बिछे बिस्तर की ओर बढ गया। उसका शरीर कुछ भारी था और चेहरा चौड़ा। उसके चेहरे पर बहुत मूर्खता-सी झलकती दिखाई देती थी। पर साथ ही उसे अपने पर विश्वास भी बहुत अधिक था। उसके अच्छे गुणो में सबसे बडी बातें थी उसकी अत्यधिक दृढता, खतरे के प्रति निडरता और उसकी सूझ, जो कभी-कभी उसे अच्छे-अच्छे समझदार लोगो से भी ज्यादा तेज़ अक्ल वाला साबित कर देती थी। इस सब के अलावा उसे राइफल चलाना और घोड़े को सम्हालना वगैरह भी आता था।

अगले सारे दिन बहुत तेज़ धूप तपती रही। बहुत दूर तक मैदान मृग-तृष्णा के जाल में पडा हुआ काँप-सा रहा था। हमारे आदिवासियो का तम्बू इन तपती किरणो मे ही तना हुआ था। हमारी बन्दूके पेड़ों के साथ टिकी हुई थी। पर, यह सभी कुछ बुरी तरह झुलसा हुआ-सा लग रहा था। सारे डेरे में बहुत अधिक शान्ति छाई हुई थी। कभी-कभी मच्छरो या भूण्डो के भिनभिनाने के कारण यह चुप्पी टूट जाती थी। आदमी अपनी बाहो पर सिर टिकाए गाडियो के नीचे सो रहे थे। नये विवाहित पति-पत्नी को छोड़ कर बाकी सारे आदिवासी अपने तम्बू मे ही लेटे हुए थे। यह नया जोडा कुछ दूर पर एक चादर सी तान कर उसके नीचे बैठा हुआ था। इनको छोड कर एक और बहुत कमजोर-सा बूढा, पेड़ पर ऊँचे चढकर बैठा हुआ था और अचानक ही आ जाने वाले शत्रुओं को चौकन्ना होकर खोज रहा था। हमने भोजन किया और तब गॉं ने अपने घोडे की काठी कसी।

वह बोला, "मै अभी हौर्सशू बारा तक जाकर वापिस आता हूँ। देखूँ, शायद बिसोनेत वहाँ हो!"

मैंने उत्तर दिया, "मै भी तुम्हारे साथ चलता, पर, मुझे अपनी बची-खुची ताकत को बचाकर रखना है।"

आखिर साँझ भी आई। मै उस सारे समय अपनी राईफल और पिस्तौलों को साफ करने में और यात्रा की दूसरी तैयारियों में लगा रहा। बहुत देर बाद मै सो पाया। शॉ अब तक भी नही लौटा था। पर इससे हमें कुछ बेचैनी न हुई, क्योंकि हमे लगा कि वह बिसोनेत से मिल गया होगा और रात भर उसके साथ ही रहेगा। पिछले एक-दो दिन से मेरी सेहत और ताकत कुछ ठीक हो गई थी। पर आधी रात के समय दर्द का फिर एक दौरा पडा और मैं कुछ घण्टो तक सो न सका। प्लाट् के इस मैदान पर चमकता हुआ चाँद काँपता-सा लग रहा था। बहुत दूर पर अस्पष्ट-सी आवाजों को छोडकर और कुछ भी सुनाई न दे रहा था। ये अस्पष्ट आवाजें जैसे किसी काना-फूसी और घोड़ों की हल्की-हल्की टाप की हों। इन मैदानो मे ऐसी आवाजें सुनाई देना मामूली बात है। अभी मैं फिर से सोने ही लगा था कि बहुत दूर से एक पहचानी सी आवाज़ सुनाई दी। एक बहुत तेज चाल से कोई डेरे तक आया। यह शॉ ही था, जो नगे पाँव अपने हाथ मे बन्दूक लिए तेज़ी से डेरे में घुसा।

मैने पूछा, "तुम्हारे घोडे का क्या हुआ ?" मै बहुत कठिनता से कोहनी का सहारा लेकर उठ पाया। शॉ ने उत्तर दिया, "गुम हो गया ! पर, देस्लारियर कहाँ है ?"

मैने कुछ दूरी पर कम्बलो और खालो के ढेर की ओर इशारा करते हुए बताया, "वहाँ।"

शॉ ने वहाँ जाकर अपनी बन्दूक के कुन्दे से छेड़-खानी की। वफादार कनाडा-निवासी उछल पडा। शॉ बोला, "उठो, देस्लारियर ! जरा आग तेज़ करो और मेरे खाने के लिए कोई चीज़ तैयार करो।"

मैंने पूछा, "बिसोनेत कहाँ है?"

"भगवान् जाने ! उस धारा पर तो कोई भी नहीं है।"

शॉ वहाँ तक गया था, जहाँ हमने आज से दो दिन पहले डेरा डाला था। वहाँ हमारी ही जलाई आग की राख के अलावा कुछ और न पाकर, उसने अपना घोड़ा एक पेड़ से बाँध दिया और खुद नदी में नहाने के लिए उतर गया। अचानक ही उसका घोड़ा किसी कारण चौंक गया और रस्सी तुड़ाकर भाग निकला। शॉ ने दो घण्टे तक उसका पीछा किया पर व्यर्थ। साँझ होने लगी। डेरा अभी बारह मील था। उसने अपनी कोशिश छोड़ दी और हमारी

ओर पैदल ही निकल पड़ा। उसे अपनी इस भयंकर पैदल यात्रा का अधिक हिस्सा अँधेरे में ही विताना पड़ा। उसके जूते चिथड़े-चिथडे हो गए थे और उसके पाँव वहुत अधिक घायल हो गए थे। वह खाना खाने के लिए वैठा। हमेशा की भाँति उसके चेहरे पर शान्ति मौजूद थी। नींद आने से पहले मैने देखा वह आग के आगे चौकडी मारे वैठा तम्बाकू पी रहा था।

जब मैं जागा, हवा में फिर से एक सिलाब-सी अनुभव हो रही थी। मैदान पर कुछ धु धलका-सा छाया था और पूर्व में कुछ लाल धारें फूटती दिखाई दे रही थी। मैंने लोगो को पुकारा और कुछ ही देर में आग तेजी से जलने लगी। नाश्ता तैयार हो गया था। हम घास पर साथ-साथ ही वैठे। अगले बहुत दिनों के लिए सभ्य लोगो के साथ वैठकर खाना खाने का यह मौका अन्तिम ही था।

"अच्छा अब घोडे ले आओ।"

मेरी ठिगनी घोड़ी पाली जल्दी ही आग के पास आ खड़ी हुई। वह वहुत ही मजबूत, कठोर, परन्तु सभ्य, जानवर थी। उसका नाम 'पाल दोरियो' के नाम के कारण रक्खा गया था। इसे मैने उससे ही पौंटियक के वदले में पाया था। वह सवेरे की सैर के लिए सजी हुई न दीखती थी, वल्कि उस पर ऊँचे किनारों वाली पहाड़ी काठी रक्खी हुई थी। उसकी वगलो में लटकने वाली थैलियाँ भारी पिस्तौलो से भरी हुई थी। उसके दोनों ओर दो वोरियाँ लटक रही थीं। एक कम्बल लपेट कर पीछे वाँधा हुआ था। साथ ही आदिवासियो के लिये भेंटे एक खाल मे वाँध दी गई थी। चमड़े के एक थैले में आटा और एक छोटी थैली में चाय भरी हुई थी। ये सब चीजे काठी के पीछे की ओर वाँधी गई थी। उसकी गर्दन के सहारे एक खोजी रस्सी भी वँधी हुई थी। रेमड के पास एक मजबूत काला खच्चर था, जो इसी प्रकार सजा और लदा हुआ था। हमने अपने वारूद के डिब्बे गले के साथ लटका लिये और घोड़ों पर चढ़ गए।

मैने शॉ से कहा, "तुम्हें पहली अगस्त के दिन लारामी किले में मिलूँगा।"

उसने उत्तर दिया "अच्छा यही सही। हो सकता है कि हम उससे पहले मिल जाएँ। मेरा विचार है कि एक या दो दिन मे मै भी तुम्हारे पीछे-पीछे आ जाऊँगा।"

उसने ऐसा प्रयत्न भी किया। अगर उसके रास्ते में दिल तोड देने वाली बाधाएँ न आ जाती, तो वह मुझसे मिल भी जाता। दो दिन बाद उसने देस्लारियर को गाडी और सामान के साथ किले की ओर लौटा दिया और खुद पहाडो की ओर हेनरी के साथ चल पडा। पर उसी समय एक बहुत जबर्दस्त आँधी और तूफान आ टूटा। इसके कारण हमारे ही नही आदि-वासियो तक के पाँव के निशान तक मिट गए। वे दोनो पहाड़ों की तलहटी में रुके पर अगला रास्ता न खोज पाए। सुबह होते ही शॉ ने अनुभव किया कि विष-भरे एक पौधे का उस पर असर हो गया है। इसके कारण उसके लिये अगली यात्रा करना असम्भव हो गया। अब वे किले की ओर बहुत अनमने ढंग से वापिस लौटे। वहाँ एक हफ्ते तक शॉ बहुत अधिक बीमार रहा और जब तक मै लौटकर उससे न मिला, वह वही टिका रहा।

अपनी यात्रा पर निकलने के पहले मैने और रेमंड ने अपने साथियों से हाथ मिलाए और विदा ली। हम मैदान पर, पहाडो की ऊँचाइयों और ढलानो पर, और छोटी-मोटी पहाडियो पर चढते-उतरते आगे बढ़ निकले। सभी स्थान धूप के मारे बुरी तरह जल रहे थे। धूप से सूख कर मानों यह सारा इलाका बहुत-सी खड्डो और खाइयो में फट गया था। परन्तु, यह सब भी हमारे रास्ते में अधिक रुकावट न डाल सका। इनकी ढलानें एकदम नंगी और ऊबड-खाबड थी। तलें पर जाकर हमें बहुत बार काले रीछो के निशान बहुत बडी सख्या में मिले। इतनी बडी सख्या में इस इलाके मे ये कही और नही दिखाई देते थे। पहाड़ो की चोटियाँ चट्टानो के समान कठोर थी और इन पर चकमक और लाल पत्थर बहुत ज्यादा पाए जाते थे। वहाँ से देखने पर रेगिस्तान चारो ओर एक समान फैला हुआ दीखता था। कहीं-कही किसी घाटी के किनारे चीड का एक-आध पेड़ अपनी शाखाएँ फैलाए नजर आ जाता था। इसकी राल की सुगन्ध हमें न्यू इगलैंड के चीडो से भरे पहाड़ो की याद दिलाने लगी। मै बहुत अधिक प्यासा था और चाहता था कि इन पहाड़ियों मे भी हमें वैसे ही बहते हुए झरने मिल जाएँ, जो हमारे इलाके की हजारो पहाडियो मे मिलते है। मै कल्पनाओ मे ही चट्टानो की छाया मे बैठा हुआ अपने को धाराओ में नहाता और डुबकियाँ लेता अनुभव करता। परन्तु वे कल्पनाएँ जैसे दूर से दूर होती चली जाती थी। मुझे चट्टानें काली पड़ती

दिखाई देने लगी जैसे उन पर लगी काई से हल्की-हल्की बूँदें टपक रही हो।

दोपहर के समय एक छोटी-सी धारा दिखाई दी। इसके किनारे कुछ पेड़ और झाड़ियाँ खड़ी थी। यहाँ हमने घण्टा भर आराम किया। यहाँ से सूर्य की दिशा मे ही हम साँझ तक बढ़ते रहे। तब हम एक और धारा के किनारे पहुँचे। इसका नाम 'विटर कॉटनवुड' धारा था। यहाँ झाड़ियों और पुराने पेड़ो का काफ़ी घना जंगल-सा था। थोड़ी-थोड़ी दूर पर इसी प्रकार के झुंड मिल जाते थे। एक पेड़ की जड़ में हमने अपनी काठियाँ टिकाईं और घोड़ो के पाँवो में रस्सी बाँध कर हमने उन्हें चरने के लिए छोड़ दिया। यह छोटी-सी धारा बहुत तेज और साफ थी। सफेद रेत पर बहती हुई इस धारा की आवाज संगीत की भाँति उठ रही थी। छोटे जल-पक्षी उथले पानी में खेलते हुए अपनी आवाज और फ़ड़फड़ाहट से उस सारी हवा को ही गुंजा रहे थे। लारामी पर्वत के पीछे सुनहरे और लाल बादलो के बीच सूरज डूबने ही वाला था। मैं एक लट्ठे पर पानी के किनारे ही लेटा हुआ गहरे पानी मे छोटी-छोटी मछलियो की अशान्त हलचल को देख रहा था। यह बात अजीब लगती है। पर मुझे ऐसा लगा कि जैसे सुबह से अब तक मैंने कुछ और ताकत पा ली है और मेरी सेहत लौटने लगी है।

हमने आग जलाई। रात आने पर भेड़ियों ने चिल्लाना शुरू किया। पहले एक गहरी आवाज उठी और तब उसके उत्तर आस-पास की पहाड़ियों, मैदानो और जंगलो से बड़े भद्दे रूप मे दिया जाने लगा। इन मैदानों में ये आवाजें किसी की भी नीद खराब नहीं करती। हमने घोडी और खच्चर को पास ही बाँध लिया और सुबह होने तक सोते रहे। तब हमने उन्हें फिर चरने के लिए खोल दिया। उनके पाँव अब भी बँधे हुए थे। अभी हम नाश्ता खाने के लिए तैयार हुए ही थे कि रेमंड को कुछ दूरी पर एक हिरण दिखाई दे गया। वह उसके शिकार के लिए उत्सुक हो उठा।

मैंने कहा, तुम्हारा काम पशुओ की देखभाल करना है। मैं बहुत कुछ नही कर सकता, क्योंकि मैं बहुत कमजोर हूँ। अगर पशुओ को कुछ हो गया तो तुम्हारी जिम्मेवारी होगी। तुम जहाँ भी जाओ, तुम्हारी निगाह डेरे पर ही रहनी चाहिए।

रेमंड ने डेरे के आस-पास ही रहने का वायदा किया और बन्दूक हाथ में

ले निकल पड़ा। घोड़ी और खच्चर ने धारा पार की और वही लम्बी घास के बीच दूसरे किनारे पर चलने लगे। उन्हें हरे रंग के सिर वाली मक्खियाँ बहुत सताने लगी। मैने उन्हें देखा कि वे एक और गहरे खड्ड मे उतर गए और फिर बहुत देर तक न लौटे। मै भी धारा के पास उन्हे देखने के लिए गया। किन्तु मेरी चिन्ता बढ गई। मैने उन्हे बहुत दूरी पर पूरी तेजी के साथ दूसरी ओर भागते हुए पाया। पाली आगे-आगे दौड रही थी। उसके पाँवो की रस्सियाँ टूट चुकी थी। खच्चर अपने बँधे पाँवो से भी भाग रहा था। मैने गोली दागी और रेमंड को आवाज दी। कुछ ही क्षण मे वह नदी पार करके भागता हुआ आया। उसके गले मे लाल रूमाल बँधा हुआ था। मैने भागने वाले इन विद्रोही पशुओ की ओर इशारा किया और उनका पीछा करने को कहा। वह उन्हें मन-ही-मन गाली देता हुआ उनके पीछे पूरी तेजी से भागा। उसकी बन्दूक अब भी उसके हाथ में लटक रही थी। मै एक पहाडी तक चढ गया और मैदान की ओर देखने लगा। मै भागने वाले उन जानवरो को अब भी ठीक तरह देख रहा था। अपनी आग के पास लौटकर, मै एक पेड़ की जड के पास बैठ गया। चिन्तित और कमजोर हालत मे ही मैंने कई घंटे गुज़ार दिए। मेरे पास के वृक्ष की उतरी हुई छाल हवा के साथ ही आगे-पीछे उड़ रही थी और चारों ओर हल्की-हल्की आवाज मे मच्छर भिन-भिना रहे थे। परन्तु इन दोनो के अलावा कोई और चीज़ दिखाई या सुनाई न दे रही थी। सूरज ऊपर-से-ऊपर उठता गया। मुझे तब ध्यान आया कि दोपहर हो चुकी है। अब यह सम्भव नही दीखता था कि पशु फिर से पाए जा सकेंगे। और, अगर वे न पाए गए तो मेरी हालत और भी बिगड़ जाएगी। जिस दिन मै विदा हुआ था, शॉ ने उसी सवेरे चले जाने का फैसला किया था। पर पता नही उसने किधर जाने का फैसला किया होगा? उसकी खोज-बीन करने का प्रयत्न व्यर्थ ही होगा। लारामी का किला यहाँ से चालीस मील दूर था। मेरे लिए जैसे-तैसे एक मील चल पाना भी बहुत काफी था। इसलिए यह सोच कर कि 'कठिन-से-कठिन आपत्ति और बाधा के सामने भी नही झुकना चाहिए', मैने यह निश्चय किया कि आदिवासियो के पीछे चलना ही अधिक उचित है। मेरे दिमाग मे एक ही बात आई कि रेमंड को भेज कर किले से कुछ और घोडे मँगवा लिए जाएँ और तब तक उसी जगह रहकर उसके

लौटने की इन्तज़ार करूँ। शायद इस सब में तीन दिन लग जाएँगे। पर, इन तीन दिनों तक अकेले एक जगह पर टिके रहना कतई उचित न होता, क्योंकि यह इलाका आदिवासियों का सबसे खतरनाक इलाका था। इस तरह आदिवासियों के पीछे चलने का मेरा उद्देश्य इस बात से कितना पीछे पड़ जाता और उसके क्या परिणाम होते, यह कहना भी कठिन है। इन बातों का विचार करते हुए मुझे भूख लगने लगी। हमारे पास भोजन की सामग्री के नाम पर कुल दो-ढाई सेर आटा ही बच गया था। इसलिए मैं किसी शिकार की खोज में बाहर निकला। चार या पाँच कर्लयू पक्षियों को छोड़कर कुछ और न दिखाई दिया। वे मेरे सिर पर मँडराते और कभी मैदान में उतर आते। मैंने उनमें से दो पक्षी मार गिराए और लौटने की तैयरी करने लगा। तभी अचानक चौंका देने वाल कोई चीज़ मेरी निगाह में आई। आदमी के सिर की तरह की कोई काली-सी चीज अचानक ही सामने आकर, धारा के किनारे की झाड़ियों में, फिर से छिप गई। ऐसे इलाके में हर अजनबी शत्रु ही लगता है। मैंने उधर ही गोली दाग दी। एक ही क्षण में झाडियों में बहुत तेज़ हलचल हुई। दो सिर सामने दिखाई दिए। पर, ये मनुष्य के सिर नहीं थे। मैंने पहचान कर देखा कि दोनों हमारे अपने ही जानवर घोड़ी और खच्चर थे, जो लौटकर आ रहे थे। रेमड खच्चर पर सवार था। वह बहुत ही मुर्झा गया था और उसकी छाती में बहुत तेज दर्द उठने लगी थी। मैंने पशुओं को सँभाल लिया और वह घुटने के बल झुककर धारा में से पानी पीने लगा। वह दस मील दूरी पर स्थित लारामी धारा तक पशुओं पर निगाह रखता हुआ आगे बढा और वहाँ पहुँच कर बहुत कठिनता से उन्हें पकड़ने में सफल हुआ। मैंने देखा कि उसके हाथ खाली थे। मैंने उससे पूछा कि उसने बन्दूक को क्या किया? उसने बताया कि पीछा करते हुए यह उसे कष्ट देने लगी थी। इसलिए उसने इसे मैदान पर ही रख दिया और सोचा कि लौटते हुए इसे खोज लेगा। पर, लौटते समय वह उसे न खोज पाया। यह हानि बहुत बुरी साबित होती। मुझे इस बात की खुशी थी कि पशु मिल गए थे और रेमंड की स्वामिभक्ति की भी प्रसन्नता थी। वह चाहता तो खुद भी पशुओं के साथ भाग जाता। मैंने उसके लिए थोड़ी चाय तैयार की और बताया कि फिर दुबारा निकल चलने से पहले वह दो घंटे तक आराम कर सकता

है। उस दिन मैने भी कुछ नही खाया था पर तो भी मुझे भूख न थी। वह एक दम ही लेट गया। मैने पशुओ को सबसे अच्छी घास की जगह पर बाँध दिया और हरी लकडियो की आग उनके पास जला दी, ताकि उसके धुँए से मच्छर और मक्खियाँ उनसे दूर रहें। तब पेड़ की जड़ मे फिर से बैठकर सूरज की हल्की चाल की ओर देखने लगा और हर क्षण की उतावली से प्रतीक्षा करने लगा।

अब मेरा बताया हुआ समय बीत गया, तब मैने रेमड को जगाया। हमने काठियाँ कसी और फिर से निकल पडे। पहले हम बन्दूक की खोज में चले। हमारा यह सौभाग्य था कि एक घण्टे मे ही हमने उसे पा लिया। तब हम पश्चिम की ओर मुडे और पहाड़ियो और खड्डो को एक धीमी चाल से पार करते हुए ब्लैक हिल्स की ओर चल पडे। गर्मी अब सताने वाली न रही थी, क्योकि सूर्य को कुछ बादलो ने ढक लिया था। हवा भी कुछ ताजी और ठण्डी हो गई थी। सामने कुछ दूर की पहाडियो में बादल घने रूप में जमा थे और बिजली कडकने की हल्की-हल्की आवाज आ रही थी। शुरू में पहाडियो की कुछ चोटियाँ सफेद-सी दिखाई दी, पर तभी बादलो के घिर आने से एक दम अन्धकार छा गया। हमारे चारों ओर का रेगिस्तान भी जल्दी ही अँधेरे से ढक गया। बिजली बहुत हल्के-हल्के गरज रही थी और छाया पहाड़ो और मैदानो पर धीरे-धीरे बढ रही थी। उसी समय आँधी फूट पड़ी और बिजली भी बहुत तेजी से कडकी। सारे मैदान पर उठता हुआ एक बवंडर बहुत तेज़ी से घूमने लगा और चारो ओर पानी इतनी तेजी से बहने लगा जैसे बाढ आ रही हो। आस-पास कही भी कोई भी बचने की जगह न थी। बहुत देर बाद हमे समतल मैदान में एक गहरी खाई-सी घिरी हुई दिखाई दी। रेमड ने अपने चारो ओर देखा और सारे वातावरण को गालियाँ दी। तभी हमें उस खाई में एक पुराना चीड का पेड दिखाई दिया। इसकी फैली हुई शाखाएँ आँधी और तूफान में हमारे लिए शरण का काम दे सकती थी। हमे वहाँ तक जाने का एक रास्ता भी मिल गया। अपने पशुओ को पास के पत्थरो से बाँधकर हमने ऊपर चढकर कुछ कम्बल अपने सिर पर ओढ लिए और पेड के नीचे बैठ गए। मुझे उस समय समय का पूरा ध्यान तो नही रहा, पर तो भी मेरा अनुमान है कि हम घण्टा भर बैठे रहे होगे। उस समय हमारे चारो ओर

बहुत तेज़ वर्षा होती रही। दूसरी ओर की नंगी चट्टानें भी हमें दीखनी बंद हो गईं। इस तूफान का पहला झोका रुक गया, पर वर्षा तेज धारों मे होती रही। अन्त में रेमंड अधीर हो उठा। खाई में से निकलकर वह समतल मैदान मे आ गया। मैने अपनी जगह से ही उससे पूछा, "मौसम कैसा लगता है ?"

उसने उत्तर दिया, "बहुत बुरा ! चारो ओर अँधेरा ही अँधेरा है।" और तब वह धीरे से उतर आया और मेरे पास ही बैठ गया। दस मिनट और बीत गए।

मैंने कहा, "एक बार फिर जाकर देखो, कि मौसम कैसा है ?" और वह धीमे-से चढकर फिर से देखने लगा। मैने पूछा, "मौसम कैसा है ?"

"वैसा ही। केवल पहाड़ की चोटी के ऊपर एक हल्का-सा प्रकाश फैलता नजर आ रहा है।"

इस समय तक वर्षा धीमी पड़नी शुरू हो गई थी। हमने नीचे जाकर पशुओ को खोला। वे घुटनो गहरे पानी मे खड़े हुए थे। उन्हे खाई से चढाकर ऊपर लाए। हमारे चारो ओर सब कुछ अस्पष्ट और धुँधला-सा लगता था। पहाड़ की चोटी पर दीखने वाला वह चमकदार हिस्सा धीरे-धीरे बढने लगा और बहुत जल्दी ही बादल फटने लगे। तब सूर्य की किरणें बाढ के रूप में धरती पर टूटने लगी। चारो ओर की वनस्पतियो पर गिरती हुई किरणे ऐसे लगी जैसे नये रंग की आग जल उठी हो। जल्दी ही बादल छितराकर बिखर गए, मानो किन्ही बुरी आत्माओ की वे सेनाएँ हो। हमारे चारो ओर का वह मैदान सूर्य की किरणो मे सूखने लगा। उत्तर से दक्षिण तक सामने की दिशा मे, एक इन्द्र-धनुष निकल आया। बहुत दूरी पर सामने के जगल मानो हमे आराम और ताजगी के लिए निमन्त्रण देने लगे। जब हम उनके पास पहुँचे, तब उनकी बूँदो मे से छनती हुई किरणें सतरंगी बनकर नाचने लगी और पक्षियो की फड़फड़ाहट और गीत मस्ती देने लगे। कुछ अजीब पखो वाले पक्षी वर्षा के कारण गीले पडे हुए पत्तो या शाखो से चिपटे हुए थे।

रेमड ने बहुत कठिनता से आग जलाई। हमारे जानवर चरने के लिए घास पर टूट पडे। मै भी कम्बल लपेटकर एक जगह लेट गया और साँझ के इस सुहावने नजारे को देखने लगा। सामने के पर्वत कभी गुस्से मे भरे हुए

दीख रहे थे, पर अब वे बहुत ही प्यार और हँसी में भरे हुए दीखने लगे। सामने के मैदान के खड्ड और खाइयाँ भी इस धूप से प्रसन्न हो उठी। मै गीला भी था, बीमार भी और चिन्तित भी ! इस नजारे को देखकर मेरा दिल खिल उठा और मै इसमे आनन्द लेने लगा।

सुबह होने पर रेमड जागा। उसकी खाँसी बहुत तेज हो गई थी। उसे कोई और चोट लगी न दीखती थी। हम फिर से घोड़ो पर चढ़े और उस छोटी धारा के पास आए। पेडो के बीच से निकलकर हमने सामने के मैदान पर अपनी यात्रा शुरू कर दी। धीरे-धीरे आगे बढते हुए हम आदिवासियो के निशानो को खोजने लगे। हमें विश्वास था कि वे इधर ही कही पास से गुजरे है। परन्तु, घास बहुत छोटी थी और ज़मीन बहुत सख्त। इस पर से गुजरने वालो का निशान भी दीखना कठिन था। पहाडों को चढ़ते-उतरते और घाटियो को पार करते हुए हमारा सफर बढता रहा। हम एक पहाड़ी की तलहटी मे से गुजर रहे थे। मुझसे कुछ आगे चलते हुए रेमंड ने अपने खच्चर की लगाम एकदम ही खींच ली और उतर पडा। तब वह एक घाटी की ओर बहुत झुककर धीरे-धीरे बढा। उसी समय मुझे उसकी बन्दूक के चलने की आवाज़ आई। एक घायल हिरण अपने तीन पाँवो पर दौडता हुआ पहाडी पर आ निकला। मैने अपनी घोड़ी को उसके पीछे दौडा दिया। बहुत जल्दी मै उसकी बगल मे जा पहुँचा। कुछ देर उछल-कूद मचाने के बाद हिरण शान्त खडा हो गया, जैसे वह भागने से निराश हो गया हो। उसकी चमकती हुई आँखे मेरे चेहरे की ओर बड़ी करुणा से भर कर उठी। बहुत दु ख के साथ मैने उसके सिर में गोली दाग दी। रेमंड ने उसकी खाल उतारकर उसे चीर लिया। हमने उसके चारो हिस्सो का मास बोरियो में भर लिया। हमे इस बात की प्रसन्नता थी कि हमारा कम पडता हुआ भोजन का सामान ऐसे मौके पर फिर से ठीक मात्रा में हो गया।

पहाड की चोटी पर पहुँचकर हम सामने के मैदान में बहुत-से वृक्षो और छायादार अमराइयो को देख रहे थे। वे सब लारामी धारा के साथ-साथ खडे थे। दोपहर से पहले ही हम इसके किनारो तक पहुँच गए, और बहुत उतावले होकर आदिवासियो के पाँवो के निशान खोजने लगे। हमने कई मील तक इस धारा के साथ, कभी तट पर और कभी पानी में बढ़ते हुए, रेत

और कीचड़ के हर जमाव पर ध्यान रखा। खोज मे इतना आगे बढ आने पर हमे लगा कि शायद हम उनकी राह को बिना खोजे ही बहुत पीछे छोड़ आए है। बहुत देर बाद मैने रेमंड को तेजी से चिल्लाते हुए और अपनी खच्चर पर से कूदकर किसी चीज पर झूलते हुए देखा। मै उसके पास तक गया। यह किसी आदिवासी के जूते का निशान था। इससे उत्साहित होकर हमने अपनी खोज जारी रखी। कुछ दूरी पर ही मेरा ध्यान एक ऐसी जगह पर गया जहाँ पाँच-छः बच्चों और आदमियो के पाँवो के निशान थे। तभी धारा के परले किनारे एक सोते के मुहाने पर रेमंड ने कुछ देखा। धारा पार कर वह कुछ दूर तक गया और चिल्ला पड़ा। मै भी उसके पास तक जाकर खड़ा हो गया। यह सोता फैली हुई रेत पर से बह रहा था और इस-पर एक बहुत पतली धारा के रूप में पानी बह रहा था। इसके दोनो ओर बहुत पास-पास झाडियाँ उगी हुई थी। मैने देखा कि रेमड झुककर तीन या चार घोडो के निशान देख रहा था। आगे बढने पर हमने एक आदमी, फिर एक बच्चे और बाद में बहुत सारे घोड़ो के निशान पाए। अन्त में किनारे की झाडियाँ उन निशानो से कुचली हुई दिखाई देने लगी। यहाँ सैकड़ो निशान मौजूद थे। इनमे तम्बुओ को सम्भालने वाली बल्लियो के निशान भी मिले हुए थे। अब यह निश्चित था कि हमने उन आदिवासियो की पगडंडी खोज निकाली थी। कुछ आगे बढकर मैने देखा कि सामने के मैदान मे लगभग एक सौ पचास घरो की राख पड़ी हुई है। उसके पास ही हड्डियो और खालो के टुकडे भी इधर-उधर बिखरे हुए है। कुछ जगह वे खूँटे भी गडे थे, जिनसे घोडे बाँधे गये होगे। अपनी सफलता पर प्रसन्न होकर हमने एक अच्छे पेड को अपनी शरण के लिए चुना और अपने पशुओ को चरने के लिए खुला छोडकर ताजे मारे गए हिरण के मांस को पकाने की तैयारी करने लगे।

कठिनाइयो और मुसीबतो ने मेरे अन्दर एक अजीव ताजगी भर दी। इससे मेरी सेहत और शक्ति दोनो ही बढ गई थी। हम दोनो ने बहुत आनन्द के साथ-साथ खाना खाया। अब हमें यह खुशी थी कि एक कोना पकड़ लेने के बाद इन निशानो के दूसरे कोने को भी हम खोज निकालेंगे। पर जब पशुओ को लाया गया तो हमने देखा कि अभी हमारी मुसीबतें समाप्त नही

हुई है। अपनी घोड़ी पर काठी बाँधते हुए मैने देखा कि उसकी आँखे एकदम सूजी हुई थी और उसकी पलको की खाल का रग काला पड़ गया था। मै उसपर सवार होकर बढने लगा, पर वह लड़खड़ाकर एक तरफ गिर गई। बहुत हिम्मत से वह फिर खड़ी हुई, पर उसका सिर झुका हुआ था। या तो उसे किसी साँप ने काट लिया था, या किसी जहरीले पौधे को उसने खा लिया था, या फिर कोई और ही बीमारी अचानक उस पर हावी हो गई थी। कुछ भी हो उसकी यह बीमारी बहुत बुरे और दुर्भाग्यपूर्ण समय पर आई। एक बार फिर कोशिश करने पर मै उस पर चढने मे सफल हो गया। हम लोग बहुत धीमी चाल से आदिवासियो की पैंड पर बढने लगे। इस पर बढते हुए हमे एक पहाड़ी पार करके एक भयकर मैदान मे उतरना पड़ा। यहाँ वे निशान अचानक ही गायब हो गए थे। जमीन बहुत ही कठोर थी। अगर कभी इस पर किसी खुर के निशान रहे भी होगे, तो कल की वर्षा ने उन्हें मिटा दिया होगा। आदिवासियो का कोई भी गाँव प्राय: आध मील की चौड़ाई तक फैला हुआ चलता है। इसलिए उनके कोई भी निशान साफ नही होते और उन्हें खोजने का काम बहुत कठिन हो जाता है। सौभाग्य से सामने बहुत-से छोटे-छोटे टीले थे, जिनपर कही-कही आदमियो, घोड़ो और मकानो की लम्बी बल्लियो के निशान बने हुए थे। कुछ जगह कुछ खास प्रकार के पौधे भी कुचले हुए थे। इनसे हमे राह खोजने मे मदद मिली और हम बहुत धीरे-धीरे आगे बढने लगे। कई बार हम इन निशानो को बिल्कुल ही खो बैठते और फिर अचानक ही पा लेते। दोपहर के समय हम बिल्कुल ही गलत राह पर पड गए। हम एक ऐसी जगह थे जहाँ चारो ओर, एक भी निशान हमारी राह तय करने के लिए नही दिखाई देता था। यह कटा-फटा मैदान हमारे चारो ओर मीलो दूर तक फैला हुआ था और सामने उत्तर से दक्षिण तक एक बहुत लम्बी पंक्ति फैली हुई थी। हमारे दाहिनी ओर लारामी पर्वत और सब पहाड़ियो से कुछ ऊँचा होकर उठा हुआ था। बहुत दूर से ही हमने देखा कि इस पर सफेद धुआँ बहुत बड़ी मात्रा मे उठ रहा है।

रेमंड ने कहा, "मेरे विचार में यहाँ कुछ आदिवासी अवश्य होगे। अच्छा हो कि हम उधर चलें।" परन्तु इस योजना को यूँ ही स्वीकार नही किया

जा सकता था, क्योकि हमे खोई हुई पैड़ को फिर से खोजना था। हमारा यह फैसला हमारे अच्छे भाग्य के कारण ही था, क्योकि बाद मे हमें आदिवासियो से पता चला कि यह धुआँ काक जाति के कुछ सैनिको ने उठाया था।

शाम बढ आई, पर पहाड़ो की तलहटी के अलावा न कही जंगल का निशान था और न पानी का। इसलिए हम उसी ओर बढे। हमने अपना रास्ता लारामी धारा के उस हिस्से की ओर मोड़ दिया, जहाँ से वह पर्वत से मैदान पर आ जाती है। जब हम यहाँ पहुँचे तो सामने की नगी पहाडी चोटियो पर अब भी धूप चमक रही थी। पहाड की अँधेरी कँद से अपने को छुडाती हुई वह नदी एक बहुत तेज धार के रूप में बह रही थी। इन पहाड़ो और घास के मैदानो मे कुछ ऐसी विशेषता थी कि जिससे मन अचानक ही खिल उठा। नदी के किनारे ही घास भरे मैदान का एक टुकड़ा था, जिसके चारो ओर छोटे-छोटे टीले थे और जो हमारी आग को और हमें आस-पास घूमने वाले आदिवासियो की निगाह से बचा सकता था। यहाँ घास मे छिपे हुए बडे-बडे पत्थरो के कई घेरे दिखाई दिए। डाकोटा परिवारो के सर्दियो का निवास कभी यहाँ रहा होगा। हम वही लेटकर सो गए और काफी दिन चढने पर ही जागे। किनारे पर से एक बहुत बड़ी चट्टान आगे बढी हुई थी। इसके पीछे से गहरा पानी धीरे-धीरे चक्कर काटता हुआ बढ़ रहा था। मै लोभ न रोक सका। अपने कपडे उतारकर इसमे घुस पड़ा और एक बार धारा के साथ ही मै भी चक्कर खाने लगा। भँवर से बचने के लिए मुझे पानी के ही एक पौधे की जड मजबूती से पकड़नी पडी और तब कही मै किनारे पर आ सका। मुझे कुछ इतनी ताजगी अनुभव हुई, जैसे मेरी सेहत लौटने लगी हो। अभी हम कुछ ही दूर बडे होगे कि मेरी यह प्रसन्नता और ताजगी मिटने लगी। फिर से मै उसी प्रकार झुककर बढने लगा। अब मेरे लिए सीधा बैठना भी मुश्किल था।

रेमंड ने कहा, "सामने देखो! वह जो खड्ड दिखाई दे रही है! आदिवासी उधर से ही गए होगे, यदि सचमुच वे इसी राह से बढे है।"

हम उस जगह तक पहुँच गए। लगता था पहाडो के बीच जैसे एक गहरा खड्ड हो। यहाँ पर हमे एक छोटे-से टीले पर घरो की बल्लियो के चिह्न

दिखाई दे गए। हमारे लिए यही बहुत था। अब सन्देह का कोई मौका न था। हम ज्यो-ज्यो आगे बढे रास्ता तग पडता गया। यहाँ आदिवासियो को बहुत सटकर चलना पड़ा था। इसलिए उनके निशान बहुत साफ और अधिक मात्रा में दीख रहे थे। यहाँ से हम चट्टानो वाली जगह पर आ निकले और फिर एक नई घाटी में उतरे। यह घास और छोटे पौधो के कारण हरी-भरी थी, जो जगह-जगह से लोगो के गुजरने के कारण, मसले जा चुके थे। हम चट्टानो पर से होकर धीरे-धीरे बढे। बहुत कठिनता से इन सैकड़ो फुट ऊँची चोटियो के बीच से होकर चलने लगे। रेमड अपने मजबूत खच्चर के साथ मुझसे कुछ आगे-आगे चल रहा था। यहाँ आकर हम एक ऐसी सीधी चढ़ाई पर आए, जो शायद सबसे अधिक ऊँची चढाई थी। मेरी घोड़ी चीखती और लडखड़ाती कुछ दूर तक बढ़ी और तब एकाएक रुक गई। अब उसके लिए आगे बढ़ना कठिन था। मैने उतर कर उसे चलाने की कोशिश की। परन्तु, मेरी ताकत भी जल्दी ही जवाब दे गई। इसलिए मैने उसकी खोजी रस्सी को ढीला कर दिया और अपनी बाँह के चारो ओर बाँधकर अपने हाथो और घुटनो के बल पर आगे सरकने लगा। चोटी पर पहुँचने पर मै बहुत बुरी तरह थक गया था। मेरे माथे से पसीना टपक रहा था। मेरे पास ही मेरा घोडी एक बुत की तरह खडी थी। उसकी छाया एक झुलसती हुई चट्टान पर पड रही थी। मै इसी छाया में कुछ देर के लिए लेट गया। अब मेरे अगो मे हिलने-डुलने की ताकत बिल्कुल न रही थी। चारो ओर सुइयो जैसी काली-काली घास धूप मे अपना सिर उठाए खडी थी। कोई भी पेड, झाड़ी या लम्बी घास यहाँ उगी हुई न दीखती थी। चारो ओर असह्य धूप आग बरसा रही थी।

कुछ देर बाद ही मै फिर घोडी पर चढकर बढने लायक हो सका। तब पश्चिम की ओर की घाटी मे हम उतरने लगे। इस हालत मे कुछ ऐसा भद्दापन था, जिसके आगे आदमी और पशु एक समान ही असहाय थे। मै और घोडी—दोनों ही—न भाग सकते थे और न चढ़ सकते थे।

रेमंड की काठी की रस्सी फिसल गई। मै आगे चलता रहा, पर वह उसे ठीक करने के लिए रुक गया। मै उस छोटी सी ढलान के किनारे पर पहुँच गया था। यहाँ एक अच्छा नजारा मुझे दिखाई दिया। एक कोने मे कुछ हरी घास चोटियों पर छाई हुई दिखाई दे रही थी। यही पर कुछ झाडियाँ और

चीड के पुराने पेड़ भी थे। मेरे अन्दर जैसे बचपन के दिन लौट आए और एक तेज आवाज ने जैसे मेरा स्वागत किया। यह आवाज झींगुर की थी, जो सामने के चीड़ की शाखाओ से चिपटा हुआ चिल्ला रहा था। तब मैं इन झाड़ियो में से होता हुआ आगे बढा। यहाँ मुझे अचानक ही किसी झरने की आवाज आई। घोडी खुद ही उधर मुड़ पड़ी और पेडो की शाखाओ में से होती हुई एक काली चट्टान की ओर बढ गई। इसके नीचे हरियाली छाई हुई थी। इस पर से एक ठण्डी धारा लगातार नीचे की रेत मे जमा पानी पर गिर रही थी। यहाँ से पानी निकलने का कोई रास्ता नही दीख रहा था। लगता है पानी जमीन में ही सूखता जा रहा था। जब तक मैंने इस चश्मे मे से अपना प्याला भरा, घोड़ी अपना सिर पानी में डुबोकर आनन्द मे मस्त हो रही थी। साफ था कि हमसे पहले भी बहुत-से दर्शक यहाँ आए थे, क्योकि हिरण, बारहसिंगा और भेड़ो के निशान यहाँ पर दिखाई दे रहे थे। अभी कुछ ही देर पहले आये काले भालू के निशान भी यहाँ मौजूद थे। लगता है वह इन्ही पहाडो में रहता होगा।

इस चश्मे को पार करने के कुछ ही देर बाद हमे एक घास का हरा मैदान, पहाडो से घिरा हुआ, दिखाई दिया। इस पर आदिवासियो के पड़ाव के सभी निशान मौजूद थे। रेमड की खोजी आँखो ने तुरन्त ही वह जगह पहचान ली, जहाँ रेनल का घर और उसके घोडे रहे होगे। पास आकर मैं भी इस स्थान को देखने लगा। रेनल और मुझमे कोई मित्रता या समान बात न थी। पर तो भी मुझे अपने इस प्रकार उत्सुक हो उठने पर अचरज ही हुआ। हम दोनो मे अगर कोई भी समानता थी तो वह केवल गोरा होने के कारण ही थी।

आधे घण्टे में ही हम इन पहाड़ो से बाहर निकल आए। अब हमारे सामने एक विस्तृत मैदान था, जो एकदम उजाड़ और मैदानी कुत्तो से जगह-जगह भरा हुआ था। ये कुत्ते अपनी माँदो के बाहर बैठे हुए हम पर भौंकते रहे। यह मैदान कम से कम छ: मील चौडा रहा होगा। पर उसे पार करने में हमें कम-से-कम दो घण्टे का समय लग गया। अब यहाँ हमारे सामने पहाड़ियो की एक नई माला नजर आई। इनकी चोटियाँ काफी घनी झाड़ियो से ढकी हुई थी, पर इनकी ढलानें काले पत्थरो से ढकी थी। ये सभी आँधी

और तूफान के कारण बडे भयकर और झुके हुए लग रहे थे। जब हम आदिवासियो की पैड पर बढते हुए एक तग रास्ते से गुजरे, तो ये पत्थर हमारे सिर पर गिरते हुए-से दीखने लगे।

हमारा रास्ता अब घने पेडो मे से होकर बढने लगा। बीच-बीच मे छाया और धूप पडती रहती थी। इन पेडो की शाखाओ के बीच से हम इधर से उधर घूमते हुए कई बडी-बडी चोटियो को साफ देख सकते थे। कुछ चट्टाने अगल-बगल से हमारे दाएँ-बाएँ हमें घेरती-सी दीख रही थी।

एक खुली जगह पर चारो ओर ऊँची चट्टानो की दीवारो से घिरे हुए दो आदिवासी किले दिखाई दे रहे थे। ये चौकोन थे और लकडी और बल्लियो से मिलाकर बनाए गए थे। ये बिल्कुल उजाड-से थे, शायद साल भर पहले के बने हुए थे। हर एक मे बीस आदमी रह सकते थे। लगता है कभी इस शोक भरे स्थान पर कोई दल शत्रुओ से घिरकर नष्ट हो गया होगा और तबसे इन चट्टानो या पौधो ने कभी भी किसी भी सघर्ष या शत्रु को न देखा होगा। फिर भी अगर कोई खून-खराबी के चिह्न बचे होगे तो वे इन घासो या झाडियो में छिप गए होगे।

धीरे-धीरे पर्वतो मे से निकलकर रास्ता खुले मैदान मे आ गया। यहाँ हमें फिर से आदिवासियो की बस्ती के निशान दिखाई देने लगे। हमारे सामने ही पेड और झाडियाँ थी। घण्टा भर आराम करने के लिए हम यही रुक गए। भोजन समाप्त करने के बाद रेमंड ने चिलम सुलगाई और पेड की जड मे ही बैठकर उसे पीने लगा। कुछ देर तक मै उसे उसी गम्भीर ढंग से तम्बाकू पीते हुए देखता रहा। थोडी देर बाद उसने चिलम धीरे से हटाई और बहुत गम्भीरता से बोला, "हमारे लिए आगे जाना अच्छा न होगा।"

मैने पूछा, "क्यो नही ?"

उसने बताया कि इलाका बहुत खतरनाक हो गया है। हम नाग, अरापाहो, कृष्णपाद आदि जातियो के इलाके मे आ गए है। अगर उनकी कोई भी घूमती हुई टुकडी हम तक पहुँच गई, तो हमे अपनी जान गँवानी होगी। परन्तु, उसने यह भी विश्वास दिलाया कि मै जैसा भी फैसला करूंगा वह वफादार होकर मेरा साथ देगा। मैने उसे घोडे लाने के लिए कहा। हम आगे चल पडे। मै स्वीकार करता हूँ कि आगे बढते ही हमें बहुत-से सन्देह

जगने लगे। यदि मेरे अन्दर उस यात्रा के लायक, शरीर और मन में थोड़ी-सी भी ताकत होती और मेरे पास शक्ति और उत्साह से युक्त कोई अच्छा-सा घोड़ा होता तो मैं दुनिया की किसी भी बात के मुकाबले के लिए तैयार था।

चट्टानें हमारे अधिक निकट सरकती आईं। ये ऊँची और सीधी ढलान वाली होती जा रही थीं और हमारे रास्ते को तंग बनाती जा रही थीं। तब हम एक ऐसी खाई में घुसे, जिसके मुकाबले की दूसरी खाई मैंने कभी नहीं देखी। लगता था कि पर्वत चोटी से तल तक चिर गया है। नीचे उतरकर हम तलहटी पर बहुत धीरे-धीरे सरक रहे थे। यहाँ सिलाव और अँधेरा छाया हुआ था, पर साथ ही घोड़ों के खुरों के निशान भी थे। झरना बहुत हल्की-सी आवाज़ में गूँजता हुआ चल रहा था। मानों वही हमारा सच्चा साथी था। कभी-कभी पत्थरों में टकराता हुआ पानी हमारे सारे रास्ते में छा जाता और कभी एक ओर हो जाता। सूखी जगहों पर पाँव रखते हुए हम बढ़ने लगे। ऊपर देखने पर हमें आकाश एक पतली पट्टी के रूप में, दो काली चोटियों के बीच, नीला-सा चमकता हुआ दिखाई दे रहा था। कुछ ही देर बाद हमारा रास्ता चौड़ा होने लगा और सूर्य की किरणें पानी पर से चमकती हुई हम तक पहुँचने लगीं। घाटी यहाँ काफी चौड़ी हो गई थी। झाड़ियाँ, पेड़ और फूल यहाँ, चश्मे के दोनों ओर, काफी अधिक थे। ऊपर की घाटियों पर भी बहुत-सी झाड़ियाँ और फलों के पेड़ उगे हुए दिखाई दे रहे थे। कुछ देर बाद फिर अँधेरे रास्ते में से बढ़ना पड़ा। यह रास्ता मील भर से अधिक लम्बा रहा होगा। इस रास्ते के अन्त तक पहुँचते-पहुँचते हमारे पशुओं के बिना नाल वाले खुर घायल हो गए और उनके पाँवों पर भी नुकीले पत्थरों के कारण काफी चोटें आईं। इन पर्वतों से निकलकर हम एक और मैदान पर आए। हमारे चारों ओर ऊँची चोटियों का एक घेरा-सा बन गया था। लगता था चारों ओर चुप्पी और एकान्त का राज्य हो। यहाँ भी आदिवासियों ने डेरा डाला था। निश्चय ही वे अपनी औरतों, बच्चों और पशुओं के साथ इस रास्ते से होकर बढ़े थे। इस प्रकार जो रास्ता उन्होंने तीन दिन में तय किया था हमने उसे एक ही दिन में तय कर लिया था।

इस घेरे से निकलने का एकमात्र रास्ता एक पहाड़ी पर से होकर ही

था। यह पहाडी दो सौ फुट ऊँची थी। हम बहुत कठिनता से इस पर चढ़ पाए। चोटी से हमने देखा कि अब पहाड़ों का सिलसिला समाप्त हो गया था। हमारे सामने रेतीला मैदान फैला हुआ था, हर जगह खड्ड और घाटियो ने इसे चीर रखा था। हमारे बाई ओर एक ऊँचा पहाड़ आकाश में उठा हुआ था। इस पर घूमते हुए चार काले धब्बे से साफ दिखाई दे रहे थे। निश्चय ही ये भैंसे थे। इनके दिखाई देने को हमने एक अच्छा लक्षण माना, क्योंकि जहाँ भी भैंसे मिलते है वही पर प्राय आदिवासी भी डेरा डालते है। हमे उम्मीद थी कि हम उसी रात उनके गाँव तक पहुँच जाएँगे। हमारी उत्सुकता दो कारणो से थी, एक तो यह कि हम अपना यह सफर जल्दी ही समाप्त करना चाहते थे और दूसरा यह कि भले ही दिन में वहाँ पहुँचना अच्छा होता पर, उनसे अलग होकर रात मे पडाव डालना खतरे से खाली न होता। जब हम आगे बढे, सूर्य छिपने लगा था। थोडी ही देर मे सूर्य छिपने ही वाला था, जबकि हमने एक पहाडी की चोटी से अपना डेरा डालने के लिए एक जगह ढूँढ ली। मैदान एक ज्वार वाले समुद्र के समान दिखाई दे रहा था, मानो एकदम ऊँची लहरो के बाद यह शान्त पड़ गया हो। इसका आधा हिस्सा धूप से चमक रहा था, और आधा छाया मे डूब गया था। शाम की सुनहरी धूप ने इसे रंगबिरगा बना दिया था। चारो ओर जगली झाड़ियाँ उगी हुई थी—खाइयो में भी और टीलो पर भी! हमारे सामने थोडे-से हिस्से में, घास का एक मैदान भी था और पास ही पानी के कुछ छोटे-से जोहड भी चमक रहे थे। हम यहाँ पर आए और आग जलाकर हमने अपने घोडो को चरने के लिए खुला छोड़ दिया। यहाँ एक छोटा-सा सोता था, जो कुछ दूर तक बहकर इस मैदान को हरा-भरा बना रहा था। यही सोता कही-कही जोहडो के रूप मे फैल गया था। यह इस कारण हुआ कि—बीवर नाम के जन्तु ने इसके चारो ओर बाँध जैसा बना दिया था।

हमने हिरण के बचे हुए मास के अन्तिम टुकडे को भूना और अपने भोजन के सामान की कमी पर चिन्ता करते हुए उसे खाने ही लगे थे, तभी एक सलेटी रग का खरगोश सामने से उछलता हुआ आया और हमसे पचास गज की दूरी पर बैठ गया। मै बिना सोचे बन्दूक उठाकर उसे मारने ही लगा था, कि रेमड ने मुझे ऐसा करने से मना किया। उसने बताया कि कही आसपास

का कोई आदिवासी इस आवाज़ को न सुन ले। उस रात पहली बार हमें यह खतरा अनुभव हुआ कि हम एक भयानक स्थिति मे फँस गए थे। जो लोग आदिवासियो के स्वभाव को नही जानते, उन्हें यह अजीब ही लगेगा कि जिन लोगो से मिलने के लिए उतावले होकर हम बढ़ रहे थे, उन्ही से हम खतरा भी खा रहे थे। अगर कही हमारे इन विश्वासपात्र मित्रो की किसी टोली ने किसी पहाड़ की चोटी पर से दिन मे हमें देख लिया होता, तो रात को वे हमें ही लूटने के लिए आ जाते और शायद हमारे घोडे और सिर तक हमसे अलग कर देते। परन्तु वहाँ रहकर एक दम निराश भी नही हुआ जाता। मुझे याद है कि मैने और रेमड ने उस रात फिर दुबारा इस बात की चिन्ता नही की।

हम लगभग आठ घंटे तक बेहोश होकर अपनी काठियो के सिरहाने पर ही सोते रहे। जब मैं जागा तो पाली का पीला सिर मेरे ऊपर छाया हुआ था। मैने उठकर उसे देखा, उसके पाँव कुचले गए और सूजे हुए थे, पर उसकी आँखें और उसकी चाल पहले से बहुत अच्छी थी। लगता है उसकी बीमारी दूर हो गई थी। हम आगे बढे। हमें आशा थी कि घटे भर मे ही हमे आदिवासियो का गाँव दीखने लगेगा। पर, हमे फिर निराशा मिली। अब मैदान बडा कठोर और पत्थरो वाला हो गया था। हम दोनो अलग-अलग बँटकर चलने लगे, ताकि कही कोई निशान दीख जाए। अन्त में मुझे चट्टानो के किनारे बल्लियो के निशान दिखाई दे गए। अब हम उधर से ही बढ़ने लगे।

"उधर मैदान पर वह काला धब्बा किस चीज़ का है ?"

हम चढकर वहाँ तक गए और पाया कि गुजरते हुए शिकारियो ने इस बड़े भैंसे को मारा था। इसके उलझे हुए बाल और खाल के टुकडे चारो ओर बिखरे पडे थे। भेडियो ने इसका मज्जा लूटकर इसे खोखला कर दिया था। इस समय इस पर बडी-बडी काली टिड्डियाँ बैठी हुई थी। लगता था वह चार-पाँच दिन पहले मारा गया था। इसे देखकर हमारा हौसला टूट गया और मैने रेमड से कहा, "लगता है अब भी आदिवासी पचास साठ मील दूर होंगे।" पर उसने अपना सिर हिलाकर विरोध जताया और कहा कि वे अपने शत्रुओ के इलाके में इतनी दूर जाने की हिम्मत नही कर सकते।

इसके बाद निशान फिर गुम हो गए। हम पास की एक चोटी पर चढ़े। कही कुछ दिखाई न देता था। हमारे सामने एक समतल मैदान कुछ दूर तक

दाएँ-बाएँ फैला हुआ था। इसके सामने की ओर छोटी-छोटी पहाड़ियाँ अवश्य थी। यह दस बारह मील लम्बा अवश्य होगा। इस सारे खुले और लम्बे-चौड़े मैदान मे आदिवासियो या भैसो का एक भी निशान हमें न मिला।

रेमड बोला, "आपने देखा, हमें उलटा लौट चलना चाहिए।"

मेरा विचार इससे मेल न खाता था। नौकर होने के कारण रेमड को मेरी बात माननी पडी। हम सामने की पहाडी से उतरे और मैदान के पार चलने लगे। हम इतनी दूर आ चुके थे कि अब न तो घोडी मे और न ही मेरे मे जान बची थी कि हम वापिस लारामी किले की ओर लौट सके। मुझे पता था कि कठिनाई के ऐसे मौको पर सफलता पाने के लिए आगे बढना ही एक मात्र उचित उपाय है। हमारे चारो ओर की ज़मीन भैसो की खोपडियो और हड्डियो से भरी पडी थी। लगता है साल-दो साल पहले यहाँ आदिवासियो ने कभी भैसो पर घेरा डाला होगा। पर हमे कोई भी जीवित शिकार सामने नजर न आया। बहुत देर बाद एक हिरण उछलकर सामने आया और हमे देखने लगा। हमने गोली दाग दी, पर दोनो का ही निशाना चूक गया। पशु हमसे कुल अस्सी गज की दूरी पर भी नही था। शायद इसमे हम दोनो के उतावलेपन का दोष था। थोडे से आटे को छोडकर हमारे पास खाने को कुछ और नही रह गया था। यहाँ हमें कुछ दूरी पर चमकते हुए कुछ जोहड नजर आए। पास पहुँचने पर हमे इनके चारो ओर की लम्बी घास मे से भेडिए और हिरण उछलते हुए नज़र आने लगे। इन जोहडो के पानी पर तैरते हुए कुछ जलमुर्ग भी दिखाई दिए, जो चीखते हुए उड जाते थे। हिरण पर निशाना चूकने के बाद रेमड ने इन पक्षियो पर निशाना साधना चाहा। पर, इसमे भी उसे सफलता न मिली। यहाँ पानी भी साफ न था। इसके तट भैसो के कारण इतने दलदले हो चुके थे कि हमारे घोडे इस तक पहुँचने मे घबराने लगे। इस लिए हम घूमकर फिर से पहाड़ियो की ओर बढने लगे। जहाँ-जहाँ भैसो ने घास को नही कुचला था, वहाँ-वहाँ हमारे घोडो की गर्दनो तक ऊँची उगी हुई थी।

फिर हमारे सामने ऊसर और उजाड मैदान आ गया। हमें रास्ता बताने के लिए एक भी निशान न था। ज्यो-ज्यो हम पहाडियो के पास आते गए, हमे एक-दर्रा सा दिखाई देने लगा। अगर आदिवासी इधर से गुजरे होते तो

वे निश्चय ही इसी दर्रे मे से गए होगे। धीरे-धीरे हमने इसपर बढ़ना शुरू किया। जब मैने चारो ओर पाँव या किसी और वस्तु का निशान न पाया, तो मुझे लगा कि हम कतई असफल रहेंगे; हालाँकि इस सारे रास्ते मे भैसो की खोपड़ियाँ बिखरी पडी थी। हमें इसी समय बिजली कड़कती सुनाई दी। लगा कि तूफान आने वाला था।

जब हम इस दर्रे की ऊँचाई पर पहुँचे, तो सामने का नज़ारा साफ़ होने लगा। हमे सामने, क्षितिज पर, उठते हुए काले बादल दिखाई देने लगे। उनसे भी परे 'मेडिसन बो' नाम की पहाडियो की कतार दिखाई दे रही थी। यही से राकी पर्वतमाला आरम्भ हो जाती है। धीरे-धीरे सामने का मैदान पूरी तरह दिखाई देने लगा। चारो ओर हरियाली ही हरियाली छाई हुई थी। कोई भी जीवित चीज वहाँ नही दिखाई दे रही थी। लारामी नदी इस पर से एक लहरदार रेखा के रूप मे चमकती हुई बह रही थी। इसके किनारो पर न कोई पेड़ था और न कोई झाड़ी। इसके सामने ही एक छोटी-सी पहाडी ने एक हिस्सा ढका हुआ था। मै कुछ आगे निकल गया। मुझे मैदान पर कुछ काले धब्बे धारा के किनारे नज़र आए। मै चिल्ला पड़ा, "भैंसे!"

रेमड ने प्रसन्नता से कहा, "भगवान् कसम। ये तो घोड़े है।" और वह यह कहते-कहते एड लगाकर अपने खच्चर को दौड़ाने लगा। अब अधिक से अधिक मैदान सामने दीखने लगा। यहाँ घोड़े भी अधिक-से-अधिक बिखरे हुए दीखने लगे। वे टुकडियाँ बाँधकर सारे मैदान पर चर रहे थे। हमने देखा कि नदी के किनारे एक घेरे के रूप में, हमसे कोई मील भर दूर, आदिवासियो के घर खड़े हुए थे। शायद किसी भी यात्री का दिल अपने घर को देखकर इतना खुश न होता होगा, जितना आदिवासियो के इस गाँव को देखकर उस समय मेरा दिल प्रसन्न हुआ।

— ० —

१४ : ओजिल्लाला गाँव

आदिवासियो के दिमागी ढाँचे के वर्णन का यहाँ स्थान नही है पर, तो भी उस बात को समझ लेने से हम थोडे-बहुत परिवर्तन के साथ मैक्सिको के उत्तर में रहने वाले सभी आदिवासियो के स्वभाव से परिचित हो जायेगे। अपनी आदतो में यह समानता होने पर भी झीलो, समुद्र-तटो, मैदानो और जंगलो मे रहने वाले आदिवासी बाहरी व्यवहार में एक दूसरे से कतई भिन्न है। इन लोगो के एक कबीले के साथ बहुत दिन रहने के कारण मै इन के व्यवहार से भली-भाँति परिचित हो गया, क्योकि मेरी आँखो के सामने कोई न कोई विशेष घटना घटती ही रहती थी। वे लोग कतई असभ्य थे। सभ्यता के सपर्क मे आने पर भी उन लोगो ने कुछ भी नई बात न सुनी थी। उन्हे गोरे लोगो के चरित्र और उन की शक्ति के विषय में कुछ भी पता न था। इसीलिये उन के बच्चे मुझे देखते ही चीखने लगते। उन के धर्म, अन्धविश्वास और रीति-रिवाज, सदियो से बिना बदले, वैसे ही चले आ रहे थे। उनके हथियार और वेशभूषा तक भी न बदले थे। उन्हें हम पाषाणयुग का प्रतिनिधि कह सकते है। उनके भाले और उनके बाण तो व्यापारियो से लिये गये लोहे से बने थे, परन्तु वे लोग अब भी पत्थर के पुराने हथियार ही बरतते थे।

इस इलाके मे बडे-बडे परिवर्तन हो रहे थे। ओरेगन और कैलिफोर्निया की ओर प्रवासियो के जाने के साथ-साथ इस इलाके से भैसे खतम होने शुरू हो गये थे। इसके साथ ही भैसो पर जीवन बिताने वाले आदिवासी लोग भी बिखरने शुरू हो गये थे। वे आदिवासी लोग अगले कुछ ही दिनो मे शराब और सैनिक चौकियो के कारण कमजोर पड जाएँगे। इस प्रकार अगले कुछ ही सालो मे इस राह से लोगो का आना-जाना आसान हो जाएगा। निश्चय ही इसका खतरा कम होने के साथ-साथ इसका आनद भी कम होता जायगा।

ज्योही रेमड और मैने गाँव को पहचाना, वे लोग भी उत्सुक हो कर हमे देखने लगे। हम घोडो पर चढे हुए जब मैदान मे आगे बढे, तब तक गाँव का

सबसे अगला हिस्सा, कुछ नंगी शक्लो से घिरा होने के कारण, अँधेरे में डूबा-सा लगने लगा था। बहुत सारे लोग हमसे मिलने आगे तक चले आये। उन में से हरा कम्बल ओढ़ें हुए फ्रांसीसी रेनल को मैने पहचान लिया। जब वे पास आये तब हाथ मिलाने की रस्म पूरी तरह अदा की गई। सब लोग इस बात को जानने के लिये अधिक उत्सुक थे कि बाकी लोगो के साथ क्या हुआ ? मैंने उन्हें सब बातो का उत्तर दिया। तब वे हमारे साथ ही गाँव की ओर लौट चले।

रेनल ने कहा, "तुम यह सब देखने से चूक गये। अगर कही परसो तुम यहाँ होते तो देखते कि इस सारे मैदन में जहाँ तक भी निगाह जाती थी, भैंसे ही भैंसे फैले हुए दिखाई देते थे। उनमे एक भी मादा भैंस न थी, केवल नर भैंसे ही थे। हमने कल तक उनपर हर रोज घेरा डाला। जरा गाँव पर निगाह डालो ! क्या तुम्हे सभी अच्छी हालत मे नही दिखाई देते ?"

सचमुच ही मै, बहुत दूरी पर, एक मकान से दूसरे मकान तक फैली हुई लम्बी रस्सियो को देख रहा था, जिन पर सूखने के लिये मास लटक रहा था। मैंने यह भी देखा कि पिछली बार की बजाय इस बार यह गाँव कुछ छोटा लगता था। मैंने रेनल से इसका कारण पूछा। उसने बताया कि लोबोर्न्य नाम का बूढा आदमी अपने सम्बधियो के साथ, इन पहाडो के पार जाना कठिन समझ कर, गाँव को छोड कर पीछे ही रह गया है। इनमें महतो और उसके भाई भी शामिल थे। 'बवडर' भी इतनी दूर तक आने को तैयार न था, क्योकि वह डर गया था। उसके साथ कुल आधा दर्जन घर ही रुके थे। बाकी सब घर अपनी इच्छा के अनुसार आगे चले आये थे। उन्होने उसके नेतृत्व को मानने से इन्कार कर दिया था।

मैने पूछा, "गाँव मे अब कौन-कौन से मुखिया बच गये है ?"

रेनल ने उत्तर दिया, "अब बूढा 'लाल पानी,' 'चील का पंख,' 'महान् काक,' 'पागल भेडिया,' 'चीता,' 'सफेद ढाल,' और दोगला 'शिएन' नाम के सरदार बाकी रह गये है।"

इस समय तक हम गाँव के पास पहुँच गये थे। मैने देखा गाँव के बहुत से घर बहुत बडे-बड़े थे। परन्तु, एक हिस्सा बहुत ही छोटी और रद्दी झोपडियो का भी था। मैने उनकी ओर देख कर उनके भद्दपन के लिये कुछ कहा।

परन्तु, मेरी यह बात बहुत बुरी जगह लगी।

रेनल बोला, "मेरी पत्नी के सम्बन्धी इन घरो में रहते है। गाँव भर मे इनसे अच्छा दल कोई और नहीं है।"

"क्या इन का कोई सरदार भी है?"

रेनल ने उत्तर दिया, "हाँ, क्यो नही? बहुत से है।"

"उनके नाम क्या-क्या है?"

"उनके नाम? उनमें 'बाण-शिर' एक है! वह अभी तो मुखिया नही बना, पर उसे बनना अवश्य चाहिये। फिर 'तूफान' है! वह अभी तो लडका ही है, पर आने वाले दिनो मे वह निश्चय ही मुखिया बन जायेगा।"

इसी समय हम दो घरो के बीच से होते हुए गाँव के बड़े मैदान मे पहुँचे। यहाँ बहुत-सी गठी नगी आकृतियाँ हमे देख रही थी। रेनल से मैंने पूछा, "'बुरे घाव' का मकान कहाँ है?"

उसने उत्तर दिया, "तुम उससे भी चूक गये। वह तो 'बवडर' के साथ ही रह गया है। अगर तुम उसे यहाँ पाता, और उसके साथ रहते, तो वह निश्चय ही तुम्हारा सबसे अधिक स्वागत करता। परन्तु, अब भी 'महान् काक' का घर सामने है। यह 'लाल पानी' के घर से लगा हुआ ही है। वह भी गोरे लोगो के लिये अच्छा है। मै तुम्हें उसके यहाँ ठहरने के लिये ही सलाह दूँगा।"

"क्या उसके घर मे औरतो और बच्चो की सख्या अधिक है?", मैने पूछा।

"नही, उसमे उसकी केवल एक ही पत्नी है और दो-या-तीन बच्चे। बाकी सबको वह अलग मकान मे रखता है।"

इस प्रकार आदिवासी हमारे पीछे-पीछे चलते रहे। हम 'महान् काक' के डेरे पर पहुँचे। उस मे से एक स्त्री बाहर आई। उसने हमारे घोड़े ले लिये। मैंने दरवाज़े पर से चमडे का परदा हटाया और झुककर 'महान् काक' के कमरे में घुसा। वहाँ धुँधली रोशनी मे खालो के एक गट्ठर पर बैठे हुए हमने उसे देखा। उसने अपनी भाषा में मेरा स्वागत किया। मैंने रेनल से उसे समझाने के लिए कहा कि मै और रेमंड उसके साथ रहने के लिये आये है। उसने इस बात पर प्रसन्नता प्रकट की। यह बात उसे लगी तो कुछ अजीब ही, पर तो

भी इस गाँव का कोई भी निवासी गोरे लोगो का स्वागत करके प्रसन्न ही होता। इससे उसे अपना अतिथि-प्रेम दिखाने का मौका मिलता।

उसकी पत्नी ने हमारे लिये अतिथि की निश्चित जगह पर एक खाल बिछाई। यह जगह सबसे अगले हिस्से में थी। हमारी काठियाँ अन्दर लाई गईं। अभी हम पूरी तरह बैठे भी न थे कि हमें देखने के लिये आदिवासियो की भीड जमा हो गई। 'महान् काक' ने चिलम निकाली और उसमें तम्बाकू और शोगसाशा मिला कर भरा। अब यह चिलम बारी-बारी से होकर हर एक के हाथ मे जाने लगी और बातो का सिलसिला जारी हुआ। इसी बीच एक औरत हमारे सामने लकडी के एक बर्तन मे भैंसे का उबला हुआ मास रख गई। हमें स्वागत मे दी जाने वाली यही अकेली चीज न थी। इसके बाद एक एक आदिवासी आकर हमे अपने-अपने घर में, अलग-अलग किस्म की दावत के लिये, बुलाने लगा। आधे घंटे से भी अधिक देर तक हम घर-घर जाकर हर-एक के बनाये मास का स्वाद लेते रहे और उनकी सुलगाई चिलमो मे से एक दो कश खीचते रहे। बहुत देर से तूफान आने के आसार दीख रहे थे। अब यह तूफान बुरी तरह आ टूटा। हम रेनल के घर में आ गये। यह जगह घर कहलाने लायक न थी, क्योकि इसे बहुत कम और पुरानी खालो से ढका गया था। यह एक ओर से खुली हुई थी। हम एक ओर बैठ गये। आदिवासी हमारे चारो ओर जमा हो गये।

मैंने जान बूझ कर पूछा, "यह कडक किस कारण होती है ?"

रेनल ने उत्तर दिया, "मुझे यकीन है कि आकाश में एक बडा-सा पत्थर घूम जाता है।"

मैंने कहा, "हो सकता है ! पर मैं इन आदिवासियो का ख्याल जानना चाहता हूँ।"

इस पर उसने मेरा प्रश्न उन्हे समझा दिया। उनमे कुछ देर वाद-विवाद हुआ। उनकी राय एक न थी। अन्त मेनेसीला या 'लाल पानी' नाम के आदमी ने ऊपर की ओर आँखे उठाकर अपने मुरझाये चेहरे से, एक कोने मे ही बैठे-बैठे, उत्तर दिया। उसने बताया कि वह इस कडक के बारे मे सदा से ही जानता है। यह एक बहुत बड़ा काला पक्षी है। उसने इसे एक बार स्वप्न मे भी देखा है। यह ब्लैक-हिल्स से उड़ता हुआ आता है। यह आवाज इसके

पंखो की होती है। जब वह एक झील के पानी पर अपने पंख फडफडाता है, तब पानी से ही यह बिजली और कड़क पैदा होती है।

एक और बूढा आदमी बोल उठा, "यह कड़क बहुत बुरी है। पिछली गर्मियो मे इसने मेरे एक भाई की जान ले ली थी।"

मेरे कहने पर रेनल ने उससे इसका कारण पूछा। वह बूढा आदमी एकदम चुप होकर बैठ गया। उसने निगाह तक न उठाई। कुछ देर बाद मुझे यह पता चला कि यह दुर्घटना कैसे हुई थी? जो आदमी मारा गया था वह एक ऐसे समुदाय में से था, जिसे यह विश्वास था कि वे लोग बिजली की कडक से लडाई कर सकते है। जब भी उन्हे लगता था कि आँधी आ रही है, तो वे उसका मुकाबला करना चाहते। तब उनमें से बिजली से युद्ध करने वाले लोग, अपने धनुष, बाण और बन्दूके आदि लेकर, जादू भरे ढोल और बाँसुरी आदि के साथ, बाहर निकल जाते और बादल पर आग बरसाते लगते। इसके साथ ही वे चीखते-चिल्लाते, और ढोल पीटने लगते। यह सब वे बादलो को डराने के लिए करते। एक दिन ढलती दोपहर के समय एक बडा भारी काला बादल उठा और थोडी ही देर में चारो ओर छाने लगा। ये लोग पहाड की एक चोटी पर अपने पूरे सामान के साथ चढ गये और उसे रोकने की कोशिश करने लगे। पर, बादल गरजने से न रुका। बहुत तेज चमक के साथ बिजली कौंधने लगी। यह बिजली उस दल के एक आदमी पर गिरी और उसे इसने मार डाला। कारण यह था कि वह अपना नुकीला लम्बा भाला इसकी ओर ताने हुए था। उसके मरने पर बाकी सब लोग, डरे हुए, अपने घरो की ओर वापिस आ गये।

मेरे मेजबान 'कोगरा तोगा' या 'महान् काक' के घर में उस रात एक बहुत अच्छा नज़ारा देखने में आया। बहुत-से आदिवासी, अपनी नगी काली शक्लो में, घर के बीचो-बीच हल्की जलती हुई आग के चारो ओर घेरा डालकर बैठे हुए थे। सुलगी हुई चिलम बारी-बारी सबके हाथो में जा रही थी। इसी समय एक स्त्री ने भैसे की थोडी-सी चरबी आग पर डाल दी। इससे आग भड़क उठी। यह लपट बहुत ऊँची उठी। इस मे सभी बैठे हुए आदिवासियो के चेहरे साफ चमकने लगे। वे खूब भाव भरे ढग से एक दूसरे को कहानियाँ सुना रहे थे। इस प्रकाश में चारो ओर चमड़े की पोशाकें, धनुष, तरकस और

भाले लटकते हुए दीख रहे थे। हमारी बन्दूक और बारूद की थैली भी वहाँ लटक रही थी। कुछ देर के लिए दिन का-सा प्रकाश चारो ओर फैल गया। थोड़ी देर बाद फिर यह प्रकाश मन्द पड़ गया। इस प्रकार उजाला और अँधेरा बारी-बारी से कुछ देर आने के बाद आग बिल्कुल बुझ गई और अँधेरे ने सब को ही ढँक लिया।

अगली सुबह जब मैंने डेरा छोड़ा, तो मुझे चारो ओर भौंकने और चीखने की आवाजें सुनाई देने लगी। गाँव के आधे से अधिक कुत्ते एक साथ ही भौंकने लगे थे। वे कायर होने के कारण, मुझ पर हमला करने के लिए आगे न बढ़कर, अपनी जगह पर ही खडे-खडे उछल रहे थे। केवल एक छोटा-सा पिल्ला ही मुझ तक आ सका। उसके गले में चमड़े की एक रस्सी पड़ी हुई थी। वह मेरे जूतो के फीतो को पकड़े हुए ही भौंकता और चिल्लाता रहा। मेरा हर उठने वाला कदम उसे झटका देता था। मुझे पता था कि सब लोग मेरी ओर देख रहे थे कि मै डरता हूँ या नही? इसलिए मै दायें या बायें बिना देखे, कुत्तो से वैसे ही घिरा हुआ, आगे बढ़ता रहा। जब मै रेनल के घर के पास आकर बैठ गया, तो वे सब अपने-अपने घरो की ओर लौट गये। केवल एक बड़ा-सा कुत्ता मेरे आस-पास अपने दाँत दिखाता हुआ दौड़ता रहा। मैंने उसे पास बुलाया, पर वह अधिक तेजी से गुर्राने लगा। मैंने उसे देखा, वह मोटा और गठीला था। मैंने मन-ही-मन सोचा कि मुझे मनचाहा कुत्ता मिल गया है। मैंने जैसे उससे कहा, "मेरे दोस्त, तुम्हें यह सौदा महँगा पड़ेगा। आज ही शाम मै तुम्हे मरवा डालूँगा।"

मेरा इरादा उस शाम को आदिवासियो को एक दावत देने का था, ताकि मै अपने चरित्र और बड़प्पन की छाप उनके दिल पर बिठा सकूँ। इसके लिये उन लोगो मे ऐसे मौकों पर सफेद कुत्ता मारकर बाँटने की प्रथा है। मैंने रेनल से सलाह की। उसने तुरन्त ही पता कर लिया कि अगले ही घर की बुढ़िया इस कुतिया की स्वामिनी थी। मैंने एक चमकीला सूती रूमाल जमीन पर फैलाया और कुछ केसर और दाने इस पर रखे। तब बुढ़िया को बुलाया गया। मैंने पहले कुत्ते की ओर इशारा किया और फिर इस रूमाल की ओर। वह खुशी से उछल पडी और रूमाल लेकर अपने मकान मे चली गई। मैंने और सारे काम के लिये दूसरी दो औरतो की सेवा का

लाभ उठाया। उन्होंने कुत्ते को पजो से पकड़ा और उसे मारकर पहले आग पर भूना और तब खाल उतारकर और काटकर उसे दो बडी पतीलियों मे उबलने को डाल दिया। इसी बीच मैने रेमड को अपना बचा-खुचा आटा भैसे की चरबी में डालने को कहा। साथ ही एक बडी पतीली मे चाय बनाने के लिये भी कह दिया।

'महान् काक' की स्त्री भी आज की दावत के लिये घर की सफाई के काम में जुट गई। मैने अपने मेजबान को लोगो को बुलाने का काम सौंप दिया, ताकि मुझसे कोई भूल न हो।

दावत के समय में किसी भी आदिवासी को एक घण्टा पहले सूचना देने से काम चल जाता है। हमारी इस दावत का समय दोपहर ग्यारह बजे था। इस समय रेनल और रेमड गाँव मे से होकर, उसके निवासियो से प्रशसा पाते हुए कुत्ते के मास की दोनो पतीलियो को उठाकर हमारे डेरे तक लाये। उन्होंने इसे मकान के बीचोबीच रख दिया। तब वे रोटी और चाय लेने चले गये। इसी बीच मैने नये जूते पहन लिये और अपनी पुरानी हिरण की खाल की कमीज की जगह एक दूसरी कमीज को पहन लिया। ऐसे मौको के लिये ही मे इसे साथ लाया था। इस समय मैने उस्तरे से अपनी दाढी-मूँछ भी बनाई, क्योकि ऐसे समय यह सब जरूरी हो जाता है। इस प्रकार सज-धज कर मैं दरवाजे पर रेनल और रेमड के साथ बैठ गया। कुछ ही क्षण मे मेहमान घर मे आने लगे और एक घेरे में सटकर बैठ गये। हर एक के हाथ मे लकडी का एक बर्तन था, जिसमे उसका भोजन परोसा जाना था। जब सब जमा हो गये, तो उनके दो पहरेदार सामने आये और भेड के सीगो से बनी कडछियो से खाना परोसने लगे। बूढो और सरदारो का दुगना हिस्सा दिया गया। कुत्ते का सारा मास थोडी ही देर में खत्म हो गया। सबने अपने खाली वर्तन दिखाकर इस बात की सूचना दी। तब बारी बारी से रोटी बाँटी गई और अन्त मे चाय परोसी गई। पहरेदार जब इसे भोजन वाले लकडी के बर्तनो मे परोसने लगे, तो मुझे इसका रग बडा अजीब-सा लगा।

मेरे पूछने पर रेनल ने बताया कि चाय कुछ कम होने से उन्होने एक और जडी मिला दी थी, ताकि यह गाढे रग की बन सके। सौभाग्य से

आदिवासियों को इसके स्वाद में फर्क मालूम नही पड़ा। चाय काफ़ी मीठी थी और उन्हें इतने से ही मतलब था।

दावत समाप्त होने पर भाषण करने का समय आया। 'महान् काक' ने लकडी के एक चौड़े फट्टे पर तम्बाकू और शोगसाशा को मिलाकर काटा और चिलम भरकर सुलगाई। तब तक चिलम बारी-बारी से सबके हाथ में घूमने लगी। मैने अपना भाषण शुरू किया। मेरे हर वाक्य को रेनल उन्हें समझाता जा रहा था। वे लोग बार-बार प्रसन्नता प्रगट करते थे। मुझे याद पडता है कि मैंने कुछ इस प्रकार की बातें कही थीं।

मैने कहा, "मै बहुत दूर के देश से आया हूँ, जहाँ उनकी-सी चाल से चलने पर एक साल मे भी पहुँचा नही जा सकता।"

उन्होने अपनी प्रसन्नता प्रगट करते हुए कहा, 'हाऊ, हाऊ ?"

"वहाँ पर हम लोग घास की पत्तियो से भी अधिक सख्या में रहते है। हमारी औरतें इतनी सुन्दर है, जैसी आपने कभी न देखी होगी। सभी आदमी वीर योद्धा है।"

"हाऊ, हाऊ, हाऊ!"

मैने जब अन्तिम शब्द कहे तब मेरी आत्मा कुछ दुःखी हुई। मैने फिर से कहना शुरू किया।

"जब मैं वहाँ रह रहा था, तब मैंने आप लोगो के बारे में सुना कि आप कितने महान् और बहादुर जाति के लोग है। मैंने यह भी सुना कि आप भैंसो और शत्रु के शिकार मे कितने चतुर हैं ? मैने इन सब बातो को अपनी आँखो से देखने का निश्चय किया।"

"हाऊ, हाऊ, हाऊ, हाऊ!"

"इन पहाडो मे से घोड़े पर सवार होकर आने के कारण मै बहुत अधिक भेंटें नही ला सका।"

"हाऊ!"

"पर मैं सबको थोडा-थोड़ा तम्बाकू देने के लिए अवश्य लाया हूँ। आप लोग पीकर देख सकते है कि व्यापारियो से खरीदे गये तम्बाकू के मुकाबले में यह कैसा है ?"

"हाऊ, हाऊ, हाऊ ?"

"लारामी किले में मेरे पास काफी सारा बारूद, गोलियाँ, चाकू और तम्बाकू पडा है। ये चीजे मै आप को देना चाहता हूँ, यदि आप किले मे, मेरे यहाँ से जाने से पहले, आ सके।"

"हाऊ, हाऊ, हाऊ, हाऊ ?"

रेमड ने लगभग डेढ़ सेर तम्बाकू के छोटे-छोटे टुकड़े करके सबको बाँटना शुरू किया। इस बीच मेनेसीला या 'लाल पानी' नाम के बूढे सरदार ने उत्तर देना शुरू किया। यह भाषण काफी लम्बा था। पर उसका सार इस प्रकार था—

"मै भी सदा से ही गोरो से प्यार करता रहा हूँ। इस धरती पर वे लोग सब से अधिक बुद्धिमान् प्राणी हैं। मेरा विश्वास है कि वे जो कुछ चाहें कर सकते है। हमारे लोगो के घरो में वे जब कभी भी आते है तब मुझे प्रसन्नता ही होती है। यह ठीक है कि मैंने उन्हे अधिक भेंटे नही दी, पर यह भी ठीक है कि मै इस लायक ही नही था। आप का हमारे बीच में आना ही इस बात का सबूत है कि आप हम से प्यार करते है, नही तो आप इतनी दूर चल कर क्यो आते ?"

कुछ और लोगो ने भी इसी तरह के भाषण दिये। तब तम्बाकू पीने, हँसने और आपस में बातें करने का सिलसिला शुरू हुआ। बूढा मेनेसीला बीच मे ही ऊँची आवाज मे बोल पडा, "इस समय सब लोग यहाँ जमा हैं। इसलिये यह मौका है कि हम लोग अगले काम-काज की बात तय कर लें। हम इन पहाड़ो पर इस लिए आये थे कि अगले साल के लिए घरो का सामान इकट्ठा कर ले। हमारे पुराने डेरे कमजोर पड़ गये है। अब तक हम कोई भी अच्छा शिकार नही कर सके। हमने नर भैंसे तो काफी मार लिए हैं, पर मादा भैंसे नही मार पाये। नर भैंसो का चमडा इतना मुलायम नही है कि हमारी औरतें उनसे तम्बू बना सके। मेरे विचार मे 'मैडिसन बो' नाम के पहाड पर बहुत-सी मादा भैंसें हमे मिलेगी। इसलिए हमे उधर ही चलना चाहिए। यह ख्याल रखना कि यह जगह उससे भी पश्चिम की ओर है, जहाँ तक हम लोग अब तक कभी गये है। हो सकता है कि वहाँ हमे नाग जाति के लोगो का हमला सहना पडे। वह स्थान उनके शिकार का ही है। पर, हमें अपने नये घर भी बनाने हैं। हमारे पुराने घरो में जान नही रह गई है। हमे नाग लोगो

से डरना नही चाहिए। हमारे योद्धा बहादुर है और वे नाग लोगो से युद्ध के लिए तैयार भी है। इसके अलावा हमारे साथ तीन गोरे भी है। उनकी बंदूकें भी हमारे ही साथ रहेंगी।"

इस पर उन लोगो मे काफी बहस छिड़ गई। रैनल ने तो मुझे यह नही बताया कि उन लोगो ने क्या-क्या कहा? पर मै बोलने वालो के इशारो से सब कुछ पहचान गया। इस बहस के बाद उन मे से बहुत से लोग उस बूढे सरदार की राय से सहमत हो गये। इसके बाद कुछ देर तक शाति रही। बाद मे उस बूढ़े सरदार ने बेसुरे ढंग से कुछ बोला। मुझे पता चला कि इस प्रकार मुझे धन्यवाद दिया गया था।

उसने कहा, "अब हमे चलना चाहिए और इन लोगो को आराम का मौका देना चाहिए।" इस प्रकार सब वहाँ से विदा हुए। खुली हवा मे आकर कुछ देर बूढा सरदार दावत की प्रशसा मे, गाँव भर में, गाता फिरा। उनका यही रिवाज था।

दिन ढलने लगा और सूरज भी छिपने लगा। इसी समय घोडे पास के मैदानो से इकट्ठे होकर लौटने लगे और अपने-अपने स्वामियो के घरो के आगे आकर जमा हो गये। बहुत जल्दी ही उन मकानो के बीच घोडो का एक घेरा-सा बन गया। इधर-उधर आग जल रही थी। अँधेरे मे चारो ओर बैठी सूरते कभी-कभी चमक पडती थी। मै रैनल के पास जाकर बैठ गया। मेनेसीला का एक लडका, जो मेरे मेजबान का भाई ही था, 'चील का पख' नाम मे मशहूर था। वह पहले ही से वहाँ बैठा था। मैंने उससे पूछा, "सुबह गाँव आगे चलेगा या नही ?" उसने कहा, "कुछ भी निश्चय से नही कहा जा सकता।" उसने बताया कि बूढे महतो के मरने के बाद से लोग अपने को अनाथ अनुभव करने लगे है। उनकी हालत बिना सिर वाले शरीर की-सी है। इस बात को सुन कर मै भी सुबह के विषय मे बिना कुछ जाने ही सो गया।

पौ फटने पर मै सुबह जब नदी तट से, जगल पानी मे निबट कर, आ रहा था, तब मैने देखा कि कुछ घर गिराये जा रहे थे। लगता है एक-दो बडे मुखियाओ ने आगे बढने का निश्चय कर लिया था। बाकी सबने भी उनकी ही नकली करनी शुरू कर दी। अब जल्दी-जल्दी सब तम्बू गिराये जाने लगे

और कुछ ही देर मे घरो की जगह केवल आदमी और घोडे ही इकट्ठे दिखाई देने लगे। मकानो का ढाँचा पतीलो, पत्थर के हथियारो, सीग की बनी कड़-छियो, खालो और सूखे मास के थैलो समेत जमीन पर बिखरा पडा था। औरते बहुत जल्दी मचा रही थी। बूढी औरते भी पूरे जोर से चीखती फिर रही थी। घोडे धैर्य के साथ खडे रहे। उन पर मकानो का सामान और बल्लियाँ आदि लादा जाता रहा। कुत्ते सुस्ती से लेटे हुए चलने के समय की इन्तजार कर रहे थे। हर एक योद्धा जमीन पर बैठा हुआ था। बुझती हुई आग के पास बैठा हुआ प्रत्येक योद्धा निश्चिन्त-सा लग रहा था। उसने अपने हाथ मे घोडे की खोजी रस्सी पकडी हुई थी।

तैयारियाँ पूरी होते ही हर परिवार ने चलना शुरू कर दिया। भीड जल्दी ही खिसकने लगी। मैने उन्हे नदी पार करके दूसरी ओर के पहाडो की ओर बढते देखा। जब सब चले गये, तब मै भी रेमड के साथ-साथ उनके पीछे-पीछे चला। ज्यो ही हम पहाडी की चोटी पर पहुँचे, हमें अपने सामने मील भर दूर तक आदिवासियो का फैलाव दिखाई दिया। सभी जगह उनके भालो की नोकें, धूप मे, चमक रही थी। जैसे धूप इससे अधिक अच्छी किसी चीज पर कभी चमकी ही न थी। इनके साथ भारी बोझ से लदे हुए लादू घोडे थे। उन्हें कुछ समझाते हुए वूढी औरतें चल रही थी। उनकी पीठ पर कुछ बच्चे भी बैठे हुए थे। इस समूह मे कुछ खच्चर और टट्टू भी थे, जिन पर कुछ हँसती हुई जवान स्त्रियाँ चढी हुई थी। हम जब भी देखते, वे प्रसन्न होती। छोटे बच्चे अपने हाथो मे छोटे-छोटे तीर-कमान लिये हुए साथ-साथ भाग रहे थे। अनेको कुत्तें घोडो की टाँगो मे होते हुए दौड रहे थे। जवान वीर खूब सज-धज कर इस भीड में टुकड़ियाँ बना कर चल रहे थे। कभी-कभी वे दो या तीन सवारो की कतार बना कर तेजी से दौडने लगते। इस प्रकार वे अपने घोड़ो की चाल का पूरा अनुमान करना चाहते थे। बीच-बीच मे सफेद लबादे पहने कुछ बूढे लोग पैदल चलते हुए दिखाई दे जाते थे। ये लोग गाँव के बडे और बुजुर्ग लोग थे। इन लोगो की आयु और अनुभव का सब जगह सम्मान होता था। ऊबड-खाबड मैदान और खड्डो वाली पहाडियो पर दिखाई देने वाले ये दृश्य बहुत ही विचित्र लग रहे थे। बहुत दिन साथ रहने से मै इन दश्यो से बहुत अधिक परिचित हो गया था। लेकिन इसका जादू का-सा असर कभी कम

न पडा ।

हम ज्यो-ज्यो आगे वढे, यह दल और भी बिखरता गया । तब हम पहाडी की तलहटी पर पहुँचे । यहाँ आकर बूढ़े लोग एक घेरे में वैठ गये । उन्होने एक चिलम सुलगाई और सब आपस में हँसी-मजाक करने लगे । बाकी लोग भी आकर धीमे-धीमे उनके पीछे जमा होने लगे । तब वे बूढ़े लोग उठ खडे हुए और अपने कपडो को समेट कर फिर से आगे बढ़ने लगे । चोटी पर चढ कर हमने अपने सामने एक गहरी ढलान पाई । बिना एक मिनट भी रुके सब लोग जत्थे के रूप मे नीचे उतरने लगे । चारो ओर धूल उड रही थी और गडबड-सी मची हुई थी । घोडे कई बार पैरो के बल फिसल पड़ते । औरतें और बच्चे चीखने लगते । कुचले जाने पर कुत्ते भौंकने लगते और नीचे की ओर पत्थर और मिट्टी गिरने लगते । कुछ ही देर बाद चोटी पर से हमने देखा कि यह गाँव सामने के मैदान मे फिर से फैल गया था ।

उस दिन दोपहर को डेरे मे आराम करते हुए, मुझे फिर से पुरानी बीमारी का दौरा उठा । कुछ ही मिनटो मे मेरी वह सारी शक्ति समाप्त हो गई, जो मैं पिछले हफ्तो से बटोर रहा था । मै बहुत कमजोर हो गया । शाम के समय ही मै 'महान् काक' के घर में सो गया और सुबह होने तक बेहोश लेटा रहा । अपने सिर पर ही खडे एक घोडे के हिनहिनाने और खुली धूप के आ पडने से मै जाग गया । सारा गाँव उठना शुरू हो गया था और औरतें घरो को समेट रही थी । उठ कर मैने अपना कम्बल उतारा और अपनी पुरानी सेहत फिर से लौटती अनुभव की । अभी मै पाँवो के बल पूरा खडा भी न हुआ था कि फिर से मै काँप गया और खडा न रह सका । रेमड घोड़ी और खच्चर को ले आया । मैने जमीन से ही घोडी पर काठी रखने की कोशिश की, पर सफल न हो सका । रेमड से मैने कहा, "तुम इस पर काठी चढाओ ।" तब तक मै पास ही खालो के एक ढेर पर बैठ गया । उसके ऐसा करने पर मै बहुत कठिनता से उस पर चढ पाया । हम एक बडे मैदान से होकर गुजरने लगे । इस समय आदिवासियो से आगे-आगे चलते हुए मै समय और स्थान से दूर की बहुत-सी बातों को सोचने में खो गया । अचानक ही बादल घिर आये और गरजने लगे । बादल इतने काले थे कि उनसे आने वाली तबाही का अनुमान भली भाँति हो सकता था । थोड़ी ही देर में चारो तरफ अँधेरा छा गया ।

मैने पीछे मुड कर देखा, आदिवासी रुक कर आँधी के सामने की तैयारी कर रहे थे। वे सब तरफ फैल गये थे।

" जब से मेरी बीमारी का पहला हमला मुझ पर हुआ था, तब से वर्षा का मेरी सेहत पर बहुत बुरा असर होता था। मैंने अपने को बहुत कठिनता से घोड़े की पीठ पर सँभाला हुआ था। मेरे अन्दर इससे अधिक ताकत न थी। इस दशा मे बादलो को घिरता देखकर मुझे पहली बार यह लगा कि शायद इस रेगिस्तान से मै कभी न लौट सकूँगा। मै अपने मन में सोचने लगा, "यह मैदान बहुत जल्दी ही काम पूरा कर देते है। बहुत देर तक बीमार रह कर बुरी हालत मे इधर-उधर पडे रहने की बजाय, यह अच्छा ही होगा कि मैं यहाँ समाप्त हो जाऊँ।" इसलिए जिस खाल पर मै बैठा था उसे ही मैंने ओढ़ लिया और आँधी के आने की प्रतीक्षा करने लगा। आखिर बहुत तेजी से बादल बरसा और जिस तेजी से यह आया था उसी तेजी से मिट भी गया। थोडी ही देर में आकाश फिर से साफ हो गया। इस बीच मेरे विचारो ने अपनी पिछली जिंदगी को दोहरा लिया। इस वर्षा ने मेरी सेहत पर कोई बुरा असर न किया था। घटे भर मे ही हम लोगो ने डेरा डाल लिया। दूसरे कपडे पास न होने से, मैने रेनल से नये तरीके के कपडे उधार लिये। कपडे बदल कर मै 'महान् काक' के घर की ओर आ गया, ताकि और सब कुछ भी वहाँ बदल सकूँ। वहाँ कम से कम छ: स्त्रियाँ बैठी थी, जिनमें से एक ने उठ कर मेरी बाँह थाम ली। उस समय हम दोनो के रग में फर्क देख कर बाकी लोगो ने हँसना शुरू कर दिया।

इस दिन का हमारा यह डेरा ब्लैक हिल्स से कुछ ही दूरी पर था। इन पहाडियो पर देवदार के पेड लगे हुए थे। आदिवासियो ने इन शिकारगाहो की ओर जल्दी यात्रा करने की दृष्टि से अपना सूखे मास का बोझ वही छोड कर आगे बढने का निश्चय किया। कुछ ने अपने मकान भी वैसे ही छोड दिये और केवल धूप और वर्षा से बचने के लिए कुछ खाले लेकर ही वे आगे बढ चले। आधे से ज्यादा लोग लादू घोडो को लिए हुए पर्वतो की ओर चल पडे। उन्होंने सारा सूखा मास पेडो पर लटका दिया, ताकि भेडिये और भालू इसे न पा सकें। शाम के समय सभी फिर अपने डेरो पर लौट आये। कुछ लोगो ने बताया कि उन्होने पहाड़ो मे गोली चलने की आवाज सुनी है। इस पर लोग अनेक

प्रकार के अनुमान करने लगे। मेरे विचार में शायद शॉ और हेनरी मिलने आ रहे थे। मुझे रत्ती भर भी ख्याल न था कि मेरा मित्र इस समय लारामी किले में एक बिस्तर पर पड़ा हुआ, किसी पौधे के जहर से, बीमार होगा और अपना समय तम्बाकू पीकर या शेक्सपीयर को पढ़ कर बिता रहा होगा।

अगले दिन जब हम मैदानों में आगे बढ़े तो कुछ नौजवान, स्वयंसेवकों की भाँति, आगे-आगे चले गये। बहुत देर बाद हमने पहाड़ों की चोटियों पर उन्हें अपने कपड़े हिलाते हुए देखा, जो इस बात की निशानी थी कि उन्होंने भैंसों को खोज लिया है। इसके कुछ ही देर बाद कुछ भैंसे दिखाई दिये। घुड़सवार इनके पीछे-पीछे दौड़ गये। दूर से ही हमने देखा कि एक दो भैंसे मार दिए गए। रेमंड को भी तुरन्त जोश आ गया।

वह बोला, "यह देश मेरे लायक है। काश ! मै यहाँ एक महीने मे जितने भी भैंसे मारूँ, यदि उतने ही सेंटलुई भी ले जा सकूँ, तब एक ही सर्दियों में मैं मालामाल हो जाऊँगा। तब मैं भी पैपिन या दूसरे व्यापारियों जैसा धनी बन जाऊँगा। मै तो इस इलाके को गरीब लोगों का स्वर्ग कहता हूँ। मुझे यहाँ जब भी भूख लगती है, तो मैं बन्दूक उठा कर निकल जाता हूँ और रुपये से खरीदे जा सकने वाले मांस से अधिक अच्छा मांस ले आता हूँ। आप अगली सर्दियों मे मुझे सेंटलुई में रहता हुआ नही देखोगे।"

रेनल ने कहा, "अरे यह बात तुम तब कहते तो और भी अच्छा होता, जब तुम और तुम्हारी स्पेनी पत्नी भूखो मर चुके होते। तुम भी कितने पागल हो कि अपनी पत्नी को लेकर वहाँ जा बसे हो !"

मैं बोला. "क्या तुम्हारी पत्नी स्पेनी है ? मैने तो कभी उनके बारे मे नही सुना ? क्या तुम ने उससे विवाह किया है ?"

रेमंड ने उत्तर दिया, "नही, जब पादरी लोग अपनी पत्नियो से विवाह नही करते, तो मैं ही क्यों करता ?"

मैक्सिकन पादरियो के इस प्रकरण ने धर्म का विषय ला दिया। मैने देखा कि मेरे ये दोनो गोरे साथी, दूसरे गोरे लोगों के समान ही, अपने होन-हार के प्रति बिलकुल बेखबर हैं। रेमंड ने कभी पोप का नाम भी न सुना था। कोई भी पादरी उसके लिए सबसे बड़ा धर्मगुरु था; भले ही वह लाओस या सान्ताफे में रहता हो। रेनल ने बताया कि आज से दो साल पहले लारामी

किले मे एक पादरी आया था। वह किसी मिशन पर जा रहा था। उसने वहाँ बहुत सारे लोगो से अपने अपराध स्वीकार करवाये थे। इस प्रकार वह बहुतों को मुक्ति दे गया था। रेनल ने बताया, "मैने भी उस समय अपने लिये मुक्ति माँग ली थी। मेरा विश्वास है कि बस्तियों की ओर जाने के समय तक के लिए यह काफी रहेगी।"

इसी समय वह रुका और एक दम बोल पडा, "देखो! देखो! 'चीता' नाम का युवक हिरण का पीछा कर रहा है।"

इसी समय अपने सफेद और काले घोडे पर चढा हुआ वह युवक हिरण का पीछा करता हुआ, सामने की चोटी पर से तेजी से गुज़रा। उसकी यह हिम्मत केवल शिकार और वीरता के कारण ही थी; नही तो हिरण का पीछा करने की ताकत इन छोटे जानवरो मे नही होती। हिरण आदिवासियों के बडे झुड की ओर दौडा, जो नीचे से ऊपर की ओर चढ रहा था। कुछ आवाजें गूँज उठी और घुड़सवारो ने उसका पीछा किया। इस पर वह एक दम बाईं ओर को मुडा और इस तेजी से भाग निकला, कि 'चीते' तक का घोडा उसका पीछा न कर सका। कुछ देर के बाद हमे एक और शिकार देखने को मिला। एक बूढा-सा भैंसा पास के एक खड्ड से उछल कर सामने आया और उसके पीछे-पीछे एक आदिवासी युवक भी उसी खड्ड मे से बाहर आया। वह घोडे पर बिना काठी या जीन के बैठा हुआ था और अपने छोटे से घोडे को पूरी तेजी से दौडा रहा था। वह अपने बहुत बडे शिकार के पास आता गया। भैंसे की छोटी-सी पूँछ तनी हुई थी और उसकी जीभ जबडो से बाहर लटक रही थी। वह पूरी तेजी से भाग रहा था। एक ही क्षण मे वह युवक इसकी बगल मे आ पहुँचा। यह हमारा मित्र 'तूफान' ही था। उसने लगाम घोडे की गर्दन पर ही डाल दी और अपने कधे पर लटकते तरकश मे से उसने बाण खीचा।

रेनल बोला, 'मैं सच कहता हूँ कि एक ही साल में यह लडका इस गाँव के सबसे अच्छे शिकारियो मे से एक होगा। यह लो! इसने उसे तीर मार दिया। यह दूसरा भी मारा। बूढे उस्ताद, तुम्हें अब पता चलेगा। तुम्हारी बगल मे दो बाण धँस चुके है। यह लो; उसने फिर बाण मारा। यह 'तूफान' जब भी हमला करता है, इसी तरह से चीखता है। हाँ बूढे भैंसे! एक बार

फिर कूदो । याद रखो, तुम सारे दिन भी कूदते रहो, तब भी बच न सकोगे।"

वह भसा बार-बार अपने हमलावर पर उछलता रहा, परन्तु घोड़ा भी बहुत चतुरता से उसके हमलो को बचाता रहा । बहुत देर बाद भैसे में और अधिक गुस्सा बढ गया और उसने तूफान को भागने पर मजबूर कर दिया । यह युवक घोडे की पीठ पर एक छिपकली के समान चिपक गया और अपने घोड़े पर पूरी तेजी के साथ दौड़ता हुआ हमारी ओर देखता और हँसता गया । कुछ ही देर मे वह फिर से भैंसे की बगल मे आ गया । भैसा अब तक निराश हो चुका था । उसकी आँखें उसकी सटो के बालो से उलझ गई थी । उसके मुख और नाक से खून बह रहा था । इस प्रकार एक-दूसरे मे उलझते हुए वे दोनो पहाडी के दूसरी ओर गायब हो गये ।

कुछ और आदिवासी भी पूरी तेजी के साथ उसी ओर निकल गये । हम बहुत धीमे-धीमे बढे । बहुत जल्दी ही हमने देखा कि भैसा दूसरी ओर मरा पडा था । आदिवासी उसके चारो ओर जमा होकर उसकी खाल और मास उतार रहे थे । ये लोग अपने छोटे-छोटे औजारो से इस जादू के साथ काम कर रहे थे कि एक मिनट मे ही वह बडा भारी शव कुछ छोटी-सी हड्डियो और मास के ढेर के रूप मे रह गया । आस-पास के असभ्य लोगो को देखना बहुत अच्छा नही लग रहा था । उनमें से कुछ लोग जाघ की बडी-बडी हड्डियो को लेकर उनके अन्दर की लाली को खा रहे थे । कुछ दूसरे लोग जिगर और दूसरे कुछ अगो के टुकडे खा रहे थे । लगता था कि वे भेडियो से भी अधिक भूखे थे । उनमे से कुछ के चेहरे खून से पुते हुए और बहुत ही डरावने लग रहे थे । मेरे मित्र 'सफेद डाल' ने मुझे भी एक लाली वाली एक हड्डी दी । उसने इसे इस तरह सफाई से चीरा था कि इसका लाल हिस्सा एकदम ही बाहर आ गया था । एक दूसरे आदिवासी ने मुझे मास का एक और टुकडा दिया । यह पेट के मास में से था । मैंने इन भेंटो को नम्रता के साथ लौटा दिया । मैंने एक छोटे लड़के को देखा, जो अपने चाकू के साथ जबडो और गालो के पास जुटा हुआ था । उसमे से उसने कुछ खास टुकडे निकाले, जो बहुत ही मुलायम थे । यह कहना अधिक ठीक होगा कि ऐसे समय, तुरन्त खा जाने के लिये, कुछ थोडे से हिस्से ही प्रयोग किये जाते है ।

उस रात वही डेरा डाल कर अगले दिन काफी देर तक हम पश्चिम की

ओर बढते रहे। उससे अगली सुबह हमें फिर से सफर शुरू करना पड़ा। सात जुलाई के रोज़, दोपहर के लगभग, हम वर्षा के पानी से बने कुछ जोहडो के पास रुके और दोपहर बाद फिर आगे चल पडे। यह दो समय की यात्रा आदिवासियो की आदत के विरुद्ध थी। पर सभी लोग शिकार की जगह पर जल्दी पहुँचना चाहते थे, ताकि जितनी जल्दी हो सके, अधिक से अधिक भैंसे मार कर लौट सके; क्योकि पडौस बहुत ही खतरनाक था। मै यहाँ बहुत-सी ऐसी बाते और घटनाएँ छोड रहा हूँ, जो इस दौरान मे घटी थी। साँझ होते समय, उसी दिन, हम एक छोटी-सी रेतीली धारा के किनारे पहुँचे। आदि-वासियो मे से कोई भी इस धारा का नाम नही बता सका, क्योकि वे इस इलाके से बिलकुल भी परिचित नही थे। यहाँ की जमीन इतनी उजाड और उखड़ी हुई-सी थी कि उनके घोड़ो के लिए यहाँ घास नही मिल पाई। इसलिए वे आगे से आगे बढते रहे, ताकि डेरा डालने लायक जगह पा सके। अब यह इलाका और भी जगली बन गया था। यहाँ मैदानो मे जगह-जगह घाटियाँ, खड्ड और खाइयाँ मिल रहे थे। इसलिए आदिवासी धारा के किनारे-किनारे बढते रहे। इसी समय मेनेसीला नाम के बुजुर्ग सरदार ने ध्यान लगा कर यह जानना चाहा कि शिकार किधर मिलेगा ? इसके लिए सब सरदार लोग एक घेरा बना कर घास पर बैठ गए और तम्बाकू पीते हुए बाते करने लगे। एक बूढे आदमी ने एक हरी टिड्डी को उठाया और उसकी ओर कुछ देर ध्यानपूर्वक देख कर वह बोला, "हमारे पिता, हमे बताओ कि हमें भैसे पाने के लिए कल किस ओर जाना चाहिये ?"

टिड्डी ने बहुत तगी मे आकर अपनी मूँछो के बाल इधर-उधर घुमाये और पश्चिम की ओर उन्हे टिका दिया। मेनेसीला ने उसे ज़मीन पर गिरा दिया और बहुत खुशी से हँसने लगा। वह बोला, कि अगर अगली सुबह सब उसी तरफ गये तो निश्चय ही बहुत अधिक शिकार मार पायेगे। डाकोटा लोग इस टिड्डी को भैसे की दिशा बताने वाला कीडा समझते है।

शाम के समय हम एक हरी और ताजी चरागाह मे आये। इसके बीच से होकर धारा बह रही थी। इसके दोनो ओर ऊँची-ऊँची नगी चोटियाँ खडी थी। आदिवासी लोग इसकी ढलान पर उतर गये। मै सबसे पीछे था। इस लिये मै इस जगह पर सबसे अन्त मे पहुँचा। नीचे पानी के पास भाले चमक रहे

थे, पख फड़क रहे थे और आदमी तथा घोडे आ-जा रहे थे। पार की चरागाह पर पहले से ही आदिवासियो की एक भीड़ जमा हो रही थी। अभी सूर्य अस्त हो ही रहा था और उसकी किरणे पहाडो की चोटियो से होती हुई फैल रही थी।

मैने रेनल से कहा, "आखिर हमने डेरे के लिए एक अच्छी जगह पा ही ली?" रेनल ने उत्तर दिया, "ओह? यह तो बहुत ही अच्छी जगह है। खास कर अगर कही नाग जाति की कोई लड़ाकू टुकड़ी आस-पास ही हो और उनके दिमाग़ मे पास की पहाडी की चोटी से हम पर गोलियाँ बरसाने की बात भी बैठ जाए। मै तो ऐसी जगह पर डेरा डालने के हक मे बिलकुल नही हूँ।"

आदिवासी डेरा डालने के लिए उत्सुक थे। एक बहुत ऊँची चोटी पर एक सैनिक साँझ की चमकती धूप में बैठ कर चारों ओर आस-पास के इलाके में देखने लगा। रेनल ने मुझे बताया कि इस बात की खोज मे इनके बहुत से युवक इधर-उधर के इलाके मे चले गये है।

अब पहाड की चोटी पर भी छाया पडने लगी। इस समय तक डेरे खड़े किये जा चुके थे। गाँव में फिर से शान्ति छा गई थी। इसी समय एकदम एक चीख सुनाई दी। मर्द, औरते और बच्चे बहुत उतावले हो बाहर निकल आये। वे सामने की पहाडियो की ओर देख रहे थे, जिधर से चीखने की यह आवाज़ आई थी। मुझे बहुत दूरी पर कुछ काली और भारी शक्लें एक छोटी-सी पहाडी पर से गुज़रती हुई दिखाई दी। उनके निगाह से हटते ही कुछ और वैसी ही शक्लें आई। ये मादा भैसो के जत्थे थे। आखिर हम शिकार की जगह पर पहुँच चुके थे और हर बात इसकी सूचना दे रही थी कि कल का शिकार काफी अच्छा रहेगा। बहुत ज्यादा थकने और हार जाने के कारण मै 'महान् काक' के घर मे ही लेट गया। कुछ देर बाद रेमड ने आकर मुझे कुछ तमाशा देखने के लिए बाहर बुलाया। वहाँ बहुत से आदिवासी जमा होकर गाँव के पश्चिमी हिस्सो के मकानो के पास खड़े हँस रहे थे। उनसे कुछ दूरी पर मै देख रहा था कि दो काले राक्षसो जैसी शक्लें एक-दूसरे से टकराती हुई हमारी ओर ही आ रही थी। ये दोनो नर भैसे थे। हवा उनकी ओर से गाँव की ओर आ रही थी। वे इतने अंधे और मूर्ख थे कि अपने शत्रुओ की ओर, बिना सोचे, बढे चले आ रहे थे। रेमड ने मुझे बताया कि दो नवयुवक किनारे की घाटियो मे छिप कर, हम से बीस कदम आगे बन्दूकें लिए बैठे थे। वे दोनो भैसे धीरे-धीरे

आगे बढते आ रहे थे। वे बुरी तरह झूम रहे थे। वे आदिवासी युवकों के बिलकुल पास तक चले आये। यहाँ आकर वे कुछ चौकन्ने हुए। दोनो रुक कर खडे हो गये। वे इधर-उधर भी नही देख रहे थे। हमें उनकी काली गर्दन ही दिखाई दे रही थी। सीग, आँखे और नाक उन्होने बीच मे झुका ली थी। आखिर उन दोनो में से एक ने लौटने का निश्चय किया। बहुत ही धीरे-धीरे और मस्ती के ढंग से वह घूमने लगा। अब हमें उसकी बगलें भी साफ दिखाई देने लगी। इसी समय गोली दागने की आवाज और सफेद धुआँ, सामने से उठता हुआ, दिखाई दिया। वह भैंसा बहुत बुरी तरह उछला और तेजी से भाग निकला। इस पर इसका दूसरा साथी भी बहुत तेजी के साथ घूमा। पर, दूसरे आदिवासी ने इस पर बहुत जोर से गोली दाग दी। तब दोनों ही भैंसे पूरी तेजी से भागने लगे। आधे से ज्यादा युवक आवाजें कसते हुए उनके पीछे भागने लगे। पहला भैंसा जल्दी ही रुक गया और लोगो के देखते ही देखते गिर पडा। दूसरा कुछ कम घायल हुआ था। वह पहाडियो मे होता हुआ भाग गया।

आधे घण्टे मे ही चारो ओर पूरी तरह अँधेरा छा गया। मै फिर से सोने के लिए लौट गया। मै बीमार था, इसलिए मुझे अगले दिन होने वाले बडे भारी शिकार को देखने की इच्छा और अधिक उत्तेजित करने लगी।

—: o :—

१५ : शिकार का पड़ाव

पौ फटने से बहुत पहले ही आदिवासियो ने अपना डेरा उखाड़ लिया। मेनेसीला के परिवार की स्त्रियाँ इस काम में सबसे आगे रहती थी। मैंने देखा कि बूढ़ा स्वयं बुझते हुए अँगारो के पास बैठा हुआ, अपने हाथ सेंक रहा था। ठंड बहुत अधिक थी। आगे बढ़ने की तैयारियाँ बहुत गड़बड़ में और बेतरतीबी से की गई थी। कुछ परिवार चलने लगे थे और कुछ के मकान अभी उखड़े भी न थे। इस पर वह बूढ़ा अधीर हो उठा और गाँव के बीचो-बीच जाकर वह, अपने लबादे मे लिपटा हुआ, खड़ा हो गया। वह लोगो को बहुत ऊँची और तेज आवाज में कहने लगा कि जब वे सब लोग शत्रु के शिकार की ज़मीन पर है, तब उन्हें बच्चो का-सा व्यवहार नही करना चाहिए। उन्हें हमेशा की बजाय अब अधिक संगठित और चुस्त होना चाहिए। उसकी इस बात का असर तुरन्त हुआ। देरी करने वाले लोगो ने अपने घर गिराए और लादू घोडो को लाद लिया। सूर्य उगते तक एक-एक मर्द, औरत, बच्चा और पशु गाँव से बाहर निकल चुका था।

यह हरकत इस लिए की गई थी ताकि अच्छी और सुरक्षित जगह खोजी जा सके। इस लिए हम छोटी नदी के साथ तीन या चार मील तक आगे बढ गए। तब हर परिवार अपनी-अपनी जगह चुनकर एक घेरे मे अपने डेरे गाड़ने में जुट गया। औरते इस काम मे जुटी रही और घुडसवार बिना उतरे घोड़ो पर ही प्रतीक्षा करते रहे। सभी वीर सुबह से बहुत रद्दी किस्म के घोडो पर चढे थे। उन्होने अपने अच्छे घोडे आगे के लिए बचा लिए थे। इन्हें या तो वे रस्सी से बाँधकर चल रहे थे, या फिर इन्हे दूसरे बच्चे पकडकर चल रहे थे। इस समय उन्होने छोटी-छोटी टुकडियो मे गाँव छोडना शुरु किया और पश्चिम की ओर मैदानो में तुरन्त ही निकल गए। मैने भोजन नही खाया था और आगे ऐसी तपस्या करने की हिम्मत मुझ मे थी नही। इसलिए मै अपने मेजबान के घर गया। तम्बू बहुत जल्दी तैयार हो गया। अपनी भूख का पता देने के लिए मै इसके बीचो-बीच जा बैठा। तुरन्त ही मेरे सामने सूखे मास से तैयार

किग्रा गया एक बहुत ही उम्दा भोजन, लकडी के बर्तन में, रख दिया गया। इस भोजन को उत्तर के यात्री 'पेमीकन' के नाम से और डाकोटा लोग 'वास्ना' के नाम से कहते हैं। इसमे से मुट्ठी भर लेकर तुरत ही मै भी चल पडा और, अन्तिम शिकारियो के पास की पहाड़ियो मे छिप जाने से पहले ही, मैं यहाँ पहुँच गया। अपनी घोडी पर चढकर मैने भी उनका पीछा किया। मेरे अन्दर ताकत तो न थी, पर तो भी मै जैसे-तैसे खुद को घोड़ी की पीठ पर सम्भाले रहा। पहाड़ की चोटी से मैने सामने के एक उजाड़ मैदान को देखा। इस पर, पास और दूर, नंगे घुड़सवारों की छोटी-छोटी टुकड़ियाँ तेज़ी से चल रही थी। जल्दी ही मैने सबसे पास की एक टुकडी का साथ पा लिया। थोड़ी ही देर में—एक मील के सफर मे ही—वे सब एक बड़े झुंड के रूप मे इकट्ठे हो गए। चारो ओर उतावली और जल्दबाज़ी दिखाई दे रही थी। हर शिकारी अपने घोडे पर चाबुक चला रहा था, जैसे वह स्वय सबसे पहले शिकार मारना चाहता हो। आदिवासियो मे ऐसे मौको पर यही कुछ हुआ करता है। इस दिन तो खासकर गडबड थी, क्योकि इनका बड़ा सरदार साथ नही था और इनमें आगे बढ़ने वाले पहरेदार कम थे। इन सैनिक पहरेदारो को आदिवासियो की 'पुलिस' कहा जा सकता है। और सब कामो के साथ-साथ शिकार की दिशा बताना भी इन्ही का काम माना जाता है। हम दाएँ या बाएँ बिना मुडे, सीधी दिशा मे, बहुत तेज़ चाल के साथ पहाडियो के ऊपर-नीचे चढ़ते-उतरते बढते रहे। रास्ते में सैकडो ही जगली झाडियाँ पड़ती रही। डेढ घंटे तक ये सैनिक इसी प्रकार घोडो की चाल के साथ उछलते-गिरते मेरे सामने बढते रहे। कोई भी कुछ न बोल रहा था। एक बार एक बूढे आदमी को मैने रेमड को कोसते हुए सुना, क्योकि वह अपनी बन्दूक पीछे छोड आया था। वह भी इस लिए कि शिकार और शत्रु के इतना अधिक नजदीक होने पर बन्दूक न होना खतरनाक ही होता है। आगे चलते हुए हमे बहुत घनी झाडियाँ दीखने लगी। इनमे सभी सवार ऐसे छिप गए, जैसे धरती में डुबकी मार गए हो। यहाँ की ऊसर ज़मीन जगह-जगह खाइयो और घाटियो मे फट गई थी। इनमें नीचे जाकर हम सब जमा हो गए और बाहर निकलने की राह खोजकर एक-एक कर चढने का यत्न करने लगे। जल्दी ही हम एक चौडी परन्तु उथली नदी के किनारे आगए। इसके किनारे पहुँचकर बहुत से घुड़सवारों ने ज़मीन

पर घुटनो के बल झुककर पानी पिया और फिर से अपनी जगह पर बैठकर तेजी से चल पड़े।

इस बीच खोजी सिपाही आगे-आगे चलते रहे। अब हमें वे पहाड़ियो की चोटियो पर अपने कपडे हिलाते हुए दिखाई देने लगे। यह इस बात का सकेत था कि उन्हें भैसे दिखाई दे गए है। पर बाद में ये भैसे बूढे निकले, जो पास के मैदान पर चर रहे थे। हमे देखते ही ये एकदम भाग निकले। बहुत देर बाद हमें वे पहरेदार फिर दुबारा इशारा करते दिखाई दिये। उनके इस इशारे को देखते ही हम आगे बढ़े। पर, वे अब दूसरी ओर उतर चुके थे और हम उन्हें देख नही पा रहे थे। लगता है उन्होंने असली शिकार खोज निकाला था। उत्तेजित आदिवासी अपने परखे हुए घोड़ो को पहले से भी अधिक तेजी से भगाने लगे। मेरी घोडी पहले ही बीमार और कमजोर पड़ चुकी थी। अब वह बहुत दु ख अनुभव करने लगी। पसीने के मारे इसकी बगलों का बुरा हाल था। एक पास की नीची पहाड़ी पर जब हम सब इकट्ठ हुए, मैने रेनल और रेमड को बाईं ओर से पुकारते सुना। जब मैने उन्हें देखा तो वे बीस आदमियो के एक दल के पीछे खडे थे। ये लोग बहुत ही छोटी जाति के लग रहे थे। ये सब रेनल की पत्नी के सम्बन्धी थे, और अन्य लोगो के साथ शिकार मे हिस्सा न लेकर ये एक दूर के खड्ड मे शिकार खेलना चाहते थे। वहाँ उन्होने भैसो का एक छोटा-सा समूह देखा था। वे चाहते थे कि वह उनके हिस्से मे ही रहे। मैने उनकी पुकार के उत्तर में रेमड को अपने पीछे चलने के लिए कहा। वह अनमने भाव से मेरी तरफ चला आया। रेनल ने उसे रोकना चाहा। वह उसी की सहायता पर बढ़ना चाहता था। अब रेमड को साथ लेकर मै शिकारियो के मुख्य जत्थे के साथ चला। रेनल बहुत गुस्से मे डूबा हुआ, अपने असभ्य सम्बन्धियो के साथ पहाड़ी के दूसरी ओर निकल गया। हमारे साथी आदिवासी अब भी सौ के लगभग थे। वे एक जत्थे के रूप में बहुत देर तक साथ चलते रहे। उनके पीछे धूल का बादल उड़ने लगा। पहाड की एक तलहटी मे जाकर वे रुके। तब कही मैं उन्हें पकड पाया। जहाँ उनके सिपाही लोग खडे हुए थे, वहाँ हर शिकारी बहुत तेजी के साथ अपने परखे हुए घोड़े से उतरा और साथ लाए हुए दूसरे घोडे पर चढ गया। सारे दल मे किसी के पास भी न काठी थी और न लगाम।

केवल एक खाल से ही घोडे की पीठ को उन्होने ढका हुआ था और बालों से बनायी हुई रस्सी को ही जबडे के चारो ोर बाँधकर लगाम का काम चलाया था। हर घोड़े के सटा और पूछ पर चीलो के पख लगे हुए थे। ये सब साहस और वीरता की निशानी थे। स्वयं घुड़सवारो ने कमर के आस-पास एक छोटे-से कच्छे को छोड़कर और कोई भी कपड़ा न पहन रखा था। पाँवो में जूते अवश्य थे। उनके पास एक भारी चाबुक था, जिसका हत्था बारहसिंगे के सीग से बना हुआ था। या फिर उनके पास एक रस्सी थी, जो भैंसे की खाल से बनी थी और जिसे उन्होने अपनी कलाई से बाँधा हुआ था। अपने हाथ में धनुष और कधे पर तरकश लटकाए लगभग तीस शिकारी पश्चिम की ओर मुड गए, ताकि पहाडी के चारो ओर घेरा-सा बना सके। इस प्रकार भैंसो पर दोनों ओर से एक साथ ही हमला किया जा सकता था। बाकी सब लोग कुछ देर तक प्रतीक्षा करते रहे, ताकि उनके साथी मनचाही जगहो पर पहुँच जाएँ। तब सब लोग एक साथ ही आगे बढे और एक पहाडी की चोटी पर पहुँच गए। यहाँ से पहली बार भैंसे-सामने के मैदान में फैली हुई दिखाई दी।

चार-पाँच सौ की सख्या मे दिखाई देने वाले ये पशु मादा भैंसे थी, जो चौडी धारा के एक किनारे पर इकट्ठी हुई थी। यहाँ घाटी एक चौडे और गोल मैदान के रूप मे फैल गई थी। धूप इस पर तप रही थी और जगह-जगह छोटी-मोटी बिखरी हुई झाडियाँ फैली हुई थी। घाटी के चारों ओर कुछ उजाड ऊँची चोटियाँ खड़ी थी। इनके एक दर्रे मे से हमने सामने अपने साथियो को आते देख लिया। हवा उसी ओर से बह रही थी। भैंसे उन्हे पास आता देखकर हिलने लगी थी। एक पूरे जत्थे के रूप मे चलने के कारण ये बहुत धीमे-धीमे बढ रही थी। मुझे इसके बाद की कुछ बाते याद नही। याद इतना आता है कि हम जब इनके बीच में पहुँच गए, तब चारो ओर अनेको भैंसे मैदान पर बिखरे हुए दिखाई दिए। वे हमारे पहुँचने पर भागने लगे और नदी की रेत को पार करते हुए पहाडियो की ओर निकल गए। उनमे से एक बूढा भैंसा पीछे रह गया। उसका एक अगला पाँव किसी चोट के कारण लगड़ा गया था। तीन पाँव पर बढते हुए उसकी शक्ल कुछ इतनी अजीब-सी लगी कि मैं उसे देखने का लोभ न रोक सका। मै उसके पास

पहुँचा। वह मुझपर उछला। ऐसे हमले के समय वह खुद ही गिरने लगता था। मैंने निगाह उठाकर देखा तो बाकी आदिवासी मुझसे सौ गज़ से भी अधिक दूरी पर जा पहुँचे। मैने घोडे को एड़ लगाई और जल्दी ही उन तक पहुँच गया। यहाँ प्रत्येक सवार ने अपने घोडे को बुरी तरह चाबुक मारी और प्रत्येक घोड़ा उछलता हुआ अलग-अलग दिशा में बिखरने लगा, ताकि सारे झुंड पर एक साथ ही हमला किया जा सके। हम लोग भैंसों पर सीधे हमले के लिए आगे बढ़े। एक ही क्षण मे हम उनके बीच में जा घुसे। इस सब गड़बड और चीख-चिल्लाहट मे मैं केवल इधर से उधर भागती हुई धूप मे लुकती-छिपती, भैसो की शक्लें ही देख पा रहा था। घुड़सवार तेजी से उनका पीछा कर रहे थे। हमने एक ओर से हमला किया और हमारे दूसरे साथियो ने, इस घबराए हुए जत्थे पर, दूसरी ओर से हमला कर दिया। तभी धूल उठनी बद हो गई और गड़बड कुछ कम पड़ गई। हमने देखा कि भैंसें कुछ बिखरने लगी थी, जैसे किसी केन्द्र से चारो ओर बिखर रही हो। वे अब एक-एक करके, या छोटी-छोटी टुकड़ियो अथवा कतारों मे, मैदान पर भागने लगी। आदिवासी उनका पीछा कर रहे थे। वे अपनी पूरी तेज़ी पर थे और साथ ही अपने दाएँ-बाएँ बाण छोडते हुए चिल्लाते जाते थे। सामने के मैदान मे जहाँ-तहाँ भैंसो के शव बिखरे पड़े थे। इधर-उधर कोई न कोई घायल भैंसा भी खड़ा था, जो बाणो से छिदा पडा था। जब मैं उनके पास से गुज़रता, तो ऐसे घायल भैंसों की आँखें चौंक पड़ती। वे एक बडे बिलाव की भाँति गुर्राने लगते और तेज़ी से मेरे घोड़े पर हमला करने की कोशिश करते।

सुबह जब मैने डेरा छोडा था, तब किसी खास विचार से ही! मैं और घोड़ी दोनो ही इस प्रकार के शिकार के लिए तैयार न थे। मैंने निश्चय किया था कि मैं कोरा दर्शक बनकर रहूँगा। किन्तु घोडो और भैंसो के इस गडबड झाले मे चुप रहना असम्भव हो गया। जब चार या पाँच भैंसे एक साथ मेरे सामने से, एक-एक करके, गुज़रे, तो मैंने अपनी घोडी को उनके पीछे लगा दिया। अब हम पानी और रेत मे से होते हुए नदी के दूसरे किनारे पर चढे और जगली झाड़ियों को पार करते हुए सामने के मैदान मे उनका पीछा करने लगे। हालाँकि मेरी घोड़ी इसी देश की थी पर तो भी न तो इस इलाके की आदतो ने और ना ही चाबुक की मार ने उसकी चाल तेज़ की। वह

एकदम थकी हारी थी। हम इन विद्रोही पशुओं से एक इंच भी आगे न निकल सके। अन्त में वे एक ऐसी घाटी पर आ गए, जहाँ से वे कूद कर पार नहीं जा सकते थे। अब उन्हें एक दम ही बाईं ओर मुडने पर मजबूर होना पड़ा। मैने पिछली भैंस के दस या बारह गज दूर तक बढने में सफलता पाई। ज्यों-ही भैंस को पता चला तो वह मुड़ी और गुस्से से हमले के लिए झुकी। मैंने गोली दाग दी। उसकी गर्दन में जाकर लगी। अब वह घाटी मे उतर गई, जहाँ उसकी साथिने पहले ही नीचे उतर चुकी थी। मैने उन सबकी काली पीठें घाटी के तले मे लुकती-छिपती देखी। तब वे दूसरी ओर एक-एक करके चढने लगी और पहले की तरह भागने लगी। घायल भैंस उन सबके पीछे-पीछे चल रही थी।

पीछे की ओर मुड़कर मैने देखा कि रेमड अपने टट्टू पर चढा हुआ मेरी ही ओर आ रहा था। अब हम साथ-साथ बढने लगे। हमने मैदान, घाटियो और नदी के तट पर पडे हुए बीसियो शव देखे। अब भी बहुत दूरी पर घुडसवार और भैंसे आपस में उलझे हुऐ दिखाई दे रहे थे। उनके पीछे धूल के बादल उठ रहे थे। पहाड की चढाइयो पर, घबराए हुए पशु, तेज़ी से चढ़ने लगे। अब शिकारियो ने लौटना शुरू किया। जिन लडको ने पहाडी के पीछे घोडे पकडे हुए थे, वे सामने आ गए। भैसो को काटने और उनकी खाल अलग करने का काम सभी जगह एक साथ शुरू हो गया। मैने देखा कि मेरा मेजबान धारा के पार एक भैंस के पास उतरा। उसने ही इसे मारा था। उसके पास जाकर मैने देखा कि वह एक बाण खीच रहा था। यह बाण केवल अन्तिम कोने को छोड़कर सारा ही पशु के अन्दर धँस गया था। मैने उससे यह बाण माँग लिया। यह अब भी मेरे पास इस बात के सबूत के रूप मे मौजूद है कि आदिवासी कितनी तेजी और ताकत के साथ अपने बाण चलाते हैं।

खालें और मास घोडो पर लाद लिए गए। शिकारी अपने घरो की ओर चलने लगे। रेमड और मै भी इस दृश्य से उकता कर बीच के रेगिस्तान से होते हुए गाँव की ओर सीधा बढ चले। इधर कोई रास्ता बना हुआ नही था और न ही कोई चिह्न बने हुए थे, पर तो भी रेमड क्षितिज पर देखता हुआ अपनी सूझ के बल पर बढ़ता जा रहा था। यहाँ चारो ओर से हिरण

उछल रहे थे। भैंसों के पास रहने के कारण वे अपनी लाज छोड़ चुके थे। उनके समूह-के-समूह चट्टानों भरी चढ़ाइयों पर चढते-उतरते और चोटियो से हमारी ओर देखने लगते। अन्त में हमने वे सफ़ेद ऊँची चट्टानें और वह पुराना चीड का पेड पहचान लिया, जो हमारे डेरे के पास ही थे। अब भी हमे डेरा दिखाई न दिया। हम एक छोटी-सी पहाडी के ऊपर चढे। यहाँ से हमें मकानो का एक घेरा-सा दिखाई दिया। मकान बहुत पुराने लग रहे थे।

मै अपने मेज़बान के घर मे घुसा। तुरन्त ही उसकी स्त्री मेरे लिए भोजन और पानी ले आई। उसने मेरे लिए एक खाल भी बिछा दी, ताकि मै लेट सकूँ। बहुत थका होने के कारण मै सो गया। लगभग एक घण्टे बाद 'महान् काक' के आने पर मेरी नीद खुली। उसकी बाँहें अब भी खून से सनी हुई थी। वह घर में अपनी निश्चित जगह पर बैठ गया। उसकी पत्नी ने उसके लिए अंग साफ करने के लिए पानी ला दिया। तब उसके सामने उबला हुआ माँस खाने के लिए रखा। खाते समय उसने अपने खून से भरे जूते उतारकर दूसरे नये जूते पहन लिए। खाने के बाद अपने अगो को फैलाकर वह सो गया।

दो और तीन की टुकडियो मे जल्दी-जल्दी शिकारी लौटने लगे। हर कोई अपना घोडा अपनी पत्नी को थमाकर अपने घर में ऐसी तृप्ति के साथ घुसने लगा, जैसे उसने दिन भर का काम निपटा लिया हो। औरतो ने घोडो की पीठो से सारे बोझ को उतारा और जल्दी ही सब घरो के आगे मांस और खालो का ढेर जमा हो गया। इस समय तक अँधेरा छाने लगा और सारे गाँवो में जगह-जगह आग चमकने लगी। मांस और खालो के इस ढेर के पास सभी औरतें और बच्चे इकट्ठे हुए और उनके सबसे अच्छे हिस्सो को देखने लगे। इसमे से कुछ मास आग पर छडो के सहारे लटका कर भून लिया गया। परन्तु कई बार इस बात की भी जरूरत नही समझी जाती थी। रात मे बहुत देर तक आग जलती रही और दावत खाने वाले चारो ओर बैठकर दावत खाते रहे।

बहुत से शिकारी हमारे मकान मे बैठे हुए दिन के शिकार पर बातें करते रहे। इसी समय मेनेसीला भी आया। वह हालांकि अस्सी साल का हो चुका था, पर तो भी उसने आज के शिकार में पूरा हिस्सा लिया था। उसने दावा किया कि उसने उस रोज दो भैंसें मारी थी, और शायद तीसरी भी मार लेता

अगर कही आंखो मे धूल घुसकर उसे धनुष एक ओर रखकर आँखे मलने पर मजबूर न कर देती। आग की चमक उसके झुरीदार चेहरे पर पड रही थी। वह अनेक इशारो के साथ अपनी कहानी सुनाता रहा और लोग हँसते रहे।

बूढा मेनेसीला उन कुछ आदिवासियो में से था, जिन्हे मैं बिना सन्देह के विश्वास योग्य मानता था। ऐसा तो यह अकेला ही आदिवासी थी, जिससे मैने बिना किसी लोभ के कोई भेट या सेवा पाई थी। वह गोरे लोगो का सचमुच अच्छा मित्र था। वह उनके साथ रहने का शौकीन था और उसे उनकी भेंटो के पाने का बहुत गर्व था। उसने एक दिन मुझे बताया कि वह इस धरती पर बीवर प्राणी या गोरे लोगो को ही सबसे अधिक बुद्धिमान् मानता था। उसके विचार मे वे दोनो थे भी एक ही। एक घटना उसके साथ बहुत पहले घटी थी, जिससे उसका यह विश्वास और भी पक्का हो गया था। इस विषय मे उसने अपनी एक कहानी सुनानी शुरू की, जिसका अनुवाद, चिलम के कश खीचने के समय का लाभ उठाकर, रेनल मुझे सुनाता गया। वैसे तो वह बूढा स्वयं ही अपने शब्द ऐसे इशारो के साथ बोल रहा था, जिससे अनुवाद की कोई आवश्यकता न रह जाती थी।

उसने बताया कि जब वह बहुत छोटा था और अभी जब उसने किसी गोरे आदमी को न देखा था, तब वह और उसके तीन-चार साथी बीवर के शिकार के लिये निकले। वह एक बहुत बडे बीवर के घर मे घुस गया, ताकि देख सके कि वहाँ क्या कुछ होता है? कुछ देर वह अपने हाथो और घुटनो के बल चला और कुछ देर उसे तैरना भी पडा। फिर कभी उसे लम्बा लेट-कर सरकना पडा। यह बहुत ही अँधेरी बनी और सटी हुई जगह थी। अन्त मे उसे साँस घुटती-सी लगी। वह मूर्च्छा से घिर गया। जब उसे होश आई तब वह बाहर से आने वाली अपने साथियो की आवाज को पहचान पाया। उन लोगो ने उसे मरा हुआ समझकर दुःख का गीत गाना आरम्भ कर दिया था। पहले तो वह कुछ भी देख न सका, पर जल्दी ही उसने सामने कोई सफेद सी चीज देखी। तब उसने सामने के तीन आदमियो को साफ-साफ़ पहचान लिया। वे एक दम गोरे थे। उनमें से एक पुरुष था और दो औरतें। वे पानी के एक काले जोहड के किनारे बैठे थे। वह चौक गया और लौटने का उचित मौका जानकर बडी कठिनता से बाहर निकला। दिन के प्रकाश में

आते ही वह तेज़ी से उस स्थान की ओर गया, जहाँ उसने तीन अद्‌भुत प्राणी देखे थे। उसने अपनी मूंगरी से ज़मीन मे छेद किया और देखने के लिए झुका। एक ही क्षण मे एक बूढे नर बीवर की नाक निकलती हुई दिखाई दी। मेनेसीला ने उसे तुरन्त ही पकडकर ऊपर खीच लिया। इसी छेद से दो मादा बीवर भी उसी प्रकार से बाहर निकली और उसने उन्हे भी पकड़ लिया। उस बूढे ने अपनी कहानी समाप्त करते हुए कहा, "लगता है, ये बीवर ही वे तीनो गोरे आदमी थे, जिन्हे मैने पानी के किनारे बैठे देखा था।"

मेनेसीला को अपने गाँव की बहुत-सी पुरानी कहानियाँ और रीति-रिवाज याद थे। मै इनमे से कुछ को ही समझ पाने मे समर्थ हुआ और आदिवासियो की तरह वह भी बहुत ज्यादा अंधविश्वासी था और अपनी बातो को न सुनाने का कोई न कोई कारण खोज लेता था। कभी वह कहता, "गर्मियो मे ऐसी बाते नही सुनानी चाहिएँ। तुम अगली सर्दियो तक हमारे साथ रुको, तो मै जितनी बातें जानता हूँ, सभी सुना दूंगा। अगर मै इस समय कहानियाँ सुनाने लगूं तो हमारे जो नौजवान टुकडियाँ बाँधकर युद्ध के लिए निकलने वाले है, उन्हें मौत का सामना करना पड़ेगा। इसलिए पाला पडने से पहले मै कहानियाँ नही सुनाऊँगा।"

हम उस जगह पाँच दिन तक डेरा डाले पडे रहे। इनमे से तीन दिन तो शिकारी लगातार काम मे जुटे रहे और मांस और खालें बडी मात्रा में लाते रहे। वैसे गाँव मे चारो ओर चिन्ता-सी छा रही थी। सभी लोग चौकन्ने थे। कुछ नौजवान सारे इलाके मे, पहरेदार के रूप मे, घूम आते थे। बूढे लोग अपशकुनो और बुरी बातो का ख्याल रखते थे, खासकर अपने बुरे सपनो का। शत्रु को यह बताने के लिए कि हम लगातार अपनी रक्षा मे सावधान है, उन्होंने अपने यहाँ बहुत से पत्थर और लकडियाँ आसपास की पहाडियो से इस तरह जमा कर ली थी कि दूर से देखने पर वे खडे हुए पहरेदारो के रूप में दिखाई दें। आज भी मुझे उस सारे दृश्य की याद आ जाती है: किस तरह सफेद चट्टाने, चीड़ के पेड, उन पहाडियो की तलहटी मे गाँव को आधा घेरती हुई बहने वाली नदी और अपनी रगीनी और सुगन्ध को फैलाने वाली जगली झाड़ियाँ—वहाँ सभी ढलानो पर नज़र आ रही थी। लगातार घर

और नदी के बीच में, अपने बर्तनो के साथ, औरतो का आना-जाना जारी था। दिन के अधिक समय डेरे में औरतो और बच्चो के अलावा कोई और न दिखाई देता था। या फिर दो तीन बूढे या निकम्मे आदमी ही वहाँ रह जाते थे। कुत्तो के साथ-साथ ये ही लोग डेरे में पड़े-पड़े मोटे हो रहे थे। तब भी यह डेरा काम-काज में खूब जुटा हुआ-सा दीखता था। सभी कोनो में मास चमड़े की रस्सियो पर लटक रहा था। घर के चारो ओर खालें बिछाकर औरतें और बूढे आदमी उन्हे ठीक से बना रहे थे। ये उनके बाल और उन पर चिपटा हुआ मास उतार कर उन्हे भैसे के दिमाग की चरबी से रगड रहे थे, ताकि उन्हे कोमल और चिकना बनाया जा सके।

खुद पर और घोड़ी पर रहम खाकर मैने पहले दिन के बाद से ही शिकार पर जाना बन्द कर दिया था। पिछले कुछ दिनो से मुझ में फिर से ताकत आने लगी थी। बीमारी के बाद हर आराम के मौके पर ऐसा ही होता था। जल्दी ही मै आराम से चलने फिरने लायक हो गया। रेमंड और मै पास के मैदानो मे हिरण या किसी लडखडाते भटके हुए भैंसे को मारने के लिए पैदल ही निकल जाते। इस काम में हमें कम ही सफलता मिलती। एक सुबह मै ज्यो ही अपने डेरे से बाहर आया रेनल ने मुझे गाँव के दूसरी ओर से बुलाया और खाने के लिए निमन्त्रित किया। यह नाश्ता भी कुछ खास ही था। यह एक बहुत मोटी भैंस की पीठ के मास से बना था। यह बहुत स्वादु था। यह आग पर पक रहा था और इसे एक मजबूत छड से बाँधकर लटकाया गया था। रेनल, मैने और रेमड ने मिलकर भुने हुए मास को अपने चाकुओ से काटना शुरू किया और इसके चारो ओर बैठकर खाने लगे। मुझे दवाइयो के विषय में कुछ पता था, पर तो भी इस प्रकार के, नमक या रोटी के बिना खाए जाने वाले, सूखे मांस मे मुझे आनन्द आने लगा। लगा जैसे इससे कुछ नुकसान न होगा।

रेनल ने कहा, "रात आने से पहले आज हमे किन्ही अजनबियो का सामना करना पडेगा।"

मैने पूछा, "तुम कैसे जानते हो ?"

"मुझे स्वप्न मे ऐसा दिखाई दिया है। मुझे भी आदिवासियो की तरह स्वप्न देखने की आदत है। मेरे सम्बन्धी युवक 'तूफ़ान' ने भी यही बात स्वप्न में देखी है। इसीलिए वह और उसका छोटा भाई 'खरगोश' इस बात का

पता करने बाहर तक गए है।"

मै रेनल की इस बेवकूफी पर हँस पड़ा और अपने मेज़बान के घर लौटकर अपनी बन्दूक उठाकर एक दो मील दूर तक मैदान में निकल गया। वहाँ मैंने एक भैंसे को अकेले ही एक घाटी के किनारे खड़े देखा। मैने उस पर गोली दाग दी, पर वह भाग निकला। तब थका हारा मै फिर से गाँव मे लौट आया। उसी समय एक ऐसा अजब सयोग हुआ कि रेनल की भविष्यवाणी सत्य निकली। मैने गाँव में घुसते ही जिन दो अजनबियो को सबसे पहले देखा वे थे रूलो और साराफै। ये दोनो पशु-फँसाने वाले हम से लगभग पन्द्र दिन पहले अलग हुए थे। इन दिनो ये ब्लैक हिल्स मे पशु फँसाते रहे थे और अब राकी पर्वतमाला की ओर जा रहे थे। इनका इरादा एक या दो दिन में ही 'मेडिसन बो' की ओर चले जाने का था। ये कोई बहुत अच्छे या सभ्य साथी नही थे, पर तो भी गाँव मे, हमारे थोड़े से दायरे मे, इनका स्वागत होना उचित ही था। उस दिन बाकी समय हम रेनल के घर मे बैठे तम्बाकू पीते रहे और गप्पें लगाते रहे। उसका घर किसी कुटिया से ज्यादा अच्छा न था। बल्लियो पर खालें तो फैली हुई थी, पर सामने की ओर से यह बिलकुल खुला हुआ था। इसमे बहुत सी खालें फर्श पर बिछी हुई थी। यहाँ हम धूप से बचकर बैठे रहे। हमारे चारो ओर घर का साज-समान बिखरा हुआ था। गाँव मे चारो ओर शान्ति थी। शिकारी उस दिन बाहर नही गए थे और उनमें से अधिकाश सो रहे थे। स्त्रियाँ चुपचाप अपने कामो मे जुटी हुई थी। कुछ थोड़े से नवयुवक गाँव के बीच के एक घेरे मे गेंद से एक खेल खेल रहे थे। जब वे थक गए, तो उनकी जगह कुछ लडकियाँ इकट्ठी होकर हँसी-मज़ाक का एक खेल खेलने लगी। इनसे कुछ दूर, मकानो के घेरे में, कुछ बच्चे और लडकियाँ भैंसो की खालो में छिपी अपनी साथिन से खेल रही थी। कभी यही खेल साँचो-पाँचा नाम के प्रसिद्ध व्यक्ति को भी प्रिय रहा था। दूर मैदान में कुछ नगे बच्चे इधर-उधर कोई छोटा-मोटा खेल खेल रहे थे, या फिर छोटे-छोटे पक्षियो का पीछा, अपने छोटे से धनुष-बाण लेकर, कर रहे थे। अपने हाथ मे पड जाने वाले पक्षियो का वे बुरा हाल बना रहे थे। हमारे पास के ही डेरे से एक सुन्दर गृहस्वामिनी हमारे लिए वास्ना का एक बडा वर्तन भर कर ले आई। जब मैने उसे इसके वदले मे काँच की एक हरी अँगूठी दी तो

वह आनन्द में डूब गई। ऐसी अँगूठियाँ मैं ऐसे मौके पर देने के लिए अपनी उँगलियों में पहने रहता था।

सूर्य छिप गया, पर अब भी आधा आकाश लाल-सा बना हुआ था। डूबते सूर्य का प्रकाश धारा के पानी पर और आसपास की झाड़ियों पर भी पड रहा था। कुछ युवक गाँव से निकले, पर थोडी ही देर बाद वे फिर लौट आए। इनके साथ सैकडो की संख्या मे, हर आयु, आकार और रग के, घोड़े मौजूद थे। शिकारियो ने अपना-अपना घोडा चुन लिया और उसकी हालत जाँचकर उसे लम्बी रस्सियो के साथ अपने-अपने मकान के आगे बाँध लिया। आधे ही घटे मे सब हलचल शान्त हो गई और फिर से चारो ओर शान्ति छा गई। इस समय तक अँधेरा हो चला था। पतीलियाँ चूल्हो पर चढ़ा दी गई थी और चारो ओर, अपने बच्चो के साथ जमा होकर, औरतें हँसी-मज़ाक कर रही थी। गाँव के बीचो-बीच एक और किस्म का घेरा बना हुआ था। यहाँ बूढे लोग और प्रसिद्ध योद्धा अपने-अपने सफेद लबादो को पहने हुए बैठे थे। चिलम सबके बीच में घुमाई जा रही थी। वे बहुत हल्के ढँग से बातचीत करने मे जुटे हुए थे। उनकी बातचीत मे हमेशा की-सी गम्भीरता न थी। मै भी उनके साथ, सदा की भाँति, बैठ गया। मेरे पास करीबन आधा दर्जन साँप और फुलझडियाँ थी, जिन्हे मैने लारामी धारा के किनारे टिके रहने के दिनों में बारूद से बनाया था। मै तब तक इन्तजार करता रहा, जब तक कि मेरे पास वह जलती हुई बडी लकडी न आ गई, जिसे आदिवासी लोग अपनी चिलम सुलगाने के लिए अपने पास ही रखते है। इससे मैने उन सब पटाखों और फुलझडियो को एक साथ ही जला दिया और सब लोगो के बीच मे हवा में उड़ा दिया। वे सब एक साथ ही आश्चर्य में चीखते हुए, तंगी-सी महसूस करने लगे और उछल पडे। कुछ देर बाद उनकी हिम्मत लौटने की हुई। उनमें से कुछ ने जले हुए कागजो आदि को देखकर अपनी उत्सुकता मिटानी चाही। तब से मुझे उन लोगो ने 'आग का जादूगर' समझना शुरू कर दिया।

डेरे मे प्रसन्नता-भरी आवाजो की एक हल्की सी गूँज भरी हुई थी। साथ ही एक और प्रकार की आवाजे भी आ रही थी। एक बडे भारी घर मे बीचों-बीच आग जल रही थी और उसके पास से एक बहुत दु:ख भरी आवजा

आ रही थी। ऐसे लगता था, मानो भेड़िए चिल्ला रहे हो। वहाँ पर एक लगभग नंगी औरत घुटनो के बल बाहर बैठी ज़ोर से चिल्ला रही थी और अपनी टाँगो पर चाकू से घाव कर रही थी। उसकी टाँगें लहू-लुहान हो चुकी थी। इस परिवार का एक युवक पिछले साल शत्रु ने इसी दिन कत्ल कर दिया था। आज उसके ही सम्बन्धी उसका अफसोस कर रहे थे। इसके अलावा और भी आवाज़ें सुनी जा सकती थी। ये आवाज़ें गाँव से बहुत दूर से, अन्धेरे में से, आ रही थी। ये आवाज़ें उन युवको की थी, जो अगले कुछ ही दिनो में युद्ध के दल के रूप मे जाने वाले थे और इस समय पहाड़ी की चोटी पर खड़े होकर 'महान् आत्मा' को अपने पराक्रम मे सहायता देने के लिए पुकार रहे थे। जब मैं इन्हें सुन रहा था, तभी हँसते हुए रूलो ने मेरा ध्यान एक दूसरे कोने की ओर खीचा। एक घर के सामने एक औरत खडी हुई एक पीले कुत्ते पर घृणा प्रकट कर रही थी, जो अपने पजो के बीच मे नाक टिकाए हुए बैठा था। उसकी सुस्ताती हुई आँखें औरत के चेहरे की ओर लगी हुई थी, मानो वह आदरपूर्वक उसकी बात सुनना चाहता हो, और बात खतम होते ही सो जाने की पूरी तैयारी भी कर चुका हो। वह कह रही थी—

"तुम्हें अपने किए पर शर्म आनी चाहिए। मैने तुम्हें अच्छी तरह खाना दिया है और बचपन से ही तुम्हें अच्छी तरह पाला है। आज तुम चिल्लाना सीख गए हो, पर उस समय तुम्हे चलना भी न आता था। जब तुम बडे हुए मैंने तुम्हें एक अच्छा कुत्ता समझा। तुम काफी मजबूत और सभ्य रहे, खासकर जब तुम्हारी पीठ पर बोझ लादा जाता। तुम घोडो की टाँगो के बीच से होकर, यात्रा के समय, कभी नही गुज़रे। परन्तु इस पर भी तुम सदा ही दिल के काले रहे। जब भी झाडियो मे से कोई खरगोश बाहर आता, सबसे पहले तुम उसकी ओर भाग पडते और दूसरे कुत्ते तुम्हारे पीछे भाग निकलते। तुम्हें पता होना चाहिए कि इन मैदानो मे ऐसा करना बहुत भयकर होता है। ऐसे समय अगर तुम अचानक ही अकेले किसी घाटी मे पहुँच जाते और कोई भेड़िया तुम पर हमला कर बैठता तो तुम क्या करते? निश्चय ही तुम मारे जाते। अपनी पीठ पर बोझ लादे कोई भी कुत्ता ठीक से नही लड़ सकता। आज से कोई तीन दिन पहले फिर तुम उसी तरह भाग निकले और तुमने वे सारे लकडी के खूँटे गिरा दिए, जिन्हें मैं घर के तम्बू कसने के काम में लाती थी।

अब तुम्ही देखो, यह सारा तम्बू ढीला पड गया है। इससे बढकर आज रात तुमने मास में से बडा-सा टुकडा चुरा लिया, जो आग पर मेरे बच्चो के लिए भुन रहा था। मै तुम्हें बता दूँ कि तुम दिल के काले हो और इसलिए तुम्हें मरना ही पडेगा।"

यह कहकर वह औरत घर में गई और पत्थर की एक बड़ी कुल्हाडी ले आई। उसकी एक ही चोट से उसने कुत्ते को मार डाला। उसका यह भाषण ध्यान देने लायक है। इसमें आदिवासियो की एक विचित्र विशेषता छिपी हुई है। उन लोगो की दृष्टि मे नीचे दर्जे के पशुओ मे भी किसी की बात को समझने की ताकत और बुद्धि होती है। अपनी परम्पराओ के अनुसार इनमे से बहुतो से वे अपना सम्बन्ध मानते है। वे लोग स्वयं को रीछो, भेडियो, हिरणो और कछुओं से उत्पन्न मानते है।

बहुत देर हो जाने के कारण गाँव पार करके मै अपने डेरे पर आ गया। अन्दर घुसकर मैंने देखा कि बीच की आग मद्धम पडनी शुरू हो चुकी थी। इसके पास ही, अपनी पुरानी जगह पर, 'महान् काक' सो रहा था। उसका बिस्तर बहुत आरामदेह था। जमीन पर बहुत-सी खालें बिछाकर, और हिरण की खालो का तकिया बनाकर, यह तैयार किया गया था। उसकी पीठ की तरफ़ बाँसो और सरकडो से बना हुआ एक खास ढाँचा था, जिसका सहारा वह बैठते समय ले सकता था। इन सबके ऊपर उसके सिरहाने पर धनुष और तरकश लटके हुए थे। उसकी हँसमुख और चौडे चेहरे वाली पत्नी ने अब तक भी अपना काम ठीक से नही निपटाया था। वह अब भी घर मे बर्तनो और सूखे मास की गाँठो आदि को खोजती फिर रही थी। दुर्भाग्य से इस मकान मे ये दो प्राणी ही नही रहते थे, बल्कि वहाँ कम से कम छः बच्चे भी इधर-उधर बिखर कर अजब तरह से सोते थे। मेरी काठी मकान के सबसे अगले हिस्से मे पडी हुई थी और इसके सामने एक खाल बिछी हुई थी। मै यहीं कम्बल में लिपट कर सो गया। यदि मै बहुत अधिक थका हुआ न होता, तो पास के मकान से आने वाली आवाज मेरी नीद तोड देती। वहाँ आदिवासी ढोल बजा रहे थे और साथ-साथ तेज हुकारे भरते जा रहे थे। कम-से-कम बीस आदमी एक साथ ही कुछ गा रहे थे। पास मे ही पूरी रस्मो के साथ जुआ खेला जा रहा था। खिलाड़ी दावो पर अपने आभूषणो, घोड़ो, पोशाको

तथा हथियारो तक को लगा रहे थे। इस प्रकार का भयकर जुआ केवल सभ्य ससार का ही अधिकार नही है। मैदानो और जंगलो के लोग अपनी कठिन जिन्दगी की उकताहट को दूर करने के लिये इस प्रकार के उत्तेजना भरे खेल खेलना अधिक पसन्द करते हैं। मैं पूरी तरह सो चुका था, पर तो भी हल्की-हल्की आवाज मेरे कानो मे आती रही। सुबह होने तक यह सब कुछ इसी तरह चलता रहा। रात में एक बच्चा सरकता हुआ मुझ तक आ गया और एक दूसरा मेरे कम्बल में घुस कर तिरछा होकर पड़ गया। मैने अपने सिरहाने रखी एक छड़ी से इन दोनो बच्चो को दूर भगाया और फिर से सो गया। ये बच्चे दिन भर या तो सोते रहते है या फिर खाते रहते है। इसीलिए ये बैचन हो जाते है रात में कम से कम चार-पाँच बार इसी तरह मुझे इन्हे हटाना पड़ता था। मेरे मेजवान ने एक और आफत खडी की हुई थी। सर्व आदिवासियो के समान वह भी कुछ रस्मो को नियमित रूप में करता था, क्योकि युद्ध, प्यार, शिकार या और किसी मौके पर इन रस्मो के करते रहने से उन्हे सफलता मिलने की उम्मीद रहती है। इन कामो को वे लोग 'इलाज या टोना' मानते हैं। उन्हें ये रस्मे सोते हुए स्वप्न में दिखाई देती हैं। कई बार ये बहुत बुरी होती है। कुछ आदिवासी इन सपनो के अनुसार चिलम पीते हुए उसे जमीन पर कई बार ठोकते है। दूसरे कुछ लोग यह कहते हैं कि उनकी हर बात का उलटा अर्थ लिया जाना चाहिए। शॉ ने मुझे एक बार बताया था कि वह एक ऐसे बूढे आदिवासी से मिला था, जिसका यह कहना था कि यह दुनिया तबाह हो जाएगी, अगर उस से मिलने वाले प्रत्येक गोरे आदमी को वह अपने हाथ से ठंडे पानी का प्याला न पिलाये। इस प्रकार के विधानो के विषय में मेरा मेजवान बहुत अभागा रहा। उसे स्वप्न के समय आत्माओ ने बताया कि उसे एक खास गाना हर रोज आधी रात के समय गाना होगा। हर रोज, आधी रात के समय, उसका यह उकता देनेवाला गाना या मन्त्र पढना मेरी नीद भगा देने का कारण बनता था। मैं उसे चौकडी मारकर सीधा बैठे हुए देखता। वह जैसे-तैसे काम निपटाने की भावना से उस भयानक विधि को पूरा कर रहा होता था। रात में इन आवाजो के अलावा इससे भी अधिक बुरी कुछ आवाजें सुनाई दे जाती थी। सूर्य छिपने से अगली प्रातः तक गाँव भर के सारे कुत्ते सैकड़ो की संख्या मे इकट्ठे होकर भौंकते और चीखते

रहते। मैने इस प्रकार की भयकर आवाज कही नही सुनी थी। शायद ऐसी आवाज केवल अरकंसास की पहाडियो के भेडियों के इकट्ठा होकर चिल्लाने पर ही सुनी थी। भेडियो की आवाज फिर भी किसी लय में बँधकर चलती है, कुत्तों की यह आवाज तो बिल्कुल ही बेसुरी और बेमेल थी। बहुत दूर से आने वाली यह आवाज एक डर-सा पैदा कर देती थी। अगर इसको सुनते हुए कोई सो जाए, तो यह भयंकर आवाज बहुत बुरी साबित होती है। इसके शुरू मे एक बहुत लम्बी और ऊँची आवाज आती है और तब कोने-कोने से आवाज़ उठने लगती है। इस प्रकार गाँव के चारो ओर ये आवाज़े गूँजने लगती हैं। कुछ देर तेज होकर यह आवाज़ शान्त हो जाती है।

सुबह आई और मेरा मेजबान दूसरे शिकारियों के साथ ही निकल गया। यहाँ उचित ही होगा, अगर हम उसके पति और पिता के रूप पर भी एक निगाह डाल ल। वह और उसकी पत्नी अधिकांश आदिवासियो की तरह अपने बच्चो के बहुत शौकीन थे। वे उनमे ज़रूरत से ज्यादा उलझते थे और उनके अपराधो पर, बहुत कम मौको पर ही, दंड देते थे। उनके बच्चे न तो अपनी ज़िम्मेवारियों को पहचानते थे और न उनकी आज्ञा मानते थे। इस प्रकार की शिक्षा के कारण ही उन बच्चो मे नियंत्रण और काबू से बाहर रहने की भयकर आदत पड जाती है। हमारे मेजबान से अधिक बच्चो को प्यार करने वाला पिता कोई और न होगा। उसका एक बच्चा दो फुट से भी छोटा था। यह अपने पिता को सबसे अधिक प्यारा था। घर के बीचो-बीच एक खाल बिछाकर वह स्वय उसपर बैठ जाता और इस बच्चे को अपने सामने सीधा खड़ा कर लेता। तब उसके सामने युद्ध के नाच के समय गाए जाने घाले कुछ शब्द गाने लगता। वह बच्चा, जो अभी खडा होकर अपने को सम्भाल भी न सकता था, अपनी टाँगें उठाकर पिता की आवाज के साथ घूमने लगता। इस पर मेरा मेजबान खुशी और आनन्द के मारे मस्त हो जाता और मेरी प्रशंसा और प्रसन्नता को पाने के लिए मेरी ओर मुडकर देखने लगता। पति के रूप में वह कम दयालु न था। इस मकान मे रहने वाली उसकी पत्नी उसकी सच्ची साथिन बनी हुई थी। वह उसके बच्चो और घरेलू चीजों का अच्छी तरह ध्यान रखती थी। वह भी उसे बहुत चाहता था। जहाँ तक मैं समझ पाया, वे कभी लड़ते भी नही थे। इस पर भी उसका अधिक प्यार

नई लाई गई दूसरी कुछ जवान औरतो पर अधिक था। इनमें से इस समय एक उसके साथ ही थी, जो इस मकान से अलग पास के ही एक दूसरे मकान में रह रही थी। एक दिन इसी पड़ाव में रहते हुए वह उससे नाराज हो गया और उसने उसे धक्का देकर, ज़ेवर, पोशाक और उसकी हर चीज के साथ, उसे बाहर निकाल दिया और अपने पिता के घर जाने को कहा। इस प्रकार का छोटा-सा तलाक देने के बाद वह फिर आकर अपनी जगह पर बैठ गया और बहुत शान्ति और सन्तोष के साथ अपनी चिलम पीने लगा।

मैं उस शाम उसके पास ही बैठा हुआ था। मुझे यह उत्सुकता जगी कि उस के नंगे बदन पर जो सैकड़ों घावो के निशान दिखाई देते थे, उनके बारे में कुछ पूछताछ करूँ। कुछ के बारे में मुझे पहले से ही पता था। दोनो बाहें चाकू के गहरे निशानो से कुछ-कुछ दूरी पर छेदी गई थी। और भी कुछ दूसरी किस्म के निशान उसकी पीठ और छाती के दोनो हिस्सों पर बने हुए थे। यह एक प्रकार की तपस्या के निशान थे, जिन्हें ये आदिवासी अपने साहस और सहनशीलता की परीक्षा के रूप मे खास-खास मौको पर स्वयं ही लगाते है। इनसे आत्माओ को भी प्रसन्न करने का प्रयत्न किया जाता है। छाती और पीठ के बहुत से और निशान जंगल के पेड़ो को गिराते हुए लगे थे। इसके लिए एक रीत यह है कि जिन पेड़ो पर भैंसो की खोपड़ियाँ लटकाई जाती हैं, उनपर रस्सियाँ बाँधकर युवक को अपनी छाती के बल से उस पेड़ को गिराने को कहा जाता है। उसकी बाहे पकड़कर दो युवक उसकी सहायता करते है। वह आगे की ओर तेज़ी से भागता है। अन्त में पेड का तना चिर जाता है और उसके ऊपर लटकती हुई भैंसे की खोपड़ी एक ओर गिर जाती है। हमारे मेज़बान के कुछ और निशान किन्ही दुर्घटनाओं के कारण भी थे, परन्तु युद्धो में भी उसके शरीर पर अनेको घाव हुए थे। वह इस गाँव के माने हुए योद्धाओं मे से एक था। उसने मेरे सामने दावा किया कि अपने जीवन मे कम-से-कम चौदह आदमियो को वह मार चुका है। और आदिवासियो की तरह भले ही वह भी झूठा था, पर तो भी इस बात में वह निश्चय ही सच्चा था।

मेरी पूछताछ से खुश होकर वह मुझे कहानी पर कहानी सुनाने लगा। उसकी युद्ध की इन कहानियो मे कोई सच्ची थी और कोई झूठी। इनमें से

एक कहानी ऐसी थी, जिससे आदिवासियो के चरित्र की सबसे बुरी बातें भी सामने आ जाती है। इसे छोड़ देना उचित न होगा। अपने घर के दरवाजे में से 'मेडिसनबो' नाम के पहाड़ की ओर इशारा करते हुए उसने बताया कि आज से कुछ साल पहले वह अपने जवान आदमियों की एक लड़ाकू टुकडी लेकर उधर गया था। वहाँ उन्हें शिकार खेलते हुए दो नाग आदिवासी मिल गए। उनमें से एक को उन्होंने बाणो से ही मार डाला और दूसरे का पीछा करने लगे। अन्त में उन्होने उसे घेर लिया। मेरे मेजबान ने खुद अपने घोडे से उतर कर सामने के पेड़ो मे उसे बाँहो के साथ जकड दिया। दो और युवकों ने दौड़कर उसकी सहायता की और जिन्दा ही उसकी खोपडी काट लेने का मौका दिया। तब उन लोगो ने एक बहुत बड़ी आग जलाई और अपने कैदी के पाँवो और कलई के मास को काटकर उसे उसमे जलने के लिए डाल दिया और तब तक उसें बल्लियों से दबाए खडे रहे, जब तक वह जल न गया। उसने अपनी कहानी में कुछ ऐसी बातें भी वर्णन की, जिन्हें बताने मे मुझे घृणा हो जाती है। यह सब बताते हुए वह बहुत ही नरम और सभ्य बना रहा। यह बात किसी और आदिवासी के लिए सम्भव नही। इन असभ्य बातो को बताते हुए वह मेरी ओर उतने ही भोलेपन से देखता रहा, जितने भोलेपन से कोई लडका अपनी माँ को अपने छोटेपन की कोई बात सुना रहा हो।

बूढ़े मेनेसीला के घर में एक और ही नजारा सामने आया। वहाँ चमकदार आँखो वाला एक चुस्त बालक बैठा हुआ था, जो कभी कृष्णपाद जाति का था। ये लोग बहुत खूँखार और भयकर होते है और अरापाहो लोगो से मिलजुल कर रहते है। आज से लगभग एक साल पहले 'महान् काक' और दूसरे योद्धाओ के एक दल ने इन लोगो के बीस घर इस जगह से बीस मील की दूरी पर देखे थे। इन्होने उन्हें रात मे जा घेरा और उनके मर्दों, औरतो और बच्चो को कत्ल कर डाला। केवल इस छोटे से बच्चे को बचा लिया गया। इसे मेनेसीला के परिवार में अपना लिया गया और अब यह इसी जाति के बच्चो में बराबर का बनकर हिलमिल कर पल रहा था। इस गाँव में एक बड़े और अच्छे डीलडौल वाला योद्धा भी था, जो काक जाति से सम्बध रखता था। आज से बहुत साल पहले इसे कैदी बनाया गया था। एक माँ ने, जिसका बच्चा मारा जा चुका था, इसे अपना बच्चा मान लिया था। अब यह अपनी

पुरानी जाति को भूलकर तन-मन से इस नयी जाति को अपना चुका था।

यह बात स्मरण रखनी चाहिए कि नाग और काक जाति के लोगो से लड़ने की बात सबसे पहले इसी गाँव में चली थी। बड़े भारी युद्ध का हौसला तो खत्म हो गया था, पर उस उत्साह की कुछ चिनगारियाँ अब तक जल रही थीं। ग्यारह युवक योद्धाओ ने शत्रु के विरुद्ध जाने की तैयारी कर ली थी। इस पड़ाव के चौथे दिन उन्होंने चलने का समय निश्चित कर लिया था। इस दल का मुखिया गठीले बदन का एक ठिगना आदिवासी युवक 'सफेद ढाल' था। मैंने उसे सदा ही अच्छी पोशाक मे बने-ठने पाया था। उसका मकान चाहे बड़ा न था, पर तो भी गाँव भर में सबसे अच्छा था। उसकी स्त्री भी सबसे सुन्दर थी। कुल मिलाकर उसका घर किसी भी ओजिल्लाला परिवार के लिए आदर्श था। मै उसके यहाँ अक्सर जाया करता था। गोरे लोगो के साथ उसका विशेष स्नेह था और वह मुझे जब-तब दावत के लिए बुलाता रहता था। एक बार उत्सव के समाप्त होने पर मै और वह चौकड़ी मारे, चिलम पीते हुए, बहुत ही मित्रतापूर्वक बैठे थे। तब उसने अपने युद्ध के हथियारो को सब तरफ से इकट्ठा किया और गर्व के साथ मुझे दिखाया। और चीज़ों के साथ-साथ उसके पास एक बहुत अच्छी टोपी भी थी, जिसपर पख जड़े हुए थे। इसे पहनकर वह मेरे सामने खड़ा हो गया। वह जानता था कि इसके पहनने से उसके उत्साह भरे सुन्दर चहरे पर कुछ और ही रौनक आ जाती है। उसने बताया कि इसपर तीन चीलो के पंख लगे हुए थे, जिनकी कीमत तीन अच्छे घोड़ो से कम न थी। उसने तब एक ढाल हाथ में ली, जो अच्छी तरह रंगी हुई थी और जिसपर पंख अटके हुए थे। इन हथियारो का असर भी बहुत अधिक होता था। उसका तरकश एक चीते की चित्तीदार खाल से बना हुआ था। ऐसा चीता इन पहाड़ियो मे बहुत मिलता है। इस तरकश से अब भी चीते की पूँछ और पंजे जुडे हुए थे। उस युवक ने इस उत्सव का अन्त आदिवासियो की तरह से ही किया। उसने मुझमे कुछ बारूद और गोलियाँ माँगी। उसके पास धनुष और बाण के इलावा बन्दूक भी थी। मुझे यह भेंट देने से इन्कार करना पड़ा, क्योकि मेरे पास पहले ही बहुत थोड़ी बारूद रह गई थी। फिर भी बिदा होते हुए मैंने उसे केसर दिया। जब मै उससे बिदा हुआ, तब वह पूरी तरह संतुष्ट था।

अगली सुबह उस युवक को सर्दी लग गई और उसका गला सूज गया। वह तुरन्त ही हिम्मत हार बैठा। उस गाँव में किसी ने भी ऐसी बीमारी को अधिक वीरता से नहीं सहा था। अब वह भी घर-घर बड़ा उदास और निराश होकर घूमने लगा। बहुत देर बाद एक लबादे में लिपट कर वह रेनल के दरवाजे पर बैठ गया। जब उसे पता चला कि मै और रेनल उसकी बीमारी को किसी भी प्रकार कम न कर सकते थे, तब वह उठा और गाँव के एक जादूगर डाक्टर के पास गया। इस बूढे ठग ने उसे बहुत देर दोनो मुक्कों से थपथपाया और उसपर झुककर चीखा चिल्लाया। तब उसके कानो के पास झुककर उसने ढोल बजाना शुरू किया, ताकि बुराई दूर भाग सके। जब इस इलाज का भी कोई असर न हुआ तो वह युवक फिर से अपने घर लौट आया और कुछ घंटे तक निराश होकर पडा रहा। शाम के समय वह एक बार फिर आया और रेनल के घर के सामने उसी प्रकार ठाठ से अपना गला थामकर बैठ गया। कुछ देर वह चुपचाप ज़मीन पर अपनी निगाह जमाए, अफसोस करता, बैठा रहा। अन्त में उसने बहुत धीमी आवाज़ मे कहना शुरू किया, "मै एक बहादुर आदमी हूँ। सभी युवक मुझे एक बड़ा योद्धा मानते है। उनमें से दस मेरे साथ युद्ध पर भी जाने को तैयार है। मै जाऊँगा और उन्हें शत्रु दिखा दूँगा। पिछले साल नाग लोगो ने मेरे भाई को मार डाला था। जब तक मै उसकी मौत का बदला न ले लूँ, मेरा जीवित रहना बेकार है। कल हम निकल चलेगे और मै उनकी खोपड़ियाँ काट लूँगा।"

'सफेद ढाल' ने जब यह इरादा प्रगट किया, तो उस समय उसमें सदा की भाँति न उत्साह था और न आँखों में चमक थी। उसका सिर निराशा से झुक गया था।

शाम के समय आग के किनारे बैठे हुए मैने देखा था कि वह युद्ध की पूरी पोशाक मे सजा-धजा अपने गालो पर केसर लगाए अपने सबसे प्यारे घोड़े को लेकर अपने घर के सामने आया। इस पर चढ़कर वह सारे गाँव में अपने भारी गले से खरखराहट भरे स्वर में युद्ध का गीत गाते हुए निकला। औरतो की प्रशसा उसपर बरसने लगी। तब वह उतर कर कुछ देर के लिए जमीन पर लेट गया, जैसे वह कुछ प्रार्थना कर रहा हो। अगले दिन सुबह मै, योद्धाओं की विदाई की इन्तज़ार करता रहा, पर व्यर्थ। दोपहर से पहले तक

चारो ओर शान्ति ही छाई रही। तब 'सफेद ढाल' उसी पुरानी जगह पर हमारे सामने आकर बैठ गया। रेनल ने उससे युद्ध में न जाने का कारण पूछा। उसने उत्तर दिया, "मै जा नही सकता, क्योकि मैंने लड़ाई मे बरते जाने वाले अपने बाण किसी दूसरे को दे दिए है।"

रेनल ने कहा, "तुम ने तो उसे केवल दो ही बाण दिए है। अगर तुम अब भी मांगो, तो वह तुम्हें वापिस दे देगा।"

कुछ देर तक वह चुप रहा। पर अन्त में बहुत उदासी भरे स्वर में बोला, "बात यह है कि मेरे जवान साथियो में से एक को बहुत बुरा सपना आया है। कुछ मरी हुई आत्माओं ने नीद में उसपर पत्थर फेंके है।"

यदि कही सचमुच ही ऐसा स्वप्न किसी को आया होता तो अब तक युद्ध का कोई भी बड़ा दल तितर-बितर हो चुका होता। हम दोनों को ही यह विश्वास हो गया कि उसने घर पर ही रहने के लिए यह गप्प घड़ ली थी।

'सफेद ढाल' एक माना हुआ योद्धा था। वह पीडा को बिना दिखाए बहुत गहरे घाव को भी सह सकता था। उसने शत्रु से पाए हुए भयंकर घावो को भी बिना किसी कष्ट के सह लिया था। इस प्रकार के मुकाबले के लिए किसी भी आदिवासी का सारा स्वभाव परीक्षा पर आ जाता है। बचपन से लेकर उस पर पड़े हर प्रभाव को जानना ज़रूरी हो जाता है। वह जानता है कि उसे ये कष्ट क्यो सहने पड रहे है। इसी लिए उसकी आत्मा उसे शत्रु का पूरी तरह मुकाबला करने और एक योद्धा की भाँति सर ऊँचा करके सबसे ऊँचा गौरव पाने के लिए प्रेरित करती है। पर जब कभी उस पर कोई बीमारी या इसी प्रकार का कोई दुर्भाग्य टूटता है, तब उसकी सारी मर्दानगी जवाब दे जाती है। बड़े-से-बडा योद्धा भी इस प्रकार के न दिखाई देने वाले दुश्मन के सामने अपने को कमज़ोर और असमर्थ पाता है। वह समझ लेता है कि या तो किसी बुरी आत्मा ने या किसी के जादू टोने ने उसे ग्रस लिया है। जब इस प्रकार की किसी लम्बी बीमारी के चक्कर मे कोई आदिवासी पड़ जाता है, तो वह अपना भाग्य समझकर, अपने ही ख्यालों मे डूबा हुआ, मरने की प्रतीक्षा करने लगता है। अगर किसी परिवार पर एक पर एक दुर्भाग्य टूटता रहे, तब भी यही हालत होती है। आदिवासी इस बात के लिए प्रसिद्ध है कि वे अकेले ही शत्रु के खेमे में घुस जाते हैं या अकेले ही काले भालू पर हमला

कर बैठते है। अक्सर वे ऐसा इसलिए भी करते है कि वे भाग्य के सहारे अपने बुरे दिन काटने की बजाय मरने या मारने में विश्वास रखते है।

इस प्रकार, उपवास, स्वप्न और महान् आत्मा की स्तुति करने के बाद भी 'सफेद ढाल' का यह लड़ाकू दल अपने काम पर न जा सका।

१६ : पशु फँसाने वाले

आदिवासियों की चर्चा करते हुए मैं एक अन्य जाति के दो साहसी बहादुरो की बात करना भूल गया हूँ। यह दोनो आदमी है—रूलो और साराफे। ये दोनो एक बहुत ही खतरनाक काम में लगे हुए थे। यह दोनो अरापाहो लोगो के इलाके की ओर जा रहे थे। यह इलाका हम से एक दिन के सफर की दूरी पर था। ये जाति बहुत ही खूँखार और असभ्य है। इन लोगो ने गोरो से दुश्मनी पाल रखी है। ये लोग अपने इलाके में आने वाले किसी भी गोरे को जान से मारने पर तुले रहते है। हम लोग इन्हें बाद मे लौटते हुए मिले भी थे। दुश्मनी की इस घोषणा का भी एक किस्सा है।

पिछले बसत मे कर्नल कीर्नी जब बहुत-सी सैनिक टुकड़ियों को ले कर लीवनवर्थ किले से लारामी किले की ओर चले, तो बेंट किले के नीचे के पहाड़ की तलहटी से होकर गुजरे। बाद में लौटते हुए पूर्व की ओर से लीवनवर्थ किले मे पहुँचे। लारामी किले में ठहरने के समय उन्होने अपनी एक टुकड़ी पश्चिम की ओर 'स्वीटवाटर' तक भेजी। वह खुद किले में ही रह गये और आसपास के आदिवासियो को मिलने के लिए उन्होने किले मे बुलाया। यहाँ उनकी एक खास बैठक बुलाई गई। इस समय पहली बार आदिवासियो ने गोरों को देखा। वे उन सिपाहियो के सैनिक रंग-ढग, वेशभूषा तथा मजबूत घोडो को देखकर हैरान रह गये। और लोगों के साथ अरापाहो लोग भी काफी बड़ी सख्या में वहाँ आये थे। पिछले दिनों उन्होंने बहुत से गोरे लोगो को मारा था। इसलिए कर्नल ने उन लोगों को धमकी दी कि अगर आगे से उन्होंने एक भी गोरे को मारा, तो वह अपने सैनिकों को खुला छोड़ देगा और उनकी जाति का नाम तक मिटा देगा। शाम के समय अपने भाषण का असर दिखाने के लिए उसने एक तोप दागने की आज्ञा दी। डर के मारे बहुत से आदिवासी जमीन पर गिर गये और बहुत से चीखते-चिल्लाते भाग गये। अगले दिन वे सब लोग अपने-अपने पर्वतो की ओर भाग गये। वे सैनिको, तोप और ऊपर की ओर फेंके गये गोले को देखकर घबरा गये थे। गोले से उन्हें ऐसा

लगा कि वह महान्-आत्मा की ओर फेका गया था। कुछ महीनों तक वे शान्त रहे और उन्होंने कोई गड़बड़ न मचाई। हमसे कुछ ही दिन पहले उन्होने बहुत ही नीचता भरा एक कार्य किया। बूट और मे नाम के दो गोरे इन्ही पहाड़ों में पशु फँसाने का काम कर रहे थे। इन्हे उन्होंने बहुत निर्दयता से मार डाला। यह इस कारण हुआ कि आदिवासियो मे स्वभाव से ही खूँखार बनने की आदत होती है। ये दोनो खून होते ही सारी जाति घबराहट मे पड़ गई। वे हर रोज़ इस बात की प्रतीक्षा मे रहने लगे कि गोरे सैनिक आ कर उन पर हमला करेंगे। वे नही जानते थे कि वे सैनिक उनसे नौ सौ मील से भी अधिक दूरी पर थे। उनमें से बहुत से लोग लारामी किले में समझौते के लिए आए और अपने साथ खून का बदला चुकाने के लिए भेंट रूप मे कुछ कीमती घोड़े लेते आये। बोर्दू ने ये भेंटें लेने से मना कर दिया। तब उन्होंने कातिल को ही सौंप देने की बात कही पर बोर्दू ने यह बात भी स्वीकार नही की। हफ्तो बीत जाने पर भी एक सैनिक तक न आया। आदिवासी लोग बहुत डर कर किले से लौटे थे पर, अब उन्हें लगा कि बोर्दू ने उनकी भेंटें डर के कारण स्वीकार नही की थी। आदिवासियो की इस आदत को हर कोई जानकार अच्छी तरह जानता है। अब उन्हे विश्वास हो गया कि मरे हुए गोरो के बदले से उन्हे डरने की जरूरत नही रही। अब डर का स्थान एक निडर पागलपन ने ले लिया था। उन्होने तब से गोरों को बुज़दिल और बूढ़ी औरत के रूप मे समझना शुरू कर दिया। डाकोटा जाति के एक मित्र ने लारामी किले में यह खबर पहुँचाई कि ये लोग अपने बीच पहुँचने वाले किसी भी पहले गोरे को मार डालेंगे।

अगर लारामी किले में पूरे अधिकारों के साथ किसी सैनिक अफसर को तैनात कर दिया जाता और वह कातिल को सौंपे जाने की भेंट स्वीकार कर के उसे सब के सामने ही मरवा डालता तो वे लोग सदा के लिए शान्त हो जाते और यह खतरा टल जाता। परन्तु ऐसा न होने के कारण अब 'मैडिसन बो' नाम की वे पहाड़ियाँ बहुत अधिक खतरे से भर गई थी। मेनेसीला और बहुत से दूसरे आदिवासियो ने इकट्ठे होकर इन दोनो पशु फँसने वालो को अपने काम से रुक जाने के लिए मनाना चाहा। पर ये दोनो बहादुर गोरे उस खतरे पर हँस दिये। जिस दिन उन्होने हमारे डेरे से विदा होना था,

उससे पहली शाम हम सबने ही 'मैंडिसनवो' पहाड़ों के नीचे से उठते हुए सफेद धुएँ को देखा था। कुछ स्वयंसेवक तुरन्त रवाना कर दिये गये थे, ताकि वे असली कारण का पता लगा सकें। उन्होंने बताया था कि इस जगह से अभी-अभी, कुछ देर पहले ही, अरापाहो लोगों का डेरा उखड़ कर जा चुका है। इतने पर भी ये दोनों पशु-फँसाने वाले अपनी तैयारियों में लगे रहे।

साराफँ एक लम्बा और ताकतवर आदमी था। उसका चेहरा बड़ा खूँख्वार लगता था। उसकी बंदूक आदिवासियों और भैंसों के अलावा किसी और के ही काम आती होगी। रूलो का चेहरा कुछ अधिक चौड़ा और लाल था और वह बच्चे-सा भोला लगता था। उसका ढाँचा बड़ा मज़बूत और गठा हुआ था। उसके पाँव के अगले जोड़ जम चुके थे। पिछले दिनों अपने घोड़े से कुचले जाने के कारण उसकी छाती पर भी कुछ घाव हो गये थे। इस पर भी उसकी शान में कोई अन्तर न पड़ा। वह अब भी अपने अधूरे पाँवों पर ही गाँव भर में, बातें करता हुआ, गाता हुआ और स्त्रियों से हँसी मज़ाक करता हुआ, घूमता रहता। रूलो को औरतों से कुछ खास लगाव था। वह एक न एक ऐसी पत्नी अवश्य रखता था, जिसे वह मालाओं और फूलों से सजा सके और दूसरी भी सजावट की चीज़ें उसे लाकर दे सके। हालाँकि वह उसे अपने साथ न ले जाकर गाँव में ही छोड़ जाता था, परन्तु इससे भी उसे प्रसन्नता ही होती थी। अगर कभी वह अपनी खतरे से भरी सारी कमाई अपनी प्रेमिका पर निछावर न कर पाता, तब वह उसे अपने साथियों में ही, दावतों में, उड़ा देता। अगर उसे शराब न मिलती, तो वह बहुत तेज़ कॉफ़ी से काम चला लेता। यहाँ के लोग खुद पर बहुत काबू न रखते थे। इसलिए उनके सामने जो कुछ भी, जितना भी और, जितना महँगा भी रख दिया जाता, उसे एक ही बारी में समाप्त कर देते। दूसरे पशु फँसाने वालों की भाँति रूलो का जीवन भी विरोध और विचित्रताओं से भरा हुआ था। उसे अपनी इन यात्राओं पर बहुत कम समय के लिए ही जाना होता था। बाकी समय वह या तो किले के आस-पास काटता या उनके पास बसे अपने मित्रों के पास रह कर, शिकार और दूसरे प्रकार के आनन्दों में बिताता। पर एक बार बीवर के शिकार के समय उसे एक बहुत ही बुरा अनुभव हुआ। तब से हाथ-पाँव, कान और आँख—सभी ओर से वह चौकन्ना रहने लगा। जंगल में वह

अपना शाम का भोजन बिना पकाये ही निगल जाता था, ताकि कहीं शत्रु उसकी जलाई आग को दूर से न देख ले। कभी-कभी वह भोजन खाने के बाद आग जला कर, कुछ दूरी पर, अँधेरे में छिप कर बैठ जाता था, ताकि वहीं कही घूमता हुआ उसका शत्रु उसे न पा कर निराश होकर लौट जाए और उसके पाँवो के निशान भी न खोज पाये। राकी पर्वतमाला में ऐसी जिन्दगी अनेक लोगो को बितानी पडती है। एक बार मुझे एक ऐसे पशु फँसाने वाले से मिलने का मौका हुआ, जिसकी छाती पर बाणो और गोलियों के छः निशान थे। उसकी एक बाँह टूटी हुई और एक घुटना कुचला हुआ था। इस पर भी वह अपने काम से बाज़ न आता था।

इस डेरे के अन्तिम दिन ये लोग जाने के लिए तैयार हो गये। पिछली बार जब ये ब्लैकहिल्स गये थे, तब इन्होने सात बीवर जन्तुओ की खालें उतारी थीं। अब ये खाले इन्होने रेनल के पास जमा करवा दी, ताकि उनके आने तक वह इन्हे सम्भाल रखे। उसके मज़बूत और गठीले घोड़ो की लगाम के आगे स्पेनी लोहे के शिकंजे लगे हुए थे। उनकी काठियाँ मैक्सिको की बनी हुई थीं, जिनके साथ चढ़ने के लिए लकडी की रकाबें लगी हुई थी। उनकी काठियों के पीछे बीवर पशुओ को फँसाने वाले जाल बँधे हुए थे। उनके सामान में इसके अलावा बंदूक, चाकू, बारूद और गोलियो के थैले, पत्थर और लोहा तथा टीन का प्याला भी शामिल थे। उन लोगो ने हम से हाथ मिलाया और चले गये। अपना भारी चेहरा लिए साराफै आगे चल रहा था और रूलो आराम से पीछे-पीछे चल रहा था। वह घोडे को एड़ लगा कर, चाबुक फटकारता हुआ, मैदान पर भगाने लगा और एक कनाडी गीत बहुत ऊँचे स्वर मे गाने लगा। रेनल ने उसकी ओर बहुत स्वार्थ भरी निगाह से देखा और कहने लगा, "अगर ये इस बार मर गये तो इनकी ये खाले किले में मुझे कम-से-कम पचास डालर दिलवाने में सहायता करेंगी।"

मैंने उन्हे यही अन्तिम बार देखा।

इस डेरे में हमें पाँच दिन हो गये थे। अब तक सुखाया हुआ मास ढोने लायक हो गया था। भैसो की खाले भी अगले साल के घरो के लिए बडी मात्रा मे तैयार हो गई थी। पर अब भी बडी-बडी बल्लियो और लट्ठों को पाने की समस्या बनी हुई थी। ये लट्ठे 'ब्लैकहिल्स' के ऊँचे जंगलों में ही मिल

सकते थे। इसलिए अब हमें उसी ओर बढ़ना जरूरी था। इन दिनों गाँव में चीजो की इतनी बहुतायत हो गई थी कि कोई भी तंगी महसूस नही करता था। हालाँकि खाल और जीभ पर शिकारी का अधिकार होता था, पर तो भी बाकी मांस को कोई भी ले सकता था। इस प्रकार कमजोर, बूढे और लूले-लंगड़े भी अपना गुजर कर लेते थे। नही तो, उन्हे भूखो ही मरना पड़ता।

पच्चीस जुलाई को, दोपहर के काफी देर बाद, डेरा टूटा और एक बडे गडबड़झाले में पड़कर हम सब लोग एक बार फिर घोड़ो पर चढ़ कर या पैदल ही मैदानो पर बढ़ने लगे। अभी हम कुछ ही दूर बढ़ पाये थे कि सब बूढे आदमी, जो सारे रास्ते भर सबसे आगे पैदल ही चलते आये थे, धरती पर एक घेरा बाँधकर बैठ गये। परिवारो ने अपने मकान, ठीक तरतीब मे, उनके चारो ओर खडे करने शुरू कर दिये। इस प्रकार एक घेरे में डेरा तैयार हो गया। इस बीच बूढ़े लोग उसी तरह बैठे हुए तम्बाकू पीते और बातें करते रहे। मैने अपने घोड़े की लगाम रेनल को सौपी और उनके साथ ही जा बैठा। वे लोग बहुत खुलकर बाते कर रहे थे। उन में वह गम्भीरता नही दिखाई दे रही थी, जो कि ऐसे मौको पर अथवा किसी ऐसे गोरे आदमी के सामने उन में पायी जाती है। इसके विपरीत वहाँ खूब हँसी-मजाक होता रहा।

जब पहली बार की चिलम बुझ गई तो मै उठा और अपने मेजबान के डेरे पर आ गया। यहाँ मै झुक कर अभी बारूद और गोलियो के थैले को उतार ही रहा था कि बिल्कुल पास ही एक बहुत तेज और भयकर युद्ध की पुकार सुनाई देने लगी। मेजबान की पत्नी ने अपने सबसे छोटे बच्चे को गोद में खीच लिया और घर से बाहर भागी। मै भी उसके पीछे-पीछे गया और देखा कि सारा गाँव डर के कारण चीखता और चिल्लाता गडबड़ मे उलझ गया है। गाँव के बीचो-बीच बैठे हुए बूढो का घेरा भी उठ गया था। उस दिशा में कुछ आगे बढ़कर मैने गुस्से से भरी एक भीड़ देखी। उसी समय मैने रेमड और रेनल की आवाज पहचानी। वे मुझे ही बुला रहे थे। मैने देखा कि रेनल के हाथ मे बंदूक थी और वह एक छोटी-सी धारा के दूसरे किनारे पर खड़ा हुआ था। वह मुझे और रेमंड को अपने साथ आ मिलने के लिए बुला रहा था। रेमंड अपनी शाही चाल मे उस ओर ही जा रहा था।

अपने को इस गड़बड़ से बचाने का यही सबसे अच्छा तरीका समझ कर मैं भी उधर ही मुड़ने लगा। पर तभी साँप की-सी चमकती दो आँखो ने मुझे पास के एक घर से झाँका। बूढ़ा मेनेसीला एक हाथ में अपना धनुष बाण तथा दूसरे हाथ में कृपाण लिये घर से बाहर निकला। अब वह पूरी तरह हथियारो से सजा-धजा सामने आ गया। औरतें चीखती-चिल्लाती बच्चों को खतरे की जगह से बाहर ले जाने के लिए उतावली थी। मैने देखा कि कुछ लाग खतरे के मुकाबले के लिए जल्दी में जितने भी हथियार समेट सकते थे, अपने हाथो में ले जा रहे थे। डेरे के पास की एक ऊँची जमीन पर कुछ बूढ़ी औरते जमा होकर एक गाना गा रही थी, ताकि आने वाली बुराई को दूर भगा सकें। चश्मे के पास पहुँचते ही मुझे अपने पीछे गोली चलने की आवाज सुनाई दी। मुड़कर मैंने देखा कि गाँव के सारे योद्धा एक दूसरे के मुकाबले में दो हिस्सो मे बँट गये थे और एक दूसरे पर हमला करने के लिए तैयार हो गये थे। उसी समय मुझे अपने सिर पर से गुजरती हुई किसी तेज आवाज से लगा कि यह खतरा केवल वही तक रुका नही रहेगा। इसलिये मैने बहुत जल्दी ही चश्मे को पार किया और रेनल और रेमड से जा मिला। वहाँ हथियारबन्द होकर हम चुपचाप इस सब झगडे को देखते हुए परिणाम की परीक्षा में घास पर ही बैठे रहे।

सौभाग्य से यह सब झगडा जल्दी ही शात भी हो गया। हमें इसकी आशा न थी। जब हमने फिर से देखा, तब ये ही लड़ने वाले फिर से एक दूसरे से मिल गये थे। अब भी कही-कहीं आवाजे सुनाई दे जाती थी, पर हमला बिल्कुल बन्द हो चुका था। मैने पाँच या छ आदमी बीच-बचाव करते देखे। इसी बीच एक आदमी ने कुछ घोषणा की, जिसे मेरे दोनो साथी अपनी बातो में उलझे रहने के कारण पूरी तरह न सुन पाये। इसीलिए मैं भी पूरी बात न समझ पाया। अब वह भीड़ छटनी शुरू हो गई। लौटते हुए योद्धाओ में से कुछ की आँखो मे अब भी चमक दीख रही थी। यह झगड़ा कुछ बूढे लोगो के कारण समाप्त हुआ, जिन्होने लडाकू दल के बीच आकर उन्हें समझाया। इन लोगों का साथ उन सिपाहियों ने भी दिया, जिनका काम इन गाँवो मे पुलिस के समान माना जाता है।

मुझे यह बडा अजीब लगा कि इतने बाण और गोलियाँ चली, पर घाव

किसी को भी नही लगा। इसका एकमात्र कारण यही हो सकता है कि उस समय योद्धा और उसका शिकार—दोनो ही—बराबर हिलते रहे थे। लगभग सारे ही गाँव वाले इस झगडे में शामिल हो गये थे। गाँव भर में कुल मिला कर पाँच या छ बंदूकें ही थी। मैने कुल आठ या दस गोलियो की ही आवाजें सुनी थी।

लगभग पौन घंटे मे ही सब कुछ शात हो गया। अब फिर गाँव के बीचो-बीच योद्धाओ का एक दल बैठा हुआ था। इस बार मै इसके बीच न गया, क्योकि मैने दूर से ही देख लिया कि इस बार हुक्का उल्टी दिशा मे चल रहा था। इससे साफ था कि यह बात समझौते के लिए हो रही थी। ऐसे समय मेरा जाना बुरा ही माना जाता। जब मै गाँव मे फिर आया, तो इस समय भी गाँव मे कुछ हलचल थी और अँधेरा छाया हुआ था। कुछ शोक भरी आवाजे, चीखें और रोना हर घर से उठते हुए लग रहे थे। मै ठीक से नही जान सका कि इसका सम्बन्ध हाल की गडबड से था या किसी पुरानी लड़ाई में मारे गये किसी सम्बन्धी के लिए शोक प्रगट करने से था।

इसी समय लड़ाई के बारे मे अधिक पूछना उचित न था। बहुत देर बाद ही मुझे इस बात का कारण पता चल पाया। डाकोटा जाति में अनेक प्रकार के समाज और बिरादरियाँ पायी जाती है। इन मे से कुछ अधविश्वासो के कारण, कुछ युद्ध के प्रेम के कारण और कुछ सामाजिक बातो के कारण बनती है। इन में से एक जाति 'शर-भंजक' कहलाती है। अब ये लोग इधर-उधर बिखरे हुए है। इस के चार आदमी इसी गाँव में रहते थे। उन्हे माथो पर लटकते सजे हुए बालो के कारण आसानी से पहचाना जा सकता था। ये बाल आगे की ओर इस तरह बँधे होते थे, जिस से वे और भी ऊँचे और भयकर लगते थे। इन का मुखिया 'पागल भेड़िया' नाम का एक बहुत बलवान और डीलडौल वाला युवक था। वह बहुत ही साहसी और भयकर था। मैने उसे सदा ही सबसे अधिक खतरनाक युवक माना था। हालाँकि वह मुझे जब-तब दावत के लिए अपने डेरे पर बुलाता था, पर तो भी मै उसके यहाँ कभी निहत्था नही गया। एक बार इस युवक को एक और आदिवासी के सुन्दर घोड़े को हथियाने की चाह जगी। इसने उसके स्वामी 'लम्बे भालू' को एक दूसरा बराबर का घोडा भेट देना चाहा। डाकोटा जाति के रिवाज के अनुसार

किसी भेंट को स्वीकार करने का मतलब उसके मुकाबले की दूसरी भेंट देने से होता है। दूसरे युवक को पता था कि इस की निगाह उसके घोड़े पर है। उसने तब भी चुपचाप बिना कुछ कहे भेंट स्वीकार कर ली और अपने घर के सामने उस घोड़े को बाँध लिया। उसने कई दिन बीत जाने पर भी अपना घोड़ा भेंट मे नही दिया। इस पर 'पागल भेड़िया' अधीर हो उठा। यह देख कर कि उसकी भेंट किसी भी काम में न आई, वह अपने घोडे को दुबारा माँगने लगा। इसीलिए आजकी शाम डेरा गाडने के बाद, वह दूसरे युवक के घर पर गया और अपने घोड़े को खोल कर ले आया। इस पर दूसरा युवक आदिवासियो में आमतौर पर फूट पड़ने वाले पागलपन से भर गया और उसने घोड़े पर अपने चाकू से तीन भयानक घाव कर दिये। बिजली की भाँति तेजी से लौट कर 'पागल भेडिये' ने भी अपना धनुष पूरी ताकत से तानकर दुश्मन की छाती पर लगा दिया। घबराहट में भी शात बना हुआ दूसरा आदिवासी हाथ में खून से सना चाकू लिये ऐसे ही खड़ा रहा। इसी बीच उसके मित्र और सम्बन्धी खतरे को पहचान कर उसकी सहायता के लिये दौड़े। उधर 'पागल भेड़िये' के तीनों साथी भी अपने भाई की मदद को आ गये। उनके दोस्त भी इकट्ठे हो गये। और, इस प्रकार चारों ओर एक गडबड़-सी मच गई।

जिन सिपाहियो ने इस लडाई को शात करने मे सहायता पहुँचाई थी, उनका स्थान इन गाँवों में बहुत महत्त्व का होता है। यह काम बड़े मान का माना जाता है और बड़े साहसी लोगों को ही सौपा जाता है। उनको यह अधिकार बाकायदा चुनाव के बाद ही मिलता है। यह चुनाव गाँव के बूढ़े और खास योद्धा मिलकर करते है। इस प्रकार गाँव में सबसे बड़ी जिम्मेवारी इन लोगो पर आ पडती है। बडे-से-बडा सरदार भी अपने किसी छोटे-से-छोटे आदमी को, बदले का खतरा उठाये बिना, मार नही सकता। परन्तु, इन सिपाहियो को अपनी जिम्मेवारी के निभाने में ऐसा करने की भी छूट होती है।

—: ० :—

१७ : ब्लैक हिल्स

दो दिन तक हम पूर्व की ओर बढ़ते रहे। तब हमारे सामने ब्लैक हिल्स की चोटियाँ उठने लगी। इनकी ढलानो के नीचे होते हुए कुछ मील दूर तक गाँव वाले बढ़ते रहे। यहाँ मैदान एक दम उजाड़ था। कही-कही छोटी-मोटी पहाड़ियाँ बिखरी हुई आने लगी। यहाँ से एक दम बाईं ओर को मुड़कर हम एक पहाड़ी घाटी में घुसे, जिसके तले में एक चश्मा बह रहा था। इसके किनारे पर ऊँची घास और छोटे पेड़ उगे हुए थे, जिनके बीच मे बहुत से बीवर जन्तुओ के बनाये अनेको बाँध दिखाई दे रहे थे। अब हम ऊँची-ऊँची चोटियो के बीच से बढ़ने लगे। हमारे दोनो ओर चट्टामे अजीब तरह से एक दूसरे पर जमी हुई थी। कही भी कोई भी पेड़, झाड़ी या घास अधिकता में नहीं दिखाई दे रही थी। चचल आदिवासी बच्चे उन चट्टानो पर होते हुए चल रहे थे। कभी-कभी वे चोटियों पर चढ़कर नीचे से गुजरने वाले जलूस को देखने लगते। आगे बढ़ते हुए रास्ता तंग होने लगा। तब अचानक ही सामने एक घास भरी चरागाह आ गई। इसके चारो ओर पर्वत घिरे हुए थे। यहीं पर सब परिवार जमा हुए और कुछ ही देर मे गाँव का गाँव खड़ा हो गया।

अभी डेरे खड़े ही हुए थे, कि सभी युवक और दूसरे लोग अपने उद्देश्य के लिए निकल पड़े। यहाँ वे वल्लियों और लट्ठो को जमा करने के लिए आये थे। गाँव के लगभग आधे लोग इस काम पर निकल गए और सामने की लम्बी घाटी मे चले गये। इन घाटियो में से होते हुए हम आगे बढ़े और ऊपर की चोटियो पर निकल आये। यहाँ से दोनो ओर सीधी ढलान उतर गई थी। इन ढलानों पर अनेक, मुलायम पत्तो वाले, पेड़ लदे हुए थे। बाईं ओर ये ऊँची पहाड़ियाँ थी और दाईं ओर दल-दल में से होता हुआ एक चश्मा बह रहा था। धारा मे बीवर के बनाये बाँधो के कारण कई जगह पानी जमा हो गया था और कुछ जोहड़ बन गये थे। इस धारा के किनारे अनेकों झाड़ियाँ और बहुत से गिरे हुए पेड़ जमा थे। बीवर नाम के कारीगर जानवर के सामने

केवल पेडो के तने ही बाधा बन कर आ जाते हैं, नही तो वह किसी भी चीज को काट कर अपनी राह बना लेता है। कुछ जगह हम पेड़ों में से झुक कर चलने लगे। और कभी फिर खुली जगहों पर निकल आते। यहाँ आकर हम पूरी तेजी से बढ़ने लगे। मेरी घोडी जब चट्टानों पर से बढ़ने लगती, तब मेरी काठी गिरने को हो जाती। मै ऐसे समय उतर पड़ता और इसे मजबूती से पकड कर चलने लगता। कुछ ही देर में सब लोग मेरे पास से होकर आगे बढ गये। औरते सजधज कर सवार थी और आदमी हँसते खेलते और अपने घोड़ो को थपथपाते बढ रहे थे। इसी समय चट्टानो में से दो काली पूँछ वाले हिरण उछले। रेमंड ने घोडे पर से ही गोली दाग दी। दूसरी ओर से भी उसके जवाब में एक गोली चली और तब दोनों ही गूँजें मद्धम पड कर डूब गई।

इसी तरह सात-आठ मील बढने के बाद नज़ारा बदल गया। चारों ओर की ढलानें बहुत ऊँचे और पतले पेडों से ढकी हुई थी। आदिवासियो ने तुरन्त ही दायें और बायें अपने कुल्हाड़ो से लट्ठे काटने शुरू कर दिये। इस समय मै अकेला पड गया। परन्तु इन पहाडो मे इतनी चुप्पी छाई हुई थी कि इन पेडो के काटने की आवाज और लोगो की बातचीत की आवाज़ साफ-साफ सुनाई दे जाती थी।

रेनल भी आदिवासियो के समान ही बन चुका था। उसने अपने घर के लिए भैसे तो काफी मार लिये थे, पर अब लट्ठे जमा करने के काम में उसे कठिनाई अनुभव होने लगी। इस लिए उसने मुझ से रेमंड को अपने साथ देने के लिए कहा। मैने मान लिया। तब वे दोनो ही जंगल के सब से घने हिस्से मे घुस गये और अपने काम में जुट गये। मैने अपना घोडा भी रेमड को ही सौप दिया और खुद पहाड पर चढने लगा। कमजोर होने के कारण मै बहुत धीरे-धीरे, आराम से बढने लगा। लगभग एक घटे बाद से ऐसी ऊँचाई पर पहुँचा, जहाँ से यह घाटी बहुत ही छोटी और अँधेरी खाई जैसी लग रही थी। इन पहाडो की सब से ऊँची चोटी बहुत ऊँची और बहुत दूरी पर दिखाई दे रही थी। चारो ओर से मेरी बचपन से पहचानी चीजो ने मुझे घेरा हुआ था। चट्टानें, चश्मे और काई से घिरे पेड चारो ओर घिरे हुए थे। कही इन्होने धारा का बहाव रोक लिया था, तो कही ये पेड या चट्टानों में फँसे

हुए थे।

ये पर्वत जंगलो से भरे हुए तो थे ही, इन पर रहने वाले पशु भी अनेक प्रकार के और सख्या में बहुत अधिक थे। आगे बढ़ने पर मैने बारहसिगों की चौड़ी पगडंडियो को देखा। सब तरफ घास कुचली हुई थी। यहाँ भेड़ियो की भी बहुत-सी पगडडियाँ दिखाई दी। कही-कही मुझे, और जगह देखे गये निशानो से, कुछ भिन्न निशान भी मिले। मैने समझ लिया कि ये निशान राकी पर्वतमाला मे पाईजाने वाली भेड़ो के थे। मै एक चट्टान पर बैठ गया। वहाँ पूरी शाति छाई हुई थी। न हवा चल रही थी और ना ही कोई जन्तु दिखाई दे रहा था। मुझे ध्यान आया कि कहीं मैं ऐसी जगह में गुम न हो जाऊँ। इसलिए मै सामने के पहाड़ की एक ऊँची चोटी को देखता रहा। यह जगलों से एक दम सीधी ऊपर उठी थी और कुदरती तौर पर इस की सब से ऊँची जगह पर एक नंगी चट्टान पड़ी हुई थी। इस प्रकार के निशान को भुलाना मुश्किल था। इस लिए मुझे कुछ निश्चिन्तता अनुभव हुई और मैं आगे चलने लगा। मेरे सामने की झाड़ियो मैं से एक सफेद भेड़िया उछला और धीरे से सरकता हुआ एक ओर को बढ़ने लगा। वह एक क्षण के लिए रुका और उसने उत्सुक निगाहो से मुझे देखा। मेरी इच्छा हुई कि उसे मारकर उसकी खोपड़ी को मैं, इन पर्वतो की निशानी के रूप में, अपने साथ ले लूँ। पर मेरे निशाना साधने से पहले ही वह भाग गया। कुछ ही देर मे मैने सामने की शाखाओ के टूटने की आवाज सुनी और उन ऊँची झाड़ियों के ऊपर निकलते हुए बारहसिंगे के सीग देखे। मुझे लगा कि मैं शिकारियो के स्वर्ग में पहुँच चुका था।

इन पहाड़ियों की यह हालत गमियो में होती है। सर्दियो में यहाँ का नजारा कुछ और ही होता है। चारो ओर ऊँचे-ऊँचे देवदार और दूसरी किस्म के पेड़ बहुत घने हो जाते है और उनके पराग से यह मारा पहाड़ सफेद-सा पड़ जाता है। उन दिनों पशु फँसाने वाले यहाँ आकर घने पेडो के नीचे अपने डेरे लगा लेते है और शिकार के इस स्वर्ग का खूब आनन्द लेते है। उन के मुख से मैने सुना है कि किस प्रकार वे अपनी आदिवासी प्रेमिकाओ और कुछ आदिवासी साथियो को लेकर यहाँ कुछ महीने अकेले मे बिताते है। वे यहाँ बहुत से गड्डे खोद कर सफेद झाड़ियों, सेबलो और मार्तेनों को फँसा लेते है।

उनके चारो ओर भेडियो की चीख-चिल्लाहट सारी रात सुनाई देती रहती है, पर अपने डेरे के चारों ओर ऊँचे-ऊँचे लट्ठों और पत्थरों की दीवारे बनाकर ये लोग जलती आग के सामने निश्चिन्त होकर सोते रहते हैं और सुबह अपने ही दरवाजे पर आये हुए किसी भी हिरण को मार लेते है।

—:०:—

१८ : पहाड़ पर शिकार

डेरे में नई काटी हुई वल्लियाँ बहुत अधिक जमा हो गई थीं। उन में से बहुत-सी काट कर तैयार हो चुकी थीं। ये सब साथ-साथ जमा की हुई थीं। इन्हें धूप में सूखने के लिये रख दिया गया था। दूसरी कुछ वल्लियाँ जमीन पर ही पड़ी थीं, जिन्हें साफ़ करने में औरतें, बच्चे और योद्धा जुटे हुए थे। पिछले शिकार मे पाई गई बहुत-सी खालें तैयार कर छील ली गई थीं। इस लिये बहुत सी स्त्रियाँ इकट्ठी होकर सीने के काम में जुटी हुई थीं, ताकि मकानों की नई छतें तैयार की जा सकें। आदमी धारा के किनारे की झाड़ियों में घूम रहे थे, ताकि वहाँ से शोंगसाशा की छड़ियों को इकट्ठी कर सकें। इस की छाल को तम्बाकू में मिला कर पिया जाता है। रेनल की पत्नी भी, अपने घर मे ही, सीने के काम में जुटी हुई थी। उसका पति सुबह का भारी नाश्ता खा कर बाहर बैठा रेमंड और मेरे साथ चिलम पी रहा था। उसने काफी देर वाद यह प्रस्ताव किया कि हमें किसी शिकार पर चलना चाहिये। उसने हम से अपने डेरे से वदूकें लाने को कहा। वह घोड़े की शर्त लगाने को तैयार था कि मील दो मील की दूरी पर ही हमें किसी वारहसिंगे या अन्य हिरण का शिकार अवश्य मिलेगा। वह अपनी पत्नी की पीली घोड़ी साथ ले चलना चाहता था। उसका कहना था कि भले ही वह घंटे में तीन-चार मील से अधिक न चलती हो, पहाड़ों पर शिकार के लिए वह किसी भी खच्चर से कम अच्छी सावित न होगी।

मैं उस काले खच्चर पर चढा, जिस पर प्राय: रेमंड चढ़ा करता था। यह खच्चर बहुत ताकतवर, सभ्य और सम्भाले जाने लायक था। पर पिछले कुछ दिनों से पड़ने वाली कुछ मुसीवतों के कारण इसका स्वभाव भी चिड़चिड़ा हो गया था। आज से लगभग एक सप्ताह पहले किसी आदिवासी का अनजाने मे मैंने अपमान कर दिया था। उसने चुपचाप एक चरागाह मे अपने चाकू से इस की कमर पर, वदला लेने के लिए, घाव कर दिया था। घाव तो अव भर चुका था, पर अव भी उसकी दर्द अवश्य वाकी थी। इसीलिए वह अपनी

जाति की और घोड़ियों की बजाय अधिक चिडचिडी हो गई थी।

सुबह बहुत ही सुहावनी थी और मेरी सेहत अच्छी थी। ऐसी अच्छी सेहत मेरी पिछले कई दिनो से नही रही थी। हम लोग यह छोटी-सी घाटी छोडकर एक चट्टानो भरे खड्ड मे होते हुए पहाड़ी पर चढे। जल्दी ही हमारा डेरा दीखना बन्द हो गया। साथ ही हर जीवित चीज भी दीखनी बन्द हो गई। मैं जीवन में कभी इतनी घृणित जगह से नही गुजरा और ना ही कभी गुज़रना चाहूँगा। यहाँ यह काली खच्चर बहुत ही अड़ियल बन गई। यहाँ तक कि रेनल का पीला घोड़ा भी हर कदम पर लडखड़ाने लगा। इनके पाँव और टाँगें चट्टान से टकरा कर घायल होने लगी।

यह जगह चुप्पी और एकात की थी। यहाँ केवल पर्वतो की चट्टानो भरी चढाइयाँ या खुरदरी नंगी चट्टानें ही देखने को मिल रही थी। पेड-पौधे तो बहुत ही कम थे। बहुत देर बाद हरे जगल का एक टुकडा मिला। जब हम इसमें कुछ आगे बढ़े तो हमारी इच्छा चट्टानो में लौट चलने की हुई। बात यह थी कि हम इतनी सीधी ढलान पर थे और इतने घने पहाड़ो मे से गुज़र रहे थे कि हमें इधर-उधर एक गज तक भी कुछ नही दिखाई दे रहा था।

अगर कोई स्वय को इस प्रकार की कठिनता और खीझ पैदा करने वाली मिली-जुली हालत मे रखना चाहे, तो उसे एक बुरे खच्चर पर चढ कर ऐसे घने जगलो मे किसी ऐसी ही तिरछी ढलान पर उतरने की कोशिश करनी चाहिये। मजा तो तब होगा यदि उसके साथ एक लम्बी बदूक हो, उसने झालरदार कमीज पहनी हुई हो तथा उसकें लम्बे बाल हो। ये सब चीजे हर जगह शाखाओ मे उलझ और फँस कर तंग करेंगी और इनसे उछल कर शाखाएँ उसके मुँह पर बार-बार टकरायेगी। उसकी खच्चर बार-बार रुक कर फिर तेजी से भागेगी, जिससे सवार की हालत बार-बार बिगडेगी। कभी वह उसकी पीठ पर चिपक जाएगा और कभी वह अपनी पीठ पर गिर कर अपने पाँव उसकी गर्दन मे फँसा लेगा। यह इस कारण कि वह शाखाओ और चट्टानो की टक्कर से अपने को बचा सके। रेनल लगातार अपने घोडे को कोसता ही रहा। हम में से किसी को पता न था कि हम किधर जा रहे हैं ? मैं कई बार ऐसी बुरी सवारी कर चुका था पर, तो भी कुछ मिनट की वह

सवारी मुझे जीवन में कभी न भूलेगी।

आखिर हम लोगो की मुसीबत खत्म हुई। हम ढलान की ओर बहने वाली एक धारा के किनारे आ निकले। यहाँ से बाईं ओर मुड़ते हुए हम पत्थरो और पानी पर से गुज़र कर, चमकते हुए सूर्य की धूप से बचते हुए, पेडो की छाया में खुशी-खुशी बढने लगे। यह धारा एक ओर को तेजी से मुड़ गई थी और चट्टानी पहाडियो के बीच मे एक खाई के रूप में बदल गई थी। यहाँ यह इतनी गहरी हो गई थी कि हम उसका तला भी खोज नहीं पाए। यहाँ से आगे एक बार फिर हम बुरे जगलो मे जा फँसे। बहुत देर बाद हम फिर से धूप और छाया मे आ निकले। हमने देखा कि हम एक पहाड़ की तलहटी मे थे। यहाँ धूप खूब चमक रही थी। हमारे सामने एक लम्बी-चौड़ी रेतीली घाटी पहाडो तक फैली हुई थी। रेनल इसकी ओर ध्यान से देखता रहा और अन्त में कहने लगा—

'बहुत बार आदिवासियो के साथ इन ब्लैक हिल्स में शिकार खेलते हुए मैं सोने की खोज मे रहा हूँ। यहाँ काफी सोना है यह बात तय है। मैंने कम-से-कम पचास बार ऐसे स्वप्न देखे है और आज तक मेरा स्वप्न कभी झूठा नही हुआ। सामने इन काली चट्टानो की ओर देखो, जो एक और चट्टान के चारो ओर जमा हैं। क्या यह अनुमान नही होता कि वहाँ कुछ जरूर होगा? किसी गोरे पुरुष के लिए पहाड़ियो मे अकेले घूमना उचित न होगा। आदिवासी लोग इन पहाड़ियों में बुरी आत्मा का निवास मानते हैं। मेरा भी यह विश्वास है कि यहाँ सोने की खोज करना अच्छा सिद्ध नही होगा। हाँ, इस सबके लिए मै यह ज़रूर चाहूँगा कि इन नीचे के लोगो मे से कोई यहाँ अपनी छड़ और छेनी ले कर आये। मेरा विश्वास है कि वह जल्दी ही सोने की खान पा लेगा। खैर आज मैं सोने को निकालने की कोशिश नही करूँगा। वह देखो, खड्ड मे जो पेड है, हम वहाँ तक जाएँगे। मेरा विश्वास है कि वहाँ काली पूँछ वाले हिरण का शिकार हमे जरूर मिलेगा।"

रेनल की भविष्यवाणी पूरी न हुई। हम पहाड पर पहाड़ और घाटी पर घाटी पार करते गये। हमने गहरी खाइयाँ भी पार की। पर तो भी हमने एक भी शिकार न पाया। मेरा साथी इससे चकित और परेशान हो गया। हमने किसी अच्छे शिकार के न मिलने पर मैदान में ही किसी साधारण हिरण का शिकार

करना अच्छा समझा। इस इरादे से हम एक तंग घाटी में से गुज़रने लगे। इसके तले पर जंगली झाड़ियाँ उगी हुई थी और बीच-बीच में भैंसो के चलने के रास्ते बने हुए थे। ये भैंसे ऐसी घनी जगहो में से भी अपना रास्ता बना लेते हैं।

रेनल की आँख लगातार उन चट्टानो और चोटियो की ओर लगी हुई थी। उसे आशा थी कि कही से कोई पहाडी भेड़ हमे झाँकती हुई मिल जाएगी। कुछ देर तक हमें कुछ भी न दिखाई दिया। बहुत देर बाद एक पहाड़ी की तलहटी मे हमे कुछ हलचल-सी दिखाई दी। यह एक काली पूँछ वाला हिरण था। वह एक चट्टान पर खड़ा होकर हमें देखने लगा। हमे देखते ही वह धीरे से घूमा और आँखों से ओझल हो गया। तुरन्त ही रेनल घोड़े से उतर कर उस जगह की ओर भागा। मुझ में पीछा करने की हिम्मत न थी। इस लिए मैं उसके घोड़े को थाम कर वही प्रतीक्षा करने लगा। रेनल कुछ देर के लिए ओझल हो गया। तब उसकी बंदूक चलने की आवाज आई। थोडी देर में वह फिर से निराशा भरी नज़र लिए हुए सामने आया। साफ था कि वह अपने काम में सफल नही हुआ। अब हम उस घाटी मे यहाँ एक ऐसे गड्ढे के पास आये, जिस के तले पर सफेद मिट्टी जमी हुई थी और सूख कर फट चुकी थी। इस जगह को देख कर रेनल की आँखे चमक उठी, उसने कोई शरारत पहचान ली। उसने मुझे रुकने के लिए पुकारा और एक पत्थर लेकर गढे मे फेंका। मै हैरान रह गया। मैने देखा कि ऊपर की परत को हटा कर यह पत्थर पानी मे गिरा और उससे जोर से छींटे उड़े। नीचे का पानी बहुत ही गाढ़ा और पीले रग का था। पास ही एक पाँच-छ. फुट लम्बी छड़ी पड़ी थी। बहुत पास के किनारे पर इसे डुबा कर हम मुश्किल से इस गढे का तला छू पाये। इस तरह के स्थान राकी पर्वतमाला में जगह-जगह मिलते हैं। भैंसे अपने अंधेपन मे ऐसे गड्ढो में अनजाने ही फँस जाते है। और कुछ देर निकलने की कोशिश करके, असफल होकर, वही डूब जाते है। इतने गहरे कीचड़ जैसे पानी में से निकलना उनके लिए कठिन हो जाता है क्योकि यह पानी बहुत अधिक गहरा होता है।

आखिर हमें इस खाई को पार करने की जगह मिल गई। यहाँ यह घाटी मैदानों की ओर खुल गई थी। अब हमारे सामने मैदान ही मैदान फैला हुआ

था। बहुत दूरी के एक टीले पर हमने कुछ काली रेखाएँ हिलती हुई देखी। रेनल का विश्वास था कि ये भैंसे हैं।

उसने कहा, "आओ, हम इनमें से किसी एक को फँसाने की कोशिश करें। मेरी पत्नी को कुछ और खाले मकान के लिए चाहिएँ और कुछ गोंद जैसी चिकनाई मुझे भी चाहिये।"

उसने अपने पीले घोड़े को तुरन्त पूरी तेजी के साथ दौड़ाना शुरू कर दिया। इधर मैंने भी अपने घोड़े को एड़ लगाई। वह बहुत जल्दी ही अपने साथी से आगे निकल गया। एक-दो मील दौड़ने के बाद एक बड़ा खरगोश उछल कर हमारे सामने आया। यह मेरे खच्चर की टाँगो मे उलझ गया। घबरा कर मेरा खच्चर एक ओर को उछला। कमजोर होने के कारण मैं तुरन्त ही जमीन पर गिर पड़ा। मेरी बन्दूक मेरे सिर के पास ही आ गिरी। गिरते-गिरते इस में से गोली छूट गई। भाग्य से मैं बच गया, पर इस की गोली की गुंजन ने मेरे कानो को बहरा कर दिया। एक-दम चौक कर मै कुछ देर जड़-सा पड़ा रहा। रेनल मुझे मरा हुआ समझ कर पास तक आया और मेरे खच्चर को गालियाँ देने लगा। कुछ ही देर में सँभल कर मैं उठा और बन्दूक उठा कर उसे जाँचने लगा। यह बहुत चोट खा गई थी। इस के हत्थे में चीर पड़ पया था और इस का मुख्य पेंच ढीला हो गया था। अब इसके ताले को बाँधने के लिए ताँत का प्रयोग करना पड़ा। अब भी इससे कुछ-न-कुछ काम लिया जा सकता था। मैंने उस को साफ किया और फिर से भरा। रेनल इसी बीच मेरा खच्चर पकड़ कर मुझ तक ले आया था। रेनल को बन्दूक पकड़ा कर मै इस पर चढ़ गया। अभी मैं चढा ही था कि इस ने फिर से गड़बड़ करनी शुरू कर दी। पर, अब मै पूरी तरह तैयार था और कोई रुकावट बीच मे न थी। इसलिए मैंने उसे जल्दी ही काबू कर लिया। रेनल से बन्दूक लेकर मैं फिर पहले जैसे ही आगे बढ़ने लगा।

अब हमारे रास्ते मे पहाड़ न थे। हम चौड़े मैदान मे निकल आए थे। भैंसे अब भी हम से दो मील आगे थे। जब हम उन के पास तक आये, तो एक छोटे-से टीले के पीछे छिप गये। मैने रेनल का घोड़ा थाम लिया और वह तेजी से भाग निकला। कुछ ही मिनट में मुझे गोली चलने की आवाज़ आई। मैंने एक भैंसे को दाई ओर पूरी तेजी से भागते हुए देखा। उस के

पीछे ही असफल शिकारी भी आ निकला। अब वह फिर से निराशा की हालत में अपने घोडे पर चढ गया। वह इन पहाड़ियो और भैसो को कोसने लगा और बार-बार अपने अच्छा शिकारी होने की बात दोहराने लगा। यह बात सच भी थी। यह सच था कि वह पहले कभी भी इन पहाडियों से दो-तीन हिरण या भैसे आदि मारे बिना न लौटा था।

अब हम बहुत दूर पर स्थित अपने डेरे की ओर लौटे। हमारे रास्ते में चारो ओर अनेक हिरण मैदान मे दौड़ते फिर रहे थे। पर, उनमे से हमारे सामने एक भी रुक कर खडा न हुआ, जिससे हम उस पर निशाना साध सकते। जब हम डेरे के पास के पहाड की तलहटी मे पहुँचे तो हम छोटे-से-छोटा रास्ता पकडने को अधीर हो उठे। इसलिए बाई ओर को मुड़ कर हम अपने थके-हारे जानवरो को चट्टानो में से ले कर बढे। इन पथरीली ढलानो पर हिरण और भी अधिक दीखने लगे। हम दोनो ने ही काफी दूरी से एक-एक निशाना साधा, पर दोनो ही चूक गये। बहुत देर बाद हम आखिरी टीले की चोटी पर पहुँचे। वहाँ हमने बिल्कुल नीचे ही गाँव को पाया। यहाँ सभी लोग काम में जुटे हुए थे। हम बहुत निराशा के साथ नीचे उतरे। जब हम घरो के बीच से होकर गुजर रहे थे, तब लोगो ने हमारी ओर देखा कि शायद हम कुछ नया मास आदि लाए होगे। कुछ औरतो ने हँसी भी उड़ाई, जिससे रेनल को शर्म अनुभव हुई। जब हम उसके डेरे पर पहुँचे, तो हमारी हालत और भी बुरी हो गई। यहाँ हमने रेनल के आदिवासी युवक सम्बन्धी 'तूफान' और उसके साथी 'शशक' को आराम करते पाया। वह लकड़ी के एक बर्तन मे बडे आनन्द के साथ 'वास्ना' का स्वाद ले रहा था। उसके पास ही एक मादा हिरणी की ताजी खाल भी पडी थी। इसे वह अभी-अभी पास ही मे जगल से मार कर लाया था। निश्चय ही उस युवक का हृदय इस बात से खुश था। पर उसने यह खुशी जाहिर नही की। उसे तो हमारे पहुँचने का पता भी नही चला। उसके सुन्दर चेहरे पर आत्म-सन्तोष और शाति साफ-साफ झलक रही थी। आदिवासियो की यही विशेषता है कि वे अपनी बडी-से-बड़ी भावना को भी अन्दर ही-अन्दर बिना बेचैनी के, छिपा लेते है। मै पिछले दो महीनो से इस युवक को जानता था। इसने इस बीच अपने स्वभाव को काफी अच्छा बना लिया था। जब मैने शुरू मे

उसे देखा तब वह अभी बचपन को छोड़ कर शिकारी बनने की तैयारी कर रहा था। बहुत दिन पहले उसने पहला हिरण मारा था। तब से शिकार की उसकी इच्छा बढने लगी थी। अब वह सदा ही शिकार की खोज मे रहने लगा। इतना छोटा कोई और शिकारी इस मामले में इस जितना सौभाग्यशाली नही रहा होगा। इन सब सफलताओ ने उसके चरित्र मे काफी अन्तर ला दिया था। मुझे याद है, पहले-पहल वह जवान स्त्रियो के बीच मे बैठने से घबराता था और उनके सामने वह भीगी बिल्ली-सा बन जाता था। पर, अब वह अपने को बहादुर मानने लगा था। इसीलिए अब अच्छी पोशाके पहन कर और खूब सज-धज कर निकलता था। मेरा अनुमान है कि इस दिशा में भी उसे सफलता ही मिली थी। पर अब भी योद्धा का पूरा सम्मान पाने के लिए उसे बहुत-कुछ करना बाकी था। वह औरतो और लडकियो मे सज-धज कर अवश्य निकलने लगा था, परन्तु अब भी सरदारो और बूढे लोगो के सामने जाने मे भी उसे शर्म महसूस होती थी। उसने आज तक भी किसी आदमी को न मारा था और न ही लडाई मे मारे गए किसी शत्रु के शरीर पर चोट पहुँचाई थी। मुझे पूरा विश्वास है कि वह युवक शत्रु की गर्दन काटने वाले अपने अछूते चाकू का बहुत जल्दी ही उपयोग करेगा, क्योकि उसके दिल में इस बात की इच्छा बहुत दिन से घर किए हुए है। मै उसके साथ अकेला रहने मे, इसीलिए घबराता भी था।

'घोडा' नाम का उसका बडा भई कुछ भिन्न चरित्र का था। वह खूबसूरत हो कर भी सुस्त था। वह अच्छा शिकारी हो कर भी, दूसरो के शिकार पर मौज उड़ाना पसद करता था। उसे अपना नाम चमकाने की कोई खास इच्छा न थी। उसका छोटा भाई पहले ही प्रतिष्ठा में उससे आगे बढ चुका था। उसका चेहरा गहरे रग का और भद्दा था। वह इस पर रग मलते रहने और मेरे द्वारा दिए हुए एक शीशे मे अपनी शक्ल देखते रहने में ही अपना अधिक समय गुजार देता था। बाकी समय वह खाडे, सोने या घर के बाहर धूप सेकने मे बिता देता था। यहाँ वह पूरी तरह सज-धज कर और अपने हथियार ले कर बैठा हुआ घटो बिता देता। वह इस बात मे ही खुश था कि उसे देख-देख कर औरते प्रसन्न होती है। वह हमेशा ही गंभीर चेहरा ले कर बैठा रहता, जैसे वह ध्यान मे डूबा हुआ हो। बीच-बीच में वह अपने प्रशंसको की ओर

भी तिरछी निगाह डाल लेता।

वे दोनों भाई आदिवासियों के दो वर्गो के प्रतिनिधि थे। यहाँ हमें 'शशक' का भी ध्यान रखना चाहिए। 'तूफान' और वह दोनों सदा साथ रहते थे। उनका खाना, सोना और शिकार साथ-साथ ही होता था। उनकी हर चीज़ ही साँझी रहती थी। आदिवासी जीवन में अगर कोई चीज बहुत आकर्षक है, तो वह है इस प्रकार की दोस्ती। ऐसी दोस्ती मैदान के इन कबीलो मे कभी कभी देखने को मिल जाती है।

धीरे-धीरे दोपहर के बाद समय बीतने लगा। मै रेनल के डेरे में ही लेटा रहा। सारे डेरे मे ही छाई सुस्ती ने ही मुझे भी आ घेरा। दिन का काम लगभग समाप्त हो गया था। जो कुछ रह गया था, उसे बिना समाप्त किए ही सब लोग अपने घरो में सुस्ताने के लिए लेट गए थे। एक गहरी सुस्ती और आलस्य ने सारे गाँव को घेर रखा था। जब-तब कुछ लड़कियो की हँसी, पास के घर से आती हुई सुनाई दे जाती, या फिर दूर से बच्चो के हँसने-खेलने की आवाज़ आ जाती। धीरे-धीरे मै भी सुस्त होता गया और नीद ने मुझे आ घेरा।

शाम होने पर जब चारो ओर आगे जलने लगी, रेनल के घर के पास ही परिवारों का एक घेरा सा बन गया। ये परिवार उसकी स्त्री के ही सम्बन्धी परिवार थे। ये लोग बहुत ही असभ्य और नीच खानदान के थे। इनमें मे केवल 'तूफान' ही अकेला ऐसा था जिससे आगे चलकर कुछ आशा हो सकती थी। खानदानी गुणो के कारण यह बात भी सदेह में ही पडी दिखाई देती थी। कारण यह था कि उसके साथी इतने वीर और संख्या मे अधिक नही थे कि वे लड़ाइयो या बदला चुकाने मे उसका साथ दे सके। रेमंड और मै उनके साथ ही बैठ गए। आग के पास कम-से-कम आठ दस आदमी और लगभग इतनी ही जवान और बूढी औरते जमा होगी। उनमे चिलम घूमने लगी। साथ ही, हँसी-मजाक का सिलसिला शुरू हुआ। कुछ देर बाद दो-तीन बूढ़ी औरतो ने रेमंड को तीखे ताने देने शुरू किए। कुछ आदमियो ने भी इसमें हिस्सा लिया। अन्त मे एक बूढी औरत ने उसे एक बहुत बुरे नाम से पुकारा। इस पर सब लोग हँस पड़े। रेमंड हँसता रहा और उसने कई बार मुकाबले में उत्तर देने का यत्न किया। पर वह असफल रहा। मै चुप

ही रहा। मुझे डर था कि कहीं उसे बचाते हुए मैं स्वयं ही अपना अपमान न करवा बैठूं ?

सुबह होने पर मैंने बहुत निराशा के साथ देखा कि अभी डेरा एक दिन और इसी जगह रुका रहेगा। मै यहाँ की सुस्ती से तंग आ गया था। इसलिए मैंने आसपास के पहाड़ो में निकल जाने का निश्चय किया। मेरे साथ केवल मेरी बंदूक थी, जिस का साथ मुझे हर मुसीबत में भरोसा दिलाता रहता था। इस गाँव के सारे लोग गोरो के प्रति अपना विश्वास बताते थे, परन्तु अनुभव बताता था कि वे लोग इतने विश्वास योग्य थे नही। उनकी बेलगाम इच्छाओं और विचित्र हरकतों के बारे में कुछ भी, निश्चित रूप में पहले से ही नही कहा जा सकता था। अगर इन लोगों के बीच पूरा सावधान न रहा जाए, तो किसी भी समय जीवन को खतरा हो सकता है। इन लोगो को दूसरे की कमज़ोरी ही सब से अधिक लुभावनी लगती है और ये किसी पर भी हमला कर बैठते हैं।

बहुत-सी घाटियाँ साथ के पहाड़ो से मैदान पर खुल रही थीं। इनमें पेड़ और झाडियाँ बहुत अधिक उगे हुए थे। इन जगलो मे बहुत से आदिवासी घूम-फिर रहे थे। पहाड़ो पर उनके बच्चे हँसते हुए आँखमिचौनी खेल रहे थे। साथ-साथ वे पक्षियो और छोटे जन्तुओं को अपने छोटे-छोटे धनुष-बाणों से मारते जाते थे। पास ही एक गहरी घाटी, पहाड़ की चोटी से नीचे तक फैली हुई थी। मैने इसके तले से चढना शुरू किया। चट्टानो, पेड़ो और झाडियो मे से होकर मैं बढ़ने लगा। इसमें एक बहुत ही पतली धारा बह रही थी। यह इतने अँधेरे रास्ते से बह रही थी कि इस पर अब तक भी सूर्य की किरणें कभी एक क्षण को भी न पड़ पाई होंगी। कुछ देर आगे बढ़ने के बाद मैंने सोचा कि मैं बिल्कुल अकेला हूँ। पर, एक जगह साफ मैदान मे आने पर मैंने एक आदिवासी के काले सिर और लाल कंधो को दूर से पहचाना। यह कोई खतरे की बात न निकली। यह मेरा मित्र मेनेसीला ही था। वह वहाँ बैठकर, चट्टानो और पेडो के बीच में छिपा हुआ, ध्यान कर रहा था। मैंने उसे खुल कर देखा, उसका चेहरा ऊपर उठा हुआ था। उसकी आँखें ऊपर की चट्टान से उगने वाले एक वृक्ष पर जड़ी हुई थीं। चीड़ के उस पेड की सबसे ऊपरी शाखा इधर-उधर हिल रही थी। नीचे की शाखाएँ भी

ऊपर-नीचे हिल रही थी। लगता था जैसे वह पेड़ भी ज़िन्दा चीज हो ! उसकी ओर कुछ देर देखने के बाद मै समझ गया कि मेनेसीला ध्यान मे डूब कर किसी अलौकिक चीज के साथ अपना सम्बन्ध जोड़े हुआ था। मैने उसके विचारो को पहचानना चाहा। पर, मै केवल अनुमान मात्र ही कर सकता था। मै जानता था कि किसी आदिवासी की बुद्धि में यह तो आ सकता है कि कोई 'महान् आत्मा' सर्वशक्तिमान, सबसे अधिक बुद्धिमान् और सबका शासक है, पर उसके लिए यह सोचना कठिन है कि वह उससे सीधा सम्बन्ध बना सकता है। इसीलिये वह अपना सम्बन्ध दिखाई देने वाली किसी छोटी सी चीज़ से करके ही प्रसन्न हो जाता है। इसीलिए ये आदिवासी अपने लिए एक प्रतिनिधि और रक्षक आत्मा को मानकर उस पर,' हर कठिनाई और राह दिखाने के लिए, भरोसा करके चलते है। उनके लिए सारी प्रकृति ही किसी जादूभरे असर से भरी हुई है। उन पहाडो में घूमने वाला एक भी जंगली जानवर, गाने वाला कोई भी पक्षी, या हिलता हुआ कोई भी पत्ता उसके भाग्य को बताने वाला या भविष्य के लिए चेतावनी देने वाला बन सकता है। वह इस सारे ससार को वैसे ही देखता है, जैसे कोई ज्योतिषी तारो को देखता है। वह इन चीजो से इतना निकट का सम्बन्ध समझता है, कि वह अपनी रक्षक आत्मा को किसी जीवित प्राणी का रूप दे बैठता है। यह रूप भालू, भेडिया, चील, या साँप आदि किसी भी रूप में हो सकता है। मेनेसीला भी शायद इस चीड के पेड़ की ओर यही सोच कर देख रहा था कि यह उसकी रक्षक आत्मा का प्रतिनिधि है।

उसके दिमाग मे चाहे जो कुछ भी रहा हो, यह ठीक नही था कि मै उसे छेड़ता। अपने कदम चुपचाप हटाता हुआ मे घाटी मे उतर आया और दूसरी ओर चढने का रास्ता खोजने लगा। ऊपर की ओर देखते हुए मैने जगलो मे से उठी हुई एक ऊँची चोटी देखी। मुझ में इस पर चढने की इच्छा जगी। ऐसी इच्छा पिछले बहुत दिन से नही जगी थी। डेढ घंटे तक लगातार मेहनत करने के बाद मे चोटी तक पहुँच सका। अँधेरी चट्टानो के पास से होते हुए मै रोशनी मे निकल आया और इसके किनारो पर घूमने लगा। मै इसकी सब से ऊँची जगह पर जा कर बैठ गया। यहाँ से जब मैने पश्चिम की ओर देखा तो पहाडी चोटियों मे से दूर तक फैला हुआ पीला और नीला मैदान दिखाई

दिया। लगता था जैसे एक शान्त समुद्र लहरा रहा हो। चारो ओर के पहाड़ भी कम लुभावने न थे। परन्तु इस विरोध भरे दृश्य ने उन्हे और भी लुभावना बना दिया था।

१६ : पहाड़ों की राह

लावोते नाम के स्थान पर जब मैं शॉ से जुदा हुआ था, तब मैने उससे पहली अगस्त के दिन, लारामी किले में, मिलने का वायदा किया था। आदिवासियों का इरादा भी पर्वतो की राह किले की ओर जाने का था। अब इस अवसर पर ऐसा करना कठिन था, क्योकि कोई भी राह नही मिल रही थी। ऐसी राह खोजने के लिए हमें दक्षिण की ओर बारह-चौदह मील जाना पड़ता। दोपहर काफी देर बाद सारा डेरा चलने की तैयारी करने लगा। मै तीन या चार आदिवासियो को लेकर सबसे पीछे-पीछे चला। मेरे सामने बहुत दूर तक सूर्य के लाली भरे प्रकाश मे या पर्वतो की छाया में इन आदिवासियो का ही फैलाव नज़र आता था। यह जगह बहुत ही अपशकुन वाली थी और डेरे के लिए चुनी गई थी। जब वे यहाँ एक साल पहले रुके थे, तब 'बवंडर' के बेटे के साथ दस आदमियो की लडाकू टुकडी शत्रुओ के विरुद्ध लडाई के लिए गई थी। उसमे से एक भी लौट नही पाया था। इस साल की लड़ाइयो की तैयारियो का यही सबसे बड़ा कारण था। जब मैं डेरे मे पहुँचा, तब मैंने इसे बहुत भंयकर आवाजो से भरा पाया। पर, मै चकित नही हुआ। लोग अफसोस में चीख और चिल्ला रहे थे। अधिकाश स्त्रियाँ केवल रोने से ही सन्तुष्ट न रह कर, अपने शोक को प्रकट करने के लिए, अपनी टाँगो पर चाकुओ से घाव कर रही थी। एक योद्धा का भाई मारा गया था। उसने अपने दु:ख को प्रकट करने का दूसरा ही ढग सोचा। ये आदिवासी जब कभी दु.ख मे होते है, तो कितनी ही भयकर आदत के क्यो न हो, उस समय बहुत ही उदार हो जाते हैं। कई बार अपने दु.ख को प्रकट करने के लिए अपनी हर चीज़ दूसरो को देकर स्वयं को कतई निर्धन बना लेते है। जिस योद्धा का ज़िक्र है, वह अपने दो सबसे अच्छे घोड़े गाँव के बीचों-बीच लेकर आया और उसने उन्हे अपने मित्र को दे दिया। तब उसकी प्रशसा में चारो ओर से गीत गाए जाने लगे, जो इस चीख और चिल्लाहट में मिलकर एक हो गए।

अगली सुबह हम फिर पर्वतो में घुसे। ये पर्वत न बहुत बड़े थे और न

सुन्दर। यहाँ कतई एकान्त था और ये बिल्कुल उजाड़ थे। चरों ओर टूटी-फूटी काली चट्टानें ही बिखरी हुई थी। किसी भी पेड़ या वनस्पति का कोई चिन्ह तक दिखाई नही देता था। जब हम इन घाटियो में से गुज़र रहे थे, तब मैने रेमड को एक जवान स्त्री के साथ-साथ बढ़ते देखा। वह उसकी प्रशंसा में बहुत कुछ कह रहा था। पास पड़ोस की बूढ़ी स्त्रियाँ उसकी हरकतो को बहुत प्रशंसा के साथ देख रही थी। वह लड़की खुद भी अपना सिर उसकी ओर मोड़कर हँस रही थी। तभी रेमंड का खच्चर अपनी बुरी हरकतो पर उतर आया और बुरी तरह उछलनें-कूदने लगा। रेमंड एक अच्छा घुड़सवार था। पहले तो वह अपनी जगह पर टिका रहा, परन्तु थोड़ी देर बाद मैंने देखा कि खच्चर ने बुरी तरह 'दुलत्तियाँ झाड़नी शुरू कर दी। रेमंड उसकी गर्दन पर चिपट गया। चारो ओर से हँसी और चीख की आवाजें आने लगी। यहाँ तक कि वह लड़की भी ज़ोर से हँसने लगी। रेमड पर चारो ओर से इतने अधिक ताने कसे गए कि उसने उनसे आगे भाग कर ही अपने को बचाया। इसके कुछ ही देर बाद जब मैं उसके पास गया तो मैंने देखा कि वह मुझे ही बुला रहा था। उसने एकान्त मे खड़ी एक चट्टानी पहाड़ी की ओर इशारा किया। यह हमारे सामने की घाटी में खड़ी थी और इसके पीछे से बहुत ही अच्छे बारहसिंगो की एक कतार, सामने से होकर, निकल गई। अभी वे निकले ही होंगे कि मेरे चारो ओर लगभग पचास आवाज़े तेज़ी से उठी। कुछ युवक अपने घोडो से उतर कर पूरी तेज़ी से पास की तलहटी की ओर भाग निकले। रेनल भी उनके साथ ही पूरी तेज़ी से उसी दिशा मे बढ़ गया। उसने हमे भी पुकारा, "आ जाओ! दौडे आओ! क्या तुमने उन हिरणो के समूह को देखा? अगर वहाँ ये इतने से हो सकते हैं, तो और भी अनेक होंगे।"

निश्चय ही यह बात सच थी। पहाड़ की चोटी के पास मैंने सैकड़ो सफेद चीज़ो को चट्टानो की ओर तेजी से भागते देखा, जब कि दूसरी कुछ इधर-उधर झुण्ड बाँधकर खडी हो रही थी। इस शिकार को देखने की मेरी भी इच्छा हुई और मैं आगे बढ़कर पहाड़ के एक रास्ते से होता हुआ, हल्की-हल्की चट्टानों के बीच में से, वहाँ तक गया, जहाँ तक मेरे घोड़े को चलने मे सहूलियत थी। यहाँ मैने उसे एक चीड़ के पेड़ के साथ बाँध दिया। उसी

समय दाईं ओर से मुझे रेमंड ने बुलाया। वहाँ भेडों का एक जत्था पास मे ही था। एक खुली जगह आकर मैने देखा कि सामने पचास-साठ भेडे खडी थीं। ये के बदूक कस बनिशाने की पहुँच के अन्दर ही थी। सब चट्टानों मे से होकर ऊपर की ओर बढने की कोशिश कर रही थी। नगे आदिवासी पूरी तरह इनका पीछा करने में लगे हुए थे। थोड़ी ही देर में शिकार और शिकारी आँखो से ओझल हो गए। कुछ देर तक कुछ भी दिखाई या सुनाई न दिया। कभी-कभी बन्दूक की आवाज दूर से दूर होती हुई सुनाई दे जाती थी।

मै उतरने के लिए मुडा। नीचे उतरते हुए मैने देखा कि आदिवासी पैदल और घोड़ो पर चढे हुए जल्दी में उधर से गुजर रहे थे। कुछ दूर जाकर वे फिर इकट्ठे हो गये। यहाँ थोडी ही देर मे डेरा खडा हो गया। मै इधर की ओर ही उतरा। कुछ ही देर में रेनल और रेमड भी यही आ गए। उन्होंने अपने बीच मे एक भेड़ लटका रखी थी, जिसे उन्होने एक घाटी के किनारे पत्थरो से ही मार गिराया था। अब एक-एक करके हर शिकारी लौटने लगा। इन पहाडो की भेडो की यह विशेषता है कि ये बहुत तेज हरकत वाली होती हैं। तभी तो साठ या सत्तर शिकारी कुल मिलाकर आधी दर्जन भेड़े ही मार सके। इनमें से केवल एक ही जवान नर मेढा था। उसके सीग बहुत बड़े थे। इस प्रकार के बड़े सीग मैने बहुत कम देखे है। ऐसे सीगों से ही आदिवासी लोग इतनी बड़ी-बडी कड़छियाँ बना लेते हैं, जिनमें बहुत अधिक चीज आ जाती है।

अगली सारी सुबह हम पहाड़ो मे ही चलते रहे। उससे अगले दिन पहाड कुछ हमारे अधिक निकट तक घिर आए और हमारा रास्ता सही रूप में पहाड़ी रास्ता बन गया। डेरा छोड़ने से पहले ही मै एक मजबूत और गठीले शरीर वाले 'चील-पंख' नाम के युवक के साथ आगे बढ निकला। उसका चेहरा बहुत ही भद्दा और खूँख्वार लगता था। उसका छोटे आकार का एक लड़का भी हमारे साथ ही चला और 'चीता' नाम का एक और आदिवासी युवक भी हमारे साथ हो लिया। गाँव को अपने बहुत पीछे छोड़ कर हम इन चट्टानी रास्तों से होते हुए आगे बढे। कुछ ही देर बाद हमें शिकार सामने दिखाई देने लगा। दोनो बाप-बेटे उस ओर निकल गए। 'चीते' के साथ मै आगे बढ़ता रहा। इस युवक का 'चीता' नाम इसका दूसरा नाम था। इसका

असल नाम कुछ और ही था, जिसे किसी अंधविश्वास के कारण छिपाया गया था। यह बहुत ही अच्छा साथी था। जब इसकी ओढ़ी हुई खाल कंधों से खिसक कर नीचे तक गिर जाती, तब इसकी आकृति और भी अच्छी और सुन्दर लगने लगती। जब वह अपने घोड़े पर आराम से बैठा होता, तब मुर्गे के पख, उसके मुकुट से ऐसे फरफराते हुए उड़ते कि वह एक आदर्श मैदानी घुड़सवार दिखाई देने लगता। उसका शरीर दूसरे आदिवासियों से पूरी तरह मेल नहीं खाता था। उसके चेहरे से ईर्ष्या, सन्देह, धूर्तता आदि बाते नही झलकती थी। अधिकाशतः कोई भी गोरा आदमी उसमें और दूसरे आदिवासियो में समानता की बातें शायद ही खोज पाएगा। पूरा न्याय करने के लिए यह ध्यान रखना उचित होगा कि इस युवक में और इसके दूसरे लाल रग वाले भाइयों मे एक बड़ी खाई इनके चरित्र को अलग करती है। यहाँ पर रहकर कुछ ही दिन मे इन मैदानी आदिवासियो को कोई भी गोरा आदमी एक जंगली जानवर ही अनुभव करेगा। परन्तु इस युवक को देखकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई, क्योंकि मुझे उसमे और अपने में समानता की कुछ बातें अवश्य मिल गई। हम दोनों बहुत अच्छे मित्र थे। ज्यो-ज्यो हम इन चट्टानी रास्तो, गहरे खड्डो और उजाड़ मैदानो से होकर आगे बढने लगे, वह मुझे डाकोटा जाति की अपनी भाषा पढाने मे गर्व अनुभव करने लगा। कुछ देर बाद हम एक ऐसे खुले घास भरे मैदान में आ निकले, जहाँ जगली फलों की कुछ झाड़ियाँ चट्टानो के नीचे से उग रही थी। इनका आकर्षण मेरे साथी के लिए इतना अधिक लुभावना रहा कि वह मुझे पढ़ाना छोड़कर फल इकट्ठे करने के लिए निकल गया। अब जब हम आगे बढे तो गाँव की गाड़ियाँ भी हमारी निगाह में आने लगी। सामने एक बूढ़ी स्त्री अपने लादू घोडे को बढाती हुई चट्टानो से आती दिखाई दी। तब एक-एक करके आदिवासी आने लगे और थोड़ी ही देर में वह छोटी-सी घाटी भीड़ से भर गई।

उस दिन की सुबह की यात्रा को आसानी से भुलाया नही जा सकता। उस दिन हम एक ऐसी जगह से होकर गुजरे, जहाँ सुन्दरता फैली थी, पहाड़ों का पूरा रूप निखरा हुआ था, चीड़ो के जगल थे, और इस सबसे बढ़कर, जहाँ एकान्त और शान्ति बरसती हुई दिखाई देती थी। ऊपर-नीचे चारो ओर हरियाली ही हरियाली नजर [illegible] थी। घाटियां, पहाड़ो, काली

चट्टानो, चोटियो तथा नीचे बहने वाली धाराओं तक यह हरियाली ही छाई हुई थी। मै पहाड़ी की चोटी पर चढकर देखने लगा, मेरे ही नीचे से होकर गाँव के लोग गुजर रहे थे। यह जलूस बहुत दूर तक फैला हुआ था। बहुत दूर की एक चोटी से अब भी घुडसवार उतरकर आ रहे थे। दूर से वे रेखाओं के रूप मे ही दिखाई देते थे।

मै तब तक इस चोटी पर खडा रहा, जब तक सब लोग गुज़र न गए। तब उतर कर मै उनके पीछे चलने लगा। कुछ और दूर चलकर मुझे पहाडियो से घिरी हुई एक छोटी-सी चरागाह मिली। गाँव ने उस दिन यहीं डेरा डाला। इस छोटी-सी जगह मे सब लोग बड़े बेतरतीबे और घबराए हुए ढंग से जमा हो गए। कुछ घर खडे हो चुके थे और कुछ तैयारी में थे। बहुतो के घर का सामान अभी भी जमीन पर ही पड़ा हुआ था और वे उसे ठीक से सजा न पाए थे। औरते एक दूसरे को पुकार रही थी। घोड़े हिनहिना रहे थे और उछल-कूद रहे थे। कुत्ते भौक रहे थे। उन्हे अपना बोझ उतरवाने की जल्दी थी। दूसरी ओर, पंखो की फरफराहट और आदिवासियों के आभूषणों की आवाज इस दृश्य को और भी आकर्षक बना रही थी। छोटे-छोटे बच्चे इस भीड मे दौडते फिर रहे थे। बहुत से बडे लड़के पास की चट्टानो पर अपने छोटे-छोटे धनुष बाण लेकर कूद रहे थे या फिर गाँव की ओर देखते हुए खडे थे। इस सब गडबड़झाले के मुकाबले में, दूसरी ओर कुछ बूढे आदमी और योद्धा एक दायरा बनाकर बैठे थे और बहुत अधिक शान्ति के साथ तम्बाकू पी रहे थे। काफी देर बाद वह गड़बड समाप्त हुई। घोड़े पास की ही घाटी में चरने के लिए ले जाए गए और सारा डेरा फिर से एक शान्त आरामगाह लगने लगा। अभी दोपहर बीती ही थी कि पास के जंगल से, पूर्व की ओर उठता हुआ, सफेद धुएँ का एक बडा-सा समूह दिखाई दिया। इससे सूर्य की किरणें कुछ छिप जरूर गईं, परन्तु अब भी धूप सही न जा सकती थी। सारे मकान बिना किसी क्रम के, थोड़ी-सी जगह में ही, खड़े थे। हर एक का घर तप रहा था और बीचों-बीच उस घर का स्वामी सुस्ताने के लिए सो रहा था। डेरे में मौत का-सा सन्नाटा छाया हुआ था। केवल कभी-कभी किसी बूढ़ी औरत के एक घर से दूसरे घर में जाने की आवाज आ जाती थी। लडकियाँ और युवक समूह बनाकर चीड़ के पेड़ो के

नीचे आसपास के टीलो पर जाकर बैठ गए थे। कुत्ते जमीन पर ही लेटकर आराम कर रहे थे। मुझ जैसे गोरे को देखकर भी वे भौंक न पाए। इस चरागाह के बाहर ही चट्टानो के बीच से एक ठंडा सोता बह रहा था। इसके किनारे घने पेड और घास उगे हुए थे। इस ठंडी और शान्त जगह पर बहुत-सी लड़कियाँ इकट्ठी होकर चट्टानो और गिरे हुए पेड़ो पर बैठी गप्पें और हँसी-मज़ाक कर रही थी। अचानक मै उधर से निकला। उन्होंने मुझ पर पानी उछालना शुरू कर दिया। कुछ मिनट घण्टो के रूप में बदलने लगे। मै वही एक पेड के नीचे लेटा हुआ ओजिल्लाला लोगो की भाषा को, अपने साथी 'चीते' की सहायता से सीखने लगा। जब हम दोनो ही इस बात से थक गए, तब मै एक गहरे और साफ़ जोहड के किनारे जाकर लेट गया। यह जोहड़ इसी सोते से बना था। छोटी मछलियो का एक समूह इसमें मचल रहा था। लगता था वे आपस मे बहुत मित्रता से खेल रही थी। पर बहुत झुककर देखने पर मालूम पडा कि वे एक दूसरे को खाने में लगी हुई थी। जब-तब उनमे से सबसे छोटी किसी दूसरे का शिकार बन जाती और शिकारी मछली उसे निगल जाती। हर बार एक बड़ी सी मछली किनारे पर आ जाती और फिर बीच मे जाकर कुछ एक का शिकार कर आती। इसके आते ही सारी मछलियाँ इधर से उधर डर कर बिखर जाती। इस मछली को देखकर बाकी सारी छोटी-छोटी मछलियाँ छिप गईं।

मैं सोचने लगा, "इस घटना को देखकर मानवता-प्रेमी और दयालु लोग बहुत देर तक अपने युग की शाति के लिए आहे भरने लगेंगे। सच यह है कि इन छोटी-छोटी मछलियो से लेकर मनुष्यो तक सभी प्राणी अपनी-अपनी जिन्दगी की लड़ाई मे उलझे हुए है।"

आखिर साँझ आई। पहाड़ की चोटियो पर अब भी धूप पड़ रही थी, हालाँकि हमारी घाटी पूरी तरह अँधेरे की जकड़ मे आ चुकी थी। डेरा छोडकर मै पास की एक पहाड़ी पर गया। चीडो में से होती हुई सूर्य की किरणे अब भी पश्चिम की एक पहाडी पर पड़ रही थी। थोडी देर में सूर्य छिप गया और यह दृश्य भी अँधेरे मे समा गया। अब मैं फिर से गाँव की ओर लौटा। उतरते हुए मैने अँधेरे जगलो में से, पास और दूर से, आती हुई भेड़ियो और लोमड़ियो की आवाज़ें सुनी। गाँव में चारो ओर अनेको

जगह आग जल रही थी और अनेको नंगी आकृतियाँ चमक रही थी। आस-पास पड़ने वाली उनकी लम्बी छाया देखकर लगता था, जैसे कुछ भूत घूम रहे हो।

एक जगह मैने कुछ युवको को इकट्ठे बैठकर तम्बाकू पीते देखा। ये लोग समाज में प्रिय समझे जाने वाले एक योद्धा के घर के आगे जमा थे। मै भी अपने मित्रो के साथ विदाई के समय की चिलम पीने के लिए बैठ गया। आज का दिन पहली अगस्त का था। इसी दिन मैने लारामी किले में शॉ से मिलने का वायदा किया था। किला यहाँ से कम-से-कम दो दिन की यात्रा की दूरी पर था। यह सोचकर कि मेरा मित्र कही मेरे लिए परेशान न हो उठे, मैंने पूरी तेजी के साथ आगे बढने का निश्चय किया। मैने 'तूफान' नाम के युवक को खोजा और उसे कुछ भेंटे दी। शर्त यह थी कि सुबह होते ही इन पर्वतों से होकर वह मुझे किले का रास्ता दिखाता चलेगा। वह मेरी बात को सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ और उसने मेरी भेंटें स्वीकार कर ली। हम दोनो कुछ अधिक न बोले। बात तय होने पर मै अपने पुराने डेरे मे आकर सो गया।

सुबह पौ फटने से बहुत पहले ही रेमंड ने मुझे कधा पकड़कर हिलाया और बताया कि तैयारी पूरी हो चुकी है। मै बाहर निकला। वह सुबह बहुत ठण्डी, सीली और अँधेरी थी। सारा गाँव नीद मे डूबा हुआ था। हमारे घर के सामने ही 'तूफान' घोडे पर बैठा था और उसके पास ही मेरी घोड़ी और रेमंड का खच्चर भी खड़े हुए थे। हमने काठियाँ कसी और अपने सफर की और तैयारियाँ पूरी की। अभी ये तैयारियाँ पूरी भी न हुई थीं कि गाँव मे हलचल शुरू हो गई। औरतो ने अपने डेरे उखाड़ने शुरू कर दिए और चलने की तैयारी करने लगी। प्रकाश की पहली किरणो के साथ ही हम वहाँ से विदा हुए और तब एक छोटे से दर्रे मे से निकलते हुए पूर्व की ओर बढे। यहाँ राह पाकर हम पीछे की ओर गाँव को देखने लगे। इस धुँधलके मे वह बहुत हल्का-हल्का दिखाई दे रहा था। वहाँ सभी लोग तैयारी मे जुटे हुए थे। बहुत आनन्द से मै, इन सबसे विदाई लेते हुए, अगली राह पर मुडा। अब हम चट्टानो और चीड़ के पेड़ो मे से होते हुए बढने लगे। रास्ता अँधेरा था और हम पूरी तरह देख नही पा रहे थे। सामने का इलाका टूटा-फूटा और जगल से भरा था। कही पहाड़ी, कही मैदान, कही खुला हुआ और कही घिरा

हुआ—इस प्रकार के रास्ते से हम बढते रहे। रास्ते में कभी-कभी ऊँचे पहाड़ बाधा बनकर आ जाते। सुबह जगल बहुत ही ठण्डे और ताजगी देने वाले लग रहे थे। पहाड घुँध से भरे हुए थे और उनके पास के पेडो मे हल्की-हल्की फुहारें छाई हुई थी। बहुत देर बाद हमे पहाड की सबसे ऊँची चोटी पर सूर्य की सुनहरी किरणें फैलती हुई दिखाई दी। उन्हें देखकर आगे बढते हुए 'तूफान' ने खुशी प्रगट की। इसी समय कोई एक बड़ा सा जानवर सामने से उछला और एक बारहसिंगा अपने बडे-बड़े काले सीगो के साथ हमारे सामने से तेज़ी से निकल कर पास के चीड़ो मे छिप गया। रेमंड अपनी काठी से उतर कर उसके पीछे दौड़ा, पर उसके गोली दागने से पहले ही शिकार दो-सौ गज से अधिक दूर जा चुका था। फिर भी उसका निशाना ठीक जगह पर लगा, हालाँकि उसमें जोर उतना नही रहा था। अब बारहसिंगा दाईं ओर मुड़कर पूरी तेजी के साथ सामने के पेड़ो मे से भागने लगा। मैंने भी गोली दागी, जो उसके कँधे पर लगी। अब भी वह लगडाता हुआ पास के खड्ड में भाग गया। यहाँ हमारे आदिवासी मित्र नें उसका पीछा करके उसे मार डाला। पास जाकर हमने देखा कि वह बारहसिंगा न होकर काली पूँछवाला हिरण था। ऐसा हिरण दूसरे हिरणो की बजाय दुगना बडा होता है। पूर्व के इलाको मे यह देखने मे नही आता। हमारी बन्दूको की आवाज़े आदि-वासियो तक भी पहुँच गईं। उनमे से बहुत से उसी जगह पर आ पहुँचे। हमने वह खाल 'तूफान' को ही दे दी और अपनी जरूरत के लायक मांस अपनी काठियो के पीछे लाद लिया। बाकी बचा-खुचा मास अपने आदिवासी साथियो के लिए छोडकर हम अपने सफर पर आगे बढ गए। इस बीच बाकी गाँव वाले अपनी चाल से बढते हुए बहुत दूर निकल गए थे। उन्हे पार करके आगे निकलना असम्भव था। इस लिए हमने ऐसा रास्ता चुना, जिससे हम उनके बिल्कुल नजदीक तक पहुँच सके। थोडी ही देर में हमे चीड़ो मे से दिखाई दिया कि वे सामने से ही गुज़र रहे थे। एक बार फिर हम उनसे जा मिले। अब वे एक तग दर्रे में से होकर गुजर रहे थे। इस बार वे सदा की अपेक्षा अधिक सट कर और इकट्ठे होकर बढ रहे थे। हम पहाड़ की पूर्वी ढलान पर थे। यहाँ हमें एक बहुत तंग घाटी मिली, जिसकी ढलान बहुत कठिन थी। सभी लोग इसमे एक साथ ही उतर पडे और चट्टानो भरे इस

रास्ते को उन्होंने ऐसे घेर लिया, जैसे कोई उमड़ती हुई पहाड़ी नदी बह रही हो। हमारे सामने के पहाड़ों पर आग लगी हुई थी, जो कि पिछले कई हफ्तों से इसी प्रकार जल रही थी। छाए हुए धुएँ के कारण सामने का नजारा दीख नही रहा था। दाँए-बाँए ऊँची-ऊँची चोटियाँ उठी हुई थी। उनपर चीड़ो के पेड लगे हुए थे। कुछ टूटी चोटियाँ भी कुछ दूरी पर, सामने, दिखाई दे रही थी, जैसे वे किसी परदे से ढकी हुई हो। यह सारा नजारा बहुत ही सुन्दर और महान् दिखाई दे रहा था। चलने वाले इन असंख्य असभ्य घुडसवार योद्धाओं, नंगे बच्चों और सजी-धजी लडकियो के कारण यह और भी सुहावना बन गया था। किसी चित्रकार के लिए यह बहुत ही अच्छा विषय बन जाता और शायद इसका वर्णन करने मे कोई बडा लेखक ही सफल हो पाता।

अब यहाँ से हमें एक जले हुए हिस्से पर से गुजरना पड़ा। घोड़ों के खुरो के नीचे की धरती गरम थी। पास के दोनो ओर के पहाड जल रहे थे। बहुत शीघ्र हम इससे अधिक अच्छी जगह में आ गए। यहाँ लगातार कई घाटियाँ, एक नदी के किनारे पर ही, मिली। इनके किनारे बहुत अच्छी और मधुर फलो की झाडियाँ उगी हुई थी। बच्चे और आदमी इन फलो को इकट्ठा करने के लिए टूट पडे। इससे भी नीचे जाकर ऊपर का नजारा बिल्कुल बदला नजर आया। जलते हुए पहाड़ पीछे छूट गए थे और सामने की खुली घाटियो मे से हमे मैदान एक समुद्र की भाँति फैला हुआ दिखाई देने लगा। धारा के किनारे के पेड़ो से निकलने के बाद समतल मैदानो मे आदिवासी फिर से कतार बाँधकर चलने लगे। मै प्यासा था, इसलिए मैने झुककर धारा में से पानी पिया। जब मैं फिर घोड़े पर चढा, तब भूल से मै अपनी बन्दूक वही घास पर ही छोड़ आया। कुछ और ही विचारो मे डूबा हुआ रहने के कारण मै उसे उठाना भूल गया। कुछ दूर निकल जाने के बाद मुझे इसका ध्यान आया। मै तुरन्त ही इसकी खोज मे लौटा। आदिवासियो में उनमें से एक के पास उसे देख भी लिया। पास जाकर माँगते ही इसने मुझे तुरन्त दे दी। उसका धन्यवाद करने के लिए मेरे पास कुछ और न था, इसलिए उस समय अपनी घोड़ी की काठी की रकाब ही मैने उसे भेंट मे दे दी। वह बहुत ही खुश हुआ। प्रसन्नता में उसने अपना पाँव मेरी ओर बढ़ा दिया, ताकि मै इसे

उसके पाँव में फँसा दूँ । मैंने ज्यो ही यह उसके पाँव में वाँधी, उसने तुरन्त घोड़े को एड़ लगाई जिससे घोड़ा उछला। वह हँसने लगा और पहले से भी अधिक तेजी से एड़ लगाने लगा। इस पर घोड़ा तीर की भाँति भाग निकला और औरतो और मनुष्यो की हँसी और खुशी की आवाज़ो के वीच वढ़ गया। लोगो ने मेरी भेंट की बहुत तारीफ की। उस आदिवासी के पास काठी के नाम पर केवल एक खाल और लगाम के नाम पर चमड़े की एक रस्सी ही थी। उसका घोड़ा कावू मे न रहकर पूरी तेजी से भाग निकला और थोड़ी ही देर मे वह सामने के टीले के पीछे जा छिपा। मै उस आदमी को फिर कभी न देख पाया। पर, मेरा विश्वास है कि उसे किसी प्रकार का कोई नुकसान न हुआ होगा। घोडे पर चढ़कर आदिवासी अपने को अविक सुरक्षित समझता है।

गाँव वालो ने उस दिन पहाड़ी तलहटी के पास के झुलसते मैदानो में ही डेरा डाला। इस समय गरमी बहुत, तेज़ और चुभने वाली थी। मकानो के परदो को ज़मीन से एक या डेढ़ फुट ऊँचा उठाकर खड़ा किया गया ताकि उनके नीचे से हवा आ-जा सके। रेनल ने अपनी पशु-फँसाने वालो जैसी हिरण की खाल की पोशाक उतार कर आदिवासियो की-सी पोशाक पहन ली। इस प्रकार सज-धज कर वह अपने मकान में भैंसे की खाल के गलीचे पर लेट गया। कभी वह गर्मी को कोसता और कभी चिलम का कश खीचता। हम दोनो को छोड़कर कुछ और भी आदिवासी मित्र और सम्बन्धी बैठे थे। एक छोटा-सा कुत्ता पकाकर परोसा जा रहा था। यह हमारी विदाई का भोज था। मीठी चीज़ के रूप मे पहाड़ों से इकट्ठी की गईं बेरियाँ भी इसके साथ साथ ही रख दी गई थी। रेनल ने अपने दरवाजे की ओर इशारा करते हुए कहा: "उधर यहाँ से लगभग पन्द्रह मील दूर उन चोटियों को देखो! इन मे से सबसे परे की सफेद चोटी को देखो! क्या तुमने इसे पहले भी देखा है?"

मैने उत्तर दिया, "मुझे लगता है कि आज से छ: या सात हफ्ते पहले हमने इसी पहाडी के नीचे, लारामी धारा के किनारे, डेरा डाला था।"

रेनल ने कहा, "हाँ, तुमने विल्कुल ठीक पहचान लिया।"

मैंने रेमंड से कहा, "जाओ, पशु ले आओ। हम आज रात वही डेरा डालेंगे और सुबह होते ही किले की ओर चल देंगे।"

जल्दी ही घोडी और खच्चर मकान के सामने आ गए। हमने काठियाँ कस ली। इसी समय अनेको आदिवासी भी वहाँ जमा हो गए। मेरी घोड़ी के गुणो की तारीफ सब जान चुके थे। कुछ आदिवासी बहुत अच्छे घोडो पर चढकर आए। उन्हे वे मुझे भेट मे देने के लिए लाए थे। मैने उनकी भेंट लेने से इन्कार कर दिया। उनकी भेट लेने का अर्थ होता, इस घोडी को उन जगली लोगो के हाथ में देना। हमने रेनल से विदाई ली, पर आदिवासियो से नही। आदिवासी लोग इन मौको पर बहुत-से उलटे-सीधे रिवाज पूरे करने लगते है। डेरा छोडकर हम मैदान पार करते हुए सीधा उस सफेद चोटी की ओर बढे। उस पर्वत की पीली-सी चोटियाँ धीरे-धीरे बादल की तरह उठने लगी। हमारे साथ ही एक आदिवासी भी था जिसका नाम मै भूल गया हूँ। उसके चेहरे का भद्दापन और मुँह का चौडापन अब भी मुझे पूरी तरह याद है। रास्ते मे हिरण बहुत अधिक थे, परन्तु हमने उनकी ओर ध्यान न दिया। हम सीधा ही अपने लक्ष्य की ओर, उजाड मैदानो और ऊसर पहाडियो में से होते हुए बढ़ते रहे। दोपहर बहुत बीत जाने के बाद, गरमी, प्यास और थकान से परेशान होकर, हमने एक बहुत आनन्ददायक नज़ारा देखा। हमे वे पेड़ और वे गहरी खाई दिखाई दे गई, जो लारामी धारा के साथ-साथ चल रही थी। इन पुराने और फैले हुए पेडो के बीच में से होते हुए हम धारा के पार पहुँच गए। धारा का तेज बहता हुआ पानी उथली जगहो पर खेलती और फडफडाती मछलियो से भरा हुआ था। दूसरे किनारे पर पहुँच कर हमारे घोडे पानी पीने को उत्सुक हो उठे। हम भी घुटनो के बल बैठकर पानी पीने आये। हम बहुत दूर न गए थे कि रास्ता परिचित लगने लगा। मैने रेमंड से कहा, "हम उद्देश्य के नजदीक ही पहुँच रहे है।"

वहाँ पर वह बडा पेड दिखाई दिया, जिसके नीचे हमने बहुत दिन डेरा डाला था। वे छोटी-छोटी सफेद चोटियाँ भी यहाँ थी, जो कि हमारे डेरे के बिल्कुल ऊपर ही थी। हमने वह छोटी-सी चरागाह भी देखी, जिसमें हमारे घोडे हफ्तों तक चरते रहे। थोडी दूर आगे चलकर हमने मैदानी कुत्तो का वह गाँव भी देखा, जहाँ मै घण्टो सुस्ताता हुआ उन अभागो का शिकार करता रहता था।

रेमड ने आकाश की ओर अपना चौडा चेहरा उठाते हुए कहा, "अब

वर्षा और आँधी आने ही वाली है।"

सचमुच ही चोटियाँ, मैदान, धारा और अमराइयाँ—सभी—बडी तेजी से अँधेरे की लपेट में आने लगी। काले-काले बादलो के समूह दक्षिण से उठकर छाने लगे और भयंकर रूप मे बिजली कडकने लगी। मैने धारा से नीचे की ओर एक घनी अमराई की ओर इशारा करते हुए रेमंड को कहा, "हम आज रात वहाँ होगे। तब हम दोनो उधर ही गये पर पीछे से आदिवासो ने हमे एकदम बुला लिया। जब हमने उससे इस बुलाने का कारण पूछा, तो उसने बताया कि दो योद्धाओ के भूत उन्ही पेडो पर रहते है और अगर हम वहाँ सोए तो वे चीख-चिल्लाकर रात भर हम पर पत्थर फेकेंगे। शायद सुबह होने से पहले ही वे हमारे घोड़ो को भी चुरा ले जायेंगे। उसे प्रसन्न करने की बात सोचकर, इस जगह को छोडकर हम 'चुगवाटर' की ओर बढ़ गए। इसके लिए हमें चाल तेज करनी पडी, क्योकि वर्षा की बड-बडी बूँदे गिरने लगी थी। हमें उस छोटी-सी धारा के मुहाने पर उगने वाला वही पुराना परिचित पेड दिखाई दिया। हम जमीन पर कूद पड़े और अपनी काठियाँ पटककर हमने अपने घोडो को खुला छोड़ दिया। अब अपना चाकू निकालकर हमने आसपास की झाडियो से टहनियाँ और शाखें काटी, ताकि वर्षा से अपना बचाव कर सकें। हमने बडे ऊँचे और पतले वृक्षो को झुकाकर उनकी छोटी-छोटी टहनियाँ काट ली और अपने लिए आराम देने वाला एक हल्का-सा शरण-घर बना लिया। परन्तु, हमारी यह मेहनत बेकार रही, क्योकि आँधी हम तक पूरी तरह पहुँची ही नही। हमसे आधा मील दूर पर बहुत तेज मूसलाधार वर्षा हो रही थी और बिजली तोपो के समान गरज रही थी। परन्तु सौभाग्य से हमारी ओर केवल कुछ बूँदे ही गिर कर रह गई। थोडी देर मे मौसम साफ हो गया और सूर्य फिर से चमकने लगा। अपने इस नये शरण-घर के नीचे लेटे हुए हम उस भोजन के बारे में चर्चा करने लगे, जो मुझे एक खूबसूरत स्त्री—'वेया वेस्थी'—ने दिया था। आदिवासी अपने साथ चिलम भी लाया था, और कुछ शोगसाशा भी उसके पास था। इसलिए लेटने से पहले कुछ देर साथ बैठकर हमने तम्बाकू पिया। इससे पहले हमारा वह आदिवासी मित्र पास-पडोस को ध्यानपूर्वक देख आया था कि कही कोई गड़बड न हो। उसने बताया कि वहाँ पर कुछ देर पहले ही आठ आदमी रुके

थे, इनमें बिसोनेत, पाल, रूज, रिचर्ड्सन और दूसरे चार आदमी थे। इन बाकी चारों के नाम वह नही बता पाया। बाद में यह बात बिल्कुल सही निकली। परन्तु उसने किस बुद्धि से यह सब इतना अधिक सही बताया, मैं आज तक भी पूरी तरह नही जान सका।

चारो ओर एकदम घना अँधेरा छाया हुआ था। जागकर मैंने रेमंड को पुकारा। आदिवासी हमसे पहले ही किले की ओर निकल गया था। उसके पीछे-पीछे चलते हुए हम भी कुछ देर तक अँधेरे में ही बढते रहे। जब आकाश पूरी तरह लाल-लाल उगते हुए सूर्य के प्रकाश से भर गया, तब तक हम किले से दस मील दूर ही रह गए थे। कुछ दूरी पर चलकर एक रेतीले टीले की चोटी से हम किले को एक काले धब्बे के रूप में देखने में सफल हो गए। यह धारा के किनारे ही चारों ओर के उजाड मैदान के बीच मे खडा हुआ था। मैंने अपना घोडा रोका और एक क्षण के लिए उधर देखता हुआ रुका रहा। मुझे ऐसा लगा, मानो इसे देखकर आराम मिलता हो। यह सभ्यता का केन्द्र था ही। हमें यहाँ पहुँचने मे देर न लगी। क्योकि बाकी हिस्से को हमने तेजी से पार कर लिया। अब भी लारामी धारा हमारे और किले की उन मित्रतापूर्ण दीवारो के बीच में थी। हम जहाँ किनारे पर पहुँचे, वही से हमने धारा पार की। हमने अपने पांव पीछे को उठा लिए मानो घोडे की पीठ पर ही हम घुटनों के बल झुक गए हो। इस प्रकार तेज धारा में से भी सूखे ही पार आ गए। हम जब दूसरे किनारे पर चढे, तो हमे किले के दरवाजे मे अनेक व्यक्ति खडे हुए दिखाई दिये। इनमे से तीन आदमी हम से मिलने के लिए कुछ आगे तक चले आये। मैंने उन्हें तुरन्त पहचान लिया। अपने सरल और शान्त चेहरे को लिए हेनरी और हँसता हुआ देस्लारियर इन लोगो के पीछे-पीछे आए। दोनो ओर से ही यह मिलन बहुत प्यार भरा रहा। मुझे तो यह मिलन पसन्द था ही, क्योकि असभ्यो के बीच से निकल कर मुझे अपने बहुत ही प्यारे और सभ्य साथियो से मिलना मिला। मेरे साथियो को भी मेरा मिलन उतना ही पसन्द आया। शॉ बहुत दिन से मेरे लिए बहुत अधिक चिन्तित हो उठा था।

बोर्दूं ने बहुत खुले दिल से मेरा स्वागत किया और रसोइये को पुकारा। यह नया ही नौकर आया था। इसे पोर्टपियेर् से व्यापारी गाडियों के साथ

भेजा गया था। वह कितना ही दावा, अपनी योग्यता के विषय मे, करता हो, पर उसके पास सामान उस योग्यता को सिद्ध करने लायक नही था। फिर भी उसने मेरे सामने बिस्कुट, कॉफी और सूअर के नमकीन मास का नाश्ता परोस दिया। बहुत दिनो बाद इस प्रकार बैंच और मेज़ पर बैठकर छुरी, कांटे, प्याले और तश्तरी आदि में खाने का यह आनन्द अपने जीवन में मुझे एक नया मोड़ लगने लगा। कॉफी बहुत ही स्वाद भरी लग रही थी। रोटी भी बिल्कुल ही नयी सी लग रही थी। पिछले तीन हफ्तो से मुझे लगातार मास ही खाने को मिल रहा था और वह भी अधिक समय बिना नमक के ही खाने को मिला था। भोजन भी अच्छा साथ पाकर और अधिक आनन्द देने लगता है। मेरे सामने ही शॉ बैठा था। वह खूब प्रसन्न था। किसी भी व्यक्ति को यदि अपने मित्र की कीमत पहचाननी हो, तो उसके लिए अच्छा है कि वह कुछ दिन आदिवासियो के साथ रह कर देख ले। अगर उसे वहाँ रहकर बहुत अधिक कठिनाइयाँ, एकान्त और मुसीबतें सहनी पडी हों, तब वह अपने मित्र के गुणो को और अधिक पहचान सकेगा।

शॉ पिछले दो-तीन सप्ताह किले में ही रहा था। मैंने उसे पुराने कमरो मे ही पड़े हुए पाया। यह वही कमरा था, जो यहाँ के स्वामी के बाहर जाने के कारण खाली था। एक कोने में बहुत अच्छी भैसों की खालें खड़ी थी। मैं इसी पर लेट गया। शॉ ने मुझे तीन पुस्तकें ला कर दी और बोला, "ये हैं तुम्हारे शेक्सपियर और बायरन, और यह है ओल्ड टैस्टामेंट। मेरी नज़र में इस मे, बाकी दोनो ही पुस्तको की अपेक्षा अधिक अच्छी कविता है।"

मैंने इन तीनो मे से सबसे रद्दी पुस्तक चुन ली और बाकी सारे दिन भर वही लेटे-लेटे उन विचारो पर सोचता रहा, जिन्हें हमे उस प्रतिभाशाली मनुष्य ने दिया था, जिसने हमे इस दुनिया के बनाने वाले पर विचार करने के लिए विवश किया।

— ० —

२० : एकान्त यात्रा

लारामी किले मे पहुँचने के दिन मै और शॉ गलीचो पर पडे आराम कर रहे थे। हेनरी भी काठियो और दूसरे सामान की देख-भाल में लगा हुआ था। पास ही दो-तीन आदिवासी चौकडी मार कर फर्श पर बैठे हुए हमारी तरफ एक-टक देख रहे थे। शॉ ने कहा, "यूँ तो मै यहाँ मजे में ही रहा, पर कमी एक बात की रही। वह यह कि यहाँ प्यार या पैसे के बदले भी अच्छा शोंगसाशा नही मिलता।"

मैंने उसे ब्लैकहिल्स से साथ लाया हुआ शोंगसाशा दिया।

वह बोला, "हेनरी अब जरा मुझे पैपिन का तम्बाखू काटने का तख्ता ला दो या फिर, यह उस सामने बैठे आदिवासी को दे दो। वह इसे काट कर ठीक से मिला देगा। हम लोगों की बजाय वे इसे अच्छा जानते है।"

उस आदिवासी ने बिना कुछ कहे तम्बाखू और इस छाल को काट कर मिला दिया और चिलम भर कर उसे सुलगा दिया। इसके बाद हम दोनों अपनी आगे की यात्रा तय करने लगे। इससे पहले शॉ ने मुझे किले में घटने वाली कुछ बातों से परिचित करवाया, जो मेरे पीछे घटी थी।

आज से एक हफ्ता पहले बहुत दूर के पहाडो से चार आदमी यहाँ आये थे। पहुँचने से कुछ ही पहले कुछ आदिवासियो के चंगुल में फँस गये थे। ये आदिवासी हमार मित्र स्मोक के ही दल के थे। ये लोग सदा अपने को गोरों का मित्र बताते थे। इसलिये चारों गोरे बिना सन्देह के ही उन से बाते करने लगे। उन्होने अचानक ही उनके घोडो की लगामें पकड ली और उन को उतरने पर मजबूर किया। इन्होने कहना न मान कर अपने घोडो को एड लगाई और तुरन्त ही उन की पहुँच से बाहर निकल आये। आगे बढ़ते हुए इन्होने उन्हें पीछे से चिल्लाते हुए सुना और बन्दूक चलने की कुछ आवाजे भी सुनी। इनमें से केवल रेडिक की लगाम की रस्सी ही एक गोली से कट पायी। बाकी किसी को कोई भी नुकसान न पहुँचा। इसके बाद इन लोगो ने इस प्रकार का कोई और खतरा न लेना चाहा। वे दक्षिण की ओर के पहाड़ो

की तलहटी से होकर वेंट के किले की ओर जाना चाहते थे। हम दोनों दलों के इरादे मिलते-जुलते थे, इसलिये उन्होंने हमारे साथ मिलने की इच्छा प्रकट की। मेरे ठीक समय पर न लौट पाने के कारण वे अधीर हो उठे और अपने पुराने खतरे को भूल कर अकेले ही उस किले की ओर चल पड़े। हमें वहीं मिलने का वायदा उन्होंने किया। वहाँ से हम लोगों ने बस्तियों की ओर साथ-साथ ही निकल जाना था। यह इलाका बहुत खतरनाक आदिवासी जातियों से भरा हुआ था।

वेंट के किले में पहुँचे पर हमें एक और भी दल के आ मिलने की उम्मीद थी। केण्टुकी का रहने वाला एक युवक—रमेल केलिफोर्निया के प्रवासी लोगों के साथ इन पहाड़ों तक आया था। उसने हमें बताया कि उसका मुख्य उद्देश्य किसी आदिवासी को मारना था। इस उद्देश्य में वह बाद में सफल तो हुआ, पर इस से उसने हमारे लिए, और उधर से गुजरने वाले दूसरे लोगों के लिए, खतरा पैदा कर दिया। पौनी जाति के जिस युवक को उसने मारा था, उसके सम्बन्धी बदले के लिए उतावले हो उठे थे। अपने साथियों से बिछुड कर वह कुछ दिन पहले, अपने कुछ और साथियों के साथ अरकन्सास की ओर निकल चला था। उसने हमारे लिए एक पत्र लिखा था कि वह भी हमारी प्रतीक्षा वेंट के किले में ही करेगा और वहाँ से हमारे साथ ही बस्तियों की ओर लौटेगा। जब वह उस किले में पहुँचा, तो वहाँ उसने तीस-चालीस आदमियों को घर लौटने के लिए उत्सुक पाया। उसने उन लोगों के साथ जाना अधिक अच्छा समझा। पहले के चारों गोरे भी उनके साथ ही मिल गये। इसलिए जब हम छ हफ्ते बाद उस किले में पहुँचे तो हमने स्वयं को अकेला ही पाया।

चार अगस्त के दिन दोपहर के तुरन्त बाद, हम लारामी किले से विदा लेकर चल पड़े। मैं और शॉ मैदान की ओर साथ-साथ बढ़ने लगे। पहले कुछ मीलों तक हमारे साथ कुछ और लोग भी थे। इन में ग्रौगे नाम का एक पशु फँसाने वाला और रुवैल नाम का फर कम्पनी का एक नौकर भी था। यह नौकर विसोनेत नाम के व्यापारी के पास जा रहा था। हम उस दोपहर कुल सात या आठ मील ही गये होंगे कि एक छोटी-सी धारा के किनारे आ पहुँचे। इसके किनारेपर जंगली शहतूतों के छोटे-छोटे पेड लगे हुए थे। इन पर फल पक चुके

थे। ये इतने घने थे कि इन मे से होकर बहता हुआ पानी साफ नहीं दिखाई दे रहा था। हमने यहीं डेरा डाला। तम्बू गाड़ने की मेहनत न करके हम ज़मीन पर ही अपनी काठियाँ डाल कर, और भैंसो की खालें बिछा कर, लेट गये और तम्बाकू पीने लगे। इसी बीच देस्लारियर खाना पकाने में जुट गया। रेमंड पास ही खडा होकर हमारे चरने वाले घोड़ो की निगरानी करने लगा। रुवैल रसोई के काम मे हाथ बँटा लेता था। उसने देस्लारियर को तुरन्त सहायता देनी शुरू की। रुवैल खुद को सब बातो का जानकार समझता था। इसलिए उसने तुरन्त ही सब ओर अपनी चतुरता दिखानी आरम्भ की। सेंटलुई मे वह किसी सर्कस मे घुडसवार रहा था। लारामी किले में भी उसने एक बार सिर के बल ही घोडे पर घूम कर दिखाया था, जिसे देखकर आदिवासी चक्कर में आ गये थे। किले मे वह मज़ाक के लिए भी मशहूर था। उस रात उसने सबसे अधिक हँसी-मजाक मे समय गुजारा। कभी वह देस्लारियर के पास झुक कर उसे कुछ समझाता और कभी वह हमारे पास बैठकर इधर-उधर के शिकारो की कहानियाँ सुनाता। या फिर कभी अपने स्वामी पैपिन की बातें सुनाने लगता। अन्त में उसने शेक्सपीयर की एक किताब पास से ही उठा ली और उसे पढकर यह बताने लगा कि वह भी पढा-लिखा है। वह सारे डेरे में उछलता फिरता और बन्दर की तरह चहकता रहता था। लगभग यह निश्चित ही था कि हर मिनट वह नया ही काम कर रहा होगा। उसका साथी औगे हमारे पास ही चुप बैठा, बिना कुछ बोले सामने बैठी बहुत ही भद्दी और छोटी सी, ऊटा जाति की एक स्त्री की ओर बड़ी ईर्ष्या से देख रहा था।

अगले दिन हम और आगे बढे। हमने 'गोशे होल' नाम के मैदान को पार किया। रात के समय बहुत देर तक हम खाइयो में ही उलझे रहे। पानी न पाकर हमें बहुत रात तक सफर करना पडा। अगली सुबह हमे पहाड़ियो की एक लम्बी कतार में से गुज़रना पडा। इनकी ढलानें देखने मे बहुत बुरी लग रही थी। जब हम इन पहाडियों के बीच से होकर चले तो रास्ते में किसी राक्षस के पाँव के समान ही निशान देखे थे। इसके तुरन्त बाद हमें एक उजाड मैदान मे से गुजरना पडा, जो सामने बहुत दूर तक छोटे-मोटे टीलो के साथ फैला हुआ दिखाई दे रहा था। हालाँकि इस समय धूप तेज़ थी, फिर भी चारो

ओर कुछ धुन्ध-सी छाई हुई थी। दूर की पहाड़ियाँ रेत की चमक के कारण कुछ अजीव-सी दिखाई दे रही थी। क्षितिज की सीमा हर क्षण बदलती हुई दिखाई दे रही थी। शॉ और मै आगे-आगे चल रहे थे। हेनरी हमसे भी कुछ आगे चल रहा था। वह एक दम रुका और एक ओर को मुडकर उसने हमें भी वुलाया। ऐसा वह तभी करता था जब वह अधिक उत्तेजना मे होता था। हम उस तक पहुँच गये। उसने हमें सामने के एक मैदानी टीले पर एक काला-सा निशान दिखाया। यह हम से मील भर दूर रहा होगा।

वह वोला, "शायद यह भालू है। आओ, हम इसका शिकार करे। भैसे की वजाय इससे लडने का कुछ मज़ा और ही है। यह वहुत ताकतवर होता है।"

अव हम साथ-साथ बढने लगे। हम कठिन लडाई के लिए तैयार थे। ये भालू वहुत भयंकर और खूँखार होते है। टीले ने उस काली चीज़ को हमारी नज़रो से छिपा लिया। कुछ ही देर बाद यह फिर दिखाई देने लगी। जव हमने इसकी ओर देखा तो हमारे अचरज का ठिकाना न रहा। यह दो हिस्सो में वँट गई थी। दोनो हिस्से तुरन्त ही पख फैला कर उड गये। हम ने घोडे रोके और हेनरी की ओर देखा। वह कुछ डरा हुआ और कुछ खुश-सा लग रहा था। आज उसकी आँख एक दम धोखा खा गई थी। उसने दो बडे मैदानी कौवो को पचास गज़ की दूरी से देख कर ही ऐसा सोचा था, जैसे मील-भर दूर पर कोई भालू खडा हो। फिर दोबारा उससे ऐसी गलती कभी नही हुई।

दोपहर वाद हम एक पहाड की तलहटी मे पहुँचे। इस पर चढते हुए रुवैल हम से तरह-तरह के सवाल घर वार के वारे मे पूछने लगा। शॉ उसे अपनी पत्नी और बच्चो के वारे में झूठ-मूठ की बातें वताता रहा और वह भोदू सुनता रहा। इस पहाडी की चोटी पर पहुँच कर हमने नीचे के मैदानो मे 'हौर्स क्रीक' नाम की धारा के मोड़ को देखा। कुछ ही दूरी पर हमे वाई ओर विसोनेत के तम्बू गड़े हुए दिखाई दिए। रुवैल का चेहरा एक दम उतर गया। हमने पूछा, 'वात क्या है?' उसने वताया कि व्यापारी ने उसे यहाँ से तम्वाकू लेने के लिए किले तक भेजा था, पर वह इस वात को कतई भूल गया था। उसका सौ मील का यह सफर विल्कुल वेकार हो गया था। हम

धारा पर आ गये और हमने इसे पार कर लिया। दूसरे किनारे पर एक अकेला आदिवासी किसी पेड के नीचे खडे घोडे पर बैठा हुआ था। वह कुछ भी बिना बोले हमारे आगे-आगे डेरे की ओर चलने लगा। बिसोनेत ने डेरे की जगह बहुत ही अच्छी चुनी थी। यह धारा और इसके किनारे के ऊँचे पेड़ उसे तीन ओर से घेरे हुए थे। यह जगह एक चरागाह के रूप में थी। यहाँ डाकोटा लोगो के चालीस घर भी थे। यहाँ से कुछ दूर 'शिएने' लोगो के कुछ घर और भी थे। बिसोनेत खुद भी आदिवासियो के ढग से रहता था। उसके डेरे पर पहुँच कर हमने देखा कि वह दरवाजे के पास ही बैठा था। उसके आसपास इस इलाके में न पाये जाने वाले बहुत से आराम के सामान थे। उसकी पत्नी उसके पास-ही बैठी हुई थी। उसके बच्चे छपे हुए सूती कपड़े पहने आस-पास घूम रहे थे। उसके पास-ही पाल दोरियो भी बैठा था। साथ ही एन्टोनी भी बैठा था। इनके इलावा एक पौनी, एक व्यापारी और कुछ दूसरे गोरे लोग बैठे थे।

बिसोनेत बोला, "अगर तुम यात्रा पर आगे बढने से पहले कुछ दिन मेरे साथ यहाँ बिता लो, तो अच्छा होगा। किसी भी प्रकार की हानि न पहुँचाने का विश्वास दिलाता हूँ।" हमने उसका निमत्रण स्वीकार कर लिया। और कुछ दूरी पर, एक ऊँची जगह पर, अपना तम्बू गाड़ दिया। बिसोनेत ने तभी हमे दावत के लिए बुलाया। यहाँ भी हमें उसके आदिवासी साथियो के हाथों वैसी ही बहुत-सी खातिर मिली। पाठकों को याद होगा जब मैं ब्लैक हिल्स से परे आदिवासियो के पहले गाँव से जाकर मिला था, तब उनमें से कुछ घर पीछे रह गये थे। बिसोनेत के डेरे में रहने वाले ये आदिवासी उन्ही कुछ परिवारो के थे। शाम के समय वे मुझ से अपने सम्बन्धियो और मित्रों के बारे मे पता करने आये। उन्हें बहुत दुःख हुआ, जब उन्हे यह पता चला कि वे लोग अपनी कमजोरी और सुस्ती के कारण इधर भूखो मर रहे है और उधर उनके वे सम्बन्धी अगले साल के लिए घरो और खाने-पीने के सामान से अपने को पूरी तरह भर चुके है। बिसोनेत के ये साथी बहुत समय से जगली शहतूतो पर पल रहे थे। इनकी औरतें इन्हें पीसकर धूप में सुखा लेती थी और बाद मे इन्हें ऐसे ही खा लिया जाता था अथवा किसी और चीज के साथ पका लिया जाता था।

अगले दिन डेरे मे किसी नये अतिथि के कारण कुछ घबराहट-सी छा गई। यह आदिवासी अकेला ही अपने परिवार के साथ, अरकंसास के इलाके से, आ रहा था। लोगो के घरो के पास से गुज़रते हुए यह बहुत ही शान के साथ निकला। उसने लोगों को बताया कि वह गोरे लोगो के लिए कोई खास खबर लेकर आया है। इसके तुरन्त बाद उसकी औरतो ने उसका डेरा गाड़ दिया। तब उसने छोटे बच्चे को भेज कर सब गोरे लोगो को, और खास-खास आदिवासियो को, दावत पर बुलाया। सब अतिथि इकट्ठे बैठ गये। घर बहुत अधिक घुटा हुआ और गर्म लग रहा था। स्टेबर नाम के इस आदिवासी ने राह में एक बूढे भैंसे को मारा था। आज इसी के मांस की दावत दी गई थी। इसके साथ कुछ जंगली शहतूत और चरबी उबाल कर अलग से रखे गये थे। भोजन सब को बाँटा गया। कुछ क्षण सब चुप रहे। तब सबने ही अपने बर्तन उलटा दिये, ताकि अपने मेज़बान का धन्यवाद किया जा सके। इसके बाद स्टेबर ने तख्ता सामने रख कर तम्बाकू तैयार किया और कुछ चिलमें सुलगा कर सब के बीच घुमाईं। इसके बाद वह अपनी जगह पर सीधा बैठ गया और बहुत अधिक हाव-भाव जता कर अपनी बात सुनाने लगा। मैं उसकी वह सारी बात नही बताऊँगा, जिसमें आदिवासियो की कहानी की तरह इधर-उधर की सैकडो बातें मिली हुई थी। उसकी बातो का सार यह था :—

वह इन दिनो अरकंसास मे ही था। वहाँ गोरे लोगो की कम-से-कम छ बहुत बडी-बडी सैनिक टुकडियाँ जमा थी। उसने कभी सोचा भी न था कि सारी दुनिया में कुल मिला कर भी इतने अधिक गोरे लोग रह रहे होगे। उन सबके पास बहुत बड़े घोडे, लम्बे चाकू और छोटी बदूकें थी। उनमे से कुछ ने लडाई की बहुत ही अच्छी पोशाकें पहनी थी। इससे हमें पता चला कि सैनिको और स्वयंसेवको के बहुत से दल उन पहाडियों से गुजरे थे। स्टेबर ने खुद बहुत बडे-बड़े गोरे लोगो के सफेद तम्बुओ को बैलो पर तने हुए देखा था। साफ़ था कि ये गाड़ियाँ थी, न कि तम्बू। इनमें सैनिकों की रसद जा रही थी। इसके कुछ ही देर बाद हमारे मेज़बान को एक आदिवासी मिला। उसने बताया कि एक दिन सभी मैक्सिको निवासी भैंसो के शिकार पर गये हुए थे। अमरीकन लोग खाइयों में छिप गये। जब मैक्सिको वाले लोगो के सारे बाण समाप्त हो गये, तब अमरीकनों ने गोलियाँ चलानी शुरू कर दी

और युद्ध का नारा बोलकर वे बाहर निकल आये। उन्होने सभी शत्रुओ को मार डाला। हमे इस बात से इतना ही पता लगा कि मैक्सिको और अमरीका में एक छोटी-सी लडाई छिड गई थी और उसमे अमरीका की जीत हुई थी। जब हम कुछ दिन बाद प्यूब्लो पहुँचे तो हमे पता चला कि अरकसास की ओर जनरल कीर्नी और मातामोरा की ओर जनरल टेलर गये थे।

उस शाम सूर्य छिपने के समय हमारे तम्बुओ के पास ही कुछ आदिवासी अपने घोडों की चाल परखने के लिए जमा हो गये। इनमे सभी प्रकार के लोग थे। कुछ कैलिफोर्निया के इलाके के थे। शेष मे से कुछ अमरीकी, कुछ पर्वतो के इलाके के, और कुछ मैदानो के जंगली कबीलों के लोग थे। उनमे सफेद, काले, लाल, सलेटी और सभी दूसरे रगो के लोग मिले-जुले थे। सब की नजरे बडी जगली और चौकी हुई थी। इस बात मे वे नगर-निवासी सभ्य लोगो से एक दम भिन्न थे। जो लोग अपनी तेजी और उत्साह के लिए प्रसिद्ध थे, उन्होने अपने घोडो की गर्दन और पूँछ मे चील के पंख अटकाए हुए थे। पाँच या सात डाकोटा लोग भी, ऊपर से नीचे तक सफेद पोशाक पहने हुए, वहाँ जमा थे। कुछ 'शिएने' लोग भी वहाँ जमा थे। उन्होने मैक्सिकोवासियों की भाँति पोशाके पहनी हुई थी। इन आदिवासियो के साथ ही, मिले-जुले कनाडावासी भी खडे थे, जो बिसोनेत के नौकर थे। ये लोग जंगलों में रहने और घर की बजाय डेरे डाल कर सोने मे अधिक आनन्द मानते थे। कठिनाइयो, खतरों और मुसीबतो के बीच ये लोग खुश रहते थे। इनकी खुशी कभी कम नही पडती और दुनियाँ मे इन से अधिक लापरवाह होकर जीना कोई और नही जानता था। इनके अलावा कुछ दोगले लोग भी इनके बीच मे थे। एन्टोनी इनमें से ही एक था। उसने ढीला-ढाला पाजामा और हलकी सूती कमीज पहनी हुई थी। उसने सिर पर रूमाल के साथ अपने काले बाल पीछे की ओर बाँधे हुए थे। उसकी छोटी-छोटी आँखें शरारत भरी और चमकती दिखाई देती थी। उसका घोडा हल्के पीले रग का था। वह उसकी चाल को भी दूसरे घोडो के साथ परखना चाहता था। इसलिए उसने अपनी काठी परे रख दी और उसकी जगह भैंसे की खाल लपेट कर उस पर सवार हो गया। मैदान खाली कर दिया गया और एक साथ ही वह और उसका आदिवासी साथी तेजी मे घोड़े दौडाने लगे। आदिवासी ढंग के अपने चाबुक

बरतते हुए वे तेजी से आँखो से ओझल हो गये। इसी समय एन्टोनी फिर से वापिस आया। वह जीत गया था और अपने घोड़े को थपथपा रहा था।

आधी रात के समय मैं कपडो मे लिपटा हुआ सो रहा था। इसी समय रेमड ने आकर मुझे जगाया। उसने बताया कि इस समय कुछ ऐसा नजारा सामने था, जिसे मैं देखना पसंद करूँगा। मैंने डेरें की तरफ निगाह डाली और देखा कि आग के चारो-ओर बहुत से आदिवासी जमा थे। उन सब के बीच मे से एक अजीब से गाने की आवाज आ रही थी। बीच-बीच मे चिल्लाने की आवाज़ भी आती थी। मैं भी कपडे पहन कर बाहर निकला और उस जगह तक गया। आदिवासियो का यह काला जमाव इतना घना था कि उस में से छन कर आने वाली आग की रोशनी भी अब दिखनी बन्द हो गई थी। मैं जब उनके बीच से बढ़ने लगा, तो उनके एक मुखिया ने बढ़कर मुझे समझाया कि इन मौको पर किसी भी गोरे को उनके बीच में नही जाना चाहिये। मैं दूसरी तरफ एक ऐसी जगह खडा हो गया, जहाँ से हर हरकत देखी जा सकती थी। यहाँ 'मज़बूत-दिल' नाम के वर्ग के लोग अपना नाच कर रहे थे। ये लोग युद्ध के प्रेमी होते हैं तथा 'डाकोटा' और 'शिएने' दोनो ही जातियो से मिल कर बनते है। इन समाज में केवल सबसे मज़बूत लोगों को ही शामिल किया जाता है। इनका सबसे बडा असूल यह है कि केवल वही आदमी प्रशंसा के लायक है, जो किसी काम को एक बार शुरू करने के बाद उससे मुडे नही। आदिवासियो के ऐसे समाजो की एक-एक प्रतिनिधि आत्मा होती है। इस वर्ग की प्रतिनिधि आत्मा 'लोमड़ी' मानी जाती थी। गोरे लोग कभी लोमड़ी को ऐसा महान् स्थान नही देंगे। पर आदिवासियो की आदतो से इसका मेल खा जाता है। ये नाचने वाले आग के चारो ओर चक्कर लगा रहे थे। उनकी शक्लें कभी चमक उठती और कभी छाया के कारण काली पड जाती। वे इस नाच में पूरी तरह लोमडी की हरकतो की नकल कर रहे थे। बीच-बीच में एक तेज हुंकार भी उठाई जाती। तब कुछ दूसरे युवक बीच मे उछल आते। उनके चेहरे आसमान की ओर उठे होते और वे पैर पटकते हुए अपने हथियारो को हवाई दुश्मनो पर चलाने लगते। लगता था, जैसे वे किसी शैतान के अवतार हो।

हम इस जगह दोपहर तक रुके। तब हम दोनों साथी और तीनों नौकर प्यूब्लो की ओर चल पडे। वह यहाँ से लगभग तीन सौ मील की दूरी पर था। हमें इस यात्रा मे पन्द्रह दिन लग जाने का अदाजा था। इस बीच हमें एक भी मनुष्य से मिलने की उम्मीद न थी। अगर कोई मिलता ही तो वह हमारा शत्रु होता। और, उसके लिए हमारे पास एक ही इलाज था—हमारी बंदूके।

पहले दो दिन तक कोई विशेष बात न घटी। तीसरे दिन सुबह एक बुरी घटना घटी। हम लोग मैदान के एक खड्ड में, चश्मे के किनारे, डेरा डाले पड़े थे। देस्लारियर पौ फटने से बहुत पहले ही जाग चुका था। नाश्ता तैयार करने से पहले उसने सभी घोड़े चरने के लिए खुले छोड दिये। चारों ओर जमीन कुहरे से ढकी हुई थी। जब हम लोग जागे, पशु दिखने बन्द हो गये थे। बहुत देर खोजने के बाद हम उनके निशान ढूँढ पाये और उनके जाने का रास्ता खोज पाये। वे सब लारामी किले की ओर ही एक विद्रोही बूढे खच्चर के पीछे-पीछे चल पडे थे। हालाँकि उन सबके पाँवो में रस्सियाँ बँधी थीं, तब भी हमारे पहुँचने से पहले वे तीन मील तक निकल गये थे।

दो या तीन दिन तक हम एक उजाड़ रेगिस्तान से गुजरते रहे। रास्ते में हरियाली के रूप में केवल घास के ही कुछ गुच्छे इधर-उधर धूप से उलझे हुए दिखाई दे जाते थे। यहाँ अनेक विचित्र जन्तुओं और सरकने वाले जानवरो की बहुतायत थी। बडी-बडी टिड्डियाँ और घास के कीड़े यहाँ बहुत अधिक और बडे-बडे मिल रहे थे। ये हमारे घोड़ो के पाँवो से कूदते रहते थे। घास में बहुत-सी छिपकलियाँ भी इधर-उधर, बिजली के समान तेजी से भागती फिर रही थी। इन में सब से अजीब जन्तु सींगो वाला मेंढक था। मैंने ऐसे एक मेंढक को पकड कर देस्लारियर को दे दिया। उसने उसको एक जूते में बन्द कर दिया। इसके लगभग एक महीने बाद जब मैंने उसे खोल कर देखा, तो वह अभी जिन्दा था। तब मैंने उसे भैंसे की खाल के एक पिंजरे में बन्द कर दिया और गाड़ी में लटका दिया। इस तरह वह बस्तियो तक ठीक तरह से पहुँच सका। वहाँ से एक सन्दूक में बन्द करके उसे हमने बोस्टन भेजा। यहाँ उसे एक शीशे के डिब्बे में रख दिया गया। वह कुछ महीनों तक अपने देखने वालों का जी ललचाता रहा और, तब सर्दियों के

दिनों में एक सुबह वह मरा हुआ पाया गया। अब वह एक म्यूज़ियम में एक बोतल में रखा हुआ है। वह भूखा रहने के कारण मरा था। छः महीने तक उसने कुछ भी न खाया था, हालाँकि उसके प्रशसक उसके सामने उम्दा चीज़ें रखा करते थे। यहाँ हम ने कुछ और किस्म के ही जन्तु देखे। चारो ओर मैदानी कुत्ते बहुत अधिक पाये जा रहे थे। स्थान-स्थान पर यह कठोर और शुष्क भूमि, उन कुत्तो की मांदो से खोदी हुई मिट्टी से मीलो दूर तक भरी नज़र आती थी। अपनी माँदो के किनारे तक आकर ये हमें देखकर भौंकने लगते। इनकी केवल नाक ही बाहर निकली हुई दिखाई देती। हमे देखने के तुरन्त बाद वे फिर अन्दर ही छिप जाते। इनमे से कुछ बहादुर कुत्ते बाहर निकल कर अपनी माँदो पर बैठे-बैठे भौंकते। उनकी हर चीख़ के साथ उनकी पूँछ भी उठ जाती। जब खतरा उनके पास तक आ जाता तो वे अपना मुँह फेर लेते और अपनी एड़ियाँ हवा मे उछालने लगते। तब तुरन्त, पलक झपकते ही, अपनी माँद में घुस जाते। शाम के समय अगर बारिश आने को होती, और अगर न भी आती तब भी, वे बाहर मैदान मे इकट्ठे हो जाते। हमने उन्हें इसी तरह किसी एक प्यारे कुत्ते के चारो ओर बैठे हुए देखा। वे सब तनकर बैठते और उनकी पूँछे ज़मीन पर फैली रहती। उनकी चख-चख और चिल्लाहट इस तरह से होती, मानो वे किसी एक साँझी बात पर विचार कर रहे हो। जिसके घर के पास ये सब इकट्ठे होते, वह सबसे ऊँचाई पर बैठता और अपने अतिथियो को देखता रहता। इस बीच कुछ कुत्ते आसपास भागते रहते, ताकि किसी आने वाले दुश्मन को पहचान सकें। इनके सबसे बड़े दुश्मन मैदानी साँप होते है। मेरे विचार में कुत्त अपनी ओर से यही सोचते है कि वे साँपो को चुपचाप अपने बिलो मे धूप सेंकने और इसी मैदान पर रहने देकर अपना एहसान उनपर करते है। ये साँप किसी भी दुश्मन को देखते ही बिल मे छिप जाते हैं। छोटे-छोटे उल्लू भी यहाँ रहते हैं और वे भी कुत्तो के आसपास ही अपनी जगह चुन लेते है। मैं नही समझ पाया कि उनका यह साथ किस तरह निभता है।

पाँचवें दिन बहुत दोपहर बाद हमने एक बहुत बड़ी धारा दूर से देखी। पर जब हम इस तक पहुँचे, तो हमारी निराशा का ठिकाना न रहा। यह रेत का एक बड़ा भारी फैलाव मात्र था। लगता था, कभी यहाँ बहने वाली

नदी बिल्कुल सूख गई थी। हम अलग-अलग होकर इसके साथ-साथ दोनों दिशाओ मे बढे। अब भी हमें कही पानी न मिला और न ही कोई गीली जगह दिखाई दी। बहुत बडे-बडे पेड किनारे पर अवश्य खड़े थे, पर वे भी मानो इस सूखे की शिकायत कर रहे थे। बिजली और तूफान ने उन्हें बहुत नुकसान पहुँचाया था। एक सबसे ऊँचे पेड़ की मुरझाई हुई शाखा पर लगभग आधा दर्जन कौवे बैठे हुए शोर कर रहे थे। मानो वे किसी अपशकुन की सूचना दे रहे हो। हमारे लिए चलने के सिवा और कोई चारा न था। सबसे नजदीक पानी हमे प्लाट नदी की दक्षिणी धारा मे ही मिल सकता था, जो यहाँ से दस मील दूर थी। हम आगे बढे, किन्तु उदास और निराश होकर। चारो ओर रेगिस्तान एक समुद्र की भाँति फैला हुआ था।

आकाश सुबह से ही हलके-हलके कुहरे और धुँध से घिरा हुआ था। अब पश्चिम की ओर बादल बहुत अधिक जमा होने शुरू हो गये थे और काफी ऊपर तक फैल गये थे। ये बादल ऊपर की ओर उठते हुए एक नुकीली चोटी-सी का रूप धारण कर गये थे। मैंने इसे कुछ देर बाद फिर देखा। यह पहले जैसी ही थी। थोडी देर बाद चारो ओर से धुँध और बादल उठने लगे और इधर-उधर फैल गये, परन्तु यह नुकीली चोटी बिना हिले-डुले वहाँ ही खडी रही। मैने समझा कि निश्चय ही यह किसी पहाड की चोटी होनी चाहिए। पर, मै कुछ निश्चय न कर सका, क्योकि यह बहुत अधिक ऊँची थी। बाद में पता चला कि यह रॉकी पर्वतमाला की एक बहुत ऊँची चोटी थी, जो 'लौग की चोटी' के नाम से प्रसिद्ध थी। बढते हुए अधकार ने इसे फिर हमारी आँखो से ओझल कर दिया। फिर हम इसे कभी दुबारा न देख सके। इसका कारण यह था कि अगले कुछ दिन तक इसी प्रकार की धुँध चारो ओर छाई रही।

देर बहुत हो गई थी। इसलिए हम अपने सीधे रास्ते से हटकर नदी के सबसे नजदीक किनारे पर आ गये। इस अँधेरे में रास्ता खोजना बहुत कठिन था। एक ओर रेमड चल रहा था और दूसरी ओर हेनरी। दोनो ने ही चिल्लाकर बताया कि सामने एक गहरी घाटी आ गई है। हम चारो ओर झाडियो और घिरते हुए अँधेरे में आगे बढे। यहाँ हमारे लिए एक भी कदम बढ़ना मुश्किल था। हम लगभग घिसटकर चलने लगे और कठिनता से इस

घाटी के पार हुए। यहाँ से आगे एकदम ढलान थी, जिस पर हमने यह बिना जाने ही कि वह कितनी गहरी है, उतरना शुरू कर दिया। अब सूखी टहनियों के टूटने की आवाजें आने लगी। हमारे सिर के ऊपर हमें कुछ बड़ी छायादार चीजें दिखाई देने लगीं और सामने की ओर हलका-सा चमकता हुआ पानी दिखाई देने लगा। रेमंड का घोड़ा एक पेड़ के साथ जा टकराया। हेनरी ने उतर कर जमीन टटोली और बताया कि यहाँ घोड़ों के लिए हरी घास काफी है। हम सब अपने घोड़ों को पहले पानी तक ले गये और तब, उनमें से दो-तीन बुरे घोड़ो को बाँधने के बाद, बाकी सबको चरने के लिए खुला छोडकर हम भी सोने के लिए वहीं लेट गये। सुबह हमने पाया कि हम प्लाट् नदी के दक्षिणी किनारे पर थे। यहाँ बहुतसी झाड़ियाँ और ऊँची घास उगी हुई थी। रात की बुरी यात्रा का बदला हमने बहुत भारी नाश्ता करके चुकाया और आगे के लिए चल पड़े। अभी कुछ ही कदम चले होंगे कि मैंने देखा शॉं ने अपनी बंदूक तानकर पास में किसी चीज पर निशाना दाग दिया। देस्लारियर भी नीचे कूद पड़ा और न दिखाई देने वाले शत्रु पर चाबुक फटकारता हुआ नाचने लगा। तब उसने झुककर अपने चाबुक से एक बहुत बड़े फनियर साँप को खींचकर बाहर निकाला। इसके फण शॉं की गोली ने बुरी तरह कुचल दिये थे। उसने इसे कुछ दूरी पर खड़े होकर लटकाया। इस साँप की पूँछ जमीन को छू रही थी। यह साँप लगभग बाँह जितना मोटा रहा होगा। इस समय से लेकर प्यूब्लो पहुँचने तक हमने ऐसे चार या पाँच साँप प्रायः हर रोज ही मारे होंगे। इस मामले में शॉं सबसे आगे बढ़ा हुआ था। वह जब भी किसी साँप को मारता उसकी पूँछ अपनी गोलियों के थैले में भर लेता। यह थैला कुछ ही दिन मे इन छोटी और बड़ी पूँछो से भर गया। हर बार देस्लारियर अपने चाबुक से साँपो को घसीटकर वैसी ही प्रशंसा पा लेता। एक बार उसने इसी प्रकार से डेढ़ हाथ लम्बे एक साँप को खींचकर निकाला, जिसकी पूँछ के अन्त में एक छोटी-सी कुण्डली थी।

हमने प्लाट् नदी का यह दक्षिणी मोड़ पार किया। इसके परले किनारे पर हमें अरापाहो लोगों के एक बहुत बड़े डेरे के निशान मिले। यहाँ लगभग तीन सौ घरो के चूल्हो की बुझी हुई राख दिखाई दी। इस जगह को छोड़कर वे कुछ महीने पहले ही चले गये थे। लगता है कि यहाँ वे बहुत दिन टिककर

रहे थे। कुछ मील और आगे चलकर हमे आदिवासियो के हाल के निशान मिले। एक ऐसी भी पैड मिली, जो दो या तीन घरो के इधर से दो दिन पहले ही गुजरने की बात बताती थी। हमने एक जूते के विशेष निशान देखे, जिसकी एडी मे एक खास जोड लगा हुआ था। इन निशानो ने हमारे दिल में घबराहट भर दी। इन लोगों की संख्या हमारे समान ही थी। दोपहर के समय हमने एक बड़े भारी किले की दीवारो की छाया में आराम किया। यह किला आज से कुछ साल पहले बनाया गया था। यह बिलकुल एकांत में था। बहुत समय से अब इसका उपयोग नही हो रहा था। यह गिरने भी लगा था। बिना पकाई ईंटों की दीवारें नीचे से ऊपर तक चिर गई थी। हमारे घोडे इसके दरवाज़े से ही डरकर लौट आए। इसके किवाड़ टूट-फूट गये थे। अन्दर के घेरे में जंगली घासें उग आई थी। कभी अन्दर बने हुए कमरों मे बहुत से व्यापारी, कनाडा-निवासी, आदिवासी-औरतें और सेवक रहा करते थे। अब ये सब कमरे भी खाली पडे थे। यहाँ से लगभग बारह मील परे एक और उजाड़ किले के दर्शन हमें हुए। हमने रात को इसके पास डेरा डाला।

अगली सुबह बहुत सवेरे ही हमे एक और बात पता चली। हम अरापाहो की अभी हाल में छोड़ी गई एक बस्ती के पास से गुजरे। यह लगभग पचास घरों की बस्ती थी और इसकी आगें अब भी पूरी तरह बुझी नही थी। यह साफ था कि वे लोग अभी हमसे दो घण्टे पहले ही यहाँ से गये होंगे। उनका रास्ता हमारे रास्ते को एकदम काटकर हमारे बाईं ओर कुछ दूरी पर स्थित, पहाड़ो की ओर निकल गया था। उनमें औरते और बच्चे भी थे। इसलिए उनसे मुकाबले का खतरा और भी कम रह गया था। हेनरी ने बहुत गम्भीरता से उनके डेरे और रास्ते के चिह्नो को देखा। मैंने पूछा, "अगर हम उन्हें मिल जाते ?"

वह बोला, "क्यों ? हम उनसे हाथ मिलाकर दोस्ती कर लेते और उन्हे अपनी तमाम चीज़ें दे देते। इस तरह वे हमे शायद न मारते। शायद, वे हमें लूटते भी नही। शायद, हम उनके आने से पहले ही घाटी में छिप जाते या नदी के किनारे छिपकर उनसे लडने की तैयारी करते।"

दोपहर के समय हम 'चैरी' नाम की नदी के किनारे पहुँचे। यहाँ बहुत

से जंगली फल, अलूचे, बेरियाँ और ककरौंदे आदि लगे हुए थे। यह नदी भी औरों की भाँति लगभग सूखी हुई थी। हमें अपने घोड़ों और खुद के लिए गड्ढे खोदकर पानी निकालना पड़ा। दो दिन तक हम इस धारा के किनारे किनारे बढ़ते रहे। तब इसे पार कर हम उन ऊँची चोटियों के पार जाने लगे, जो प्लाट् नदी को अरकं सास से अलग करती है। यहाँ नज़ारा बिलकुल ही बदल गया था। अब जले हुए मैदानों की बजाय हमें घाटियों और पहाड़ों में में गुज़रना पड़ रहा था जहाँ बहुत सी झाड़ियाँ और चीड़ के पेड़ उगे हुए थे। हमने इस एकांत इलाके मे ही सोलह अगस्त की रात बिताई। इस समय तेज़ तूफ़ान आने वाला था। सूरज बड़े-बड़े बादलो में खून के से लाल रंग का बनकर छिप गया। इन सब बातो के बाद भी हमने अपना तम्बू ठीक से नहीं गाड़ा और बहुत थके होने के कारण ज़मीन पर, बिना छत के ही, सो गये। आधी रात के समय आँधी आई। तब हमने अँधेरे और घबराहट में अपना तम्बू खड़ा किया। सुबह मौसम फिर से साफ हो गया। बर्फ से ढकी हुई एक चोटी सामने बहुत दूरी पर दिखाई देने लगी थी।

अब हमें चीड के पेडो के एक भारी और लम्बे रास्ते से होकर गुज़रना पड़ा। यहाँ शाखाओ में से बहुत बड़ी काली गिलहरियाँ उछल रही थी। इस जंगल के परले पार से हमने फिर से मैदान की ओर निगाह डाली। हमें लगा जैसे वह एक लम्बे-चौड़े तसले के रूप में बदल गया हो। हमसे एक मील की दूरी पर सामने कोई एक काला-सा धब्बा घूमता हुआ दिखाई दे रहा था। निश्चय ही यह भैंसा रहा होगा। हेनरी ने अपनी राइफल सम्भाली और सामने की ओर भाग निकला। भैंसे के बाईं ओर एक छोटा-सा चट्टानी किला था। हेनरी इसके पीछे से छिपकर बढ़ने लगा। तभी हमने गोली छूटने की हल्की-सी आवाज़ सुनी। एक भैंसा बहुत अधिक घायल हालत में हम से तीन सौ गज़ की दूरी पर एक गोल चक्कर के रूप में घूमता भाग रहा था। मैं और शॉ आगे बढ गये और हमने पास जाकर उसकी बगलों में पिस्तौलें दाग दी। इस पर भी वह एक दो बार तेज़ी से दौड़ा। पर, तब वह बिल्कुल गिर पडा। उसने क्षण भर अपने शत्रुओ की ओर क्रोध भरी आँखों से देखा और तब एक ओर मुडकर ठंडा पड़ गया। पतला और गठीला होकर भी वह किसी भी बड़े और भारी भैंसे की बजाय अधिक भारी था। उसके मुँह और

नथुनो से खून और झाग बह रहे थे। वह अन्तिम साँसे लेता अपने पाँव धरती पर पटक रहा था। उसके दोनो पासे बहुत भारी साँस से बोझिल होकर उठ गिर रहे थे। उसकी आँखो की चमक एकदम मन्द पड गई और वह मुर्दा बनकर पड गया। हेनरी उस पर झुका और अपने चाकू से उसका मांस काटकर उसने बताया कि उसका मास खाने के लायक नही है। इस प्रकार अपने सामान में और कुछ जोडने मे हम असफल रहे। इसपर निराशा होनी स्वाभाविक थी। इसे यही छोडकर हम आगे बढे।

दोपहर बाद हमने अपने दाईं ओर पहाड़ो को बहुत ऊँचा उठते देखा। पहाडो की तलहटी की ओर अपने चाबुक का इशारा करते हुए देस्लारियर एकदम चीख उठा, "आदिवासी ! आदिवासी !" डरे हुए चेहरे से वह उधर ही देख रहा था। हमने देखा पहाडो की तलहटी में कुछ काले निशान से इधर-उधर घूमते नजर आ रहे थे, मानो घुडसवार हो। मै, शॉ और हेनरी कुछ दूर तक पता लगाने के लिए निकल गये। पास जाकर हमने देखा कि जिन्हे हमने आदिवासी समझा था, वे आदमी न होकर, चीड के पेडो की चोटियाँ बहुत दूर से ऊपर उठी हुई ऐसी ही लगती थी, जैसे कुछ घुड़सवार घूम रहे हो।

हमने खाई और खड्डो मे ही डेरा डाला। उन मे से होकर एक नाला बह रहा था। सूर्य उगने से पहले ही सामने की बर्फ से ढकी चोटियाँ लाल हो उठी। हम जब आगे बढे तो सामने का नजारा बहुत ही सुन्दर हो उठा था। हमारी दाईं ओर सात-आठ मील दूर, बहुत सी चोटियाँ ऊँची उठी हुई थी, मानो वे धरती फाडकर आकाश की ओर अचानक ही चल पडी हो। उनकी चोटी और तलहटी के बीच मे बहुत-से बादल समाए हुए थे और हवाओ के कारण इधर-उधर दौड रहे थे। कुछ समय के लिए कोई भी ऊँची चोटी इनसे ढक जाती। इस बादल के हटते ही हमे पर्वत के भयंकर जंगल, बडी-बडी चट्टाने, बर्फ से लदी जगहे, खाइयाँ और काले खड्ड, अचानक ही, सामने दीख जाते और बादल के आने पर फिर से ढक जाते।

एक दिन बाद हमने कुछ दूर के इन पहाड़ो का रास्ता पार कर लिया। इसी समय इन पर एक बादल उतरा और एक गूँज चारो ओर फैल गई। थोड़ी देर मे चारो ओर अँधेरा छा गया और मूसलाधार बारिश होने लगी।

हम लोग एक पुराने पेड़ के नीचे छिप गये और इस बवंडर के गुजर जाने की प्रतीक्षा करने लगे।

जिधर से बादल इकट्ठे हुए थे, उधर से ही वे हटने भी लगे। थोड़ी ही देर मे सारे पहाड़ धूप में नहाने लगे। लगता था जैसे इस जंगल मे पूर्व के देशो का प्यार सच्चा रूप धारण करके जग पडा हो। थोड़ी देर बाद सारा आसमान नेपल्स के नीले आकाश की तरह या काप्री की सुनहरी चोटियो को नहलाने वाले सागर के समान नीला हो उठा। बाई ओर का आकाश अब भी स्याही के समान काला था। पर, दोनो ओर इन्द्रधनुष भी निकले हुए थे, हालाँकि बादल और बिजली अब भी अपना खेल दिखा रहे थे।

उस साँझ और अगली सुबह हम 'उबलते सोते' नाम की धारा के पास से ही गुजरते रहे। इसका यह नाम उन उबलते हुए सोतो के कारण पडा है, जिनका पानी इसमें आता है। जब हम दोपहर को रुके, तब हम से प्यूब्लो कुल सात-आठ मील की दूरी पर रह गया था। आगे चलते हुए हमने फिर देखा कि किसी घुड़सवार के ताज़ा निशान बता रहे थे, कोई हमे देखने आया था। उसने हमारा आधा चक्कर काटा और फिर पूरी तेज़ी से किले की ओर लौट गया। वह हमसे इतना अधिक क्यो सकुचाया? हम नही पहचान पाये! एक घंटे बाद हम उस पहाड़ी के किनारे पहुँच गये, जहाँ से हमे सामने का दृश्य लुभाने लगा। यहाँ अरकंसास नदी नीचे की घाटी मे पेड़ो और अमराइयो मे से होती हुई बह रही थी। उसके दोनो ओर मक्का के खेत और हरी चरागाहें फैली हुई दिखाई दे रही थी। इन पर पशु चर रहे थे। सामने ही यहाँ के किले की, मिट्टी से बनी, दीवारें उठी हुई थी।

— o —

२१ : प्यूब्लो और बेंट का किला

हम प्यूब्लो के बड़े दरवाज़े पर पहुँचे। यह बहुत ही पुराने तरीके का बना हुआ एक रद्दी किस्म का किला था। सच यह है कि यह किला न होकर एक चौकोना घेरा था, जो मिट्टी की दीवारो से घिरा हुआ था। यह दीवारें जगह-जगह टूटी और गिरी हुई थी। इसके चारों ओर के छोटे-छोटे बुर्ज भी टूट चुके थे। लकडी का बना दरवाज़ा चौखटों से इतना ढीला जड़ा हुआ था कि इसके खींचने या बन्द करने मे इसके गिरने का ख़तरा रहता था। दो या तीन मैक्सिकोवासी, अपने चौड़े टोपो और बढे हुए बालो वाले चेहरे को लिए, इसके सामने ही नदी के किनारे आराम कर रहे थे। हमें पहुँचता हुआ देखकर वे वहाँ से गायब हो गए। जब हम दरवाज़े तक पहुँचे तो एक छोटे कद का चुस्त आदमी हमसे बाहर मिलने आया। यह हमारा पुराना मित्र रिचर्ड ही था। यह, लारामी किले से ताओस व्यापार करने आया था, परन्तु जब वह इस किले पर पहुँचा तो उसे लगा कि अगला युद्ध उसे आगे बढने नही देगा। इसलिए उसने यहाँ तब तक रुकने का निश्चय किया, जब तक सारा देश पूरी तरह जीत न लिया जाए। उसने हमें उस जगह के लायक पूरा सम्मान देने का निश्चय किया था। हमसे अच्छी तरह हाथ मिलाकर वह हमे अन्दर ले गया।

यहाँ हमने सान्ताफे की ओर जाने वाली बडी भारी व्यापारी गाड़ियों को एक साथ खड़े पाया। कुछ आदिवासी, स्पेनी औरतें और मैक्सिकोवासी यही पर सुस्ताते हुए घूम रहे थे। वे इस जगह के अनुरूप ही, दीन-हीन बने हुए थे। रिचर्ड हमें किले के सरकारी हिस्से में ले गया। यहाँ एक छोटा-सा मिट्टी से बना हुआ कमरा था। अन्दर से सफाई बहुत अच्छी थी। इसमें एक तरफ क्रास का निशान टँगा था। इसके साथ ही एक शीशा और कुमारी माता की तस्वीर भी टँगी थी। इन सबके साथ ही एक जंग खाई हुई बड़ी पिस्तौल भी टँगी थी। यहाँ कुर्सियाँ तो नही पड़ी थी, पर उनकी जगह बहुत सी पेटियाँ इधर-उधर रक्खी थी। इससे परे एक और कमरा था, जो

कुछ कम सजा हुआ था। यहाँ तीन या चार स्पेनी लडकियाँ केक पका रही थी। इनमे से एक बहुत खूबसूरत थी। उन्होंने ज़मीन पर एक मेज़-पोश सा बिछा दिया। तब उन्होने बहुत ही अच्छा खाना हमारे सामने रक्खा। चारो ओर कुछ भैंसो की खालें तकियो के रूप मे रख दी गई, ताकि आने वाले मेहमान बैठ सकें। हमारे अलावा दो या तीन अमरीकन भी वहाँ ठहरे हुए थे। हम लोग आस-पास बैठकर समाचार पूछने लगे। रिचर्ड ने बताया कि दो-तीन सप्ताह पहले जनरल कीर्नी की सेना सान्ताफे की ओर हमला करने के लिए बैंट के किले से गई है। उसने यह भी बताया कि उसने अन्तिम समाचार यह सुना है कि वे सेनाएँ उस शहर की बाहरी सीमाओं तक पहुँच चुकी है। एक अमरीकन ने हमारे सामने एक अखबार रक्खा, जिसमें 'पॉलो आल्तो' और 'रेसाका देला पालूमा' की लडाइयो का विवरण दे रखा था। हम इन बातो पर बहस कर रहे थे कि दरवाज़े मे हमें एक ऊँचे कद के आदमी की छाया पड़ती दिखाई दी, जो जेबो मे अपने हाथ डाले, घुसने से पहले कमरे का अन्दाज़ा ले रहा था। उसने खड्डी के बुने कपड़े के भूरे रंग का पाजामा पहना हुआ था। यह उसके पाँव की लम्बाई से बहुत छोटा था। उसकी कमर-पेटी से पिस्तौल और खुखरी लटक रही थी। उसका सिर और एक आँख पट्टी से ढकी हुई थी। पूरी तरह चारो ओर निगाह डालकर वह झुकता हुआ अन्दर आया और एक पेटी पर बैठ गया। उसके बाद आठ या दस आदमी, उसकी तरह ही, उसके पीछे-पीछे आए और बहुत ढीले-ढाले तरीके से चारो ओर पेटियो पर बैठ गए और हमें घूरने लगे। हमें तुरन्त ही औरेगन के प्रवासियो की याद ताज़ा हो आई। पर इनकी आँखों में कुछ चमक भी थी और होठ कुछ दबे हुए थे। इससे साफ था कि ये लोग उनसे अलग किसी और जाति के हैं। उन्होने तुरन्त ही हमसे सवाल पूछने शुरू कर दिए। वे हमारे आने के स्थान, उद्देश्य और लक्ष्य-स्थान आदि को जानना चाहते थे।

जिस आदमी की आँख पर पट्टी बँधी थी, उसके साथ कुछ ही दिन पहले एक बहुत बुरी दुर्घटना हुई थी। वह नदी तक पानी लेने जा रहा था। रास्ते में उसे छोटी-छोटी झाड़ियो को हटा कर आगे बढ़ना पड़ा। इसी समय उसे अचानक ही एक रीछ का सामना करना पड गया, जो अभी-अभी एक भैंसे को मार चुका था। उस समय वह आराम से लेटा हुआ था। भालू अपनी

पिछली टाँगों के बल पर उठ खड़ा हुआ। उसने अचानक बाधा डालने वाले को ऐसी बुरी चोट पहुँचाई कि उसका पंजा इसके सारे माथे को नोच गया। बहुत कठिनता से इसकी एक आँख बच गई। सौभाग्य से उस समय भालू अपने भरपेट भोजन के कारण तृप्त था और वह बिगड़ा हुआ नहीं था। इस आदमी के पीछे आने वाले साथियो ने तुरन्त ही शोर मचा दिया और भालू भाग गया।

ये लोग मोर्मन लोगो के एक दल के ही थे। ये और प्रवासियो से घबरा कर कुछ देर के लिए पीछे ही रुक गए थे, ताकि प्रवासी आगे निकल जाएँ। इसी कारण ये लोग लारामी किले में उस समय तक न पहुँच सके, जब तक कैलिफोर्निया की ओर जाना सम्भव हो सकता था। वे बहुत देर से पहुँचे। इस लिए जब इन्होंने यह सुना कि अरकंसास के इलाके में अच्छी जमीन मिल सकती है, तो ये लोग रिचर्ड के साथ इधर चले आए और इस किले से आधा मील दूर ही रहकर सर्दियाँ बिताने का इरादा कर चुके थे।

सूर्य छिपने के समय हमने रिचर्ड से विदाई ली। दरवाज़े से निकल कर हमने अरकसास की छोटी सी घाटी की ओर देखा। हमारी आँखों के लिए यह सुन्दर नजारा और भी सुन्दर हो उठा, क्योंकि बहुत दिनो से ये आँखें रेतीले और उजाड इलाके देखने की आदी हो चुकी थी। यहाँ बहुत ऊँचे-ऊँचे पेड़ नदी के दोनो किनारो पर उगे हुए थे। दोनो ओर बहुत बडी हरियाली भरी चरागाहे फैली हुई थी। धूप से रगे हुए हरे टीले इस घाटी में जगह-जगह छाए हुए थे। पशुओ को लेकर एक मैक्सिकोवासी घुडसवार किले के दरवाज़े की ओर आ रहा था। कुछ दूरी पर हमारा सफेद तम्बू बहुत ही सुहावना लग रहा था। इसे हमारे आदिवासियो ने चरागाह में एक पेड़ के नीचे गाडा था। जब हम वहाँ पहुँचे तो हमने देखा कि रिचर्ड ने एक मैक्सिको-वासी को हरा मक्का और सब्जियाँ देकर हमारे लिए भेजा है और हमें चारों ओर के खेतों में से अपनी मनपसद का माल चुन लेने का निमन्त्रण भी दिया है।

यहाँ के निवासी हम से भी ज्यादा किन्ही और ग्राहकों से प्रतिदिन घबराते रहते थे। हर साल जब उनकी मक्का पकनी शुरू होती, तो अरापाहो जाति के हज़ारों लोग इस किले के आस-पास आ जाते। मुट्ठी भर गोरे

आदमी इन असभ्य और जंगली लोगो के हाथ में पड़ जाते। इससे बचने के लिए उन्होंने एक रास्ता ढूँढ निकाला। बहुत उदारता के साथ उन्होने इन लोगों से हाथ मिलाकर मित्रता जताई और उन्हें बताया कि अगर वे चाहे तो सारी फसल उन्ही की हो जायगी। अरापाहो लोगो ने उनका कहना मानकर उनकी सहायता करनी शुरू की और बहुत उदारतापूर्वक फसलें बटोरने में उन्हें मदद देने लगे। साथ ही वे अपने घोड़े खेतो में छोड देते। आदिवासी लोग एक बात को अच्छी तरह समझते थे। वे खेतो में काफी सारा अनाज छोड देते थे, ताकि अगले साल खेती करने के लिए गोरे लोगों का लोभ बना रहे और वे स्वयं भी अगले साल फिर से इस अनाज का आनन्द उठा सकें।

ससार के इस कोने मे मनुष्य जाति तीन हिस्सो में बँटी हुई है : गोरे, आदिवासी और मैक्सिकोवासी। इनमे से मैक्सिकोवासियो को 'गोरा' नही कहा जाता।

वह साँझ गरम होने पर भी अगली सुबह बहुत ही खराब और भयंकर निकली। सारी सुबह लगातार वर्षा होती रही। बादल पेडो तक झुक आए थे। हम नदी पार करके मोर्मन लोगो के खेतो की ओर निकल गए। जब हम धारा पार कर रहे थे, तभी दूसरी ओर से कुछ पशु फँसाने वाले, घोडों पर चढे हुए, नदी मे उतरे। उनकी हिरण की खाल से बनी कमीजें बारिश से भीगी हुई थी और उनके अगो से बुरी तरह चिपटी हुई थी। उनके चेहरो से, बन्दूको के कोनों से और घोडे की काठी के पीछे बँधे हुए जालो से बुरी तरह पानी चू रहा था। उनकी और उनके घोडो की शक्लें बहुत दु.खो और कष्टो से भरी हुई लग रही थी। उन्हे देखकर हमें हँसी आ गई। हम भूल गए कि कई बार हमारी हालत इससे भी अधिक बुरी रही थी।

लगभग आधा घटा सवारी करने के बाद हमने पेडो के पास रुकी हुई मोर्मन लोगो की सफेद गाडियो को देखा। उनके कुल्हाडे काम में लगे हुए थे। जब हम पास आए तो उन लोगो ने अपना काम छोड़ दिया और हमारे चारो ओर पेडो के तनो पर ही बैठ गए। उन्होंने तुरन्त ही परमात्मा और धर्म के विषय में विचार करना शुरू कर दिया। उन्हे इस बात की शिकायत थी कि सभ्य कहलाने वाले बहुत से लोगो ने उनसे बुरा व्यवहार किया था। उन्हें नवाहो के

अपने मन्दिर के नष्ट किए जाने का भी बड़ा अफसोस था। उनके साथ घंटा भर रहकर हम फिर अपने खेमों में लौट आए। हमें इस बात की प्रसन्नता थी कि बस्तियो से ऐसे धर्मान्ध लोग निकल आए है।

अगली सुबह हम बेंट के किले की ओर निकल पड़े। रेमंड का व्यवहार पिछले कुछ दिनो से अच्छा नही रहा था। इसलिए हमने प्यूब्लो पहुँचते ही उसे छुट्टी दे दी थी। अब हमारा दल कुल मिलाकर चार आदमियों का रह गया था। हमें अपना अगला रास्ता भी पूरी तरह पता नहीं था। बेंट के किले और बस्तियों के बीच में लगभग छह सौ मील का अन्तर है। यह रास्ता इन दिनों सबसे अधिक खतरनाक था, क्योंकि जनरल कीर्नी की सेना के गुज़रने के बाद से खूँखार और भयानक आदिवासियो के बहुत से दल इन इलाकों के कुछ हिस्सों मे जमा हो गए थे। वे इतनी अधिक सख्या में इकट्ठे हो गए कि कोई बड़े-से-बडा दल भी उधर से गुज़रे तो उनकी निर्दयता और दुश्मनी का इनाम बिना पाए वह आगे नही बढ सकता था। इस समय के अख़बार इस हालत का पूरा अन्दाज़ा देते है। अनेक आदमी मारे गए और घोड़े तथा खच्चर बहुत बड़ी संख्या मे छीन लिए गए। अभी कुछ ही दिन पहले मुझे एक नवयुवक मिला, जो सर्दियो मे सान्ताफे से बेट के किले की ओर आया था। वहाँ उसने लगभग सत्तर आदमियो का एक दल देखा। वे लोग अकेले बस्तियों की ओर लौटने को तैयार न थे, बल्कि किन्ही और लोगो के आ मिलने का इन्तज़ार कर रहे थे। यह कायरता उनकी मूर्खता की ही सूचना देती है, पर इससे यह भी पता चल जाता है कि उस समय देश में कितनी अधिक बेचैनी और खतरे से डर की भावना छाई हुई थी। जब हम अगस्त के महीने में वहाँ पर थे, तब खतरा इतना अधिक नही बढ़ा था। पास-पडोस मे कोई इतनी ध्यान बँटाने वाला चीज़ थी भी नही! हमने यह भी समझ लिया था कि अगर हम आधी सर्दियाँ भी इन्तजार में बिता दें, तब भी साथ चलने वालों का कोई दल न मिलेगा। रिचर्ड ने हमें बताया था कि जिन लोगो ने हमसे बेट के किले में मिलने का वायदा किया था, वे लोग पहले ही आगे जा चुके थे। इस लिए हमारे लिए रास्ते का सब से अच्छा दोस्त केवल हमारा भाग्य ही रह गया था। हमने अपने अच्छे भाग्य का लाभ उठाना चाहा और उसपर भरोसा करके हेनरी और देस्लारियर को लेकर हम लोग चल पड़े। हमने सोच लिया कि

अगर आदिवासियो का कोई वार हम पर हो ही गया, तो हम उसका अधिक से अधिक अच्छी तरह मुकावला करेंगे।

यहाँ से लगभग पचहत्तर मील दूर बेंट का किला नदी के किनारे खडा है। तीसरे दिन दोपहर के समय हम इससे तीन-चार मील दूर तक पहुँच गए। हमने अपना डेरा वही एक पेड के नीचे गाड दिया। इसके तने पर ही हमने शीशे लटकाए और दाढ़ी-मूँछ आदि साफ़ करके तथा नहा-धो कर किले की ओर निकल गए। हमने इसे तुरन्त ही देख लिया। इसकी ऊँची-ऊँची दीवारें तपते मैदानों मे दूर से ही दिखाई दे जाती थी। हमें लगा कि इस इलाके पर टिड्डियो ने हमला कर दिया था, क्योकि हमें चारो ओर की मीलो तक की घास खाई नज़र आती थी। सच यह था कि यह घास जनरल कीर्नी के घोडों ने खाई थी। जब हम किले मे पहुँचे, तो हमने देखा कि घोडो ने केवल घास ही समाप्त नहीं की थी, वल्कि उनके स्वामियो ने उस किले के भण्डारो को भी बिल्कुल खाली कर दिया था। इसलिए हमे घर की यात्रा के लिए बहुत थोडी चीज़ें ही मिल सकी। सेना के जाने के बाद किला भी उजाड़ और सुनसान-सा हो गया था। चारो ओर चुप्पी छाई हुई थी। कुछ अफसर और सैनिक, जो नाकाम हो चुके थे, इधर-उधर घूम रहे थे। चारो ओर गरमी बुरी तरह छाई हुई थी। चारो ओर की ऊँची सफेद दीवारो के कारण चमकते सूर्य की धूप और भी ज्यादा तपती हुई लगने लगी। इस किले का स्वामी मौजूद नही था। हमें होल्ट नाम के एक सज्जन ने आदर दिया। इस समय किले का अधिकार उसके पास ही था। उसने हमे भोजन के लिए बुलाया। यहाँ हमें पहली वार मेज़ पर एक सफेद कपड़ा, बीच मे एक गुलदस्ता और चारों ओर कुर्सियाँ बिछी पाकर वहुत ही प्रसन्नता हुई। यह आनन्ददायक भोजन समाप्त होने पर हम अपने डेरे पर लौट आए। शाम के भोजन के बाद हम यहाँ पर चिलम पीते हुए आग के चारों ओर लेटे हुए थे कि तभी हमे किले की ओर से आते हुए तीन आदमी दिखाई दिए। वे हम तक घोडो पर सवार होकर आए और हमारे पास ही, जमीन पर ही, बैठ गए। इनमे सबसे पास का आदमी लम्बे कद का और अच्छा जानकार था। उसके चेहरे और व्यवहार ने हम में विश्वास जगा दिया। उसने एक चौड़ा टोप पहना हुआ था, हालाँकि यह पुराना पड़ गया था। उसकी बाकी पोशाक एक कमीज और हिरण की

खाल के पाजामे की थी। उसके एक जूते की एड़ी में लोहे की एड़ी फँसी हुई थी। उसके घोडे पर मैक्सिको-वासियो जैसी काठी लदी हुई थी, जो भालू की खाल से ढकी हुई थी। इसके दोनों ओर की एड़े बहुत बडी और लकड़ी की बनी हुई थी। दूसरा आदमी बहुत छोटा, ठिगना और चुस्त था। उसका शरीर बहुत ही गठीला था। उसका चेहरा किसी मैक्सिकोवासी जैसा था। उसकी दाढ़ी बहुत घनी और मुडी हुई थी। उसने एक चिकना, पुराना, सूती रूमाल अपने सिर पर बाँधा हुआ था। उसकी हिरण की खाल की बनी कमीज बहुत सटी हुई थी। यह चिकनाई तथा बार-बार प्रयोग के कारण काली पड़ गई थी। इनमे से तीसरा आदमी बहुत ही मजबूत था और सीमात के इलाके का पाजामा पहने हुए था। यह बहुत ही सुस्ती के साथ सरकता हुआ-सा चल रहा था। उसकी सलेटी रग की आँखे नीद से भरी दिखाई देती थी। उसकी ठोडी कुछ पिचकी हुई-सी, मुँह कुछ खुला हुआ-सा और ऊपर का होठ कुछ फूला हुआ-सा लग रहा था। इन सबसे वह एक बहुत ही सुस्त और निकम्मा व्यक्ति लगता था। उसके पास अमरीका का एक पुराना हथियार था। इससे उसने कोई निशाना तो न साधा था, पर तो भी वह इसे आग उगलने वाले हथियार की निशानी के रूप मे अपने पास रखता था।

पहले दोनो आदमी कैलिफोर्निया से आने वाले दल से सम्बन्ध रखते थे। उनके पास बहुत से घोड़े थे, जिन्हें उन्होने बेंट के किले में बेच दिया था। इनमे से लम्बे आदमी का नाम मुनरो था। वह इयोवा के इलाके का था। वह बहुत ही अच्छे स्वभाव का, खुले दिलवाला और बुद्धिमान् आदमी था। दूसरा आदमी बोस्टन का एक मल्लाह था, जिसका नाम जिमगुर्नी था। वह कैलिफोर्निया तक एक व्यापारी जहाज मे आया था। अब उसकी इच्छा थी कि सारे महाद्वीप पर पैदल ही पार जाए। इस यात्रा ने उसे पहले ही एक अच्छा खासा "पहाडी" बना दिया था। वह एक अजीब प्रकार का मल्लाह बन चुका था, जो घोड़े की सवारी भी पूरी तरह जानता था। हमारे तीसरे अतिथि का नाम एलिस था, जो मिसूरी का रहने वाला था, और जो ओरेगन के प्रवासियो के साथ आया था। परन्तु ब्रिजर के किले तक आकर वह घर लौटने के लिए उतावला हो उठा था। उसने इसीलिए इन लोगो के साथ मिलकर घर की ओर लौटना उचित समझा।

उन्होने प्रार्थना की कि वे लोग भी हमारे दल के साथ मिलकर बस्तियों तक साथ-साथ ही यात्रा कर सकें। हमने इन लोगो को तुरन्त स्वीकृति दे दी, क्योकि हमें पहले दोनो आदमियो के अनुभव से लाभ मिलने का पूरा विश्वास था। हमने उन्हें अगली शाम नदी के किनारे, यहाँ से छः मील दूर, एक खास जगह पर मिलने के लिए कहा। हमारे साथ कुछ देर तम्बाकू पीकर हमारे साथी हमसे विदा हुए। हम भी नीद लेने के लिए लेट गए।

२२ : तेत रूज़ : स्वयंसेवक

अगली सुबह देस्लारियर को गाड़ी ठीक करके मिलने की जगह पर ले जाने की बात कह कर हम लोग एक बार फिर किले की ओर चले, ताकि यात्रा का पूरा प्रबन्ध किया जा सके। इन प्रबन्धो को पूरा करने के पश्चात् हम कुछ आदिवासियों के साथ तम्बाकू पीने के लिए ड्योढ़ी में बैठे। कुछ ही देर में हमने एक बहुत ठिगना आदमी सैनिक की-सी वर्दी पहने अपनी ओर ओर आते देखा। वह छोटे गोल चेहरे, खुरनुमा गड्ढो के बीच धँसी आँखों और लाल घुँघराले बालो के साथ अजीब-सा लग रहा था। उसने एक छोटी-सी टोपी भी पहन रखी थी। लगता था कि वह खाने-पीने के मामले का उस्ताद होगा। पर मैदानी जीवन की कठिनाइयो से वह बिल्कुल अनजान था। वह हमारे पास आया और उसने हमसे प्रार्थना की कि हम उसे बस्तियो की ओर अपने साथ ले चले, नही तो उसे सारी सर्दियो-भर, यही, किले में ही, रहना होगा। हमे उसकी शक्ल कतई अच्छी नही लगी। इसलिए हमने उसकी प्रार्थना को मानने से इन्कार कर दिया। अब वह इतनी अधिक प्रार्थना करने लगा कि हम मानने को मजबूर हो गये। वह बहुत ही निराश था। उसने हमें बहुत ही दु.ख से भरी कहानियों सुनाई थी। इस पर भी हमे उससे पूरी तसल्ली नही हुई।

हमारे इस नये अँग्रेज साथी का नाम कुछ इतना अजीब और बेतुका-सा था, कि हमारे दोनो फ्रासीसी सेवक बहुत कोशिश करके भी उसे बोल न सके। तब हार कर हेनरी ने उसका नाम 'तेत रूज़' रख डाला। यह नाम उसके लाल बालो के कारण रखा गया था। वह कभी किसी जहाज़ में लेखक रहा था। कभी किसी बस्ती में किसी व्यापारी का दलाल बन कर रहा था। अन्य अनेक जगहो पर वह कुछ और नौकरियाँ भी कर चुका था। पिछले बसन्त में वह गर्मियो की यात्रा का इरादा लेकर स्वयंसेवकों के एक दल के साथ निकल पड़ा था।

उसने बताया, "हम तीन आदमी थे। हम ने सोचा कि हम सेना के साथ

चलेंगे और देश को जीतने के बाद जब हम सेना से छोड़ दिए जाएँगे, तो अपनी तनखाह ले कर मैक्सिको जा कर आनन्द मनाएँगे। वहाँ से फिर हम 'वेरा क्रूज' होते हुए न्यू ओर्लियन्स लौट जाएँगे।"

पर रूज का यह विचार बिल्कुल गलत था। मैक्सिकोवालो से लड़ना उतना आसान न था, जितना उसने सोचा था। इस यात्रा के बीच में ही उसे दिमाग़ी बुखार चढ़ आया। यह बुखार उसे बेंट के किले की ओर जाते हुए हुआ था। उसके बाद उसने बाकी सफर सामन लादने वाली एक गाड़ी में किया। जब वे किले पर पहुँचे तब उसे अन्य बीमार आदमियो के साथ वहीं छोड़ दिया गया। यह किला बीमारो के लिए बहुत अच्छा नही था। रूज को एक मिट्टी के कमरे मे रहना पड़ा। यह और उसका एक अन्य साथी वहाँ एक ही भैंसे की खाल पर, जमीन पर ही, सो जाते थे। डाक्टर का सहायक आ कर उन्हें देख जाता और दवाई दे जाता था। वह केवल 'कैलोमल' नाम की दवाई ही देनी जानता था।

रूज ने एक सुबह जाग कर देखा, उसका साथी मर चुका था। उसका अपना दिमाग घबरा गया। उसे कुछ होश-सी आई। वह कभी डाक्टर और कभी कैलोमल की बात सोचता। वह इस किले मे पहुँचने पर भी अपने दिमाग से वह डर न निकाल सका था। अपने साथी की मौत के बाद भी उसके चेहरे पर कुछ इस प्रकार का भाव था कि हम हँसे बिना न रह सके। उसने पोशाक तो सैनिक की पहनी हुई थी, पर व्यवहार बिलकुल उल्टा ही कर रहा था। हमने उससे पूछा कि उसकी बन्दूक कहाँ है ? उसने बताया कि उसकी बीमारी में किले के लोगो ने उससे बन्दूक ले ली थी। तब से उसे वह दिखाई नही दी थी। उसने आशा प्रकट की कि शायद हम अपनी एक बड़ी पिस्तौल उसे किसी आदिवासी से सामना होने पर, दे देंगे। इसके बाद मैने घोडे के बारे मे पूछा। उसने बताया कि वह बहुत शानदार है। शॉ के कहने पर एक आदिवासी उस घोड़े को ले आया। घोड़ा देखने में अच्छा लगता था, परन्तु भूख के कारण उसकी हड्डियाँ उभर आई थी और उसकी आँखें गढ़ो में धँस गई थी। उसके कंधो पर कुछ निशान भी थे। देखने से साफ लगता था कि उसकी बीमारी के दिनो में लोगो ने उसे तोपो मे जोता था। तेत रूज को अचरज हुआ, जब हमने उसे घोड़े की बजाय खचर लेने

को कहा। किले के लोग उससे इतने तंग आ गये थे कि वे उसे कुछ भी देकर छुटकारा पाने के लिए उतावले थे। इस प्रकार उसे अपने रद्दी घोडे के बदले एक अच्छा खच्चर मिल गया।

एक आदमी तुरन्त ही खच्चर को रस्सी के सहारे लेकर दरवाजे पर आया। उसने उसको रूज के हाथ मे पकडा दिया। अपने इस नये पशु से घबरा कर रूज ने अपना रोब जमाने के लिए, उसे अनेक प्रकार के हुक्म देने चाहे और आगे आने को कहा। खच्चर यह सोचकर कि उससे आगे बढने को कहा जा रहा है, अपनी जगह पर ही चट्टान की तरह जम गया। वह ऐसे देखने लगा, जैसे वह कुछ समझा ही न हो। पीछे से मुक्का मारने के बाद वह बढने लगा और किले के दूसरी ओर तक दौडता हुआ भाग गया। देखने वालो को हँसता देखकर रूज ने हौंसला बाँधा और रस्सी को खीच लिया। खच्चर पीछे की ओर उछला और चक्कर काट कर दरवाजे की ओर दौडा। रूज उसकी रस्सी को पकड कर कुछ दूर तक उसके साथ ही घिसटता हुआ चला गया। तब उसने रस्सी छोड दी और खुद खच्चर के पीछे मुँह बाए खडा देखता रहा। खच्चर मैदान पर बहुत दूर भाग गया। उसे एक मैक्सि-सकोवासी जल्दी ही वापिस ले आया।

इस प्रकार मैदान के सफर के लिए अपनी योग्यता दिखाने के बाद रूज अपना सामान लेने के लिए किले की ओर गया। किले मे जाकर वहाँ ठहरे एक सैनिक अधिकारी से उसने अपना सामान माँगा। यह अधिकारी खुद भी सेना द्वारा पीछे छोडा जाने के कारण बहुत दु खी और अपमानित था। वह भी रूज से छुटकारा पाने को उतावला था। इसलिए उसने चाबी निकाली और नीचे की ओर खुलने वाला एक दरवाजा खोल कर जमीन मे बने तहखाने मे चला गया। थोडी देर बाद वे दोनों बाहर आये। रूज बहुत सारे बडलो के कारण परेशान था। ये सारी चीजे गाडी मे रख दी गई, जो कि उस समय तक मिलने के निश्चित स्थान की ओर चल पडी थी।

तब हमने रूज से कहा कि अगर किसी तरह हो सके, तो उसे एक बन्दूक भी अपने लिए ले लेनी चाहिए। इसके लिए भी उसने किले के बहुत से लोगो की मिन्नत की। पर, किसी ने भी उसकी सहायता न की। इस हालत से हमे कोई खास परेशानी नही हुई, क्योकि अगर कही कोई झडप हो ही गई,

तो वह हमारी सहायता के बजाय कोई नुकसान ही कर बैठेगा। जब ये सब तैयारियाँ पूरी हो गईं तो हमने अपने घोडो की काठियाँ कसी और किले को छोड़ने को तैयार हो गये। इसी समय हमने देखा कि हमारा नया साथी फिर एक मुसीबत में जा फँसा है। एक आदमी ने उसका खच्चर किले के बीचो-बीच थाम रखा था और रूज उस पर काठी रखने की कोशिश कर रहा था। खच्चर बार-बार इधर-उधर हिलकर या कभी चक्कर काट कर उसे परेशान कर रहा था। इन सब मुसीबतो से छुटकारा पाने के लिए उसे सहायता की जरूरत थी। बहुत देर बाद वह अपनी युद्ध की काली काठी पर बैठ गया। शायद इसी काठी पर बैठकर वह मैक्सिको के युद्ध के लिए जाता। तब उसने खच्चर को आगे बढने का हुक्म दिया।

खच्चर बहुत शरारत के साथ आगे बढ़ने लगा। उसकी हाल की हरकतों ने रूज को इतना डरा दिया था कि अब वह चाबुक मारने को भी तैयार न था। हम बहुत तेज़ी से मिलने के निश्चित स्थान की ओर बढे। अभी हम बहुत दूर न गये थे कि हमनें मुडकर देखा, रूज का खच्चर एक जगह खडा होकर घास चर रहा था। इसलिए उसके पीछे होकर हमने उसे बढाना शुरू किया। तभी हमें कुछ दूरी पर आग चमकती हुई दिखाई दी। इस समय साँझ हो चुकी थी। मुनरो, जिम, और एलिस उस आग के आस-पास लेटे हुए थे। उनकी काठियाँ, गट्ठड़, और हथियार इधर-उधर पडे हुए थे। और, उनके घोड़े उनके पास ही बँधे हुए थे। हमारी गाडी और गाडीवान भी वहाँ मौजूद थे। तुरन्त ही हमारे लिए भी आग धधकने लगी। हमने अपने नये मित्रो को कॉफी पर बुलाया। चाय के बाद बाकी दोनो तो अपनी ओर चले गये, पर जिम गुर्नी कुछ देर हमारी आग के पास ही खडा-खडा तम्बाकू पीता रहा।

उसने कहा, "हम लोग आठ है, पर हमे छः मानकर ही चलना चाहिये। हमारे साथ एलिस और यह आपका नया साथी दोनो ऐसे है, जिन्हे न गिनना ही अच्छा है। हमें किसी भी कठिनाई से डरना नही चाहिए। हम उसके मुकाबले के लिए काफी है। बस डर हो सकता है तो केवल 'कमाचे' नामक आदिवासी लोगो से ही।"

---

२३ : आदिवासियों का खतरा

हमने बस्तियो की ओर अपनी यात्रा सत्ताईस अगस्त के दिन शुरू की। शायद हमसे अधिक किसी और छोटी और बेतरतीबी टुकड़ी ने कभी उत्तरी अरकंसास के किनारे यात्रा न की होगी। जब हम सीमान्त से बसंत के दिनों में चले थे, तब हमारे पास बहुत सुन्दर और बड़े घोड़े थे। परन्तु आज उनमें से एक भी नही रहा था। हमने उनका स्थान मैदानी किस्म के घोड़ों को दे दिया था। ये घोड़े खच्चरो जैसे ही कठोर और भद्दी किस्म के थे। हमारे साथ अब बहुत से खच्चर भी थे। हालाँकि उनमे ताकत और कठोरता काफ़ी अधिक थी, फिर भी बहुत अधिक सेवा और कठिन यात्रा के कारण उनमें से बहुत से कमजोर पड़ चुके थे। इनमें से एक के भी खुर ठुके हुए नहीं थे। इसलिए बहुत जल्दी ही बहुतो के पाँव सूजने शुरू हो गए। हर घोड़े और खच्चर पर एक रस्सी बँधी हुई थी, जो कि भैंसे की खाल से बनी हुई थी। हमारी काठियाँ और सारा सामान भी लगभग खराब हो चुका था। हमारे हथियार भी जग खाए हुए और कमजोर पड चुके थे। घुड़सवारों की पोशाक भी घोड़ो की हालत से अच्छी न थी। सारा दल बहुत ही बुरी हालत में दिखाई दे रहा था। शॉ ने ऊपरी पोशाक के तौर पर लाल फलालैन की एक क़मीज पहनी हुई थी, जब कि मैंने और कोई कपडा न पाकर हिरण की खाल की ही पोशाक पहन ली थी।

इस प्रकार चिन्ता से रहित होकर हम लोग खुशी-खुशी, भिखारियो से बने हुए, आगे बढने लगे। यह यात्रा हर रोज एक जैसी होने के कारण उकता देने वाली सिद्ध हुई। रूज हमें लगातार मुसीबतें देता रहता। न तो वह कभी अपने खच्चर को पकड़ पाता, न उसपर काठी रख पाता और न ही कोई और काम बिना किसी की सहायता के कर पाता। हर रोज उसकी कोई नयी शिकायत उठ खडी होती। एक क्षण वह दुःखी और निराश लगने लगता, तो दूसरे ही क्षण उसका दिल खुशी से पागल दिखाई देता। वह हँसता हुआ इधर-उधर की कहानियाँ कहने लगता। जब किसी भी तरीके से वह काबू न

आता तब हम उसे सताकर मज़ा लेते। इसी सताने में हम उसके दिए दुःखों का बदला चुकाने का यत्न करते। हम उसपर हँसते, पर वह इसे भी अपना आदर समझता। वह कमज़ोरी, अच्छा स्वभाव और पागलपन का एक मिला-जुला नमूना था। उसकी चाल को देखकर वह एक चित्रकारी का नमूना दिखाई देता था। खच्चर पर चढ़े हुए और भैंसे की खाल के कपडे पहने वह किसी तस्वीर में बैठे हुए सैनिक की भाँति लगता था। यह पोशाक उसे किसी ने दया करके दी थी। यह इतनी बडी थी कि इसमें उस जैसे दो आदमी समा जाते। इस पर भी उसने इसे पलटकर पहना और कभी भी, कठिन-से-कठिन गर्मी मे भी इसे उतारा नही। सब तरफ से इसकी सीवन उखड़ी हुई थी। पुरानी होने के कारण खाल जगह-जगह से फट गई थी। इस खाल के ऊपर उसके लाल बालो का एक गुच्छा-सा दिखाई दे रहा था। सिर पर रखी हुई टोपी से लगता था कि वह सैनिक है। काठी पर उसके बैठने की जगह, खुद उसके लिहाज़ से, बुरी न थी। उसने अपने पाँव घोड़े की अगल-बगल से अन्दर को दबाकर और बाहर की ओर तिरछे करके मोड़ रखे थे। उसके पाजामे सैनिको की भाँति लाल धारी से सजे हुए थे। इसका उसे बहुत गर्व था। पर, पाजामा छोटा होने के कारण उसके जूते बिल्कुल साफ ऊपर तक दिखाई दे रहे थे। उसका कम्बल एक गठरी के रूप मे बँधा हुआ, उसकी काठी की पीठ से लटक रहा था। हर कुछ मिनट के बाद वह चिलम, चाकू, पत्थर, लोहा, तम्बाकू या कोई और चीज़ गिरा बैठता और फिर उन्हे उठाने के लिए रुकता। इन सब बातो में वह हर एक के लिए मुसीबत खड़ी कर देता। गुस्से में आकर हमारे दल के लोग भी, सभ्य भाषा की बिना परवाह किए, उसे नये-नये विशेषणो से सजाते रहते। अन्त में तग आकर वह भी अपनी ज़िन्दगी और साथियो को कोसने लगता।

बेंट के किले से निकलने के एक या दो दिन बाद ही हेनरी एलिस को लेकर कुछ दूर तक शिकार खोजने निकल गया। वे कुछ देर हमसे अलग रह-कर सामने की पहाड़ी से उतरते हुए दिखाई दिए। उनके साथ सेना के तीन घोडे थे, जो अपने मालिको से, चढाई के समय, भाग निकले थे। मालिको ने भी उन्हें ढूँढना छोड़ दिया था। उनमे से एक की हालत काफ़ी अच्छी थी। पर, बाकी दोनो काफी कमजोर और भेडियो के सताए लगते थे। हमने उनमें

से दो अपने साथ, बस्तियों तक, ले लिए और तीसरे को हेनरी ने चरागाही लोगों से एक अच्छे खच्चर के बदले में बदल लिया।

अगले रोज जब दोपहर को हम आराम के लिए रुके तो सांताफे आनेवाली गाडियों की एक लम्बी कतार हम तक आई और धीरे-धीरे एक शानदार जलूस के रूप में आगे निकल गई। इनके व्यापारी का नाम मैगोफिल था। इसका भाई बहुत से और लोगों को लेकर आया और हमारे साथ कुछ देर घास पर ही बैठ गया। ये लोग जो समाचार अपने साथ लाए थे, वे बहुत अच्छे न थे। उन्होंने बताया कि आगे के इलाकों की यात्रा बहुत बुरी है। उन्होंने बीसियों बार आदिवासियों को अपने डेरों के आस-पास घूमते हुए पाया था। हमसे कुछ हफ्ते पहले जो बड़ा दल बेंट के किले से चला था, उसपर आदिवासियों ने हमला कर दिया था। उनमें से स्वान नाम का एक आदमी मारा भी गया था। उसके साथियों ने उसका शरीर दफना दिया था। परन्तु, इस व्यापारी ने उसकी कब्र को 'कँचेज' नाम की जगह के पास जब देखा, तब तक उसे आदिवासी खोदकर उसकी खोपड़ी अलग कर चुके थे, और भेड़ियों ने उसके बाकी शरीर का बुरा हाल कर दिया था। इसके साथ ही उन्होंने यह भी अच्छी खबर दी कि कुछ दिन की यात्रा के बाद हमें असंख्य भैंसे मिलने लगेंगे।

अगले दिन दोपहर बाद जब हम नदी के किनारे-किनारे बढ़े तो क्षितिज के पास सफेद गाडियों की लम्बी कतारें दिखाई दीं। जब कुछ देर बाद हम उन लोगों से मिले, तो ये सरकारी बैलगाडियाँ साबित हुईं। ये सांताफे के व्यापारियों की गाड़ियों से कतई भिन्न थीं और इनमें सरकार का सामान भरा हुआ था। यह सामान सेनाओं के लिए भेजा जा रहा था। ये सब रुक गए और इनके गाड़ीवान आकर हमारे चारों ओर जमा हो गए। उनमें से बहुत से अभी छोटी उमर के थे और खेतों को छोड़कर सीधा ही इस काम में जुट गए थे। रास्ते की हालत ने व्यापारियों की बताई हर बात को सच साबित कर दिया। 'पौनीफोर्क' और 'कँचेज' के बीच में से गुजरते हुए इनके पहरेदारों ने आदिवासियों को पास आता समझकर कई बार गोलियाँ चलाई थीं। उन्होंने बताया कि एर्विंग नाम के एक युवक ने एक आदिवासी का सिर काटा था। यह युवक वही था, जो हमसे कुछ दिन पहले निकल पड़ा था। इन में से

कुछ लोगो ने हमे लौटने की सलाह दी और कुछ ने हमें जल्दी-से-जल्दी आगे बढने की सलाह दी। पर, सभी लोग बहुत अधिक चिन्तित और घबराए हुए दिखाई दे रहे थे। उनका दिल ठिकाने न था। हमने भी उनकी बात को पूरा महत्त्व नही दिया। इसके बाद उन्होने हमे एक और ख़बर दी। नीचे, नदी के किनारे, अरापाहो लोगो का एक बड़ा गाँव डेरा डाले पडा था। उन्होंने बताया कि वे मित्र है। परन्तु हम जानते थे कि एक बडे दल और हमारे जैसे छोटे-से दल की हालत में काफी अन्तर था और आदिवासी मौके को अच्छी तरह समझते थे।

अगले दिन दोपहर बीतते ही जब हम बढे तो हमने क्षितिज पर आरे के दाँतो की भाँति कुछ उठा हुआ देखा। ये थे अरापाहो लोगो के घर जो कुछ दूरी पर उठे हुए थे। हमें यहाँ तक पहुँचने में दो-तीन घटे लग गए। ये मकान सख्या मे दो सौ के लगभग थे और नदी के पार कुछ दूरी पर एक चरागाह में खडे थे। नदी के दोनों ओर, एक मील तक, अरापाहो लोगो के घोडे या खच्चर समूहों में या अकेले-दुकेले चर रहे थे। यह सब कुछ एक साथ ही हमारी निगाह मे आ गया, क्योकि बीच मे न तो कोई पहाड़ी ऊँची उठी हुई थी और ना ही कोई पेड़ या झाडियाँ रुकावट बनकर खडे थे।

इधर-उधर कोई घुडसवार आदिवासी पहरे के काम में लगा हुआ दिखाई दे जाता था। अभी हमें ये दिखाई ही दिए थे कि रुज़ ने देस्लारियर को, गाड़ी रोक कर, अपनी सैनिक पोशाक देने के लिए कहा। इसमे सज-धज कर वह अपनी काठी पर बैठकर सजा हुआ सैनिक लगने लगा। बाईं ओर को अपनी टोपी मोड़कर वह एक उद्धत सैनिक की भाँति आगे बढने को तैयार हुआ। उसने हमसे आधे घटे के लिए बन्दूक या पिस्तौल माँगी। जब हमने उससे इस सबका कारण पूछा तो उसने बताया कि वह जानता है कि आदिवासी लोग सैनिक को उसकी पोशाक मे देखकर घबरा जाते है। उसकी इच्छा थी कि उसे देखकर आदिवासी यह भली भाँति समझ ले कि इस दल मे भी कोई सैनिक मौजूद है।

इस नदी के किनारे इन आदिवासियो से मिलना इनके पहाडी निवास स्थानो मे मिलने से कतई भिन्न किस्म का होता है। एक और भी बात हमारे हक मे हुई। हमसे कुछ हफ्ते पहले ही जनरल कीर्नी अपनी सेनाओ के साथ

इधर से गुज़रे थे और उन्होंने इन्हें पिछले साल की तरह धमकी दी थी कि अगर एक भी गोरे आदमी का बाल बाँका हुआ, तो उसका भयंकर बदला लिया जाएगा। इस बात ने उनका दिमाग दुरस्त कर दिया था। अब तक वे फिर से बिगड़े नही थे। मेरी इच्छा गाँव और उसके निवासियो को देखने की हुई। इसके लिए हमने यह अधिक उचित समझा कि उनके बीच खुले रूप में जाया जाए। शॉ, मैं और हेनरी नदी पार करने के लिए बढे। इस बीच बाकी दल को इसने पूरी तेज़ी के साथ आगे बढ़ने के लिए कह दिया; ताकि वे इन आदिवासियों की पहुँच से, रात आने से पहले ही, दूर निकल जाएँ।

इस जगह अरकंसास नदी केवल रेतीली ही रह जाती है। उसमे पानी की पतली धारा बहती है। यह बात यहाँ से सैकड़ों मील दूर तक ऐसी ही चलती है। सर्दियों मे कुछ जगहो पर रेत में समाकर पानी गुम हो जाता है। इस मौसम मे हम इस नदी को बिना कठिनाई के अच्छी तरह पार कर सकते थे, भले ही इसकी धार कई जगह चार सौ गज से अधिक चौडी हो गई थी। हमारे घोडे नदी के किनारे उछलकर नीचे उतरे और तुरन्त ही नदी पार करने लगे। मिट्टी सख्त थी इसलिए उछलते हुए जल्दी ही दूसरी ओर पहुँच गए। यहाँ ऊँची घास में से होते हुए हमने नजदीक ही कुछ आदिवासियो को देखा। उनमें से एक हमारे आने की प्रतीक्षा करता रहा और हमारे पास पहुँचने पर भी चुपचाप खड़ा रहा। वह अपनी छोटी साँप जैसी आँखों से हमारी ओर प्रश्न की दृष्टि से देख रहा था। अपने इशारो से हेनरी ने उसे समझाया कि हम क्या चाह रहे थे? तब वह आदिवासी अपने लबादे को सँभाल कर हमारे आगे-आगे बिना बोले ही, चलता हुआ हमें गाँव की ओर ले चला।

अरापाहो लोगो की भाषा इतनी कठिन है—और इसका बोलना तो और भी कठिन है—कि शायद ही कभी कोई गोरा इसे पूरी तरह सीख पाए। इन लोगों में रहने वाला व्यापारी मैक्सवैल भी सालो तक रहकर इनकी भाषा को न सीख सका, और उसने भी इशारो की वह भाषा ही सीखी, जो इन मैदानी इलाकों के सभी कबीले प्रयोग करते है। इशारो की यह भाषा हेनरी को खूब आती थी।

गाँव के पास पहुँचकर हमने चारों ओर भैसों का बिखरा हुआ मांस, ढेरियो के रूप में, पडा पाया। सारे मकान एक घेरे के रूप में गाड़े गए थे।

ये डाकोटा जाति के लोगो के घरो के समान ही थे। इनकी सफाई अवश्य उनसे कम थी। दो घरो के बीच से होते हुए हम बीचो-बीच आ गए। हमने तुरंत ही सैकडो मर्दों, औरतो और बच्चो से अपने को घिरा हुआ पाया। उसी समय गाँव के चारो ओर कुत्तो ने भौंकना शुरू कर दिया। हमारा पथ-प्रदर्शक हमें मुखिया के घर की ओर ले चला। यहाँ हम घोड़ो से उतरे और उनकी खोजी रस्सी खोलकर हम दरवाजे के सामने खड़े हो गए। हमारी बन्दूकें हमारे पास थी। मुखिया ने बाहर आकर हमसे हाथ मिलाया। वह बहुत ही नीच किस्म का आदमी था। उसका कद लम्बा और चेहरा पतला था। वह अपनी बाकी जाति की भाँति ही अच्छे कपडे आदि भी नही पहने हुए था। अभी हम कुछ मिनट ही बैठे थे कि चारो ओर एक अच्छी खासी भीड, गाँव के कोने-कोने से आकर, जमा हो गई। हम चारो ओर से उन असभ्य चेहरो से घिर गए। कुछ दर्शक हमारे चारो ओर जमीन पर ही बैठ गए। कुछ उनके पीछे बैठ थे और कुछ झुके या खडे हुए थे। उनमे हर कोई हमे देखने को उतावला था। मैंने इस सारी भीड में एक भी सभ्य या उदार शक्ल न देखी। सभी की शक्ल भेड़ियो जैसी भयंकर और खूँखार दिखाई दे रही थी। डाकोटा लोगों की अपेक्षा इनका रंग और इनकी शक्ल बहुत ही बुरी थी। सरदार दरवाजे के पास बैठा था। उसने वही से अपनी पत्नी को बुलाया और उसने आकर हमारे सामने लकड़ी के बर्तन मे मांस परोस दिया। हमें यह देखकर अचरज हुआ कि भोजन के बाद चिलम नही पी गई। मांस का स्वाद चखने के बाद मैने भेंटो का पुलन्दा खोला। उसमें तम्बाकू, चाकू और केसर आदि बहुत-सी चीजे थी। इसे देखकर उस असभ्य भीड का हर चेहरा मुसकराता हुआ नजर आया। उनकी आँखें चमकने लगी और हर एक के हाथ कुछ-न-कुछ माँगने के लिए फैल गए।

अरापाहो लोग अपनी ढालों को बहुत महत्त्व देते है। ये खानदानी तौर पर चलती आती है। मैने एक ऐसी ही ढाल उनसे माँगनी चाही और इसके लिए एक लाल रूमाल बिछाकर कुछ और भेंटें सामने रखी। मैंने उनमें से किसी भी ऐसे आदमी को यह भेंट देने का वायदा किया जो मुझे ढाल लाकर दे सके। काफी देर बाद एक अच्छी-सी ढाल हमारे सामने लाई गई। वे यह जानना चाहते थे कि आखिर हम इसे क्या करेंगे? हेनरी ने बताया कि हम

उनके दुश्मन पौनियो से लड़ने जा रहे है । इस वात ने उन सब पर बहुत ही अच्छा प्रभाव डाला । यह प्रभाव हमारी भेंटों से और भी गहरा हो गया । हमने औरतो के लिए भी कुछ भेंटें दी, क्योकि हम उन लोगो की सुन्दरता भी देखना चाहते थे । हेनरी ने यह वात उन्हें वताई और औरतो को बुलाने के लिए कहा । तब एक सैनिक ने जोर की आवाज लगाई । जवान और बूढी औरते एक साथ ही दौड़ती और हँसती हुई वहाँ पर जमा हो गई । सबके हाथ भेंटो के लिए आगे बढ गए । सभी एक-दूसरे से बढकर भद्दी और बद-सूरत लग रही थी ।

अपने घोडो पर चढकर हम उनसे जुदा होने लगे । दोनो तरफ की भीड ने छँटकर हमें रास्ता दिया । अभी हम आधा ही गाँव पार कर आए होगे कि हमें एक बात सूझी । शायद पौनी लोग 'कैचेज़' के आसपास थे । हमने यह उचित समझा कि अरापाहो लोगो को यह बात समझा दी जाए और उन्हे अपना एक लडाकू दल उनकी ओर भेजने के लिए कहा जाए । इस बीच हम खुद पीछे रुककर भैंसो का शिकार करते रहें । पहले-पहल तो यह विचार हमे बहुत ही कमाल का लगा परन्तु, तुरन्त ही हमें यह ध्यान आ गया कि अगर कहीं ये ही अरापाहो सैनिक हमे नदी के नीचे के मैदानो में, अकेले मे, टकरा गए तो हमारे लिए बहुत खतरनाक साबित हो सकते है । इसलिए अपने इस इरादे को वही छोड़कर हम गाँव से बाहर निकल आए । अब ऊँची-ऊँची घास मे से हमने अपने घोड़ो को दौड़ा दिया । इसमें कुछ दूरी पर कुछ आदिवासी घूम रहे थे । ऊपर से हिलते हुए उनके चेहरे दिखाई दे जाते थे । इस घास पर जौ जैसे कुछ दाने भी लगे हुए थे, जो बहुत ही स्वादु और अच्छे थे । चाबुक और लगाम के बरतने के बाद भी हमारे घोड़े इस आराम से मिले भोजन को खाने का लोभ न रोक सके । गाँव से मील भर दूर आकर मैने घास के इस लहराते हुए समुद्र को मुड़कर देखा । अभी सूर्य अस्त होकर ही चुका था । पश्चिम का आकाश पूरी तरह चमक रहा था और इसके आगे मैदान मे खड़ा हुआ अरापाहो लोगो का गाँव दिखाई दे रहा था ।

नदी के किनारे पहुँचकर कुछ दूर तक हम इसके साथ-साथ चले और तब हमने तारो के हल्के प्रकाश में दूसरे किनारे पर अपनी गाड़ी की सफेद छत को पहचान लिया । जब हम उस तक पहुँचे, तो वहाँ बहुत से आदि-

वासियों को जमा पाया। वे जमीन पर ही बैठे हुए थे, जैसे बहुत दिनो से भूखे हो। रूज अपनी पोशाक में सजा-धजा गाडी के पास ही खड़ा हुआ उन्हें इशारों मे कुछ समझा रहा था। जब उसके इशारे सफल हो गए, तो उसने अँग्रेजी के शब्दों को ही कुछ ऊँचे से बोल कर उन पर रोब जमाना शुरू किया। आदिवासी उसके सामने जड से बने बैठे थे। उनके चेहरों से यह साफ था कि वे लोग इस सैनिक की असलियत को पहचान चुके है। इस बात को देखकर हमें हँसी आ गई। हमने उसे जल्दी-से-जल्दी अपनी बात खतम करने को कहा। डाँट खाकर ही वह एक दम ही दुबक कर वही बैठ गया। हेनरी ने उसे देखा और बहुत धीरज और शान्ति से कहा कि कोई भी आदिवासी ऐसे-ऐसे दस आदमियो को मारकर भी हँसता ही रहेगा।

एक-एक करके दर्शक उठे और चले गए। अधिक अँधेरा होने पर हमारा स्वागत एक और किस्म की आवाजो ने किया। भेडिये इस इलाके मे बहुत होते हैं। खासकर अरापाहो लोगो के खेमे के चारो ओर फैंके गए मांस के कारण तो उनकी संख्या बहुत अधिक बढ गई थी। नदी के बीचो-बीच एक हरा टापू जैसा था। वह हमारे निशाने की पहुँच में ही था। ये भेडिये यही पर जमा थे। उनकी रोने की-सी आवाजें और गुस्से भरी चीखें सूरज छिपने के कुछ घटे बाद तक लगातार उठती रही। हम भेडियो को भागते हुए साफ-साफ देख सकते थे। ये हमारे डेरे के पास से ही मैदान पर भागते हुए या नदी के रेत पर अथवा उसके पानी मे मचलते हुए दिखाई दे जाते थे। इनसे हमें कुछ भी खतरा न था, क्योकि इन मैदानो में सबसे अधिक कायर ये जानवर ही होते हैं।

अपने पास के इन्सानी भेडियो की ही परवाह हमे अधिक थी। उस रात हर आदमी अपनी बन्दूक भरकर और बगल में ही रखकर सोया। हमारे घोडे भी बिल्कुल पास ही बाँधे गए। हम लोगो को पहरा रखने की आदत नही थी, पर फिर भी हर कोई बहुत चौकन्ना बना हुआ था। उस रात हममे कोई भी गहरी नीद न सो सका और सारी रात एक-न-एक उठकर, चौकन्ना होकर, इधर-उधर घूमता ही रहा। खुद मै इसी तरह जागता और सोता आधी रात तक लेटा रहा। रूज नदी के किनारे की ओर सोया था। परन्तु मैने देखा कि चारो हाथो-पाँवो के बल वह गाडी के नीचे खिसक आया। इसके

बाद मैं गहरी नीद में सो गया। थोड़ी देर में ही किसी ने कंधा हिलाकर मुझे जगाया। मैंने देखा कि डरा हुआ पीला चेहरा लिए रूज़ मुझे जगा रहा है। मैंने उससे कारण पूछा। उसने बताया कि जब वह नदी-किनारे सो रहा था, कोई उसे दिखाई दे गया और उसे कुछ सन्देह हुआ। इसलिए अपने को बचाने के लिए वह गाड़ी नीचे छिप कर देखने लगा। तब उसने देखा कि दो आदिवासी कुछ आगे बढ़े और सारे घोडों को लेकर भाग निकले। वह इतना डरा हुआ और बेतुका-सा लग रहा था कि उस पर विश्वास नही आया। मैं नही चाहता था कि और लोगों को जगाया जाए। फिर भी, यह हो सकता था कि यह बात सच हो और इस पर तुरन्त ध्यान देना पडे। इसलिए मैंने अपनी बन्दूक पकडी और उसे वह राह बताने को कहा, जिधर आदिवासी गए थे। नदी के किनारे, दो-तीन सौ गज तक, इधर-उधर चौकन्ने होकर ध्यान देते हुए हम आगे बढे। मुझे दाई तरफ मैदान में कुछ भी चौका देने वाली चीज़ न दिखाई दी। नदी के धुँधले से तल पर एक भेड़िया अवश्य उछल रहा था, पर इसे किसी आदिवासी की नकल नही कहा जा सकता।

मै डेरे की ओर लौट आया और देखा कि दल के सभी लोग जागे हुए है। शाँ ने मुझे पुकारा और बताया कि उसने सब घोडो को गिन लिया है। रूज़ से जब फिर से पूछा गया कि उसने क्या देखा, तो उसने फिर से पुरानी बात दोहरा डाली। इस पर जिमगुर्नी ने उसे पागल करार दिया। तब उन दोनों में कुछ झगड़ा उठ खडा हुआ। अन्त में हमने बीच-बचाव करने की बजाय रूज़ को डाँटकर सोने के लिए कह दिया और उसे यह भी कह दिया कि चाहे वह सारे आदिवासियो को इकट्ठा होकर आता हुआ देख ले, तब भी हमें बिल्कुल न जगाए।

—:०:—

२४ : पीछा

हमारे सामने का इलाका भैंसो से भरा हुआ था। इसलिए उनके 'पीछे' या शिकार का तरीका बता देना उचित ही होगा। इस पीछे में दो प्रकार के उपाय बरते जाते है। पहले को 'दौड़ाना' कहते हैं और दूसरे को 'पहुँचना'। दौड़ाने का दूसरा नाम 'पीछा करना' भी है। इसमें घोडे पर सवार होकर भैंसे का पीछा किया जाता है। यह पीछा, दोनों तरीको मे से, अधिक खतरनाक है। कभी-कभी भसा बहुत ही भयंकर हालत में होता है। साधारण दशा में वह सीधा-सा बना रहता है। कई बार अच्छा शिकारी एक ही बार मे पाँच या छः भैंसो को भी मार लेता है और घोडे पर चढ़े ही चढे बार-बार बदूक भर लेता है। भैंसे के एक छोटे-से समूह पर हमला करने, या किसी एक को औरो से अलग करके उस पर हमला करने में खतरा कम होता है। सच यह है कि कभी-कभी यह पशु इतने सीधे-सादे और मूर्ख होते हैं कि इन्हें मारने में भी मजा नही आता। एक अच्छे साहसी घोड़े के साथ ऐसे भैंसे के पास पहुँचकर शिकारी उसकी बगल में दौडने लगता है। वह इतना समीप होता है कि उसे हाथ से भी वह छू सकता है। तब तक कोई खास डर नही होता, जब तक भैंसे की ताकत और साँस चलता रहता है। जब वह थक जाता है, आराम से दौड नही पाता, उसकी जीभ बाहर लटकने लगती है और मुख से झाग निकलने लगती है, तब शिकारी को उससे कुछ दूरी पर हो जाना उचित है। परेशान भैंसा किसी भी क्षण उलटकर हमला कर सकता है, खासकर जब उस पर बंदूक दागी जाती है। तब घोडा एक ओर को उछल जाता है। इस समय शिकारी को बहुत मजबूती से जमकर बैठना चाहिए, क्योकि अगर वह जमीन पर गिर गया, तो फिर उसकी जान बचने का कोई उपाय नही रह जाता। भैंसा अपने हमले को चूकता देखकर फिर से दौड़ पड़ता है। पर, अगर निशाना ठीक बैठा है तो वह फिर रुक जाता है, और, तब कुछ देर खड़ा रहने के बाद लड़खड़ा कर एक ओर को गिर पड़ता है।

भैंसे के इस प्रकार के पीछे में मुझे सबसे कठिन बात यह लगी कि पूरी तेज़ी से दौड़ते हुए बंदूक या पिस्तौल आसानी से नही भरी जा सकती। बहुत से शिकारी तीन या चार गोलियाँ मुँह में भरकर चलते है। बारूद नली में भरकर गोली उसमें डाल दी जाती है। ऐसी कुछ नालियाँ घोड़े के कूल्हे पर पीछे की ओर लटका दी जाती है। ऐसे काम में खतरा भी होता है, क्योंकि अगर कही भरी हुई नाली चल पडी, या उलटी चली तो दोनो ही दशाओं में कुछ न कुछ नुकसान होकर रहेगा। इस असर को कम करने के लिए कुछ लोग अपने पास एक छड़ रखते है और उसे अपनी गर्दन से बाँधकर लटका लेते हैं। इससे बारूद और गोली भरने का काम और कठिन हो जाता है। इस लिहाज़ से आदिवासियो के धनुष और बाण ज्यादा अच्छे बैठते है।

इस पीछे में घायल जानवर से उतना डर नही होता, जितना कि ऊबड़-खाबड़ मैदान या जमीन में होता है। मैदान सदा ही एक समान और समतल नही होता। बहुत बार टीलो, खड्डो और खाइयो आदि से भरा होता है। कभी जंगली झाडियाँ या उनकी जड़े रुकावट पैदा कर देती है। सबसे कठिन रुकावट भेडियो, बैजरो और मैदानी कुत्तो की माँदो के कारण आती है। ये गड्ढे मैदानी ज़मीन मे बहुत अधिक होते है। शिकार में अंधा शिकारी इस खतरे की बिना परवाह किये ऐसी ज़मीन पर बढ चलता है। उसका घोडा, पूरी तेज़ी से दौडते हुए, ऐसी माँद में अपना पाँव फँसा बैठता है। उसकी हड्डियाँ टूट जाती हैं और सवार नीचे गिर जाता या मर जाता है। फिर भी इस पीछे मे बहुत कम दुर्घटनाएँ होती हैं। इस पीछे में कोई भी शिकारी उतना ही मस्त होता है, जितना कि कोई शराबी शराब पीकर। पर उसकी होश भी बनी रहती है और वह ढलानो और गड्ढो आदि से बचता हुआ बढ़ता है। अगर वह हर बात का ख्याल रखना शुरू कर दे तो वह गिरकर अपनी गर्दन तुड़ा बैठेगा।

'पहुँचने' का तरीका इससे भिन्न है। उसमें पैदल चलना होता है और उसमें पहले तरीके की अपेक्षा कुछ लाभ अधिक है। पहले तरीके में घोड़े या शिकारी की जिन्दगी को खतरा है। उसे बहुत ही शात और सँभला हुआ होना चाहिये। उसे भैसे, ज़मीन और हवा तक का पूरा ध्यान होना चाहिये। बंदूक बरतने में चतुर तो होना ही चाहिये। भैसा बड़ा अजीब पशु है। वह

कभी-कभी इतना मूर्ख भी होता है कि उसके समूह तक पहुँचकर कोई भी आदमी उनमें से कुछ एक का इकट्ठा शिकार भी कर सकता है। पर कभी-कभी वे इतना छिपते फिरते है कि, उन तक पहुँचने में बहुत अधिक चतुरता, अनुभव और सूझ-बूझ की जरूरत पड़ती है। हेनरी पास पहुँचने में प्रसिद्ध है और 'किटकासो' नाम का आदमी भैसो का 'पीछा करने' मे चतुर माना जाता है।

रूज़ ने रात को जो गड़बड़ मचाई, उसके बाद से फिर सुबह तक कोई गड़बड़ न हुई। अरापाहो लोगो ने भी किसी प्रकार की गड़बड़ न की और अगर की होगी तो हमारे दल के लोगों के चौकन्ना होने के कारण वे लोग अपने उद्देश्य मे सफल न हो सके होगे। अगले सारे दिन हलचल और उत्साह छाये रहे। आगे-आगे चलने वाला हेनरी दस बजे लगभग एकदम ही, "भैसे ! भैसे !" कहकर चिल्लाया और सामने के खड्ड में हमने भैसो का एक समूह चरते हुए पाया। हम लोभ न रोक सके। मैं और शॉ नीचे की ओर चल पडे। अपने सफर के घोडो पर हम ठीक से जमकर नही बैठे हुए थे, पर फिर भी पूरी तेज़ी के साथ घोड़ो को दौड़ाकर हम उन तक पहुँच ही गये। शॉ ने एक भैसे की बगल मे पहुँचकर, दौडते हुए ही, अपनी दुनाली बदूक से दोनो गोलियाँ उसकी बगल मे दाग़ दी। पास से गुजरते हुए मैंने उस भैसे को बहुत गुस्से मे आकर, अपने दुश्मन के विरुद्ध बढ़ते हुए देखा। शॉ का घोडा इधर-उधर उछल कर उसके हर वार को बचा रहा था। मेरा घोडा कुछ अधिक सरल या धीरे-धीरे बढ रहा था। बहुत देर बाद मै एक भैसे के नजदीक पहुँच गया और उसे पिस्तौल की सहायता से मार डाला। अपने शिकारो की पूँछें निशानी के रूप में काटकर हम और लोगो से आ मिले। यह सब पन्द्रह मिनट में ही हो गया। उस सारी सुबह बार-बार "भैसा ! भैसा !" की पुकार सुनाई देती रही। हर कुछ मिनट बाद नदी किनारे की फैली हुई चरागाहो मे अपने भारी सिर उठाये, पास आने वाले घुडसवारो को मूर्खता से देखते हुए, भैसे कभी अलग-अलग और कभी एक साथ ही उछलते हुए भाग निकलते और बाईं ओर की ऊँचाई की ओर बढ़ जाते। दोपहर के समय हमारे सामने का मैदान भैसो, कट्टड़ो और मादा भैसो आदि से, हज़ारो की सख्या मे, भरा हुआ दिखाई दिया। हमारे पास

पहुँचते ही ये सब भाग निकलते और हमे दूर तक का मैदान काला ही काला दिखाई देता। हमारा दल बहुत प्रसन्न और खुश था। दोपहर बिताने के लिए हम नदी किनारे एक अमराई मे रुके।

देस्लारियर ने हमारे सामने हिरण के मास का जो खाना रखा उस पर शॉ नाराज हुआ। उसने पूछा, "क्या ताजा मास कभी और के लिए बचाया गया है ?" भोजन समाप्त करके हम वही लेट गये। हेनरी की तेज आवाज ने हमें जगाया। हमने देखा कि वह गाडी के एक पहिये पर खडा हुआ नदी के परे मैदान की ओर कुछ देख रहा है। उसकी नजरो की दिशा में देखते हुए हमने एक बहुत बडी काली चीज देखी। लगता था जैसे काले बादलो पर कोई समूह सामने के टीलो पर से होकर गुजर रहा था। इसके पीछे एक और काली चीज, और भी तेजी से चलती हुई, दिखाई दी। यह कुछ छोटी थी और पहली चीज के पास आती जा रही थी। आगे का समूह भैसो का था और पीछे की टुकडी अरापाहो शिकारियो की थी। मैने और शॉ ने सबसे अच्छे घोडो पर काठियाँ कसी और दूसरे किनारे की ओर निकल चले। हम बहुत देर से पहुँचे। तब तक वे शिकारी भैसो के जत्थे मे घुलमिल कर अपना काम समाप्त कर चुके थे। अधिक नजदीक पहुँचकर हमने वहाँ चारो ओर बहुत अधिक शव पडे देखे। बाकी सारे जानवर इधर-उधर बिखर कर भाग गये थे। बहुत से शिकारी पहले दिन के परिचित ही दिखाई दिये। इनमे उन लोगो का मुखिया भी था। कुछ लोग अब भी भैसो का पीछा कर रहे थे। मुखिया एक भैस के पास झुका था। इसे उसने पाँच या छ' बाणो से घायल किया था। उसके पास खडी हुई उसकी औरत उसे पानी का प्याला दे रही थी। लौटकर फिर से नदी को पार कर हम अपने दल में जा मिले और साथ-साथ आगे बढने लगे।

अभी हम मील भर भी आगे न गये होगे कि हमें एक बहुत ही अजब नजारा दिखाई दिया। नदी के दाये किनारे पर बाईं ओर के टीलो तक और सामने निगाह की पहुँच मे चारो तरफ, भैसो का एक बडा समूह समुद्र के रूप में फैला हुआ दिखाई दे रहा था। इनका कोई भी किनारा दो सौ गज से अधिक दूर था। कुछ जगह वे इतने घने दीख रहे थे कि उनकी पीठे एक काले समतल मैदान के रूप मे दीख रही थी। इर्द-गिर्द के हिस्सो मे वे कुछ

अधिक बिखरे हुए थे। इन सबके बीच से धूल के बादल से उठ रहे थे। यहाँ कुछ भैंसे ज़मीन पर लोट रहे थे। कही-कही ये आपस मे भी लड़ रहे थे। हम उन्हें एक दूसरे की ओर दौड़ता हुआ देख सकते थे और उनके सीगों के टकराने और उनके चिल्लाने की आवाज़ हमें साफ सुनाई दे रही थी। शॉ और हेनरी हम से कुछ आगे चल रहे थे। मैने देखा कि शॉ ने रुककर अपनी बदूक थैली से बाहर निकाल ली। ऐसे नज़ारे को देखकर एक ही अंदाज़ा किया जा सकता था। उस दिन सुबह मैने अपनी पिस्तौलो का प्रयोग किया था। इस समय मेरा इरादा बदूक की परीक्षा करने का था। देस्लारियर की बदूक लेने के लिए मैं उसकी गाडी पर गया। वह वहाँ चिलम पीता हुआ आराम से बैठा मुस्करा रहा था।

"देस्लारियर! ज़रा मुझे अपनी बदूक तो दे दो!"

"ज़रूर, श्रीमान्!" कहकर देस्लारियर ने घोड़े रोके और गाडी के अन्दर घुस गया। वह बदूक निकालने की कोशिश करने लगा।

मैने पूछा "क्या यह भरी हुई है?"

"हाँ, बहुत अच्छी तरह भरी हुई है। आप इस से जरूर शिकार मारेंगे। यह बहुत सरल है।"

मैने उसे अपनी बदूक थमा दी और उसकी बंदूक लेकर शॉ के पीछे निकल चला।

शॉ ने पूछा, "क्या तुम तैयार हो?"

"आ जाओ!" मैने बढ़ते हुए कहा।

हेनरी बोला, "उस खड्ड में छिप जाओ! वे तुम्हें नही देख पायेंगे और तुम उनके पास तक पहुँच जाओगे।"

सामने का खड्ड एक खाई के रूप मे था। यह तिरछा, बढते हुए पशुओ तक, फैल गया था। हम इसके नीचे होते हुए आगे बढते रहे। अब यह उथला होने लगा। हम घोडों की गर्दनो पर झुक गये और अन्त में जब हमने देखा कि छिपना कठिन है, तो हम उस समूह की ओर तेज़ी से सीधे बढ चले। अब यह समूह हमारे निशाने की पहुँच मे ही था। इनके घेरे के बाहर की ओर अनेको काले-काले बूढे नर भैंसे बिखरे हुए थे। वे अपनी मादा भैंसो की रखवाली करते हुए चल रहे थे। गुस्से और अचरज मे भरकर ये हमारी

ओर देखने लगे और कुछ गज आगे बढ़ आये। तब फिर से लौटकर ये तेजी से भागे। इस के बाद सारे रेवड़ में ही खलबली मच गई और सब जानवर भाग निकले। सारा समूह हमसे दूसरी ओर जाकर जमा हो गया और एक ओर कुछ रास्ता खुल गया। हम इस बीच के रास्ते से आगे बढ़े। हमने अपने घोड़ो को काबू में रखा। हर क्षण यह गड़बड़ बढती गई। भैंसे हमसे कुछ दूरी पर हर तरफ जमा होने लगे। सामन और अगल-बगल मे, हम जिधर भी देखते, भैंसे ही भैंसे नजर आ रहे थे। धूल के बादलों ने उन्हें कुछ कुछ छिपा लिया था। भागते हुए भैंसो के हजारों खुरो की ठाप साफ सुनाई दे रही थी। अपनी ताकत को बिना पहचाने हजारों की सख्या मे भी ये जानवर भागते चले जा रहे थे, हालाँकि हम घुडसवार कुल दो ही थे। ऐसे समय अधिक देर काबू रखना कठिन था।

शॉ बोला, "मै सामने से बढ़ता हूँ और तुम बाईं बगल से बढो।"

वह उछला और फिर दीखना बन्द हो गया। मेरी कलाई के साथ एक भारी चाबुक बँधा हुआ था। इसे फटकारकर मैने घोड़े को तेजी से एड़ लगाई। वह तेजी से दौड़ चला। मै अपने सामने धूल के बादल के अलावा कुछ और नही देख पा रहा था। पर इतना जरूर जानता था कि सामने ही सैंकड़ो भैंसे इसमें छिपे हुए हैं। एक क्षण में मै इस बादल के बीच में छिप गया। धूल से मेरी साँस रुकने लगी। भागते हुए भैंसो की टपटपाहट ने मुझे जड़ बना दिया। पर मैं भी पीछा करने के नशे मे था। भैंसे के अलावा मुझे किसी और बात की चिन्ता न थी। बहुत जल्दी ही मुझे एक काला समूह सामने दिखाई देने लगा। थोडी देर बाद मै हर पशु को अलग अलग पहचानने लगा और उनके उठते खुरो और खड़ी पूँछो को साफ देखने लगा। अगले ही क्षण मैं इतना पास पहुँच गया कि अपनी बदूक से उन्हें छू सकता था। उसी समय अचानक ही उन सबके खुर चमके और पूँछें हवा में उठ गईं। पर तभी ये भैंसे कही धरती मे समा गये। इस क्षण का नजारा अब भी मेरे दिमाग में उसी तरह समाया हुआ है। मुझे याद है कि मैं किस प्रकार उस धूल में से उन पशुओ को खोजने के लिए आँखे गडाकर देख रहा था। हम अचानक ही एक खाई के किनारे पहुँच गये। उस समय मैं इसकी गहराई और चौड़ाई का ठीक से अनुमान न कर सका। पर जब मै इसमें से गुजरा तो मैंने पाया कि

यह चार गज गहरी और लगभग दुगनी चौड़ी रही होगी। यहाँ रुकना नामुमकिन था। मैं अगर रुक सकता तो अवश्य रुक जाता। इसलिए फिसलते, कूदते और लड़खड़ाते हुए घोड़ी नीचे उतरने लगी। तले की रेत गीली थी। यहाँ अचानक ही उसके घुटने झुक गये और मैं उछलकर उसकी गर्दन तक खिसक आया। शायद एक और झटके में सामने की भैंसों के बीच मे ही गिर जाता। परन्तु, वह घोड़ी एक ही क्षण में फिर से उठ खड़ी हुई और सामने के किनारे पर चढ़ने लगी। अब वह मैदान पर आ निकली थी। मैने पीछे मुड़कर देखा कि एक भैंसा बड़ी कठिनता से अपने अगले पाँव खाई के किनारे फँसाकर ऊपर तक उठने की कोशिश कर रहा था। आखिर मैं भैंसों के करीब आ पहुँचा। अब वे पहले की अपेक्षा कम घने हो गये थे। पर, मैं उन नर भैंसो के साथ ही था, जो हमेशा ही अपने समूह की रक्षा के लिए पीछे-पीछे चलते हैं। जब मै उन मे से गुजरा तो वे अपने सिर झुकाकर दौड़ने से पहले मेरी घोड़ी को चीर देने के लिए मुड़कर भाग पड़े। पर, क्योंकि वे पहले से ही पूरी तेज़ी से दौड़ रहे थे, इसलिए उनके हमले में पूरी तेज़ी न थी। मेरी घोड़ी उनसे भी अधिक तेज थी। इसलिए वे हर बार बहुत पीछे पड़ जाते थे। मैंने इस सारे रेवड़ मे से तुरन्त ही मादा भैंसो को पहचानना शुरू कर दिया। एक तो मेरे बिलकुल सामने ही आ पड़ी। यह मेरे मनपसन्द थी। इसलिए मैंने इसका पीछा करना शुरू किया। लगाम छोड़कर उसके कंधे के पास अपनी बंदूक ले जाकर मैंने गोली दाग दी। वह भी बिजली की भाँति घोड़ी पर लौट कर उछली। मेरी घोड़ी ने इस हमले को बचा लिया। परन्तु इस गड़बड़झाले मे वह आँखो से ओझल हो गई। तुरन्त ही मैंने एक दूसरी भैंस का पीछा करना शुरू किया और एक दूसरे के बाद दोनो पिस्तौलो से उस पर वार कर दिया। कुछ देर तक मैं उसे निगाह में रखकर बढ़ता रहा, पर अपनी बंदूक दुबारा भरते हुए मेरी निगाह उससे चूक गई। उसके बुरी तरह घायल होने का भरोसा करके मैंने अपनी घोड़ी को रोक लिया। रेवड़ के भाग जाने के बाद, और धूल के दब जाने पर, मैंने देखा कि एक अकेली भैंस बहुत भारी कदमो से दौड़ती हुई पीछे-पीछे चल रही है। कुछ ही देर मे मै उसकी बगल मे पहुँच गया। मेरे दोनो हथियार गोलियो से खाली थे। मेरी थैली में राईफल की गोलियाँ

जरूर थी। पर वे न तो बदूक में आ सकती थी और न ही पिस्तौल में। मैंने ये गोलियाँ ही बंदूक में भरकर चलाने की कोशिश की, पर ये नीचे सरक जाती थी। बंदूक छूटने की आवाज एक हल्के पटाके जैसी होती थी। अब मै भैंस के सामने होकर उसे लौटाने लगा। उसकी आँख मे अचानक ही चमक दौड़ गई और उसकी गर्दन झुक गई। उसने अपना सिर झुकाकर मुझ पर पूरी तेजी के साथ हमला कर दिया। मैं बार-बार उसके सामने पहुँचता और वह बार-बार उसी प्रकार हमला करती। पर आज मेरी घोडी भी अपने असली रूप मे आ चुकी थी। उसने अपने दुश्मन को हर कदम पर छकाया। अत मे भैंस थककर चुप खडी हो गई। वह अपनी कोशिशो में हार चुकी थी। उसकी जीभ मुख से बाहर लटकने लगी थी।

कुछ दूर तक चलने के बाद मै घोड़ी से उतरा, ताकि कुछ घास इकट्ठी करके अपनी बदूक मे भर कर एक रोक बना दूँ। अभी मै उतरा ही था कि वह भैंस फिर से तेजी के साथ मेरी ओर आई। मै फिर से उछलकर घोडी पर चढ गया। कुछ देर तक और इन्तजार करने के बाद मैने उस पर अपनी छुरी से ही हमला करने की सोची। पर मेरी घोडी इतनी पास जाने को तैयार न थी। अन्त में अपने पाजामो की झालरो में से कुछ बालो को निकाल कर मैंने बदूक को फिर से भरा और उनसे गोली को जकड़ दिया। तब पास जाकर मैने भैंस को बगल में फिर से गोली मार दी। वह तुरन्त ही मुर्दे के रूप में ज़मीन पर गिर पड़ी। मै यह देखकर हैरान रह गया कि जिसे मैंने मारा था वह भैंस न होकर एक मजबूत भैंसा था। यह भैंसा बरस भर का रहा होगा। उसकी तेजी पर अधिक देर अचरज न करके, मैंने उसकी गर्दन चीरकर जीभ को बाहर निकाल लिया और अपनी काठी के पीछे लटका लिया। मेरी यह भूल ऐसी थी, जिसे कोई भी अनुभवी शिकारी इस पीछे में कर बैठता।

अब पहली बार मैने आराम से चारो ओर का नजारा देखा। सामने का मैदान लौटते हुए पशुओ के कारण काला दिखाई दे रहा था। दोनो ओर से भैंसे कतारे बाँधकर नीचे, नदी पर, उतर रही थी। अरकसास नदी यहाँ से तीन-चार मील दूर होगी। मैं उस ओर मुड चला। बहुत देर बाद सामने बहुत दूरी पर, मैंने सफेद चादर से ढकी छोटी-सी गाड़ी और घुडसवारो की

पंक्ति को पहचान लिया। पास आने पर मैंने शॉ की सुन्दर और चमकदार पोशाक को भी पहचान लिया। मैं भी दल में जा मिला। मैंने शॉ से उसकी सफलता के बारे में पूछा। उसने एक गाय को दो गोलियों से घायल किया था। दोपहर बाद हम दोनों में से कोई भी शिकार के लिए तैयार न था। हमारे पास फालतू गोलियाँ भी न बची थीं। इसलिए उस घायल जानवर को हेनरी के हाथों को छोड़कर शॉ चला आया था। हेनरी ने एक ही निशाने में उसे मारकर, उसका मांस घोड़े पर लाद दिया था। वह भी उसी समय आ पहुँचा।

हमने नदी के पास डेरा डाला। रात अँधेरी थी। सोते समय हमें चारों ओर से भेड़ियों और भैंसों की मिली-जुली आवाजें आ रही थीं, मानों बहुत दूरी पर समुद्र तट के साथ टकरा रहा हो।

—:०:—

२५ : भैंसों का डेरा

हमारे डेरे में जिमगुर्नी से अधिक चुस्त और एलिस से अधिक सुस्त कोई और न था। ये दोनो ही बिल्कुल ही उलटी आदतों के थे। एलिस सुबह तब तक न जागता था, जब तक उसे मजबूर न किया जाय और जिम पौ फटने से बहुत पहले ही जाग जाता था। उस दिन भी हमें उसकी आवाज़ ने जगा दिया। वह एलिस को कह रहा था, "उठो, बेटा ! जल्दी उठ जाओ। तुम खाने और सोने को छोड़कर और कुछ काम नही जानते। अब ज़रा जल्दी से उठकर बाहर आओ, नही तो मै तुम्हारी चादर खीच लूँगा।"

जिम के इन शब्दों में कुछ और भी विशेषण मिले जुले थे। उनका असर तुरन्त हुआ। ऐलिस नाक से कुछ गुनगुनाता हुआ बाहर निकला और तुरन्त कपड़े उतारकर बैठ गया। अपनी बाहो और टाँगों को फैलाकर जँभाई लेता हुआ यह सीधा खड़ा हो गया, मानो चारो दिशाओं मे देखभाल करना उसके लिये ज़रूरी था। तुरन्त ही देस्लारियर ने आग जला ली। घोडों और खच्चरों को खूँटो से खोल दिया गया, ताकि वे पास की चरागाह मे आराम से चर सकें। जब हम नाश्ते के लिए बैठे तो अभी सुबह का धुँधला खतम नहीं हुआ था। सूर्य की पहली किरणें दीखने से पहले ही हम फिर से घोड़ों पर चढ़कर आगे बढने लगे थे।

"वह सफेद भैंसा !" मुनरो चिल्ला पड़ा।

शॉ बोला, "अगर मुझे घोडे से भी हाथ धोना पडे, तब भी मैं उसके पीछे इसे दौड़ाकर, उसका शिकार अवश्य करूँगा।" उसने अपनी बन्दूक का खोल उतारा और तुरन्त उधर भाग निकला। हेनरी पीछे से चिल्लाया, "शॉ, रुक जाओ ! रुक जाओ ! तुम्हारा घोड़ा बेकार में ही चोट खा जाएगा। अरे भाई ! यह तो सफेद बैल है, भैसा नही।"

किन्तु शॉ पहले ही बहुत दूर निकल गया था। यह बैल किन्ही सरकारी गाड़ियो मे से पीछे छूट गया था और वही किसी नीची पहाड़ी की तलहटी में खड़ा हुआ चर रहा था। उससे कुछ ही दूरी पर भैंसे भी चर रहे थे। ये शॉ

को आता देखकर तितर-बितर हो कर भागने लगे और पहाड़ियों के ऊपर चढ़ने लगे। उनमें से एक भैंसा अपनी तेजी और डर के कारण बुरी आफ़त में जा फँसा। तलहटी पर एक छोटा-सा दलदल वाला हिस्सा था। यह भैंसा उसी में फँस कर खुद को निकालने की कोशिश करने लगा। हम सब इस जगह तक बढ़ आए। उसका बड़ा शरीर इस कीचड़ में आधा धँसा हुआ था। कीचड़ इसकी ठोड़ी तक बढ़ आया था। भैंसे की गर्दन अब भी कीचड़ के बाहर थी। हमारे पास पहुँचते ही भैंसे ने पूरी ताकत से बाहर निकलने की कोशिश शुरू कर दी। वह इधर-से-उधर हिलता हुआ बहुत हताश होकर खुद को कीचड़ से निकालने लगा। परन्तु जितना ही वह बाहर निकलने की कोशिश करता, उतना ही वह और धँसता चला जाता। हमने उसकी पूँछ मरोड़कर उसे उत्तेजित करना चाहा। पर, कुछ लाभ न हुआ। बहुत यत्न करने के बाद भी वह डूबता ही गया। अन्तिम बार उसने हमारी ओर बहुत ही क्रोध भरी आँखों से देखा। अन्त में एलिस अपने घोड़े से उतरा और येगर नाम का अपना हथियार लेकर उसने भैंसे के दिल पर दाग़ दिया। वह फिर से अपने घोड़े पर जा चढ़ा। अपने मन को तसल्ली देने के लिए वह भी एक भैंसे का शिकार कर चुका था। शायद सारे सफ़र में पहली और आखिरी बार उसका हथियार इसी समय बरता गया था।

सुबह बहुत ही सुहानी और हवा इतनी साफ थी कि सामने क्षितिज की ओर फैला हुआ पीला-पीला मैदान साफ दिखाई दे रहा था। शॉ का दिल शिकार पर आया हुआ था और वह हम से बहुत आगे चल रहा था। थोड़ी देर में ही हमने सामने भैंसों की एक लम्बी कतार पूरी तेजी से हरे-भरे मैदान के एक टीले पर चढ़ती हुई देखी। शॉ उसके पीछे उछलता हुआ पहुँच गया। उसकी लाल कमीज दूर से पहचानी जा सकती थी। वह जल्दी ही उनके बीच पहुँच गया। और आखिरी भैंसे के टीला पार करने से पहले हमने देखा कि उसने सबसे पिछले भैंसे पर हमला कर दिया। तुरन्त ही एक धुआँ उठा और बन्दूक की आवाज सुनाई दी। वह भैंसा उसकी ओर पलटा। पर, अब तक वे दोनों ही हमारी निगाह से छिप चुके थे।

दोपहर तक हम आगे बढ़ते रहे। तब हमने अरकंसास नदी के किनारे कुछ देर आराम किया। उस समय शॉ हमें दूर की एक पहाड़ी की तलहटी

मे धीरे-धीरे बढता हुआ नजर आया। उसका घोड़ा थक चुका था। उसने अपनी काठी जमीन पर रक्खी और लेटने लगा। मैने देखा कि उसके घोडे के पीछे दो भैसो की पूछे लटक रही थी। अभी हमने चरने के लिए घोडे ढीले छोडे ही थे कि हेनरी मुनरो को साथ लेकर, बन्दूक हाथ में लिए हुए, चुपचाप एक ओर को निकल गया। हाँ, मै और रूज़ देस्लारियर द्वारा परोसे गए खाने की चर्चा करते हुए गाडी के पास ही बैठे थे। अभी हमने खाना खत्म ही किया था कि मुनरो को लौटते देखा। उसने बताया कि हेनरी ने चार मोटी भैसें मारी है और उसे मास ढोने के लिए घोड़े लेने भेजा है। गाँ अपने और हेनरी के लिए एक-एक घोडा लेकर मुनरो के साथ चला गया। कुछ ही देरी बाद तीनो वापिस आए। उनके घोड़े उन भैसो के चुने हुए मांस से लदे थे। हमने दो भैंसो का मांस अपने लिए रखकर बाकी मुनरो और उसके साथियो को दे दिया। देस्लारियर मास के सामने जम गया और तुरन्त ही उसे लम्बे-लम्बे टुकडो मे काटकर सुखाने योग्य बनाने लगा। इस काम मे वह किसी आदिवासी स्त्री से कम चतुर न था। रात से बहुत पहले ही भैसे की खाल की रस्सियाँ चारो ओर फैला दी गईं और उनपर मांस लटका दिया गया, ताकि धूप और खुली हवा मे वह सूख सके। हमारे दूसरे साथी अपने काम में इतने चुस्त न थे। उन्होने बहुत देर में अपना काम निपटाया। पर, बहुत रात वीतने से पहले ही उनके यहाँ भी हमारे डेरे जैसा ही नज़ारा खड़ा हो गया था।

हमारा इरादा यहाँ कुछ दिन रहकर सीमात की यात्रा की पूरी तैयारी कर लेने का था, क्योकि यह सफर एक महीने से भी अधिक चलना था। अगर यह सफर इससे भी दुगना होता, तो भी हेनरी की अकेली बन्दूक ही हमारे लायक सामान दो दिन मे जुटा देती। फिर भी, हमें यहाँ इतने दिन रुकना जरूरी था, ताकि मास भली प्रकार सूख सके। इसलिए हमने तम्बू गाड़कर पक्का डेरा बना लिया। हमारे नये साथियो के पास ऐसा कोई प्रबन्ध न था। इसलिए उन्होने अपने सामान को घास पर आग के चारो ओर ही जमा कर लिया। इस बीच हमारे पास हँसी, मज़ाक और आनन्द मनाने के अलावा और कोई काम न था। हमारा डेरा नदी से कुछ ही गज की दूरी पर था। यहाँ नदी रेत के फैलाव के अलावा और कुछ न थी। दोनो ओर

के चौड़े समतल मैदान नदी तटो के बराबर ही फैले हुए थे और उनसे बहुत दूर छोटी-छोटी, एक जैसी, पहाडियाँ फैली हुई थी। चारो ओर घास ही घास फैली हुई दिखाई देती थी। कोई पेड़ तक निगाह मे न आता था। हाँ, नदी के बीचो-बीच के टापू मे कुछ पेड अवश्य उगे हुए थे। इस पर भी यह नज़ारा हमारे लिए कम आकर्षक न था। हर सुबह और शाम, दो बार, भैंसे कतारें बाँधकर पहाडियो में से निकलते हुए, एक जलूस से रूप मे, नदी तक पानी पीने आते। हमारे सभी आनन्द उनके बल पर ही होते थे। बूढा भैंसा सबसे अधिक भद्दे किस्म का जानवर होता है। उसे देखते ही करुणा का भाव मिट जाता है। मादा भैंसे उनकी अपेक्षा बहुत छोटी और सभ्य दिखाई देती है। इस डेरे पर रहते हुए हमने मादा भैंसें मारने का काम हेनरी पर ही छोड दिया, क्योकि वह अकेले ही ज्यादा अच्छी तरह और ठीक ढग से हमारे योग्य सामान जुटा सकता था। हाँ, हमने बडे भैंसो का शिकार खुद ही करने का फैसला किया। उनमे से यदि हज़ारो भी मार दिए जाते तो भी उनकी नस्ल की कोई खास हानि न होती। मादा भैंसो की अपेक्षा नर भैंसो की सख्या बहुत अधिक थी। मादा भैंसो की खालें ही व्यापार और आदिवासियो के घर आदि के काम आती है। इस लिए लोग अक्सर उन मादाओ का ही शिकार अधिक करते है। तभी दोनो की सख्या मे यह गडबड है।

हमारे घोडे थक चुके थे। इसलिए अब हम पैदल ही शिकार करने लगे। दोपहर के भोजन के बाद हम लोग चिलम पीते हुए और हँसी मज़ाक करते हुए लेटे होते। कोई एक आदमी खडा होकर बहुत दूर नदी के पास मैदान की ओर देखता और बताता कि एक काली-सी कोई चीज़ धीरे-धीरे हमारी ओर आ रही है। वह उसी समय एक कश खीच कर सुस्ताता हुआ उठता और अपनी बन्दूक उठाकर और अपनी गोली-बारूद की थैलियाँ कधे पर लटकाकर निकल चलता। दूसरी ओर की रेत को पार करके वह कुछ दूर तक निकल जाता। यहाँ रेत बहुत फैली हुई थी और पानी बहुत कम था। दूसरा किनारा ऊँचा था और सीधा भी। इसके ऊँचे किनारो पर लम्बी घास उगी हुई थी। अपने हाथो से इमे हटाता हुआ वह व्यक्ति बीच मे से झाँकता हुआ और झूमता हुआ कोई भैंसा पा सकता था। पानी पीने आते समय उन भैंसों की चाल बहुत ही सुस्ती और मस्ती भरी हो जाती थी। इन भैंसो के नदी

तक आने के रास्ते निश्चित से बने हुए हैं। इन्हें नदी तक पहुँचता हुआ देख कर शिकारी किनारे पर कुछ दूरी पर छिपकर बैठ जाता है। यहाँ से भैंसे नदी पर उतरते है। रेत पर चुपचाप छिपकर बैठा हुआ शिकारी ध्यान लगाकर सुनता रहता है। तब उसे भैंसो की पास पहुँचती हुई चाल की भारी आवाज़ सुनाई देने लगती है। एक ही क्षण मे वह सामने की हरी और ऊँची घास मे कोई हिलती हुई चीज़ आती देखता है। सबसे पहले उसे बहुत बड़ा काला सा सिर निकलता हुआ दिखाई देता है। तब साथ ही सीग और गर्दन बाहर आती हुई दिखाई देती है। फिसलता और गिरता हुआ भैंसा नदी के किनारे आ निकलता है। पानी पीते हुए उसकी आवाज़ साफ़ पहचानी जा सकती है। अब वह अपना सिर उठाता है। इस समय उसके मुँह से पानी की बूँदे टपक रही होती है। वह जड़-सा बनकर खतरे से बेखबर होकर वहीं खड़ा रहता है। इसी समय शिकारी अपनी बन्दूक को चुपचाप चला देता है। बैठे हुए शिकारी के घुटने खड़े रहते हैं और उसकी कोहनी इन पर टिकी रहती है। वह बहुत ठीक तरह से निशाना बाँध सकता है। बन्दूक के हत्थे को वह कंधे पर टिका लेता है और उसकी आँख बन्दूक की नाली पर टिक जाती है। अब भी वह गोली नही दागता। अब वह भैंसा दूसरी ओर के रेतीले किनारे पर पहुँच जाता है और अपनी अगली टाँगे फैलाकर एक खास जगह को नंगा कर देता है। यहाँ पर बाल नही होते। यह जगह कधे के एक एक दम नज़दीक है। शिकारी यही पर गोली दागने की तैयारी करता है। बहुत निशाना साधकर वह आखिर बन्दूक का घोडा दबा देता है। तुरन्त ही गोली निशाने पर जा लगती है और उस नगी जगह पर एक काला लाल-सा निशान दिखाई देने लगता है। इधर एक तेज आवाज चारो ओर गूँज जाती है, उधर भैंसा काँप कर मौत के पजे मे जा फँसता है। वह नही जान पाता कि यह मौत कहाँ से आ रही है? वह अभी गिरता नही, धीरे-धीरे आगे भारी कदमों के साथ बढने लगता है। इससे पहले कि वह रेत पर बहुत आगे जा सके, वह रुकता है, लड़खड़ाता है और उसके घुटने झुकने लगते है। अब उसका सिर नीचे को झुक जाता है। उसी समय वह सारा बोझ एक तरफ को गिर पड़ता है और बिना किसी संघर्ष के वह भैंसा एक किनारे गिरकर चुपचाप मर जाता है।

भैंसे का इस प्रकार का शिकार, और पानी पीने आते हुए उस पर निशाना साधना, शिकार का सबसे आसान तरीका है। इस तरह घाटियों और खाइयो मे, पहाड़ियो के पीछे और कही-कही मैदान मे भी, उन तक सरकते हुए पहुँचा जा सकता है। यह शिकार बहुत आसान होता है परन्तु, कुछ अवसरों पर यहाँ भी बहुत सावधानी की जरूरत होती है। बहुत सधा हुआ शिकारी ही इस कठिन मौके पर सफल हो पाता है। इस लिहाज से हेनरी बहुत असाधारण रूप मे मजबूत और ताकतवर था। मैने कई बार उसे भी बहुत अधिक थके हुए और जख्म खाए हुए लौटते देखा था। बहुत बार झाडियों में सरकते हुए उसकी पोशाक काँटो से भर गई थी। कभी-कभी वह अपने चेहरे के बल जमीन पर उलटा लेट जाता था और इस हालत में बहुत दूर तक घिसटता हुआ आगे बढता था।

इस जगह रुकने के अगले दिन हेनरी इसी प्रकार दोपहर के शिकार पर गया। शॉ और मै तब तक डेरे पर ही रुके रहे, जब तक हमे दूसरे किनारे पर पास पहुँचते हुए भैंसे न दिखाई दे गए। तब हम उन पर हमला करने के लिए नदी के पार पहुँच गए। वे बहुत नजदीक थे। इससे पहले कि हम किनारे पर पहुँच कर कही अपने को छिपा पाते, वे चौकन्ने हो गये और गोली की पहुँच से दूर रहते हुए ही भाग निकले और नदी के साथ-साथ दाहिनी ओर मुड़ गए। किनारा चढकर मै भी उनके पीछे भागा। वे बहुत तेजी से चल रहे थे। इससे पहले कि मै गोली की पहुँच के अन्दर पहुँच पाता, वे एकदम मुड़ कर मेरे सामने अड़ गए। एक क्षण के लिए वे चौकन्ने होकर देखने लगे। उनके मुड़ने से पहले ही मै धरती पर मुँह के बल सीधा लेट गया। वे घास पर लेटे मुझे घूरते हुए कुछ देर खडे रहे और फिर मुडकर पहले जैसे ही चल पडे। अब तुरन्त उठकर मै तेजी से पीछा करने के लिए दौडा। एक बार फिर, वे मुड़े और मैं उसी तरह फिर से लेट गया। इस प्रकार तीन-चार बार दोहराने के बाद मै उनसे सौ गज की दूरी के अन्दर ही पहुँच गया। इस बार जब मैंने उन्हें फिर से घूमते हुए देखा, बैठकर बन्दूक उनकी ओर साध दी। इनके बीचो-बीच एक बहुत बड़ा भैंसा था। इतना बडा भैंसा मैने कभी नही देखा था। मैने उसके कंधे के पीछे गोली चला दी। उसके दो साथी तुरन्त भाग निकले। वह भी उनके पीछे भागने लगा, पर थोड़ी ही देर में खड़ा हो गया

और कुछ देर बाद इस तरह आराम से लेट गया, मानो कोई बैल जुगाली करने के लिए बैठ गया हो। पास जाकर मैने उसे देखा। वह मर चुका था।

जब मैने पीछा शुरू किया था, इस मैदान मे एक भी जानवर नही दिखाई दे रहा था। परन्तु इस समय तक हजारो भैसे एक साथ दिखाई देने लगे थे। न जाने ये कहाँ से उमड़ आए थे? अपने से पचास गज की दूरी पर मैने एक काला फैलाव दाएँ और बाएँ बहुत दूर तक फैला हुआ देखा। मै इनकी तरफ़ बढा। इनमे से किसी को भी मेरे पहुँचने से कोई परेशानी नही हुई। इस सारे समूह में भैसे और बछड़े ही थे। पर, कुछ बूढे भैंसे इसे घेर कर पीछे-पीछे चल रहे थे। मै ज्यो ही नजदीक पहुँचा, उन बूढे भैंसो ने मेरी ओर मुडकर इतनी भयंकर नजर से देखा कि मैने आगे जाने का निश्चय छोड दिया। मै जहाँ खडा था, वहाँ से भी निशाना साध सकता था। इसलिये मैं जमीन पर बैठकर उनकी हरकते देखने लगा। कभी तो वे सब खडे हो जाते और उनके सिर एक ओर को उठ जाते। और, कभी वे सामने की ओर दौड़ने लगते, जैसे सभी को एक-सी ही बातें सूझ गई हो। उनके खुर और सीग टकराते हुए दीखने लगते। तुरन्त ही बहुत दूरी पर मैंने बहुत-सी गोलियाँ चलने की आवाजें सुनी और ये आवाजें बार-बार दुहराई जाने लगी। कुछ ही देर बाद कुछ और भारी तरीके की आवाजे आईं। मैने पहचान लिया कि ये भारी आवाजे हेनरी की दुनाली बन्दूक की थी। हेनरी जब भी अपनी बन्दूक से काम लेता, हमारे सारे डेरे के लिए मांस जुट जाता और उसे लाद कर लाना पडता। इसलिए मै तैरकर नदी के पार गया और शिकारियो के पास आ पहुँचा। भैसे अब भी बहुत दूर मैदान पर दिखाई दे रहे थे। वे बहुत दूर लौट चुके थे। अब भी मैदान पर दस या बारह शव इधर-उधर बिखरे पड़े थे। अपने हाथो में छुरी लिए हुए हेनरी अपने काम में जुटा हुआ था और एक खास भैंस में से बहुत ही चुना हुआ मास निकाल रहा था।

शॉ मुझ से अलग होने के बाद कुछ दूर तक नदी के नीचे की ओर किनारे-किनारे किन्ही और भैंसो की टोह मे निकल गया था। बहुत देर बाद उसने मैदान पर एक बडे भारी भैंसो के समूह को फैले हुए देखा और तभी उसे हेनरी की गोलियो की आवाज सुनाई दी। किनारे पर चढ़कर, घास में से सरकता हुआ, वह आगे बढा। अभी वह बहुत आगे न बढ़ा था कि उसने

हेनरी को मैदान मे, भैंसो से घिरे होने पर भी, तना हुआ खडा पाया। हेनरी अपने पूरे जोश मे था। उसे यह पता न था कि कोई उसे देख रहा है। इस लिए वह पूरी तरह तन कर खड़ा हुआ था। उसका एक हाथ कमर पर और दूसरा बन्दूक के कुन्दे पर टिका हुआ था। उसकी आँखें चारों ओर के उस समूह को देखने में लगी हुई थी। बीच-बीच में वह कोई एक भैंस अपने लिए चुन लेता और अपनी बन्दूक उठा कर उसे मार डालता। तब फिर चुपचाप बन्दूक घर कर पहले जैसे ही खड़ा हो जाता। भैंसें इस प्रकार निडर थी, जैसे वह उनमें से ही एक हो। नर भैंसे अब भी एक दूसरे के साथ टक्करें मारते हुए, शोर करते हुए और जमीन पर लोटते हुए खेल रहे थे। मरी हुई भैंस के चारो ओर कुछ और भैंसे जमा होकर उसके जख्म को सूँघने लगते। तब वे बची हुई भैंसो के पीछे आकर उन्हे खदेड़ने की कोशिश करते। जब-तब कोई बूढा भैंसा हेनरी की ओर मुँह उठाकर अचरज के साथ देखने लगता। पर उनमें से न तो कोई भागने की कोशिश करता और न ही उस पर हमला करता। कुछ देर तक शॉ घास में ही लेटा रहा और अचरज मे डूबकर इस अद्भुत दृश्य को देखता रहा। बहुत देर बाद धीमे-धीमे आगे बढ़कर उसने हेनरी को पुकारा। हेनरी ने उसे अपने पास बुला लिया। अब भी भैंसे डरे नही। अपने मरे हुए साथियो के पास वे उसी तरह जमे रहे। हेनरी अब तक उतनी भैंसें मार चुका था, जितनी हमारे लिए आवश्यक थी। शॉ ने एक मुर्दा भैंस के पीछे बैठकर पाँच नर भैंसो का निशाना साधा, पर तब तक और भैंसें वहाँ से गायब हो गई थी।

इस प्रकार की भैंसो की जड़ता और मूर्खता इस स्थिति से बिल्कुल भिन्न होती है, जबकि वे भयंकर और खूँखार रूप मे सामने आते है। हेनरी इन सब बातो को समझता था। उसने इन सब बातो को एक विद्वान् के समान ही समझा था। इस प्रकार के शिकारो मे वह पूरा मजा लेता था। भैंसे उसके अपने ही साथियो जैसे थे और उनके बीच मे खड़ा होकर वह कभी अपने को अकेला अनुभव नही करता था। उसे उनके शिकार मे अपनी चतुरता पर सदा नाज रहता था। वह बहुत ही नम्र तबीयत का आदमी था। सीधा-सादा और सरल होने पर भी, उसे शिकार के मामले मे अपने बड़प्पन और महत्त्व का पूरा-पूरा ध्यान था। पर वह अपने विषय मे कितना ही ज्यादा बढ़ा-चढ़ाकर सोचता

हो, यह उस अनुमान से कम ही था, जो कोई और शिकारी या दर्शक उसके विषय मे कर सकता था। मैने केवल एक ही वार उसके चेहरे पर घृणा का भाव देखा था। वह भी तव, जब दो नौसिखियों ने पहले-पहल भैसे का शिकार किया और हेनरी को उस शिकार के गुर समझाने लगे। वे वताने लगे कि 'पहुँच' किस प्रकार की जाती है ? हेनरी भैसो और उनके शिकार को अपने अधिकार का विषय समझता था और उसके विषय में हर वात की पूरी जानकारी रखता था। उसे सवसे अधिक वुरा तव लगता था, जब कोई विना ही मतलव के मादा भैसो को मारे। सवसे वढ़कर पाप उसकी नज़र में यह था कि वेवात के ही कटड़े मार दिए जाएँ।

हेनरी और रूज़ की आयु एक वरावर थी। वे दोनों लगभग तीस वर्ष के थे। पर हेनरी लगभग दुगने शरीर का था और ताकत में उससे छ: गुणा अधिक था। हेनरी का चेहरा आँधियो और तूफानो से पक चुका था; रूज़ का चेहरा शरावों आदि के कारण पीला पड़ा हुआ था। हेनरी हमेशा ही आदिवासियों या भैसो के वारे मे वात करता था; रूज़ को हमेशा ही थियेटर आदि की वात सूझती थी। हेनरी का जीवन कठिनाइयो और सघर्षो मे वीता था, रूज़ को कभी भी उनका सामना न करना पड़ता था। वह ख्याली-पुलावों और वहमों मे पलने वाला जीव था। हेनरी कभी भी किसी स्वार्थ में उलझना न जानता था, रूज अपने स्वार्थ के अलावा किसी और वात से मतलव न रखता था। पर, हम इस पर भी उसे खोना न चाहते थे; क्योकि वह हमारे यहाँ मजाकिए या विदूषक का काम देता था। अगर वह न होता तो शायद हमारे डेरे में रौनक समाप्त हो जाती। पिछले हफ्ते के दौरान वह काफी मोटा हो गया था। यह वात अजव भी न थी, क्योकि उसकी भूख वहुत ज्यादा वढ़ी हुई थी। सुवह से रात तक वह खाता ही रहता था। आधे से अधिक समय तो वह अपने लिए कोई न कोई खास चीज वनाता रहता था। और कॉफी का वर्तन तो उसके हाथों आठ या दस वार वरता जाता था। उसका निराश और उतरा हुआ चेहरा खुद ही दूसरो के लिए मजाक का साधन वन जाता। उसकी आँखें उभरी हुई सी लगती और उसका दिल और हौसला अव खूव वढ़ा हुआ लगता था। वह दिन भर हँसता जाता और कहानियाँ सुनाता रहता था। वह केवल जिमगुर्नी से घवराता था और इसीलिए सदा हमारे डेरे के पास मँडराता

रहता था। उस बेचारे को हमेशा ही सरल जिन्दगी बिताने को मिली थी, और उसके पास मज़ाक का काफी भण्डार जमा था। इसलिए उसकी बात हँसाने वाली होती। दूसरो को हँसाने के लिए वह अपनी मज़ाक उड़वाने को भी तैयार रहता। इस पर भी वह हमारे लिए मुसीबत का कारण तो था ही। उसे सबसे बुरी आदत थी हमारे खाने-पीने के सामान को दिन भर टटोलते रहने की। वह किसी का भी कहना नही मानता था। चाहे उस पर हम कितना ही नाराज़ हो लें, वह अपनी चालाकियो से बाज़ न आता था। जब तब उस पर किसी न किसी का गुस्सा उतरता रहता। वह इन मौको पर चुप होकर सह लेता; परन्तु कुछ ही देर बाद फिर कोई न कोई चोरी करता हुआ पकड़ा जाता। खासकर भोजन के सामानो की चोरी उसकी विशेष आदत थी। उसे तम्बाकू पीने की लत थी, पर उसके अपने पास वह था नही। हम उसे उसकी जरूरत के मुताबिक दे दिया करते थे। पर हर मौके पर थोड़ा-थोड़ा करके ही देते थे। शुरु-शुरु मे हमने उसे आधा सेर तम्बाकू एक साथ ही दे दिया था। पर हमें यह परीक्षण महँगा पड़ा। क्योकि उसने कुछ ही देर मे तम्बाकू और चाकू दोनो ही गुम कर दिए और हमसे माफी माँगने लगा।

हम इस डेरे पर दो दिन रह चुके थे। और काफी सारा मास ले जाने के योग्य हो गया था। पर इसी समय एक भयंकर आँधी आ टूटी। शाम के समय सारा आकाश स्याही के समान काला पड़ गया और नदी किनारे की लम्बी घास तूफान की पहली झपेट के साथ उठने और गिरने लगी। मुनरो और उनके साथी अपनी वन्दूके लाकर हमारे तम्बू मे ही रख गए। उन लोगो ने कोई वचाव न पाकर एक ऐसी आग जलाई, जिस पर वर्षा का भी असर न होता। वे खुद को भैंसे की खालो के लवादो मे लपेट कर जमीन पर उसके चारो ओर वैठ गए, ताकि आने वाले तूफान का मुकावला किया जा सके। हमारा गाडीवान अपनी गाड़ी के नीचे छिप गया था। हमारे तम्बू मे मैं, शॉ, हेनरी और रूज़ जमा थे, पर इस सबसे पहले सारे सूखे हुए मांस को एक ओर जमा करके, उसे भैंसो की खालो से ढक दिया गया और ज़मीन पर जकड़ दिया गया। नौ वजे के करीव यह तूफान बुरी तरह टूट पडा। चारो ओर घुप अँधेरा छाया हुआ था। मैदान मे सब तरफ़ भयकर धाराएँ फूट निकली।

हमारा तम्बू भी कुहरे और फुहारो से भर गया। यह कुहरा अन्दर बैठे हुए आदमी को गीला करने लगा। हम एक-दूसरे को बिजली की चमक में ही देख पा रहे थे। इस चमक में हमने देखा कि चारो ओर सब कुछ पानी-ही-पानी में डूब गया था। हमें अपने तम्बू का डर था। पहले एक-दो घण्टे तक तो यह बिल्कुल ठीक खडा रहा। आखिर इसकी चोटी पर से कपड़ा फट गया और बाँस ऊपर निकल गया। अब तम्बू झुकने और चूने लगा। हमे घुटन-सी महसूस होने लगी। अपनी बन्दूकें पकड कर हमने उन्हे सीधा खडा कर लिया, ताकि अगर तम्बू गिरे ही तो हम उसके कपडे को खड़ा कर सकें। इस प्रकार इस हालत मे ही रात का बहुत-सा समय बीत गया। इस सारे समय तूफान की तेज़ी मे कोई कमी न आई। लगता था, जैसे यह बढता ही जा रहा था। कुछ ही देर में हमारे नीचे भी पानी दो या तीन इँच गहरे जोहड के रूप में जमा हो गया। इसलिए आधी से अधिक रात भर हम ठण्डे पानी का अनचाहे स्नान का मजा लेते रहे। इस सब के बावजूद रूज़ का हौसला न गिर पाया। वह आँधी और तूफान की परवाह न करके हँसता, गाता और सीटियाँ बजाता रहा। सच तो यह था कि उस रात उसने अपने बहुत से अपराधो का बदला चुका दिया था। हम सब लोग न जाने किन ख्यालो में डूबे बहुत चुपचाप बैठे थे, पर वह अकेला ऐसे समय भी घण्टो तक हँसी और मज़ाक करता रहा। लगता था जैसे, उसमे कोई जानवरो जैसी ताकत आ गई थी। सुबह लगभग तीन बजे हम लोग, इस घुटन की बजाय बाहर आना अच्छा समझकर, तम्बू से निकल आए। अब हवा चलनी बन्द हो गई थी। फिर भी वर्षा लगातार गिर रही थी। इस अँधेरे मे भी हमारे दूसरे साथियो की आग अब तक जल रही थी। हम भी उनके पास ही बैठ गए। हमने ताज़गी के लिए कुछ कॉफी बनाई। जब सबने अपने प्याले दुबारा भरने चाहे, तब पता चला कि रूज़ अपना हिस्सा पीने के बाद, काफी बची-खुची सारी कॉफी को भी पीकर समाप्त कर चुका था।

सुबह सूर्य खुलकर निकला। हमे प्रसन्नता हुई। इस समय हमारी हालत हँसी के लायक थी। हमारे कपडे बुरी तरह गीले हो चुके थे, पर हल्की हवा और गर्म धूप ने तुरन्त उन्हे सुखा डाला। हमे बडी जकड सी लगने लगी। अपनी जकडाहट को दूर करने के लिए हम सारे दिन भर, मैदान में, शिकार

के लिए घूमते रहे। हमने दो तीन भैंसे मार भी डाले।

हेनरी के अलावा मै और शॉ भी शिकार में कुछ माहिर थे। इस दिन सुबह मुनरो ने भी एक भैंसे को भगाने की कोशिश की थी, किन्तु उसका घोड़ा कभी शिकार के पास न पहुँच सका। शॉ उसके साथ ही निकला था। अधिक अच्छे घोड़े पर सवार होने के कारण वह तुरन्त ही भैंसो के रेवड़ में जा निकला। उसे चारो ओर केवल भैंसे और कटडे ही दिखाई दिए। उसने अपने घोडे को रोक लिया। एक बूढा भैंसा पीछे से भागता हुआ आ रहा था। उसकी ओर मुडने ही शॉ ने उसका रास्ता काटा और अपनी बन्दूक तानकर सामने से उसके गुज़रने पर उसके कधे के नीचे, एक बगल मे, निशाना दाग़ दिया।

कुछ पास के पेडो पर गीधो का एक समूह घूम रहा था। यह स्थान हमारे डेरे के बिल्कुल पास ही एक टापू पर था। पिछले सारे दिन भर हमने उनके बीच में एक चील को बैठे देखा था। वह अब भी वहीं बैठी थी। रूज ने यह घोषणा की कि आज वह उस पक्षी को मार डालेगा। यह कहकर उसने देस्लारियर की बन्दूक ली और उस पक्षी के शिकार के लिए निकल पड़ा। यह पक्षी अमरीका का राष्ट्रीय पक्षी है। इसलिए रूज का काम देश-द्रोह के समान था। हमे उम्मीद ही थी कि उस पक्षी का, इसके हाथों, कुछ भी बिगाड न होगा। वह जल्दी ही लौट आया और उसने बताया कि वह पक्षी को खोज नहीं पाया। पर, फिर भी, उसने एक गीध को मारने का दावा किया। जब हमने उससे सबूत माँगा, तो वह कहने लगा, "मुझे उसके मरने का पूरा यकीन नहीं है। वह घायल जरूर हुआ था, पर फिर भी वह उड़ गया।"

रूज फिर बोला, "फिर भी अगर आप चाहें तो मै उसका एक पख लाकर दिखा सकता हूँ। क्योंकि मेरे गोली चलाने के बाद उसके बहुत से पंख वहाँ गिर गए थे।"

हमारे डेरे के बिल्कुल सामने एक और टापू झाडियो से ढका हुआ था। इसके परे पानी गहरा था। इसके सामने ही दो या तीन धाराएँ बह रही थी। यहाँ पर एक दोपहर को मैं नहा रहा था कि उसी समय एक सफेद भेड़िया, जो कि किसी बडे कुत्ते के समान ही था, टापू मे से निकलकर भागा और मेरे से कुछ ही दूरी पर रेत पर आकर उछलने लगा। मैने उसकी लाल

आँखें और उसके मुख के चारों ओर की मूँछें साफ देख लीं। वह बहुत ही भद्दी शक्ल का था। उसका सिर काफ़ी बड़ा, पूँछ भरी हुई और चेहरा बहुत भद्दा था। मेरे पास न बन्दूक थी और न ही पत्थर थे। मैं उस पर मारने के लिए किसी चीज़ को खोज ही रहा था कि अचानक डेरे की ओर से गोली चलने की आवाज़ आई और उसके सामने की कुछ रेत उड़ गई। इस पर वह हल्का-सा उछला और तेज़ी से रेतीले मैदानो पर एकदम भाग निकला। असल बात यह थी कि आसपास के मैदानो पर भैंसो के इतने शव जमा हो चुके थे कि हर तरफ से भेडिये यहाँ आकर इकट्ठे हो गए थे। हेनरी और शॉ के शिकार की जगह उनकी आरामगाह बन गई थी। मै अक्सर ही नदी के पार जाकर उन्हें भोजन के समय देखता। किनारे पर लेटकर उन्हें पूरी तरह देखा जा सकता था। इनमें तीन किस्म के भेड़िये थे। सफेद और सलेटी रंग के भेडिये बहुत बडे थे। तीसरी किस्म के साधारण मैदानी भेड़िये कुत्तो जैसे ही दिखाई देते थे। ये सब एक ही शव के चारों ओर जमा होकर चीखते और लडते, किन्तु इस पर भी इतने चौकन्ने रहते थे कि मै कभी भी इतना नज़दीक न जा सका जिससे उन पर निशाना साध सकूँ। जब कभी भी मैने कोशिश की वे तुरन्त ऊँची घास मे भाग कर छिप गए। इस जगह चारों ओर गीध मँडराते फिरते थे। भेडियो के किसी शव पर से अलग होते ही ये उस पर आ टूटते और उसे इस बुरी तरह से ढक लेते कि एक भी बन्दूक की गोली उनमें से दो या तीन की जान लेने के लिए काफी रहती। ये पक्षी बीसियो की संख्या में हमारे डेरे के ऊपर भी मँडराते रहते और इस प्रकार एक हल्की छाया भी हमारे डेरे पर कर देते। हमारे चारो ओर भेड़िये और गीध बढते ही जाते और कभी-कभी दो-तीन चील भी वहाँ दावत उडाने आ जाते। मैने डेरे के पास ही एक भैंसे का शिकार किया था। उस रात उन भेडियों ने बहुत चीख-पुकार मचाई। सुबह तक वह शव खोखला हो चुका था।

यहाँ चार दिन रहने के बाद हमने यह डेरा छोडने की तैयारी की। अब हमारे पास छः मन के लगभग सूखा मास था। चार मन के लगभग मांस हमारे दूसरे साथियों ने भी जमा कर लिया था। यह सारा मास आठ या नौ भैंसो के चुने हुए हिस्सों में से ही था। सारे लादू जानवर लाद लिए गए। घोड़ों और खच्चरो पर भी काठियाँ और जुए कस लिए गए। अन्त में रूज भी

तैयार हो गया और हम लोग सफर पर बढ चले। अभी हम मील भर ही बढ़े होंगे कि शाँ को अपने चाकू छूट जाने का ध्यान आया। वह डेरे की ओर उसे खोजने के लिए लौटा। वहाँ दिन में भी कुछ अँधकार-सा छाया हुआ था। अभी नदी किनारे की आगें बुझी नही थीं। चारो ओर की घास भी घोड़े और आदमियों के पाँवो से कुचली हुई दिखाई दे रही थी। साफ़ था कि अब भी हमारे डेरे की निशानियाँ मौजूद थी। हमारे यहाँ से चलते ही सैंकड़ों जानवर और पक्षी वहाँ जमा हो गए थे। जलती आगो के चारों ओर बीसियों भेड़िये इधर-उधर घूम रहे थे। और भी अनेकों पास के मैदान में जमा हो रहे थे। शाँ को दुबारा पहुँचते देख वे सभी वहाँ से भाग निकले। कुछ सामने के रेतीले तट पर से होते हुए हरे मैदानो की ओर भाग गए। ऊपर आसमान मे बहुत अधिक गीध जमा होकर मँडरा रहे थे। डेरे के पास ही मेरे मारे हुए भैंसे पर सैंकड़ों गीध जमा थे। शाँ के पहुँचने पर उन्होंने भी अपने पंख फड़फड़ाए और अपनी गर्दन उठाकर खतरे की ओर देखा। परन्तु, वे उसे छोड़ना नहीं चाहते थे। जब शाँ आग के पास चाकू खोज रहा था, उस समय उसने देखा कि कुछ दूरी पर सामने की पहाड़ियो पर सैंकड़ो भेड़िये वहाँ से उसके जाने की प्रतीक्षा कर रहे थे। अपने चाकू की खोज में असफल होने पर वह फिर से घोड़े पर सवार होकर गीधों और भेड़ियों को आनन्दपूर्वक खाते हुए छोड़ कर हमारी ओर चला आया।

—:०:—

२६ : अरकंसास के किनारे पर

सन् १८४६ के सितम्बर महीने मे उत्तरी अरकंसास नदी के इलाके ने पहली बार किसी गोरी सेना को गुज़रते देखा। सान्ताफे की ओर बढते हुए जनरल कीर्नी ने यही रास्ता चुना था। जब हम यहाँ पहुँचे तो सेनाओ की मुख्य टुकडियाँ पहले ही जा चुकी थी। प्राइस नाम के सेनापति की टुकड़ी अभी रास्ते मे ही थी, क्योकि उन्होने सीमात बहुत दिन बाद छोड़ा था। इस समय हमे प्रतिदिन ही एक या दो टुकडियाँ रास्ते में मिल जाती थी। इन लोगो से बढ कर कभी कोई और सेना अपने काम के प्रति इतना प्यार लेकर नही बढ़ी होगी। अगर सेना की अच्छाई हुक्म और नियन्त्रण मानने मे है, तो ये लोग सबसे निकम्मे थे। परन्तु इन लोगो ने सारे ही अमरीका की चढ़ाइयो में हिस्सा लिया था इसलिए इन्हें अच्छे सैनिक न मानना उचित न होगा। इन्होने युद्ध की हर कठिनाई मे से विजय पाई थी। यह काम उनकी सैनिक योग्यता से ही हो सका था। डोनिफन की सेनाओ ने 'न्यू मैक्सिको' के इलाके में से साधारण यात्रियो की भाँति रास्ता तय किया था। वे आजकल के सैनिक न लगते थे। जब जनरल टेलर ने डोनिफन को उसकी सफलता पर बधाई दी, तो उसके उत्तर से साफ पता चलता है कि यह सेना कितने गुणों वाली थी और इसके सैनिको और अधिकारियो में कितना प्यार था।

"मै कोई तौर-तरीके और चालें नही जानता था। यह लडके मेरे पास आते और हुक्म माँगते। जब मै अच्छा मौका देखता इन्हे हमला करने की आज्ञा दे देता। ये लोग तुरन्त ही तीर की भाँति निकल जाते। बस, मै इतना ही जानता हूँ।"

यह वकील किन्ही भले मानसो मे समझौता कराने लायक अधिक था, बजाय अपने सैनिको को हुक्म देने के। उसके नीचे काम करने वाले इस प्रकार के चरित्र और शिक्षा वाले अनेक लोग थे, जो उससे अधिक योग्यता से सेना का नेतृत्व कर लेते।

साक्रामेन्तो की लड़ाई मे उसके सैनिक हर दृष्टि से घाटे में थे। मैक्सिको-

वासियो ने अपने ठिकाने ठीक से चुन लिये थे। वे एक ऐसी घाटी के पास खडे हो गये थे, जो उनके अपने आदिवासी शहर की ओर बढ़ती थी। वहाँ सारा इलाका खाइयो और तोपखानो से भरा हुआ था। वे लोग सख्या मे भी पाँच गुने थे। उसी समय अमरीकावासियो के ऊपर एक चील मँडराने लगी। उनमे चारों ओर एक प्रसन्नता छा गई। शत्रु का तोपखाना बरसना शुरू हुआ। पहले तो ये लोग रुके रहे। पर, तब हुक्म मिलते ही चिल्लाते हुए आगे की ओर भाग निकले। आगे रास्ते मे ही एक शराबी अफसर ने रुकने का हुक्म दिया। सैनिको ने इस हुक्म को मानने में आना-कानी दिखाई। तभी पीछे से एक साधारण सैनिक चिल्ला उठा, 'आगे बढ़ो!' अब सारी सेना शेरो की भाँति दुश्मन पर टूट पडी। चार सौ शत्रु वही पर मार डाले गये और बाकी भाग निकले। उनकी सभी चीजें हथिया ली गई। उन चीजों मे रस्सियो से भरी एक गाडी भी थी, जो कि अमरीकन कैदियो को बाँधने के लिए लाई गई थी।

ये सैनिक और दूसरी सेनाओ के मुकाबले के थे। प्राइस के जिन सैनिकों से हम अभी मिले थे, वे सब भी उसी तरह के सैनिक थे। एक दिन सुबह, जब हम एक चौडे चरागाह में उतर रहे थे, हमने घुड़सवारो का एक दल कुछ दूरी पर देखा। हम यहाँ आराम करना चाहते थे। पानी खोजने के लिए हमें नदी के किनारे की ओर मुडना पड़ा। वह जगह पगडण्डी से आधा मील दूर थी। यहाँ हमने कपड़े फैलाये और ज़मीन पर ही बैठ कर तम्बाकू पीने लगे। शॉ बोला, 'अब जरूर गड़बड़ होगी। देखो, ये लोग यहाँ फिर आ गये। हमे चैन नहीं मिलेगी।" सच ही आधे से अधिक सैनिक अपनी बड़ी टुकड़ी से अलग होकर आ गये थे। पहले ने आते ही हम से हाल-चाल पूछा और घोडे से उतर कर जमीन पर बैठ गया। बाकी लोग भी उसके पीछे-पीछे आ गये और उसके समान ही जमीन पर बैठ गये। बाद मे आने वाले कुछ सैनिक घोड़ों पर ही बैठे रहे। ये सब सेंट लुई से भरती किये गये थे। इनमें से कुछ लोग बहुत ही असभ्य और कुछ कपटी दिखाई देते थे। पर अधिक लोग अच्छे और सभ्य दिखाई दे रहे थे। ये लोग सादे सैनिको की अपेक्षा अधिक सभ्य थे। उनके जूते अवश्य घुटनो तक लम्बे थे। उन्होंने पोशाकें फौजी और सादी—दोनो प्रकार की—पहनी हुई थी। इसके अलावा

उनकी काठियो से तलवारें और पिस्तौलें भी लटक रही थी, उन्होने हमारे दल का उद्देश्य पूछा और हमसे भैंसे पाने की बात भी जाननी चाही। वे यह भी जानना चाहते थे कि उनके घोडे सान्ताफे की यात्रा कर भी सकेंगे या नही ?

इसके तुरन्त बाद ही प्रश्नो की एक नई बौछार हम पर होने लगी। दर्शक ने हमसे हमारे आने की जगह, जाने की जगह और खुद हमारे बारे में बहुत से सवाल करने शुरू कर दिये। उसने बहुत मोटे करघे की पोशाक पहनी हुई थी। उसका चेहरा बुखार के कारण उतरा हुआ था और सका ऊँचा और मजबूत चेहरा बडी तिरछी निगाह से युक्त था। घोडे की भद्दी काठी पर बैठे हुए वह और भी भद्दा लग रहा था। उसके पीछे भी उसी तरह के बहुत-से लोग खडे थे। इन्हे भी सीमान्त के आसपास के इलाके से भरती किया गया था। हमे कुछ देर बाद इनकी असभ्यता का पूरा अन्दाजा हो गया। ये हमारे चारो ओर भीड़ के रूप मे जमा हो गये और हमारे दूसरे अतिथियो को हटा कर आगे बढने लगे।

उनमे से एक ने मुझ से पूछा, "क्या आप कप्तान है ?"

दूसरे ने पूछा, "आप यहाँ किस मतलब से आये है ?"

तीसरा आदमी पूछ बैठा, "तुम घर लौट कर कहाँ बसोगे ?"

चौथा जवाब देता सा बोल पड़ा, "मेरे अन्दाज में तुम व्यापारी हो" इन सब के साथ ही एक और आदमी ने मेरे पास बढकर बहुत धीमी आवाज मे सवाल किया, "तुम्हारे साथी का क्या नाम है ?"

हर नये आने वाले ने ये ही सवाल पूछने शुरू कर दिये। अन्त में हम लोग तंग आ गये। हमारे उत्तर बडे उलटे-सीधे निकलने लगे। इससे वे सैनिक भी घबरा गये। हमने सुना कि वे हमे गालियाँ दे रहे थे। हम बैठे चिलम पीते रहे। रूज अपनी ज़बान बिना रुके चलाता रहा। वह अपनी सैनिक विशेषता को भूला नही था, इसलिए वह इन सैनिकों मे घुल-मिल कर बातें करने लगा। बहुत देर बाद हमने उसे अपने सामने ज़मीन पर बैठा कर बताया कि उसे शायद दुभाषिये, या हमारी बात समझाने वाले, का रूप धारण करना पड़ेगा। वह यह सुन कर बहुत खुश हुआ। हमने उसे देखा, वह इतनी तेज़ी से बात बनाने लगा कि वह बौछार हमारी ओर से बहुत

हद तक उस पर पडने लगी। कुछ ही देर बाद इस भीड के पीछे चार घोड़ों से खीची जाती हुई एक तोप भी आ गई। उसका लाने वाला घोड़ों पर ही बैठा हुआ, गर्दन सीधी करता हुआ बोला, "तुम लोग कहाँ से आये हो और तुम्हारा यहाँ क्या मतलब है ?"

एक टुकड़ी का कप्तान भी इन लोगो के साथ ही हमारी ओर आ गया था। उससे घबरा कर कुछ लोगो ने तुरन्त ही उसे जगह दे दी। एक जमीन से उठता हुआ, सुस्ता कर बोला, "अच्छा भई, अब तो बहुत देर हो रही है। हमें भी आगे बढ़ना उचित होगा।"

उनमे से एक आदमी कुछ दूरी पर सुस्ता रहा था। वह वही से बोला, "मै तो अभी नही चलूँगा।"

उसने फिर कहा, "कप्तान ! बहुत जल्दी मत मचाओ।"

कप्तान ने उत्तर दिया, "अच्छा तुम्हारी ही सही। हम कुछ देर और प्रतीक्षा कर लेंगे।"

बहुत देर बाद वे लोग जिस तरह आये थे, उसी तरह लौटने शुरू हो गये। हमने भी चैन की साँस ली। सबसे अधिक सुख देस्लारियर को मिला, क्योकि भोजन ठडा पडता जा रहा था। उसने तुरन्त ही सफेद गलीचा बिछा कर भोजन परोस दिया और कॉफी के लिए रकाबियाँ और प्याले सामने फैला दिए। रूज तो ऐसे मौको के लिए तैयार ही रहता था। वह सबसे पहले जगह हथिया कर बैठ गया। अपनी पुरानी आदत के कारण वह हर एक के नाम के आगे 'श्री' जोड़ना अधिक उचित समझता था। परन्तु इस प्रकार देस्लारियर को जिन्दगी मे पहली बार, 'श्री देस्लारियर' के नाम से बुलाया गया। परन्तु, इतने पर भी रूज के लिए उसकी नफरत कम न हुई। रूज सदा ही रसोई के कामो में उल्टे-सीधे सुझाव दिया करता था। देस्लारियर को या तो हँसना आता था या गुस्से मे बरसना। वह बीच की बात नही जानता था। वह रूज से कुछ कहता तो नही था, पर दिल ही दिल में वह बुरा अवश्य मानता था। भोजन पर बैठ कर रूज बहुत खुश हो जाता था। इस समय वह भैंसे की खाल के लबादे मे ही बैठा हुआ था। उसने अपनी बाँहें ऊपर चढा ली और अपने सामने की धारा पर ही चौकड़ी मार कर बैठ गया। उसने अपने पास

कॉफी का प्याला रखा और अपना चाकू तैयार कर लिया। ज्यो ही उसने भैंसे के मास को सामने रखा देखा, उसकी आँखे फटी सी रह गईं। देस्लारियर भी सामने ही आ बैठा। हमने भोजन देख कर पूछा, "आज रोटियाँ काफी क्यो नही है?"

देस्लारियर के चेहरे के भाव पलटने लगे। उसने गुस्से मे रूज की ओर, बहुत कुछ कहते हुए, इशारा किया। रूज को बहुत अचरज हुआ। उसकी टूटी-फूटी अग्रेजी से हम पहचान गये कि रूज ने हमारे खाने के लिए रखी गई सारी रोटियाँ पहले ही साफ कर दी थी। रूज भौचक्का सा होकर देखने लगा। बहुत देर बाद उसने कहा कि यह सब झूठ है और यह भी वह नही समझ पाया कि देस्लारियर के क्रोध का कारण क्या है? बातो ही बातों में हगामा-सा मच गया। रूज की अग्रेजी के सामने देस्लारियर कुछ बोल न पाया। वह गुस्से मे वहाँ से उठकर चला गया। वह जाते-जाते खच्चरो को दी जाने वाली एक गाली भी देता गया।

अगली सुबह हमने एक भैस और दो कटडों के साथ एक बूढे भैंसे को मैदान पर बढते हुए देखा। उसके पीछे चार-पाँच भेड़िये चरागाह की लम्बी घास में से निकलते हुए आये। वे इस टोह में थे कि कब कोई कटड़ा बिछुड कर पीछे रह जाए। भैंसा पूरी निगरानी रखता हुआ बढ रहा था और रुक रुक कर पीछा करने वालो को घूरता जाता था।

ज्योही हम दोपहर के आराम के स्थान पर पहुँचे, हमने पाँच या छ. भैंसे एक ऊँचे टीले पर खड़े हुए देखे। तेजी से घोडे दौडा कर हम उस जगह तक आ गये, जहाँ हमने रुकना था। यहाँ अपनी काठी जमीन पर गिरा कर, मैने घोडा चरने को छोड़ दिया। यहाँ से मै उस टीले तक चुपके-चुपके छिपता हुआ पहुँचा और इसकी ढाल की ओर से बढने लगा। इसीं ढलान पर मै छिपकर लेट गया। मै अपने से पाँच गज दूर के एक भैसे पर निशाना साधने की कोशिश करने लगा। चमकती हुई बन्दूक की नाली उन पशुओ की निगाह में पड गई और वे भाग निकले। वे इतने नजदीक थे कि उन पर ऐसी हालत में गोली चलाना अच्छा न होता। इसलिए चोटी पर पहुँच कर मैने सामने की उजाड़ और ऊबड-खाबड़ धरती पर उनका पीछा शुरू किया। यहाँ बहुत गहरी एक खाई, बीचो-बीच, पड़ती थी। इसके दो ओर से छोटी-छोटी दो खाइयाँ

इसमे उतरती थी। वे भैंसे इधर-उधर बिखर गये और मै उनमे से बहुतो को न देख पाया। मेरी निगाह मे केवल एक ही भैंसा और एक ही भैंस रह गये थे। कुछ देर वे किनारे के साथ-साथ दौडते रहे। कभी-कभी वे किसी गढे मे छिप जाते और फिर सामने आ जाते। अन्त में वे खुले मैदान में निकल आये। यहाँ हरियाली न थी। यहाँ तक कि घास भी धूप मे झुलस कर सूख गई थी। जब-तब वह भैंसा मेरी ओर मुड कर देख लेता। मै भी उसी क्षण जमीन पर गिर कर जड़ बन जाता। इस तरह मैंने उनका पीछा लगभग दो मील तक किया। तब मुझे अपने सामने ही गुर्राने की भयंकर आवाज़ सुनाई दी। मैंने देखा कि सौ से भी अधिक भैंसे एक टीले मे छिपे खड़े थे। ये भी उधर ही भाग गये। ये उनसे न मिल कर बीच में से सीधे निकलते गये। यह देख कर मैंने इनका पीछा छोड़ दिया और उन भैंसो के समूह की ओर सरकता हुआ बढने लगा। बहुत पास पहुँच कर मै उन्हें देखने के लिए जमीन पर बैठ गया। उन्हें किसी प्रकार घबराया हुआ न पा कर मेरा हौसला बढ गया। ये सब वहाँ चर नही रहे थे। वहाँ घास भी नही थी। इन्होने इस जगह को खेल के मैदान के रूप मे चुना था। उनमे से कुछ ज़मीन पर लोट रहे थे और कुछ आवाज करते हुए एक दूसरे के साथ सिर टकरा रहे थे। कुछ और मुर्दो से बन कर चुपचाप खड़े थे। उनके शरीर पर सिर्फ गर्दन की पीठ पर ही बाल थे। उनके पुराने बाल बसत मे झड़ गये थे और नये अभी निकले नही थे। कभी कोई भैंसा अचानक ही मेरी तरफ आ कर मुझ पर देखने लगता और तब वह अपने साथी को मुड़कर टक्कर मारने लगता। फिर वह धरती पर लेट कर लोटने लगता और अपने खुर आसमान की ओर उछालने लगता। पूरी तरह सन्तुष्ट होकर वह आधा खड़ा होकर मेरी ओर देखने लगता। इस तरह देखते हुए उसका चेहरा धूल मे छिप जाता। कभी वह अचानक अपने चारो पाँवो पर धूल झाड़ता हुआ उठ खडा होता और अपनी पुरानी हरकतो पर सोचने जैसी शक्ल बना कर अपनी गर्दन नीचे झुकाये खड़ा रहता। मैंने मन-ही-मन कहा, "तुम सबसे अधिक भद्दे हो। तुम्हारा मर जाना ही अधिक अच्छा है।" ऐसा कहते हुए मैने उनमे से सबसे भद्दे भैंसे को चुन कर उस पर गोली चला दी। एक-दूसरे के बाद मैने तीन भैंसे, इसी तरह, मार डाले। दूसरे भैंसे इससे बिलकुल भी न घबराये और पहले जैसे ही आनन्द मनाते

रहे। हेनरी ने हमें बताया था कि भैंसे के गुस्सा होने पर भी अगर आदमी बिलकुल शांत बन कर पड़ा रहे, तब उसे अधिक ख़तरा नही रहता। इसलिए मै भी बिना हिले-डुले ज़मीन पर बैठे-बैठे बंदूक भरने लगा। जब मै इस तरह काम मे लगा हुआ था, तभी एक हिरण अचानक ही दौड़ता हुआ मुझ से पचास गज़ की दूरी पर आ गया। पतली गर्दन पीछे की ओर मुड़े हुए छोटे-छोटे सींग और मेरी ओर ताकती हुई उसकी बडी-बडी काली आँखे, उसकी सुन्दरता का अंदाजा दे रही थीं। वह सामने खड़ा रहा। उन भद्दे भैंसो के पास खड़ा हुआ वह ऐसे दीख रहा था, जैसे कोई सुन्दर लड़की लुटेरों या दढ़ियल डाकुओं के बीच आ फँसी हो। उसके सामने भैंसे पहले से भी अधिक बुरे दीखने लगे। मैने एक और भैंसे पर निशाना साधना चाहा, पर देखा कि मेरे पास एक भी गोली नही बची थी। अब मेरी यह बंदूक लोहे की किसी भी छड़ के बराबर कीमत की ही हो गई थी। घायल भैंसो मे से अब तक एक-एक भैंसा गिरने से बच रहा था। मै उसकी ताकत समाप्त होने और गिरने की इन्तज़ार करता रहा। वह मेरी ओर देखता हुआ, अब भी वैसे ही खड़ा था। हेनरी की सलाह की उपेक्षा करके मै उसकी ओर बढा। बहुत सारे भैंसे मुड़ कर मेरी ओर देखने लगे। पर अब भी उस घायल भैंसे ने मुझ पर कोई हमला न किया। मैं एक गहरी घाटी के किनारे पहुँच गया, ताकि हमले की हालत में वहाँ छिप सकूँ। यहाँ से मैने घूमकर एक पत्थर भैंसो की ओर फैंका, ताकि उन में कुछ हलचल मचे। वे टस से मस न हुए। उनके न डरने पर मैं तंग आ गया। तब अपनी टोपी को उछालता और चिल्लाता हुआ मै उनकी ओर तेज़ी से भागा। इस पर वे इकट्ठे हो कर भाग निकले। मरे हुए और घायल भैंसे पीछे ही रह गये। जब मै डेरे की ओर मुडने लगा, घायल भैंसा भी लडखडा कर गिर पडा और मर गया। लौटते हुए मेरी चाल कुछ तेज़ हो गई। मुझे यह ख्याल आ गया कि पौनी लोग भी इधर ही होगे और कही वे मुझ पर हमला न कर बैठे। मैने रास्ते मे दो-तीन कमज़ोर भैंसो के अलावा और कोई जीवित चीज़ न देखी। जब मै डेरे मे पहुँचा तो साथियो को आगे के कूच के लिए तैयार पाया।

शाम के समय हम नदी के तट से कुछ ही दूरी पर रुके। आधी रात के समय जब हम सब सो रहे थे, मेरे सबसे पास के साथी ने अपने हाथ से छूकर

मुझे जगाया। पर, साथ ही चिल्लाने से मना कर दिया। तारे चमक रहे थे। मैंने अपनी आँखें खोली और दूसरी ओर जलती हुई आग के पास एक बड़े भारी भेड़िए को घूमते और कुछ सूँघते हुए देखा। अपने कम्बल से हाथ निकाल कर मैंने अपनी बंदूक का खोल निकाला। मेरी इस हरकत से वह भेड़िया भाग निकला। मैंने भी उछल कर पीछे से गोली चला दी। वह मुझ से तीस गज़ की दूरी पर रहा होगा। उस चुप्पी में गोली की इस गूँज ने सबको जगा दिया। उनमें से एक बोल पड़ा, "तुम ने उसे मार लिया है।"

मैंने कहा, "नहीं, मैंने नहीं मारा। वह तो उधर दौड़ता जा रहा है। वह देखो, नदी के साथ-साथ।"

"तब वे दो रहे होंगे! क्या तुम नही देख रहे कि वहाँ एक मरा पड़ा है?"

हम वहाँ तक गये और हमने देखा कि वह भैंसे की एक सफेद खोपडी पड़ी थी। मैं निशाना चूक गया था। बुरी बात तो यह हुई थी कि मैंने इन मैदानों के सफर का एक नियम तोड़ डाला। रात के समय गोली की आवाज़ दुश्मन को खींच लाने के लिए बहुत काफी होता है।

सुबह घोडो को कस कर सब लोग तम्बाकू पीने से निबट कर चलने के लिए तैयार हो गये। सुबह की सुन्दरता ने सब में उत्साह भर दिया था। एलिस भी उत्साह से भर गया था। जिमगुर्नी अनेक कहानियाँ सुनाने मे लगा हुआ था। भैंसे रास्ते में भरे हुए थे। कुछ देर बाद इन का एक बड़ा समूह बाईं ओर के पहाड़ो की ओर भागता दिखाई दिया।

शॉ बोला, "यह मौका चूकने लायक नही है।" हमने अपने घोड़ो को एड़ लगाई और पूरी तेज़ी के साथ उनके पीछे भाग निकले। शॉ ने दोनो गोलियो से दो भैंसे मार गिराये। मैंने सारे रेवड़ मे से एक भैंसे को अलग कर लिया और उस पर गोली चला दी। इस पिस्तौल की छोटी-सी गोली ने बहुत गहरा वार किया, पर उसका असर तुरन्त न हुआ। भैंसा बहुत दूर तक भागता चला गया। मैंने बार-बार उस पर बची हुई पिस्तौल तानी। तीन या चार बार चलाने पर भी, यह ठीक से न चली। इसे थैले में रखकर खाली पिस्तौल को भरना शुरू किया। मैं अब भी भैंसे की बग़ल मे चल रहा था। उसके जबड़ो से झाग निकल रही थी। उसकी जीभ बाहर निकल आई थी।

पिस्तौल भरने से पहले ही वह मुझ पर उछला और तेजी से पीछा करने लगा। मेरे लिए दो ही रास्ते रह गये थे, या तो मै भाग निकलूँ या मारा जाऊँ। मैने भागना शुरू किया और भैंसा मेरा पीछा करने लगा। इसी बीच मै पिस्तौल भर चुका था। मेने मुड कर देखा कि भैंसा मेरे घोडे की पूँछ से अब पाँच-छ: गज की दूरी पर ही था। ऐसे समय गोली चलाना वेकार रहता, क्योकि खोपडी पर चलाई गई गोली टकरा कर चपटी पड जाती है। बाईं ओर को झुक कर मैंने अपनी घोड़ी को पूरी तेजी के साथ उधर ही मोड़ लिया। भैंसा अन्धा हो कर वढ रहा था, इसलिए वह न मुड सका। मैने पीछे मुड़ कर देखा, उसकी गर्दन और कंधे सामने आ गये थे। इसलिए काठी पर वैठे-वैठे ही मुड कर मैने एक गोली तिरछी दिशा में, उसके शरीर मे से होती हुई, चला दी। मेरा पीछा छोड कर वह तुरन्त ही जमीन पर गिर पडा। कोई अग्रेज यात्री ऐसी हालत को खतरे की हालत मान वैठता है। पर यह उसकी गलती है। भैंसा ऐसी दशा में कभी भी बहुत देर तक पीछा नही कर सकता। यह भी केवल दो-तीन मिनट ही और पीछा कर पाता।

अब हम एक ऐसे इलाके में आ गये थे, जहाँ हमें चारो ओर से चौकन्ना रहना जरूरी हो गया था। हम रात में पहरा बारी-बारी से देने लगे और सभी साथी अपनी वंदूक भर कर और उसे बगल मे रख कर सोने लगे। एक दिन सुबह हम लोग चौंक गये, जब हमने एक वडे आदिवासी डेरे के निशान देखे। सौभाग्य से यह हम से एक सप्ताह पहले ही उजाड हो गया था। अगली शाम हमने कुछ अधिक ताजा आगे देखी। इससे हमे कुछ बेचैनी हुई। अन्त में हम 'कैंचेज' पहुँचे। यह बहुत खतरनाक जगह है। यहाँ रेतीली पहाड़ियाँ, खाइयाँ और फटाव जगह-जगह मिलते है। यहाँ हमने 'स्वान' नाम के उस गोरे की कब्र देखी, जिसे यहाँ पर पौनी लोगो ने मारा था। इस समय उसकी कुछ हड्डियाँ ही यहाँ पडी रह गई थी, क्योकि आदिवासियो और भेड़ियो ने इन्हें कई बार छेडा था।

अगले कुछ दिन तक हमे प्राइस की सेनाओ की कुछ टुकड़ियाँ मिलती रही। उनके घोड़े अक्सर छूट कर हमारी तरफ आ जाते। एक दोपहर हमें उनके तीन छूटे हुए घोड़े नदी के किनारे चरते हुए मिल गये। शाम को जब हम डेरा डालने के लिए रुके, तो जिम ने बताया कि आस-पास और भी घोड़े

दिखाई दे रहे हैं। इस समय काफी अँधेरा और ठंड हो गई थी। हलकी-हलकी बरसात भी होनी शुरू हो गई थी। हम बाहर निकल आये और घंटा भर पीछा करने के बाद नौ घोडो को पकड लाये। उनमे से एक पर काठी और लगाम सजी हुई थी। उस पर पिस्तौलें और कम्बल आदि भी टँगे हुए थे। सुबह जब हमने यात्रा शुरू की, तो हमारा यह कारवाँ पहले से अधिक अच्छा लगने लगा। हम चलते रहे। तभी दोपहर बाद पीछे से तीन घुड़सवार दौड़ते हुए आये और उन्होने अपने दल के सभी घोडे वापिस माँगे। हमने उन सब को ही लौटा दिया हालाँकि एलिस और जिम इस बात के विरुद्ध थे।

हमारे घोडे इस समय तक थक चुके थे। हमने उन्हें शेष दिन-भर आराम देना तय कर लिया। दोपहर के समय हम नदी के किनारे एक घास के मैदान मे उतरे। खाना खाने के बाद शॉ और हेनरी शिकार पर निकल गये। हमारे और साथी डेरे के आस-पास ही सो रहे। मैं लेट कर गाड़ी की छाया में कुछ पढता रहा। ऊपर देखते ही मैंने पाया कि मुझ से लगभग एक मील दूर मैदान मे एक अकेला भैंसा चर रहा है। मैं चुपचाप अपनी बदूक लेकर उस ओर चल पडा। ज्यो ही मै उसके पास तक आया, मै ज़मीन पर सरकने लगा और उससे सौ गज़ के दूरी तक पहुँच गया। मैं यहाँ घास पर बैठ कर तब तक इन्तज़ार करने लगा, जब तक वह घूम कर मौत का वार सहने के लिए तैयार न हो जाए। वह काफी बूढ़ा और सधा हुआ था। उस मौसम के प्यार और लड़ाइयो को वह पूरा कर चुका था। इस समय वह थका हारा, सारे समूह से अलग होकर, अपनी खोई ताक़त को दुबारा हासिल करने के लिए चर रहा था। वह बहुत ही पतला पड़ चुका था। उसकी गर्दन भी झुर्रियो से भरी पडी थी। उसकी खाल हाथी की खाल से भी अधिक मोटी और खुरदरी हो चुकी थी। उस पर जगह-जगह कीचड़ लिपटा हुआ था। घूमते हुए उसकी एक-एक पसली साफ दिखाई दे रही थी। वह एक उदास और प्यारहीन असम्य की भाँति भटकता हुआ नज़र आ रहा था। मुझे पहले-पहल पहुँचता देख कर उसने बहुत भयकर नज़र से ताका। पर, वह फिर से चरने लगा, जैसे उसे मेरी परवाह ही न थी। कुछ ही देर बाद अपनी होश सँभालते ही उसने फिर से सिर उठाया और एकदम बहुत तेजी से मेरी ओर बढ़ा। मुझे तुरन्त ही भागने की सूझी। परन्तु इससे बहुत बुरा परिणाम निकलता।

इसलिए मैने वैसे ही चुपचाप बैठे हुए उसकी नाक के ऊपर निशाना साधा। वह लगभग तीन चौथाई रास्ता पार कर चुका था। मै गोली दागने ही वाला था कि वह तुरन्त रुक गया। अब मै चैन से उसे देखने लगा। उसके अगले हिस्से पर काफी अधिक बाल उगे हुए थे। केवल उसके पाँव ही साफ दिखाई दे रहे थे। उसके सीग नीचे तक चीरे गये थे। उसके माथे पर भी लड़ाई के दो-तीन निशान थे। मुझे लगा कि वह लगभग पन्द्रह मिनट तक मुझे घूरता वहाँ खडा रहा। अपनी ओर से मैं भी चुप रहा। मैने उससे समझौता करना चाहा। मैने मन-ही-मन कहा, 'मित्र ! अगर तुम मुझ पर हमला नही करोगे, मै भी तुम्हें कुछ नही कहूँगा।" बहुत देर बाद लगा कि उसने अपना खूनी इरादा बदल लिया है। बहुत धीरे-धीरे उसने घूमना शुरू किया। धीरे-धीरे उसकी बगल सामने आने लगी। सब ओर कीचड लिपटा हुआ था। मैं अपना इरादा भूल गया और लोभ न रोक सकने के कारण मैने गोली दाग दी। यह काम पिस्तौल से भी चल सकता था। वह बूढ भैंसा उछला, घूमा और दूर मैदान पर भाग निकला। वह कुछ दूर तक भागा। पहाडी पर भी कुछ दूर तक चढ गया। पर, अन्त मे वही गिर कर मर भी गया। उन पहाडियो में ही एक और भैंसे को मार कर मै डेरे पर लौट आया।

दोपहर के समय व्यापारी गाडियो का एक बहुत बडा समूह दिखाई दिया। इस दिन चौदह दिसम्बर थी। सारा मैदान उन सफेद गाडियो से ही छाया हुआ दिखाई दे रहा था। कुछ लोग घोडो पर और कुछ पैदल ही चल रहे थे। वे सब हमारे पास की चरागाह पर रुक गये। उनके मुकाबले मे हम और हमारी गाडी बहुत ही छोटे लगने लगे। रूज उनकी तरफ चला गया और सान्ताफे के उन व्यापारियो से कुछ बिस्कुट और कुछ शराब ले आया। मैने उससे पूछा कि वह यह सब कहाँ से लाया है। उसने बताया कि वह बहुत से व्यापारियो को जानता है। फिर डाक्टर डाब्स भी वही थे। मैने उस डाक्टर के बारे में पूछा। उसने बताया कि वह सेंट लुई का प्रसिद्ध डाक्टर था। पिछले दो दिनो से मेरी पुरानी बीमारी फिर से हरी हो गई थी। इस बार मुझे दर्द और कमजोरी बहुत अधिक हो गई थी। मेरे पूछने पर रूज़ ने बताया कि वह डाक्टर बहुत ही अच्छा इलाज करता है। उस पर विश्वास न करके भी

मैने सोचा कि मै उस डाक्टर से सलाह कर ही लूँ। डेरे की ओर जाकर मैंने डाक्टर को गाड़ियो की छाया मे सोते पाया। उसे देखकर मुझे बहुत ही अजीब-सा लगा। मैने बहुत महीनो बाद इस प्रकार की भद्दी शक्ल का कोई आदमी देखा था। उसका टोप गिर गया था और पीले बाल उलझे हुए-से दिखाई दे रहे थे। उसने अपनी एक बाँह को तकिया बनाया हुआ था। उसके पाजामे घुटनो पर सलवटो से युक्त थे। उसके शरीर पर घास के छोटे-छोटे टुकडे लगे हुए थे। वह उसी घास में काफी देर से लोट-पोट होकर सुस्ता रहा था। उसके पास ही एक मैक्सिकोवासी खड़ा था। मैंने उसे इशारा करके डाक्टर को जगाने के लिए कहा। डाक्टर तुरन्त ही उछलकर सीधा बैठ गया और अपनी आँखें मलता हुआ चौंककर हँसने लगा। मुझे उसे परेशान करने पर अफसोस हुआ। मैंने उसे अपने आने का कारण बताया। उसने कुछ देर देखने के बाद बहुत गम्भीरता से बताया कि मेरा अन्दर का सारा ढाँचा ही गडबड हो गया है। मैने उसके किसी खास गडबड के बारे मे जानना चाहा। इस प्रश्न के उत्तर में उसने मुझे बताया कि मेरा जिगर खराब है। इसके लिए उसने मुझे दवाई देने को कहा। फिर पीछे की ओर ढकी हुई गाडिओ मे से एक मे जाकर वह एक डिब्बा ले आया और उसे खोलकर मुझे उसने एक पुडिया दी। मेरे पूछने पर उसने बताया कि वह 'कैलोमल' था।

इन हालतो मे मैं कोई भी दवाई लेने को तैयार था। यह मुझे शायद कुछ लाभ ही करती। उस रात डेरे पर पहुँचकर मैंने रोटी के बदले वह जहरीली दवाई खानी ही मुनासिब समझी।

यात्रियो का वह डेरा ध्यान देने लायक था। उन्होंने हमे नदी के किनारे खास सड़क से सफर करने को मना किया, क्योकि उसमे जान का बहुत अधिक खतरा था। इस जगह नदी मुड गई थी। यहाँ से एक छोटी पगडडी निकल गई थी। यह पहाड़ी राह सीधी, मैदानों को पार करती हुई, साठ या सत्तर मील तक चली गई थी। इस पर सात या आठ मील चलने के बाद हम एक छोटी-सी धारा के किनारे पहुँचे। हमने यही पर डेरा डाल दिया।

हमने जगह बहुत सावधानी के साथ नही चुनी थी। पानी यहाँ बहुत गहराई मे था और इसके किनारे बहुत अधिक ढलवाँ और ऊँचे थे। गहराई मे कुछ घास भी उगी हुई थी। हमने वही पर अपने घोडो को बाँध दिया।

खुद ऊपर मैदान में ही अपना डेरा डाला। हमारे घोड़ों को भगा ले जाने या हम पर हमला करने का यहाँ सबसे अच्छा मौका था। अँधेरा होने के बाद हमनें देखा कि खाना खाते-खाते रूज़ ने हेनरी के कंधे से परे की ओर बहुत ही ध्यान के साथ कुछ देखा। दूर अँधेरे में हमने कोई एक काली-सी चीज़ झूमती-सी अपनी ओर आती देखी। हेनरी बाँहें फैलाकर हँसता हुआ उछला और चिल्ला पड़ा। यह हमलावर एक बूढ़ा भैंसा था, जो अपनी मूर्खता के कारण सीधा हमारे डेरे में ही धँसा चला आ रहा था। हमें उसे रोकने और भगा देने के लिए कुछ देर चिल्लाना और टोपों को उछालना पडा।

उस रात पूरनमासी का चाँद अपने पूरे उभार पर था। तुरन्त ही काले बादल इसे घेरने लगे। इसलिए कभी अँधेरा और कभी रोशनी हो जाती। रात आने तक चारों ओर से एक बहुत ज़ोर का तूफान आया। हमारा डेरा उखड़ कर उड जाता, अगर हमनें एक गाडी डेरे के साथ ही इस तेज़ी को कम करनें के लिए न खड़ी कर दी होती। बहुत देर बाद तूफान रुका, पर वर्षा होती रही। मैं लगभग सारी रात ही जागता हुआ। तम्बू पर पड़ने वाली वर्षा की बूँदो की आवाज़ सुनता रहा। हमारे डेरे में सिलाव भर गई थी। इससे कुछ और परेशानी हुई। बारह बजे के लगभग शॉ बाहर घुप अँधेरे में पहरा देने के लिए गया। मुनरो भी चौकन्ना था। लगभग दो घण्टे बाद शॉ चुपचाप अन्दर आया और हेनरी को छूकर उसने कुछ तेज़ आवाज़ में जल्दी ही बाहर आने को कहा। मेरे पूछने पर उसने बताया कि शायद आदिवासी उधर से निकल रहे हैं। पर, उसने मुझे लेटा रहने को कहा, जब तक वही ज़रूरत समझकर मुझे बुला न ले।

वह और हेनरी साथ-साथ ही बाहर निकल गये। मैने भी अपनी बंदूक थैले में से निकाल ली और उसे पूरी तरह भर लिया। अधिक दर्द होने के कारण मैं फिर उसी तरह लेट गया। शॉ ने लौटकर बताया कि सब कुछ ठीक ठाक था। वह आ कर अपनी जगह लेट गया। हेनरी पहरे पर खडा था। सुबह उसने मुझे शाम के खतरे की बातें बताईं। मुनरो की सावधान आँखो ने बहुत दूर से ही कोई काली सी चीज़ खड्ड में घूमती हुई पहचान ली थी। घोड़ों के बीच चलने वाली यह चीज चारों हाथो-पाँवों के बल पर

चलने वाले आदमी जैसी दिखाई दे रही थी। शॉ और वह लेटे ही लेटे किनारे तक गये और अँधेरे मे ही समझ लिया कि यह चीज़ आदिवासी ही हो सकते थे। शॉ ने लौट कर हेनरी को बुलाया। तीनो ही जगहे चुनकर लेट गये। हेनरी की आँखें ऐसे मौको पर चौकन्नी रहती थी। कुछ देर बाद उसने पहचान लिया कि वह चीज़ कुछ और नही, भेड़िये थे।

यह बहुत अजीब बात थी कि डेरे के इतना पास बँधे होने पर भी घोड़े ऐसी चीज़ के घुस आने पर कभी नही भड़के। लगता है भेड़ियो का उद्देश्य उनकी खोजी रस्सियों को चबाना ही रहा होगा। इस यात्रा में अनेक बार मेरे घोड़े की खोजी रस्सी रात के इन हमलावरों ने काट डाली थी।

—:०:—

२७ : बस्तियों की ओर

अगली सुबह गर्मी बहुत अधिक थी। हम सुबह से शाम तक बिना एक भी पेड़, झाडी और पानी को देखे बढते रहे। हमारे घोड़े और खच्चरें हम से भी अधिक परेशान थे। परन्तु शाम होते ही उनकी चाल ठीक हो गई और उनके कान खडे हो गये। पानी अब अधिक दूर नही था। जब हम एक चौडी और उथली घाटी के किनारे तक पहुँचे, तो अचानक ही एक मनचाहा नजारा सामने दिखाई दिया। घाटी के तले पर एक धारा चमकती हुई बह रही थी, परन्तु उसके किनारे अनेको तम्बू गडे हुए थे और सैकडो पशु चरागाहो में चर रहे थे। इन सेनाओ के अलावा बहुत सी गाडियो की कतारे भी सामने की ढलानो पर चलती हुई दिखाई दी, जिनमे औरत, मर्द और बच्चे बैठे थे। इस सैनिक और घरेलू ढग के, मिले-जुले, जलूस मे बढने वाले ये लोग मोर्मन जाति के थे। ये लोग कैलिफोर्निया की ओर जा रहे थे। इन्हें अपने सामने पाकर खुश होने की बजाय, हम अचरज में ही डूब गये। इनसे बच कर अपनी जगह ढूँढने के लिए हम लोग दो फर्लांग आगे निकल गये। परन्तु, यहाँ पर भी मोर्मन और मिसूरी निवासियो ने हमे घेर लिया। इन लोगो का बडा अफसर हमें देखने आया और कुछ देर हमारे साथ ही खेमे पर रुका रहा।

सुबह सारा इलाका धुंध से भर गया। हम लोग सदा ही जल्दी उठ जाते थे। उस दिन तैयार होने से पहले ही कुछ आदमियो की आवाज़ें हमे चारो ओर सुनाई देने लगी। गुज़रते हुए हमने देखा कि चारो ओर के तम्बू गिराये जा रहे थे और सेनाओ की कतारे खडी होनी शुरू हो गई थी। इसी बीच औरतो और बच्चो की चीखें और मोर्मन लोगो के ढोलो और बाजो के स्वर भी इस सब में मिल-जुल गये थे।

इस समय से लेकर यात्रा के अन्त तक प्राय हर रोज ही हमे किसी न किसी सैनिक टुकडी और सरकारी गाडियों के दर्शन हो जाते। ये सब सान्ताफे की ओर जाने वाली सेनाओ के लिए सामान लेकर जा रहे थे।

रूज़ को खतरे से हमेशा घबराहट होती थी। एक दिन वह शाम के समय

एक ऐसे भयंकर साहस में जा फँसा, जो हमारे दल के किसी और आदमी ने कभी नही किया था। पहाडी राह को छोडने के अगले रोज हमने नदी किनारे डेरा डाला। शाम के समय हमने बहुत-सी गाडियो को, लगभग तीन मील दूर, उसी राह पर डेरा डाले देखा। हालाँकि हमने उन्हें साफ-साफ देख लिया था, पर हमारी छोटी गाडी उनकी निगाह से बच गई थी। यह बात बाद मे साबित भी हो गई। रूज को कुछ शराब की इच्छा जग पडी थी। इसलिए वह अपने नये बदले हुए घोडे पर चढ़कर उन लोगो की ओर निकल गया। कुछ घंटे बीत जाने पर भी वह न लौटा। हमने समझ लिया कि वह भटक गया है या किसी आदिवासी ने उसे पहचान लिया होगा। सबके सो जाने पर मै पहरे पर जागता रहा। बहुत रात बीतने पर बहुत दूर मे मुझे एक आवाज प्रणाम करती सुनाई दी। रूज और उसका घोडा जल्दी ही निकल आये। वह बहुत जल्दी-जल्दी आया और उतर कर गाडी के पास ही बैठते हुए उसने यह कहानी सुनाई।

डेरा छोडते समय उसे समय का कुछ ध्यान न रहा था। जब वह उन लोगो के पास पहुँचा, तब अँधेरा पूरी तरह घिर आया था। वे लोग गाडियो के घेरे के बीच बैठे हुए आग सेंक रहे थे। उनकी बन्दूकें भी उनकी बगल मे रखी थी। उसने सोचा कि कोई खतरा न आने देने के लिए अधिक अच्छा होगा, वह दूर से ही चिल्लाकर अपना परिचय दे दे। इसलिए उसने बहुत ऊँची आवाज लगा कर उन्हें चौंका दिया। उसके इस चीखने का असर बिलकुल उलटा ही हुआ। इस प्रकार की भयकर और भद्दी आवाज को सुनकर उन लोगो ने समझा कि सारे पौनी लोग एक साथ उन पर टूट पडे हैं। घबरा कर वे उछले और बन्दूके लिए हुए सँभल कर गाडियो के पीछे, या जमीन पर, लेट कर सावधान हो गये। एक ही क्षण में बीस बन्दूकें उस डरे हुए साथी की ओर तान दी गईं। अब वह उन्हे दिखाई देने लगा था।

एक मुखिया ने कहा, "वे आ रहे है! जल्दी ही उस आदमी पर गोली चला दो।"

रूज एक दम डर कर चिल्ला उठा, "नही, नही! गोली मत चलाओ! मै तुम्हारा मित्र अमरीकी ही हूँ।"

"क्या तुम सचमुच दोस्त हो? तब तुम इस तरह आदिवासियो जैसे क्यो

चिल्ला रहे हो ? अगर तुम आदमी हो तो सीधे से चले आओ ।"—एक आवाज़ ने चिल्ला कर कहा ।

उनके नेता ने कहा, "अपनी बन्दूकें उधर ही ताने रखो ! हो सकता है वह धोखेबाज़ हो ।"

रूज़ वहाँ पहुँचते हुए बहुत ही घबरा गया । उसकी आँखों के आगे अब भी चमकती हुई बन्दूकों के कुन्दे दिखाई दे रहे थे । अन्त में वह अपना सही रूप समझाने में सफल हो गया और उन लोगों ने उसे अपने बीच आने की छूट दे दी । उसे शराब तो न मिली, पर क्योंकि उसने स्वयं को असमर्थ और बेसहारा बताया था, इसलिए उन लोगो ने उसे चावल, बिस्कुट और मीठा आदि दे दिये ।

सुबह नाश्ते के समय उसने यह कहानी एक बार फिर से दोहरा दी । हम इस पर पूरा विश्वास करने को तैयार न थे, पर बहुत पूछने पर इसमें कोई गलती भी न निकाल सके । उनके डेरो को पार करते समय हमें इस बात की सच्चाई मे पूरा विश्वास हो गया ।

एक दो दिन बाद हमे उसी प्रकार की गाडियो का एक और दल दिखाई दिया । हेनरी और मै शिकार के लिए कुछ आगे निकल चले । उस दिन के बाद हमें किसी और भैंसे के टकराने की उम्मीद न थी । इसलिए हमने उस दिन के अन्तिम बार शिकार मारने की सोची, ताकि कुछ ताज़ा मास मिल सके । ये भैंसे इतने बिगडे हुए थे कि हम सारी सुबह शिकार करके भी कुछ न पा सके । दोपहर के समय जब हम 'काऊ क्रीक' के पास पहुँचे, हमने भैंसों का एक बड़ा भारी जत्था चरते हुए देखा । यहाँ नदी दोनो तरफ घने पेड़ों से घिरी हुई है । इसलिए पार का दृश्य नही दिखाई दे सकता था । जब हम इसके बहुत नज़दीक पहुँचे, तो देखा कि वह एक बहुत गहरी खाई में से होकर बह रही है । हम नीचे उतर कर बढ़ने लगे । मैने घोडों को पकड लिया और हेनरी सरकता हुआ भैंसो की ओर बढा । मैने देखा कि वह निशाने की पहुँच में जाकर बैठ गया और बन्दूक भर कर शिकार चुनने लगा । एक मोटी भैंस पर गोली चलने ही वाली थी कि अचानक ही नदी किनारे से एक दम ही बहुत-सी गोलियो की बौछार उठ पड़ी । बीस के लगभग लम्बी-लम्बी टाँगों वाले मिसूरी-निवासी उधर उछले और भैंसों के पीछे दौड़ते हुए गायब हो गये ।

ये लोग धारा पार करके भैंसो के सौ गज के अन्दर ही पहुँच गये थे। शिकार का इससे अच्छा मौका कभी न मिला था। वे सभी अच्छे निशानेबाज थे। उन्होंने एक साथ ही गोलियाँ भी दागी। किन्तु एक भी शिकार नही गिरा। सच यह है, कि जानवर मारना आसान नही है। उन्हे मारने के लिए उनके शरीर की बनावट को समझना बहुत जरूरी है। नया शिकारी, इसी लिए, बहुत कम सफल हो पाता है। ये सैनिक भी एक दम घबरा गये। खास कर तब जब हेनरी ने उन्हें बताया कि अगर वे लोग दस मिनट भी और चुप रहते तो वह उनके सारे दल के लिए काफी मास जुटा देता। हमारे साथियो ने इस बौछार को सुनकर यह समझा कि कुछ आदिवासियो ने हम पर हमला बोल दिया है। शाँ तेजी से यह पता करने आया कि हम अब तक जिन्दा है या नही ?

इस नदी के पास हमें पके हुए अगूर और अलूचे बहुत अधिकता से उगे मिले। यहाँ से कुछ दूरी पर 'लिटिल अरकंसास' के पास हमने एक अन्तिम भैसा देखा। यह अकेला ही घूम रहा था। यहाँ से आगे सारे इलाके का ढाँचा रोज ही बदलता हुआ नजर आने लगा। हम अपने पीछे एक बडा उजाड और ऊबड़-खाबड़ मैदान छोड़ आये थे। वहाँ घास तक कम उगी हुई मिलती थी। हमारे सामने के मैदान यहाँ पर बहुत अधिक वनस्पतियो और फूलो से लदे हुए थे। भैंसो के स्थान पर हमे मैदानी मुर्गियाँ बहुतायत से मिलने लगी। हमने अपनी राह बिना छोडे ही उनमे से अनेको मार ली। तीन या चार दिन मे हमें 'कौंसिल ग्रोव' के जगल और चरागाह दिखाई देने लगे। इन जगहों से गुजरते हुए हमें नीबू, सनोवर, अलूचा, अखरोट आदि अनेको किस्म के फलों के पौधे मिलने लगे, जिन्हें देखकर हमें बहुत आनन्द मिला। अंगूर तो इस इलाके मे बहुत अधिक होते थे। हम लोगो की आवाज और हमारी बन्दूको की आवाज चारो ओर के शांत जंगल मे जब-तब गूँज जाती थी। हम बहुत दुःख के साथ एक बार फिर से मैदान पर निकल आये। अब बस्तियाँ यहाँ से कुल सौ मील की दूरी पर रह गई थी। यह सारा मैदान हरियाली से भरा हुआ था। जगह-जगह टीले और ऊँचे उठे हुए पेड़ दिखाई दे जाते थे। ये पेड़ किसी चश्मे या धारा के आस-पास होते थे। यह वही मैदान है, जहाँ किसी कवि या उपन्यासकार की कल्पना को बल मिलता है। हमारे रास्ते का खतरा समाप्त हो चुका था। अब हमे इस इलाके के आदिवासियों से भी कोई डर न था।

ये सभी लोग सुधार की ओर बढ रहे है। हमारा बहुत ही अच्छा भाग्य था कि हम ऐसे इलाके से बच कर चले आये थे, जहाँ पशु, सामान या अपनी जान का खतरा हमेशा ही बना रहता है। सारे रास्ते भर हमें किसी प्रकार की कोई हानि न हुई। हमारी एकमात्र हानि एक खच्चर की हुई थी, जो एक फणियर साँप के काटे जाने से मर गया था। हमारे सीमान्त पर पहुँचने के तीन हफ्ते बाद ही अरकंसास के रास्ते पर पौनी और कमाचे लोगो ने लगातार अपने उपद्रव शुरू कर दिए थे। अगले छः महीनें तक हर आने-जाने वाले को उनके हमलो का सामना करना पडा।

अब डायमण्ड स्प्रिंग, रॉक क्रीक, एल्डर ग्रोव और दूसरे स्थान आसानी से जल्दी-जल्दी बीतने लगे। हमे 'रॉक क्रीक' पर पहुँच कर कुछ सरकारी गाड़ियाँ मिली, जो एक बहुत ही बूढे आदमी के अधिकार में चल रही थी। उसे इस आयु मे अपने घर पर आराम करना चाहिए था, परन्तु न जाने उसकी मौत उसे ऐसी विपदा मे क्यो घसीट लाई ? मुझे लगता है वह फिर कभी वापिस न लौट सका होगा, क्योंकि वह उसी रात एक बीमारी की शिकायत कर रहा था। वह रोज़ही कमजोर होता जा रहा था। इससे कुछ दिन पहले ही भूखे भेडियों ने एक और बूढे आदमी के शरीर की दुर्गत बना दी थी।

इसके कुछ ही समय बाद हम लीवनवर्थ के किले की ओर जाने वाली एक छोटी पगडडी पर आये। यहाँ से कुल एक दिन का ही रास्ता उस किले तक का बचता था। ह्ज ने यहाँ ही हमसे छुट्टी ली और वह तेज़ी से उस ओर निकल चला। उसकी इच्छा थी कि वह हम से पहले ही वहाँ पहुँच कर अपनी 'कमाल की सैनिक सेवा' के लिए तनखाह ले सके। इसलिए वह बहुत प्यार भरी विदाई के बाद तुरन्त ही निकल चला। उस उदासी भरी बरसाती साँझ को हमने अपना अन्तिम डेरा डाला।

सुबह हम फिर सवार होकर आगे चले। पहली रात की तेज़ वर्षा के बाद भी यह सुबह बहुत सुहानी थी। शायद हमारे बस्ती में पहुँचने के समय की यह सुबह सर्दियो की सब से अधिक सुहानी सुबह रही होगी। रास्ते भर हम कुछ-कुछ सभ्यता को अपनाने वाले शावानू लोगो के इलाके में से गुजरे। यह इलाका उपजाऊ मैदानों और अमराइयो से भरा पड़ा था। पेडो के नीचे

आदिवासियों के लकड़ियों के घर बने हुए थे। हर खेत और चरागाह ज़मीन के उपजाऊ होने का सबूत दे रही थी। मक्की हवा में लहराती हुई, पकी और सूखी खडी थी। इसके पीले भुट्टे दूर से ही चमक रहे थे। पत्ते पीले और भूरे पड़ चुके थे। चारो ओर कोयलें और मैनाएँ झाडियो मे उड रही थी। हर चीज़ बता रही थी कि हम अपने ही सभ्य इलाको में आ गये हैं। मिसूरी के किनारे के जगल हमारे सामने आने लगे और हम उनके बाहर से होते हुए झाड़ियो मे बनी एक राह से गुज़रे। जाते हुए भी हम इसी राह से गुजरे थे। पर तब वसन्त थी और नज़ारा बिलकुल उलटा था। उस समय जगली सेबो के पेड खूब खिले हुए थे और उन पर मोटे और लाल फल लगे हुए थे। उस समय चारो ओर ऊँची-ऊँची घास भी उगी हुई थी। वेले गुलाबी अगूरो से लटी हुई थी। चारो ओर अनेक किस्म के फूल खिले हुए थे। परन्तु अब सभी कुछ उलटा था। अब चारो ओर पतझड़ का-सा नजारा था। अब हम जंगल मे से होकर बढने लगे। इसमें कही धूप और कही छाया, शाखाओं मे से छनती हुई, पड रही थी। दोनो तरफ घने पत्तो के कारण किरणें धरती पर नही पहुँच पाती थी, परन्तु पत्तो से छन-छन कर हरी-सी चमक अवश्य धरती पर पहुँच रही थी। पेड़ो पर से ही गिलहरियाँ हमारी ओर देखकर शोर करने लगी। कोयलो के छोटे-छोटे बच्चे नीचे गिरे पत्तो पर सरसराते हुए चलने लगे। लाल पक्षी भी सुनहरी और नीली चिड़ियो के साथ शाखाओ पर उछलते फिर रहे थे। सुन्दरता के ये नज़ारे और ये आवाज़े बहुत ही प्यारी और आनन्द देने वाली लग रही थी। बस्तियो के ये आनन्द कितने ही लुभावने और अधिक रहे हो, हमे पीछे छूटे हुए दृश्य भी भूल नही पा रहे थे।

बहुत देर बाद हमने एक गोरे आदमी का निवास स्थान पेडो मे से झांकता-सा देखा। कुछ ही मिनट बाद हम लकड़ी के उस पुल पर से गुज़रे, जिससे होकर वैस्टपोर्ट पहुँचा जाता है। यहाँ हमें बहुत से अजीब नज़ारे देखने को मिले। पर, शायद सबसे अजीब नज़ारा तो हम लोग खुद थे, जो हर तरह से फटे-हाल और टूटे-फूटे-से लग रहे थे। शायद इन लोगो ने कभी ऐसा यात्री-दल न देखा होगा। हम अपने पुराने परिचित बूने की दूकान और फौजेल के शराबखाने के पास से होते हुए गुज़रे और दूर की एक चरा-

गाह पर रुके। यहाँ बहुत-से लोग हमारे पास आये। उन्होंने हमारे घोडे और दूसरी चीज़ों को खरीदने की बात-चीत की। यह काम निपटा कर हमने एक गाड़ी क़िराए पर ली और अरकसास के घाट पर चले आये। यहाँ हमें अपने पुराने मित्र कर्नल चिक के दर्शन हुए। उसने बहुत प्रेम से हमारा स्वागत किया। उसके मकान की ड्योढी से हमने मिसूरी नदी की ओर निगाह डाली।

सुबह देस्लारियर हम तक आया। उसका रूप-रग बिल्कुल ही पलटा हुआ था। उसने सारी ही पोशाक पलट ली थी। यहीं पास के जंगलों में उसका लकड़ी का घर था। लगता है वह हमें हमारे सम्मान मे एक दावत और नाच पर बुलाना चाहता था। हेनरी ने अपना विश्वास प्रगट किया कि हम लोग इसे कम आकर्षक नही पायेंगे। यह निमन्त्रण ठीक तरह से आया था, क्योकि उसने हेनरी से हमे बुलाने के बारे में पूरी सलाह कर ली थी। एक खास आकर्षण इसमें यह रख दिया गया था कि एक विशेष वीणा बजाने वाला वहाँ बुलाया गया था। हमने उसे बताया कि अगर शाम से पहले ही लीवनवर्थ से कोई स्टीमर न आ पहुँचा तो हम अवश्य आयेंगे। पर नाव शाम से पहले ही आ पहुँची और हमे उन उत्सवों मे शामिल होना नसीब न हुआ। जब हमारी नाव नदी मे बढ़ रही थी उस समय देस्लारियर घाट के पास की ही एक चट्टान पर खड़ा हुआ हमसे विदा लेने की प्रतीक्षा कर रहा था।

वह हमारी नाव को देखते ही चिल्लाया, "विदा! मेरे मालिको, विदा! जब कभी आप फिर से राकी पर्वतो की ओर आएँ, मै भी आप के साथ चलूँगा; जरूर चलूँगा।"

यह कहने के साथ ही वह कूदा और अपना टोप उछालते हुए खिलखिला कर हँसने लगा। जब हमारी नाव एक मोड़ से मुड़ी, तो जो अन्तिम चीज़ हमारी निगाहो में आई, यह थी कि देस्लारियर जो अब भी अपना टोप उठाए चट्टान पर ही खड़ा था। हमने मुनरो और जिम से भी वैस्टपोर्ट में ही विदाई ले ली थी। हेनरी अब भी हमारे साथ था।

सेंट लुई तक की यात्रा ने आठ दिन ले लिए। इसमे से लगभग एक तिहाई समय हमारी नाव किनारे की रेत मे फँसती रही। हमने आमेलिया नाम के एक स्टीमर को भी पार किया। इसमे बहुत से स्वयसेवक छुट्टी पाकर नाचते, गाते, जुआ खेलते और लडते हुए घरो की ओर लौट रहे थे।

आखिर एक दिन शाम के समय हमारी नाव सेंट लुई के घाट पर आ लगी। हम वहाँ पहुँच कर अपने संदूक आदि को खोजने के लिए प्लांटर के मकान की ओर गये। हमने बहुत देर में जाना कि हमारा सामान एक कोने में ढकेल दिया गया था। सुबह दर्जी की कारीगरी के नये नमूने पहन कर जब हम एक-दूसरे से मिले तो एक-दूसरे को पहचानना भी कठिन हो गया।

अपनी विदाई से पहली शाम हम प्लाटर के मकान पर हेनरी से मिले। वह यहाँ हमसे विदाई लेने आया था। इस मौके पर वह इस प्रकार से सजा हुआ था, जिससे शहर की गलियो मे मिलने वाला कोई भी आदमी उसे पहचान नही सकता था कि वह राकी पर्वत माला से अभी हाल मे ही लौटा हुआ कोई शिकारी है। वह गहरे रग की एक बहुत ही सुन्दर पोशाक पहने हुए था। सोलह वर्ष की आयु से ही वह घर से बाहर इन शिकारो पर जाया करता था। इसलिए उसे घर पर रहने का मौका कम ही मिल पाता था। पर, इस पर भी उसे सभ्य लोगो की तरह स्वय को सजाने और ठीक रखने की आदत थी। उसका ऊँचा और गठीला शरीर और उसकी चाल-ढाल इस पोशाक के ही लायक थी। उसका सुन्दर चेहरा भले ही तूफानो और आँधियो से कुछ बिगड़ गया हो, पर तो भी इस पोशाक मे वह भद्दा नही लग रहा था। हमने बहुत ही दु ख के साथ उससे विदाई ली। हमने हाथ हिलाते हुए देखा कि इस समय उसके हृदय के भाव भी हमसे कम गहरे नही थे। शॉ ने उसे वैस्टपोर्ट मे ही एक अच्छा घोड़ा दे दिया था। यहाँ मैने अपनी बहुत ही उम्दा राइफल उसे दे दी। उसे यह हमेशा ही पसन्द रही थी और वह इसे बरतता भी रहता था। अब भी यह उसी के हाथो में है। और, शायद इस क्षण उसकी गूँज राकी पर्वत माला की चोटियो मे ही कही समा रही होगी। अगली सुबह हमने नगर छोड़ दिया और तब पूरे पन्द्रह दिन तक रेलगाड़ी, घोड़ागाड़ी और स्टीमरो की सवारी करते हुए अपने परिचित घरो मे एक बार फिर से आ पहुँचे।

—:०:—